

﴿ آياتها ٢٨٦ ﴾ ﴿ ٢ سُورَةُ الْبَقَرَةِ مَكِّيَّةٌ ٨٤ ﴾ ﴿ مَرَكُوعَاتُهَا ٢٠ ﴾

सूरए बकरह मदनिय्या है, इस में दो सो छियासी आयतें और चालीस रकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला¹

الْم ١ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۙ فِيْهِ ۙ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ

² वोह बुलन्द रत्बा किताब (कुरआन) कोई शक की जगह नहीं³ इस में हिदायत है डर वालों को⁴ वोह जो

1 : सूरए बकरह : येह सूरत मदीनी है। हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنه ने फ़रमाया : मदीनए तय्यिबा में सब से पहले येही सूरत नाज़िल हुई सिवाए आयत “وَاقْتُوايَوْمًا تُرْجَعُونَ” के कि हज्जे विदाअ में ब मकाम मक्कए मुकर्रमा नाज़िल हुई। (ग़ारन) इस सूरत में दो सो छियासी आयतें, चालीस रकूअ, छ⁶ हज़ार एक सो इक्कीस कलिमे, पच्चीस हज़ार पांच सो हर्फ हैं। (ग़ारन) पहले कुरआने पाक में सूरतों के नाम न लिखे जाते थे येह तरीका हज्जाज ने निकाला। इब्ने अरबी का कौल है कि सूरए बकर में हज़ार अम्र, हज़ार नहय, हज़ार हुक्म, हज़ार ख़बरे हैं, इस के अख़्त में बरकत, तर्क में हसरत है, अहले बातिल जादूगर इस की इस्तिताअत नहीं रखते, जिस घर में येह सूरत पढ़ी जाए तीन दिन तक सरकश शैतान उस में दाख़िल नहीं होता। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि शैतान उस घर से भागता है जिस में येह सूरत पढ़ी जाए। (मल) बैहक़ी व सईद बिन मन्सूर ने हज़रते मुगीरा से रिवायत की, कि जो शख्स सोते वक़्त सूरए बकरह की दस आयतें पढ़ेगा कुरआन शरीफ़ को न भूलेगा, वोह आयतें येह हैं : चार आयतें अक्वल की और आयतुल कुर्सी और दो इस के बा'द की, और तीन आख़िरे सूरत की। **मसआला :** तबरानी व बैहक़ी ने हज़रते इब्ने उमर رضي الله تعالى عنه से रिवायत की, कि हज़ूर عليه الصلوة والسلام ने फ़रमाया : मय्यित को दफ़न कर के क़ब्र के सिरहाने सूरए बकर के अक्वल की आयतें और पाउं की तरफ़ आख़िर की आयतें पढ़ो। **शाने नुज़ूल :** **अल्लाह** तआला ने अपने हबीब صلى الله تعالى عليه وسلم से एक ऐसी किताब नाज़िल फ़रमाने का वा'दा फ़रमाया था जो न पानी से धो कर मिटाई जा सके न पुरानी हो, जब कुरआने पाक नाज़िल हुवा तो फ़रमाया : “**ذٰلِكَ الْكِتٰبُ**” कि वोह किताबे मौऊद (जिस का वा'दा किया गया था) येह है। एक कौल येह है कि **अल्लाह** तआला ने बनी इसराईल से एक किताब नाज़िल फ़रमाने और बनी इसमाईल में से एक रसूल भेजने का वा'दा फ़रमाया था जब हज़ूर ने मदीनए तय्यिबा को हिज़रत फ़रमाई जहां यहूद ब कसरत थे तो “**الْم ذٰلِكَ الْكِتٰبُ**” नाज़िल फ़रमा कर उस वा'दे के पूरे होने की ख़बर दी। (ग़ारन) **2 :** “**الْم**” सूरतों के अक्वल जो हुरूफ़ मुक़त्ता आते हैं उन की निस्बत कौले राजेह येही है कि वोह असरारे इलाही और मुतशाबिहात से हैं, इन की मुराद **अल्लाह** और रसूल जानें हम इस के हक़ होने पर ईमान लाते हैं। **3 :** इस लिये कि शक उस में होता है जिस पर दलील न हो, कुरआने पाक ऐसी वाज़ेह और क़वी दलीलें रखता है जो आक़िल, मुन्सिफ़ को इस के किताबे इलाही और हक़ होने के यकीन पर मजबूर करती हैं तो येह किताब किसी तरह क़ाबिले शक नहीं, जिस तरह अन्धे के इन्कार से आफ़ताब का वुजूद मुशतबह नहीं होता ऐसे ही मुआनिद सियाह दिल के शक व इन्कार से येह किताब मश्कूक नहीं हो सकती। **4 :** “**هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ**” (इस में हिदायत है डर वालों को) अगर्चे कुरआने करीम की हिदायत हर नाज़िर के लिये आम है मोमिन हो या काफ़िर जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया : “**هُدًى لِّلنَّاسِ**” (लोगों के लिये हिदायत) लेकिन चूकि इन्तिफ़ाअ इस से अहले तक्वा को होता है इस लिये “**هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ**” इशाद हुवा, जैसे कहते हैं बारिश सब्जे के लिये है या'नी मुत्तफ़ेअ इस से सब्जा होता है अगर्चे बरस्ती कल्लर ज़मीने बे गियाह (बेकार व बन्जर) पर भी है। तक्वा के कई मा'ना आते हैं : नफ़्स को खौफ़ की चीज़ से बचाना, और उर्फ़ शरअ में मन्आत छोड़ कर नफ़्स को गुनाह से बचाना, हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنه ने फ़रमाया : मुत्तकी वोह है जो शिर्क व कबाइर व फ़वाहिश से बचे। बा'जों ने कहा : मुत्तकी वोह है जो अपने आप को दूसरों से बेहतर न समझे। बा'ज का कौल है : तक्वा हुराम चीज़ों का तर्क और फ़राइज़ का अदा करना है। बा'ज के नज़दीक मा'सियत पर इसरार और ताअत पर गुरूर का तर्क तक्वा है। बा'ज ने कहा : तक्वा येह है कि तेरा मौला तुझे वहां न पाए जहां उस ने मन्आ फ़रमाया। एक कौल येह है कि तक्वा हज़ूर عليه الصلوة والسلام और सहाबा رضي الله تعالى عنهم की पैरवी का नाम है। (ग़ारन) येह तमाम मा'ना बाहम मुनासबत रखते हैं और मआल (या'नी अस्ल) के ए'तिबार से इन में कुछ मुख़ालफ़त नहीं। तक्वा के मरातिब बहुत हैं : अ़वाम का तक्वा ईमान ला कर कुफ़्र से बचना, मुतवस्सितीन का अवामिर व नवाही की इताअत, ख़वास का हर ऐसी चीज़ को छोड़ना जो **अल्लाह** तआला से गा़फ़िल करे। (मल) हज़रते मुतर्जिम رضي الله تعالى عنه ने फ़रमाया : **तक्वा सात किस्म है :** (1) कुफ़्र से बचना, येह बि फ़ज़िलही तआला हर मुसल्मान को हासिल है (2) बद मज़हबी से बचना, येह हर सुन्नी को नसीब है (3) हर कबीरा से बचना (4) सगाइर से भी बचना (5) शुबुहात से एहतिराज़ (6) शहवात से बचना (7) ग़ैर की तरफ़ इल्तिफ़ात से बचना, येह अख़स्सुल ख़वास का मन्सब है। और कुरआने अज़ीम सातों मर्तबों का हादी है।

الْمَزْلُ الْأَوَّلُ ﴿ ١ ﴾

يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿٢﴾

वे देखे ईमान लाए⁵ और नमाज़ काइम रखें⁶ और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाए⁷

وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ

और वोह कि ईमान लाएं उस पर जो ऐ महबूब तुम्हारी तरफ़ उतरा और जो तुम से पहले उतरा⁸

5 : "الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ" यहां से "مُفْلِحُونَ" तक आयतें मोमिनीने बा इज़्ज़ास के हक़ में हैं जो जाहिरन व बातिनन ईमानदार हैं, इस के बा'द दो आयतें खुले काफ़िरों के हक़ में हैं जो जाहिरन व बातिनन काफ़िर हैं। इस के बा'द "وَمِنَ النَّاسِ" से तेरह आयतें मुनाफ़िक़ीन के हक़ में हैं जो बातिन में काफ़िर हैं और अपने आप को मुसलमान जाहिर करते हैं। (म) "ग़ैब" मस्दर, या इस्मे फ़ाइल के मा'ना में है इस तक्दीर पर "ग़ैब" वोह है जो हवास व अक्ल से बदीही तौर पर मा'लूम न हो सके, इस की दो किस्में हैं : एक वोह जिस पर कोई दलील न हो, येह इल्मे ग़ैब ज़ाती है, और येही मुराद है आयत "عِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يُعْلِمُهَا إِلَّا اللَّهُ" (और उसी के पास हैं कुन्जियां ग़ैब की उन्हें वोही जानता है) में और उन तमाम आयात में जिन में इल्मे ग़ैब की ग़ैरे खुदा से नफ़ी की गई है, इस किस्म का इल्मे ग़ैब या'नी ज़ाती जिस पर कोई दलील न हो **अल्लाह** तआला के साथ ख़ास है। "ग़ैब" की दूसरी किस्म वोह है जिस पर दलील हो जैसे सानेए आलम और उस की सिफ़ात, नुबुव्वात और उन के मुतअल्लिक़ात, अहक़ाम व शराएअ व रोज़े आख़िर और उस के अहवाल, बा'स, नशर, हि़साब, जज़ा वग़ैरा का इल्म जिस पर दलीलें काइम हैं, और जो ता'लीमे इलाही से हासिल होता है यहां येही मुराद है। इस दूसरे किस्म के गुयूब जो ईमान से अलाका रखते हैं उन का इल्म व यक़ीन हर मोमिन को हासिल है, अगर न हो आदमी मोमिन न हो सके, और **अल्लाह** तआला अपने मुक़रब बन्दों अम्बिया व औलिया पर जो गुयूब के दरवाजे खोलता है वोह इसी किस्म का ग़ैब है। या "ग़ैब" मा'निये मस्दरी में रखा जाए और ग़ैब का सिला "مُؤْمِنٌ بِهِ" करार दिया जाए, या "بِ" को मुतलब्विसीन महज़ूफ़ के मुतअल्लिक़ कर के हाल करार दिया जाए। पहली सूत में आयत के मा'ना येह होंगे जो वे देखे ईमान लाएं जैसा कि हज़रते मुतजिम **रु़े** ने तरजमा किया है। दूसरी सूत में मा'ना येह होंगे जो मोमिनीन के पसे ग़ैबत ईमान लाएं या'नी उन का ईमान मुनाफ़िक़ों की तरह मोमिनीन के दिखाने के लिये न हो बल्कि वोह मुख़्तस हों, गाइब, हाज़िर हर हाल में मोमिन रहें। "ग़ैब" की तपसीर में एक कौल येह भी है कि ग़ैब से क़्लब या'नी दिल मुराद है, इस सूत में मा'ना येह होंगे कि वोह दिल से ईमान लाएं। (म) "ईमान" जिन चीज़ों की निस्वत हिदायत व यक़ीन से मा'लूम है कि येह दीने मुहम्मदी से हैं इन सब को मानने और दिल से तस्दीक़ और ज़बान से इक़्ार करने का नाम ईमाने सहीह है, अमल ईमान में दाख़िल नहीं इसी लिये "يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ" के बा'द "يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ" फ़रमाया। 6 : नमाज़ के काइम रखने से येह मुराद है कि इस पर मुदावमत करते हैं और ठीक वक़्तों पर पाबन्दी के साथ इस के अरकान पूरे पूरे अदा करते, और फ़राइज़, सुनन, मुस्तहब्वत की हिफ़ाज़त करते हैं किसी में ख़लल नहीं आने देते, मुफ़िसदात व मक्रूहात से इस को बचाते हैं और इस के हुकूक़ अच्छी तरह अदा करते हैं। नमाज़ के हुकूक़ दो तरह के हैं : एक जाहिरि वोह तो येही हैं जो ज़िक़्र हुए, दूसरे बातिनी वोह खुशूअ और हुजूर या'नी दिल को फ़ारिग़ कर के हमा तन बारगाहे हक़ में मुतबज्जेह हो जाना और अज़ों नियाज़ व मुनाजात में महविय्यत पाना। 7 : राहे खुदा में ख़र्च करने से या ज़कात मुराद है जैसा दूसरी जगह फ़रमाया : "يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ" या मुल्लक़ इन्फ़ाक़ ख़्वाह फ़र्ज़ व वाजिब हो जैसे ज़कात, नज़्र, अपना और अपने अहल का नफ़का वग़ैरा, ख़्वाह मुस्तहब जैसे सदकाते नाफ़िला, अम्वात का ईसाले सवाब। मस्अला : ग़्यारहवीं, फ़ातिहा, तीजा, चालीसवां वग़ैरा भी इस में दाख़िल हैं कि वोह सब सदकाते नाफ़िला हैं और कुरआने पाक व कलिमा शरीफ़ का पढ़ना नेकी के साथ और नेकी मिला कर अज़्रो सवाब बढ़ाता है। मस्अला : "مِمَّا" में "مِن" तर्ज़िज़ा इस तरफ़ इशारा करता है कि इन्फ़ाक़ में इसराफ़ मन्मूअ है या'नी इन्फ़ाक़ ख़्वाह अपने नफ़स पर हो, या अपने अहल पर, या किसी और पर ए'तदाल के साथ हो इसराफ़ न होने पाए। "رَزَقْنَاهُمْ" की तक्दीम और रिज़क़ को अपनी तरफ़ निस्वत फ़रमा कर जाहिर फ़रमाया कि माल तुम्हारा पैदा किया हुवा नहीं हमारा अत्ता फ़रमाया हुवा है, इस को अगर हमारे हुक्म से हमारी राह में ख़र्च न करो तो तुम निहायत ही बख़ील हो, और येह बुख़ल निहायत क़बीह। 8 : इस आयत में अहले किताब से वोह मोमिनीन मुराद हैं जो अपनी किताब और तमाम पिछली आस्मानी किताबों और अम्बिया **عليهم السلام** की वहूयों पर भी ईमान लाए और कुरआने पाक पर भी, और "مَا أُنزِلَ إِلَيْكَ" से तमाम कुरआने पाक और पूरी शरीअत मुराद है। (म) मस्अला : जिस तरह कुरआने पाक पर ईमान लाना हर मुकल्लफ़ पर फ़र्ज़ है इसी तरह कुतुबे साबिका पर ईमान लाना भी ज़रूरी है जो **अल्लाह** तआला ने हुजूर **عليه الصّلاة والسلام** से क़बल अम्बिया **عليهم السلام** पर नाज़िल फ़रमाई, अलबतता उन के जो अहक़ाम हमारी शरीअत में मन्सूख़ हो गए उन पर अमल दुरुस्त नहीं मगर ईमान ज़रूरी है मसलन पिछली शरीअतों में बैतुल मक्दिस किब्ला था इस पर ईमान लाना तो हमारे लिये ज़रूरी है मगर अमल या'नी नमाज़ में बैतुल मक्दिस की तरफ़ मुंह करना जाइज़ नहीं मन्सूख़ हो चुका। मस्अला : कुरआने करीम से पहले जो कुछ **अल्लाह** तआला की तरफ़ से उस के अम्बिया पर नाज़िल हुवा उन सब पर इज्मालन ईमान लाना फ़र्ज़ ऐन है और कुरआन शरीफ़ पर तपसीलन फ़र्ज़े किफ़ायत है लिहाज़ा अ़वाम पर इस की तपसीलात के इल्म की तहसील फ़र्ज़ नहीं जब कि उलमा मौजूद हों जिन्होंने ने इस की तहसीले इल्म में पूरी जोहद सर्फ़ की हो।

وَبِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ٣ أُولَئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَئِكَ

और आखिरत पर यकीन रखें⁹ वोही लोग अपने रब की तरफ से हिदायत पर हैं और वोही

هُم الْمَفْلُحُونَ ٥ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ

मुराद को पहुंचने वाले बेशक वोह जिन की क़िस्मत में कुफ़्र है¹⁰ उन्हें बराबर है चाहे तुम उन्हें डराओ

أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ٦ خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ

या न डराओ वोह ईमान लाने के नहीं **اللَّهُ** ने उन के दिलों पर और कानों पर मोहर कर दी

وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ٧ وَمِنَ النَّاسِ مَن

और उन की आंखों पर घटाटोप है¹¹ और उन के लिये बड़ा अज़ाब और कुछ लोग कहते हैं¹²

يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ ٨ يُخَادِعُونَ

कि हम **اللَّهُ** और पिछले दिन पर ईमान लाए और वोह ईमान वाले नहीं फ़रेब दिया चाहते हैं

اللَّهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَمَا يُخَادِعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ٩

اللَّهُ और ईमान वालों को¹³ और हकीकत में फ़रेब नहीं देते मगर अपनी जानों को और उन्हें शुक़र नहीं

9 : या'नी दारे आखिरत और जो कुछ उस में है जज़ा व हिसाब वगैरा सब पर ऐसा यकीन व इत्मीनान रखते हैं कि ज़रा शको शुबा नहीं। इस में अहले किताब वगैरा कुफ़र पर ता'रीज़ है जिन के ए'तिकाद आखिरत के मुतअल्लिक़ फ़ासिद हैं। 10 : औलिया के बा'द आ'दा का ज़िक्र फ़रमाना हिकमत हिदायत है कि इस मुक़ाबले से हर एक को अपने किरदार की हकीकत और उस के नताइज पर नज़र हो जाए। शाने नुज़ूल : येह आयत अबू जहल, अबू लहब वगैरा कुफ़र के हक़ में नाज़िल हुई जो इल्मे इलाही में ईमान से महरूम हैं इसी लिये इन के हक़ में **اللَّهُ** तआला की मुख़ालफ़त से डराना न डराना दोनों बराबर हैं इन्हें नफ़्अ न होगा मगर हुज़ूर की सअय बेकार नहीं क्यूं कि मन्सबे रिसालते आम्मा का फ़ज़ रहनुमाई व इक़ामते हुज़्जत व तब्तीग़ अला वजिहल कमाल है। मस्अला : अगर कौम पन्द पज़ीर न हो (या'नी नसीहत क़बूल न करे) तब भी हादी को हिदायत का सवाब मिलेगा। इस आयत में हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** हुज़ूर की तस्क़ीने ख़ातिर (तसल्ली और दिलजोई) है कि कुफ़र के ईमान न लाने से आप मग़मूम न हों आप की सअये तब्तीग़ कामिल है इस का अज़्र मिलेगा, महरूम तो येह बद नसीब हैं जिनहों ने आप की इताअत न की। "कुफ़र" के मा'ना **اللَّهُ** तआला के वुज़ूद या उस की वहदानियत, या किसी नबी की नुबुव्वत, या ज़रूरिय्याते दीन से किसी अग्र का इन्कार, या कोई ऐसा फ़ै'ल जो इन्दश्शरअ इन्कार की दलील हो कुफ़र है। 11 : खुलासए मतलब येह है कि कुफ़र ज़लालत व गुमराही में ऐसे डूबे हुए हैं कि हक़ के देखने, सुनने, समझने से इस तरह महरूम हो गए जैसे किसी के दिल और कानों पर मोहर लगी हो और आंखों पर पर्दा पड़ा हो। मस्अला : इस आयत से मा'लूम हुवा कि बन्दों के अफ़आल भी तहते कुदरते इलाही हैं। 12 : इस से मा'लूम हुवा कि हिदायत की राहें उन के लिये अब्वल ही से बन्द न थीं कि जाए उज़्र होती बल्कि उन के कुफ़्रो इनाद और सरकशी व बे दीनी और मुख़ालफ़ते हक़ व अदावते अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَام** का येह अन्जाम है जैसे कोई शख़्स तबीब की मुख़ालफ़त करे और ज़हरे कातिल खा ले और उस के लिये दवा से इन्तिफ़ाअ की सूरत न रहे तो खुद वोही मुस्तहिक्के मलामत है। 13 : शाने नुज़ूल : यहां से तेरह आयतें मुनाफ़िक़ीन की शान में नाज़िल हुई जो बातिन में काफ़िर थे और अपने आप को मुसल्मान जाहिर करते थे, **اللَّهُ** तआला ने फ़रमाया : "مَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ" वोह ईमान वाले नहीं या'नी कलिमा पढ़ना, इस्लाम का मुहई होना, नामाज़ रोज़ा अदा करना मोमिन होने के लिये काफ़ी नहीं जब तक दिल में तस्दीक़ न हो। मस्अला : इस से मा'लूम हुवा कि जितने फ़िक़े ईमान का दा'वा करते हैं और कुफ़र का ए'तिकाद रखते हैं सब का येही हुक्म है कि काफ़िर ख़ारिज अज़ इस्लाम हैं, शरअ में ऐसों को मुनाफ़िक़ कहते हैं इन का ज़रर खुले काफ़िरो से ज़ियादा है। "مِنَ النَّاسِ" फ़रमाने में लतीफ़ रम्ज़ येह है कि येह गुरोह बेहेतर सिफ़त व इन्सानि कमालात से ऐसा आरी है कि इस का ज़िक्र किसी वस्फ़ व ख़ूबी के साथ नहीं किया जाता, यूं कहा जाता है कि वोह भी आदमी हैं। मस्अला : इस से मा'लूम हुवा कि किसी को बशर कहने में उस के फ़ज़ाइलो कमालात के इन्कार का पहलू निकलता है। इस लिये

فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۗ إِنَّمَا

उन के दिलों में बीमारी है¹⁴ तो **ALLAH** ने उन की बीमारी और बढ़ाई और उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है बदला

كَانُوا يَكْذِبُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا

उन के झूट का¹⁵ और जो उन से कहा जाए ज़मीन में फ़साद न करो¹⁶ तो कहते हैं

إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ۝ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَكِن لَّا

हम तो संवारने वाले हैं सुनता है वोही फ़सादी हैं मगर उन्हें

يَشْعُرُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ امْنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ

शुक्र नहीं और जब उन से कहा जाए ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए हैं¹⁷ तो कहे क्या हम

كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ ۗ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَكِن لَّا يَعْلَمُونَ ۝

अहमकों की तरह ईमान ले आए¹⁸ सुनता है वोही अहमक हैं मगर जानते नहीं¹⁹

कुरआने पाक में जा बजा अम्बियाए किराम के बशर कहने वालों को काफ़िर फ़रमाया गया, और दर हकीकत अम्बिया की शान में ऐसा लफ़्ज़ अदब से दूर और कुफ़्फ़ार का दस्तूर है। बा'ज मुफ़्फ़िसरीन ने फ़रमाया: "مِنَ النَّاسِ" सामिईन को तअज्जुब दिलाने के लिये फ़रमाया गया कि ऐसे फ़रेबी मक्कार और ऐसे अहमक भी आदमियों में हैं। 14: **ALLAH** तआला इस से पाक है कि उस को कोई धोका दे सके वोह असरार व मख़्फ़यात का जानने वाला है। मुराद यह है कि मुनाफ़िक अपने गुमान में खुदा को फ़रेब देना चाहते हैं, या यह कि खुदा को फ़रेब देना येही है कि रसूल **ﷺ** को धोका देना चाहे क्यूं कि वोह उस के खलीफ़ा हैं और **ALLAH** तआला ने अपने हबीब को असरार का इल्म अता फ़रमाया है वोह उन मुनाफ़िकीन के छुपे कुफ़्र पर मुत्तलअ हैं और मुसलमान उन के इत्तिलाअ देने से बा ख़बर, तो उन बे दीनों का फ़रेब न खुदा पर चले न रसूल पर न मोमिनीन पर बल्कि दर हकीकत वोह अपनी जानों को फ़रेब दे रहे हैं। **मस्अला**: इस आयत से मा'लूम हुवा कि तक्फ़िया बड़ा ऐब है जिस मजहब की बिना तक्फ़िये पर हो वोह बातिल है, तक्फ़िये वाले का हाल काबिले ए'तिमाद नहीं होता, तौबा ना काबिले इत्मीनान होती है इस लिये उलमा ने फ़रमाया: "الْأَفْئَلُ نَوْبَةُ الْجَنْدِيْقِ" (जिन्दीक की तौबा कबूल नहीं होती)। 15: बद अक़ीदगी को कल्बी मरज़ फ़रमाया गया। इस से मा'लूम हुवा कि बद अक़ीदगी रूहानी जिन्दगी के लिये तबाह कुन है। **मस्अला**: इस आयत से साबित हुवा कि झूट ह़राम है इस पर अज़ाबे अलीम मुरत्तब होता है। 16: **मस्अला**: कुफ़्फ़ार से मेलजोल, उन की खातिर दीन में मुदाहनत (बा वुजूद कुदरत उन्हें बातिल से न रोकना) और अहले बातिल के साथ तमल्लुक व चापलूसी और उन की खुशी के लिये सुल्हे कुल बन जाना और इज़्हारे हक़ से बाज़ रहना शाने मुनाफ़िक और ह़राम है, इसी को मुनाफ़िकीन का फ़साद फ़रमाया गया। आज कल बहुत लोगों ने यह शेवा कर लिया है कि जिस जल्से में गए वैसे ही हो गए इस्लाम में इस की मुमानअत है, ज़ाहिरो बातिन का यक्सां न होना बड़ा ऐब है। 17: यहां "النَّاسِ" से या सहाबए किराम मुराद हैं या मोमिनीन क्यूं कि खुदा शनासी, फ़रमां बरदारी व अक़िबत अन्देशी की बदौलत वोही इन्सान कहलाने के मुस्तहक़ हैं। **मस्अला**: "امْنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ" (ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए हैं) से साबित हुवा कि सालिहीन का इत्तिबाअ महमूद व मतलूब है। **मस्अला**: यह भी साबित हुवा कि मजहबे अहले सुन्नत हक़ है क्यूं कि इस में सालिहीन का इत्तिबाअ है। **मस्अला**: बाकीं तमाम फ़िके सालिहीन से मुन्हरिफ़ हैं लिहाज़ा गुमराह हैं। **मस्अला**: बा'ज उलमा ने इस आयत को "जिन्दीक" की तौबा मकबूल होने की दलील करार दिया है। (ريحان) "जिन्दीक" वोह है जो नुबुव्वत का मुक़िर (इक़ार करता) हो, शआइरे इस्लाम का इज़्हार करे और बातिन में ऐसे अक़ीदे रखे जो बिल इत्तिफ़क़ कुफ़्र हों ये भी मुनाफ़िके में दाख़िल है। 18: इस से मा'लूम हुवा कि सालिहीन को बुरा कहना अहले बातिल का क़दीम तरीक़ा है, आज कल के बातिल फ़िके भी पिछले बुजुर्गों को बुरा कहते हैं रवाफ़िज़ खुलफ़्नाए राशिदीन और बहुत से सहाबा को, ख़वारिज़ हज़रते अली मुर्तजा **رضي الله تعالى عنه** और इन के रुफ़का को, ग़ैर मुक़ल्लिद अइम्माए मुज्ताहिदीन बिल खुसूस इमामे आ'ज़म **رضي الله تعالى عنه** को, वहाबिया व कसरत औलिया व मकबूलाने बारगाह को, मिरज़ाई अम्बियाए साबिकीन तक को, कुरआनी (चकडाली) सहाबा व मुहदिसीन को, नेचरी तमाम अक़ाबिरे दीन को बुरा कहते और ज़बाने ता'न दराज़ करते हैं, इस आयत से मा'लूम हुवा कि यह सब गुमराही में है। इस में दीनदार अ़ालिमों के लिये तसल्लती है कि वोह गुमराहों की बद ज़बानियों से बहुत रन्जीद न हों समझ लें कि यह अहले बातिल का क़दीम दस्तूर है। (مبارك) 19: मुनाफ़िकीन की यह बद ज़बानी मुसलमानों के सामने न थी इन से तो वोह येही कहते थे कि हम ब इख़्लास मोमिन हैं जैसा कि अगली आयत में है

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ

और जब ईमान वालों से मिलें तो कहें हम ईमान लाए और जब अपने शैतानों के पास अकेले हों²⁰

قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُونَ ۗ اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ

तो कहें हम तुम्हारे साथ हैं हम तो यूँही हंसी करते हैं²¹ **अल्लाह** उन से इस्तिहज़ा फ़रमाता है²² (जैसा उस

وَيَسُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالَةَ

की शान के लाइक है) और उन्हें ढील देता है कि अपनी सरकशी में भटकते रहें यह वोह लोग हैं जिन्होंने ने हिदायत के बदले गुमराही

بِالْهُدَىٰ ۖ فَبَارِبِحَتْ تِجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۗ مَثَلُهُمْ

ख़रीदी²³ तो उन का सौदा कुछ नफ़ा न लाया और वोह सौदे की राह जानते ही न थे²⁴ उन की कहावत

كَمَثَلِ الزَّيْتِ اسْتَوْقَدَ نَارًا ۖ فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

بَنُو رَاهِمُ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلْمٍ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٧﴾ صُمُّ بَكْمٌ عَنِّي فَهُمْ

नूर ले गया और उन्हें अंधेरियों में छोड़ दिया कि कुछ नहीं सूझता²⁵ बहरे गुंगे अन्धे तो वोह

لَا يَرْجِعُونَ ﴿١٨﴾ أَوْ كَصَيْبٍ مِّنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمٌ وَرَعْدٌ وَبُرْقٌ ج

फिर आने वाले नहीं या जैसे आस्मान से उतरता पानी कि उस में अंधेरियां हैं और गरज और चमक²⁶

يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ مِنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۗ وَاللَّهُ

अपने कानों में उंगलियां ठोंस रहे हैं कड़क के सबब मौत के डर से²⁷ और **الله**

مُحِيطٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبُرْقُ يَخْفُفُ أَبْصَارَهُمْ ۗ كَلْبًا أَضَاءَ لَهُمْ

काफ़िरों को घेरे हुए है²⁸ बिजली यूं मा'लूम होती है कि उन की निगाहें उचक ले जाएगी²⁹ जब कुछ चमक हुई

مَشْوَافِيهِ ۗ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا ۗ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ

उस में चलने लगे³⁰ और जब अंधेरा हुवा खड़े रह गए और अगर **الله** चाहता तो उन के

25 : यह उन की मिसाल है जिन्हें **الله** तआला ने कुछ हिदायत दी या इस पर कुदरत बख़्शी फिर उन्होंने ने इस को जाएअ कर दिया और अबदी दौलत को हासिल न किया, उन का मआल (अन्जाम) हरतो अप्सोस, हैरतो खौफ है। इस में वोह मुनाफ़िक भी दाखिल हैं जिन्होंने ने इज़हारे ईमान किया और दिल में कुफ़ रख कर इक्कार की रोशनी को जाएअ कर दिया, और वोह भी जो मोमिन होने के बा'द मुरतद हो गए, और वोह भी जिन्हें फ़ितरते सलीमा अता हुई और दलाइल की रोशनी ने हक़ को वाजेह किया मगर उन्होंने इस से फ़ाएदा न उठाया और गुमराही इख़्तियार की और जब हक़ सुनने मानने कहने, राहे हक़ देखने से महरूम हुए तो कान, ज़बान, आंख सब बेकार हैं। 26 : हिदायत के बदले गुमराही खरीदने वालों की यह दूसरी तम्सील है कि जैसे बारिश ज़मीन की हयात का सबब होती है और उस के साथ ख़ौफ़नाक तारीकियां और मुहीब गरज और चमक होती है इसी तरह "कुरआन व इस्लाम" कुलूब की हयात का सबब हैं, और ज़िक्रे "कुफ़ व शिर्क व निफ़ाक़" जुल्मत के मुशाबेह जैसे तारीकी रह रव (राह चलने वाले) को मन्ज़िल तक पहुंचने से मानेअ होती है ऐसे ही कुफ़ व निफ़ाक़ राहयाबी (राह पाने) से मानेअ हैं, और "वईदात" गरज के, और "हुजजे बय्यिना" चमक के मुशाबेह हैं। शाने नुज़ूल : मुनाफ़िकों में से दो आदमी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के पास से मुशिरकीन की तरफ़ भागे राह में येही बारिश आई जिस का आयत में ज़िक्र है उस में शिदत की गरज, कड़क और चमक थी, जब गरज होती तो कानों में उंगलियां ठोंस लेते कि कहीं यह कानों को फ़ाड़ कर मार न डाले, जब चमक होती चलने लगते, जब अंधेरी होती अन्धे रह जाते, आपस में कहने लगे : खुदा ख़ैर से सुब्क करे तो हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अपने हाथ हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के दस्ते अक्दस में दें, चुनाच्चे उन्होंने ने ऐसा ही किया और इस्लाम पर साबित कदम रहे। उन के हाल को **الله** तआला ने मुनाफ़िकीन के लिये मसल (कहावत) बनाया जो मजलिस शरीफ़ में हाज़िर होते तो कानों में उंगलियां ठोंस लेते कि कहीं हुज़ूर का कलाम उन में असर न कर जाए जिस से मर ही जाएं, और जब उन के माल व औलाद ज़ियादा होते और फ़तूह व ग़नीमत मिलती तो बिजली की चमक वालों की तरह चलते और कहते कि अब तो दीने मुहम्मदी सच्चा है, और जब माल व औलाद हलाक होते और कोई बला आती तो बारिश की अंधेरियों में टिटक रहने वालों की तरह कहते कि यह मुसीबतें इसी दीन की वजह से हैं और इस्लाम से पलट जाते। (باب احوال السيوطي) 27 : जैसे अंधेरी रात में काली घटा छाई हो और बिजली की गरज व चमक जंगल में मुसाफ़िर को हैरान करती हो, और वोह कड़क की वहशत नाक आवाज़ से ब अन्देशाए हलाक कानों में उंगलियां ठोंसता हो। ऐसे ही कुफ़फ़ार कुरआने पाक के सुनने से कान बन्द करते हैं और उन्हें यह अन्देशा होता है कि कहीं इस के दिल नशीन मज़ामीन इस्लाम व ईमान की तरफ़ माइल कर के बाप दादा का कुफ़्री दीन तर्क न करा दें जो उन के नज्दीक मौत के बराबर है। 28 : लिहाज़ा यह गुरेज़ उन्हें कुछ फ़ाएदा नहीं दे सकती क्यूं कि वोह कानों में उंगलियां ठोंस कर क़हरे इलाही से ख़लास (छुटकारा) नहीं पा सकते। 29 : जैसे बिजली की चमक मा'लूम होता है कि बीनाई को जाइल कर देगी ऐसे ही दलाइले बाहिरा के अन्वार उन की बसर व बसीरत को ख़ीरा (तारीक) करते हैं। 30 : जिस तरह अंधेरी रात और अन्न व बारिश की तारीकियों में मुसाफ़िर मुतहय्यिर होता है जब बिजली चमकती है तो कुछ चल लेता है जब अंधेरा होता है खड़ा रह जाता है इसी तरह इस्लाम के ग़लबे और मो'जिज़ात की रोशनी और आराम के वक़्त मुनाफ़िक़ इस्लाम की तरफ़ राग़िब होते हैं और जब कोई मशक्कत पेश आती

بِسْمِعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾ يَا أَيُّهَا

कान और आंखें ले जाता³¹ बेशक **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है³² ऐ

النَّاسِ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ

लोगो³³ अपने रब को पूजो जिस ने तुम्हें और तुम से अगलों को पैदा किया यह उम्मीद करते हुए

تَتَّقُونَ ﴿٢١﴾ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً ۖ

कि तुम्हें परहेज गारी मिले³⁴ जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछोना और आस्मान को इमारत बनाया

وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَكُمْ ۗ فَلَا

और आस्मान से पानी उतारा³⁵ तो उस से कुछ फल निकाले तुम्हारे खाने को तो

تَجْعَلُوا لِلَّهِ أُنْدَادًا وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٢﴾ وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِمَّا

अल्लाह के लिये जान बूझ कर बराबर वाले न ठहराओ³⁶ और अगर तुम्हें कुछ शक हो उस में जो

نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ ۖ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ مِمَّنْ

हम ने अपने इन खास बन्दे³⁷ पर उतारा तो उस जैसी एक सूत तो ले आओ³⁸ और **अल्लाह** के सिवा अपने सब

है तो कुफ़र की तारीकी में खड़े रह जाते हैं और इस्लाम से हटने लगते हैं, इसी मज़मून को दूसरी आयत में इस तरह इर्शाद फ़रमाया :

31 : يَا نَبِيَّ أَمَلِ الْيَوْمِ الْآخِرِ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ مُعْرِضُونَ وَإِنْ يَكُنْ لَهُمُ الْحُكْمُ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِبِينَ ۚ

या'नी अगर्चे मुनाफ़िकीन का तर्जुं अमल इस का मुक़्तज़ी था मगर **अल्लाह** तआला ने उन के सम्भू व बसर को बातिल न किया। **मस्अला** : इस से मा'लूम हुवा कि

अस्बाब की तासीर मशिय्यते इलाहिय्यह के साथ मशरूत है, बिगैर मशिय्यत तन्हा अस्बाब कुछ नहीं कर सकते। **मस्अला** : यह भी मा'लूम

हुवा कि मशिय्यत अस्बाब की मोहताज नहीं वोह बे सबब जो चाहे कर सकता है। 32 : "शै" उसी को कहते हैं जिसे **अल्लाह** चाहे और

जो तहूते मशिय्यत आ सके, तमाम मुम्किननात "शै" में दाखिल हैं इस लिये वोह तहूते कुदरत हैं, और जो मुम्किन नहीं वाजिब या मम्तनेअ

है उस से कुदरत व इरादा मुतअल्लिक नहीं होता जैसे **अल्लाह** तआला की ज़ात व सिफ़ात वाजिब हैं इस लिये मक्दूर नहीं। **मस्अला** : बारी

तआला के लिये झूट और तमाम उयूब मुहाल हैं इसी लिये कुदरत को इन से कुछ वासिता नहीं। 33 : अब्वले सूत में कुछ बताया गया कि यह

किताब मुत्कनीन की हिदायत के लिये नाज़िल हुई, फिर मुत्कनीन के औसाफ़ का ज़िक्र फ़रमाया, इस के बा'द इस से मुन्हरिफ़ होने वाले फ़िक्रों का

और उन के अहवाल का ज़िक्र फ़रमाया कि सआदत मन्द इन्सान हिदायत व तक्वा की तरफ़ रागिब हो और ना फ़रमानी व बगावत से बचे, अब

तरीके तहसीले तक्वा ता'लीम फ़रमाया जाता है। "يَا أَيُّهَا النَّاسُ" (ऐ लोगो) का खिताब अक्सर अहले मक्का को और "يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا" (ऐ इमान

वालो) का अहले मदीना को होता है मगर यहां येह खिताब मोमिन, काफ़िर सब को आंम है, इस में इशारा है कि इन्सानी शराफ़त इसी में है कि आदमी

तक्वा हासिल करे और मसरूफ़े इबादत रहे। "इबादत" वोह गायते ता'ज़ीम है जो बन्दा अपनी अब्दिय्यत और मा'बूद की उलूहिय्यत के ए'तिक़ाद

व ए'तिराफ़ के साथ बजा लाए, यहां इबादत आम है, अपने तमाम अन्वाओ अक्साव व उसूलो फ़ुरूअ को शामिल है। **मस्अला** : कुफ़्फ़ार इबादत

के मामूर हैं जिस तरह बे वुजू होना नमाज़ के फ़र्ज होने का मानेअ नहीं इसी तरह काफ़िर होना वुजूबे इबादत को मन्अ नहीं करता, और जैसे

बे वुजू शख्स पर नमाज़ की फ़र्जिय्यत रफ़ू हदस लाज़िम करती है ऐसे ही काफ़िर पर वुजूबे इबादत से तर्के कुफ़र लाज़िम आता है। 34 : इस

से मा'लूम हुवा कि इबादत का फ़ाएदा आबिद ही को मिलता है, **अल्लाह** तआला इस से पाक है कि उस को इबादत या और किसी चीज़

से नफ़अ हासिल हो। 35 : पहली आयत में ने'मते ईजाद का बयान फ़रमाया कि तुम्हें और तुम्हारे आबा को मा'दूम से मौजूद किया और दूसरी

आयत में अस्बाबे मईशत व आसाइश व आबो गिज़ा का बयान फ़रमा कर ज़ाहिर कर दिया कि वोही वलिय्ये ने'मत है तो गैर की परस्तिश

महज़ू बातिल है। 36 : तौहीदे इलाही के बा'द हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَامُ** की नुबुव्वत और कुरआने करीम के किताबे इलाही

व मो'जिज़ (आज़िज़ कर देने वाली किताब) होने की वोह काहिर दलील बयान फ़रमाई जाती है जो तालिबे सादिक् को इत्मीनान बख़्शे और

मुन्किरो को आज़िज़ कर दे। 37 : बन्दए खास से हुज़ुरे पुरनूर सय्यिदे आलम **عَلَيْهِمُ السَّلَامُ** मुपाद हैं। 38 : या'नी ऐसी सूत बना कर

دُونَ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٣﴾ فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا

हिमायतियों को बुला लो अगर तुम सच्चे हो फिर अगर न ला सको और हम फरमाए देते हैं कि हरगिज़ न ला सकोगे तो डरो

النَّارِ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۗ أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ﴿٢٤﴾ وَبَشِّرِ

उस आग से जिस का ईंधन आदमी और पथर हैं³⁹ तय्यार रखी है काफ़िरों के लिये⁴⁰ और खुश ख़बरी दे

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا

उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि उन के लिये बाग़ हैं जिन के नीचे

الْأَنْهَارُ ۖ كُلًّا رِزْقًا مِنْ شَرَرَةٍ رِزْقًا ۗ قَالُوا هَذَا الَّذِي

नहरें रवां⁴¹ जब उन्हें उन बागों से कोई फल खाने को दिया जाएगा सूत देख कर कहेंगे यह तो वोही

رِزْقًا مِنْ قَبْلُ ۗ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ مُتَشَابِهًا ۗ وَلَهُمْ فِيهَا أَنْجُمٌ مُطَهَّرَةٌ ۗ

रिज़क है जो हमें पहले मिला था⁴² और वोह सूत में मिलता जुलता उन्हें दिया गया और उन के लिये उन बागों में सुथरी बीबियां हैं⁴³

وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٥﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا

और वोह उन में हमेशा रहेगे⁴⁴ बेशक **الله** इस से हया नहीं फरमाता कि मिसाल समझाने को कैसी ही चीज़ का जिक्र फरमाए

بَعُوضَةً فَمَا فَوْقَهَا ۗ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنََّّهُ الْحَقُّ مِنْ

मच्छर हो या उस से बड़ कर⁴⁵ तो वोह जो ईमान लाए वोह तो जानते हैं कि येह उन के रब की तरफ़

رَبِّهِمْ ۗ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا ۗ

से हक़ है⁴⁶ रहे काफ़िर वोह कहते हैं ऐसी कहावत में **الله** का क्या मक़सूद है

लाओ जो फ़साहतो बलागत और हुस्ने नज़्म व तरतीब और ग़ैब की ख़बरें देने में क़ुरआने पाक की मिस्त हो । 39 : पथर से वोह बुत मुराद हैं जिनहें

कुफ़्फ़र पूजते हैं और उन की महबूबत में क़ुरआने पाक और रसूले क़रीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** का इनादन इन्कार करते हैं । 40 : मस्अला : इस से मा'लूम

हुवा कि दोज़ख़ पैदा हो चुकी है । मस्अला : येह भी इशारा है कि मोमिनीन के लिये बि करमिही तअ़ाला खुलूदे नार या'नी हमेशा जहन्नम में रहना

नहीं । 41 : सुन्ते इलाही है कि किताब में तरहीब के साथ तरगीब ज़िक्र फरमाता है इसी लिये कुफ़्फ़र और उन के आ'माल व अज़ाब के ज़िक्र

के बा'द मोमिनीन और उन के आ'माल का ज़िक्र फरमाया और उन्हें जन्नत की बिशारत दी । "صَالِحَاتٍ" या'नी नेकियां वोह अमल हैं जो शरअन

अच्छे हों, इन में फ़राइज़ व नवाफ़िल सब दाख़िल हैं । (عَلَمِينَ) मस्अला : अमले सालेह का ईमान पर अतफ़ दलील है इस की, कि अमल जुज्वे ईमान

नहीं । मस्अला : येह बिशारत मोमिनीने सालिहीन के लिये बिला कैद है और गुनहगारों को जो बिशारत दी गई है वोह मुक़य्यद ब मशिय्यते इलाही

है कि चाहे अज़ राहे करम मुआफ़ फरमाए, चाहे गुनाहों की सज़ा दे कर जन्नत अता करे । (مَارَك) 42 : जन्नत के फ़ल बाहम मुशाबेह होंगे और

जाएके उन के जुदा जुदा, इस लिये जन्नत की कहेंगे कि येही फ़ल तो हमें पहले मिल चुका है, मगर खाने से नई लज़ज़त पाएंगे तो उन का लुफ़ बहुत

ज़ियादा हो जाएगा । 43 : जन्ती बीबियां, ख़्वाह हूरें हों या और, सब ज़नाने अवारिज़ और तमाम नापाकियों और गन्दगियों से मुबरा होंगी, न जिस्म

पर मैल होगा न बौलो बराज़, इस के साथ ही वोह बद मिज़ाजी व बद खुल्की से भी पाक होंगी । (مَارَكِ دَعَارِن) 44 : या'नी अहले जन्नत न कभी फ़ना

होंगे न जन्नत से निकले जाएंगे । मस्अला : इस से मा'लूम हुवा कि जन्नत व अहले जन्नत के लिये फ़ना नहीं । 45 : शाने नुज़ूल : जब **الله** तअ़ाला

ने आयए "مَنْ لَهُمْ كَمَلُ الذِّبْيِ اسْتَوْقَدَ" और आयए "أَوْ كَصَيْبٍ" में मुनाफ़िकों की दो मिसालें बयान फरमाई तो मुनाफ़िकों ने येह ए'तिराज़ किया

कि **الله** तअ़ाला इस से बालातर है कि ऐसी मिसालें बयान फरमाए, इस के रद में येह आयत नाज़िल हुई । 46 : चूंक मिसालों का बयान

يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا ۗ وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾

اللّٰهُ 48 बहुतेरों को इस से गुमराह करता है 47 और बहुतेरों को हिदायत फरमाता है और इस से उन्हें गुमराह करता है जो बे हुकम हैं

الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ

वोह जो अल्लाह के अहद को तोड़ देते हैं 49 पक्का होने के बाद और काटते हैं उस चीज को जिस के

اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۗ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٢٧﴾

जोड़ने का खुदा ने हुकम दिया और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं 50 (الف) वोही नुकसान में हैं

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمَيِّتُكُمْ ثُمَّ

भला तुम क्यूंकर खुदा के मुन्किर होगे हालां कि तुम मुर्दा थे उस ने तुम्हें जिलाया फिर तुम्हें मारेगा फिर

يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٨﴾ هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ

तुम्हें जिलाया फिर उसी की तरफ पलट कर जाओगे 50 (ب) वोही है जिस ने तुम्हारे लिये बनाया जो कुछ ज़मीन

मुक्तजाए हिक्मत और मज़मून को दिल नशीन करने वाला होता है और फुसहाए अरब का दस्तूर है इस लिये इस पर ए'तिराज गलत व

बे जा है और बयाने अम्मिसला हक है । 47 : "يُضِلُّ بِهِ" कुपफ़ार के इस मकूले का जवाब है कि अल्लाह तआला का इस मसल से क्या

मकसूद है और "أَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا" और "أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا" जो दो जुम्ले ऊपर इशाद हुए उन की तफ़सीर है कि इस मसल से बहुतों को गुमराह

करता है जिन की अक़्लों पर जहल ने ग़लबा किया है और जिन की आदत मुकाबरा व इनाद (तकबुर व सरकशी) है और जो अग्रे हक

और खुली हिक्मत के इन्कार व मुख़ालफ़त के ख़ूबर हैं, और बा वुजूदे कि येह मसल निहायत ही बर महल है फिर भी इन्कार करते हैं ।

और इस से अल्लाह तआला बहुतों को हिदायत फ़रमाता है जो ग़ौर व तहक़ीक़ के आदी हैं और इन्साफ़ के ख़िलाफ़ बात नहीं कहते वोह

जानते हैं कि हिक्मत येही है कि अज़ीमुल मर्तबा चीज़ की तम्मिल किसी कद्र वाली चीज़ से और हक़ीर चीज़ की अदना शै से दी जाए जैसा

कि ऊपर की आयत में हक़ की नूर से और बातिल की जुल्मत से तम्मिल दी गई । 48 : शरअ में फ़ासिक उस ना फ़रमान को कहते हैं जो

कबीरा का मुरतकिब हो, फ़िस्क़ के तीन दरजे हैं : एक "तग़ाबी" वोह येह कि आदमी इतिफ़ाक़िया किसी कबीरा गुनाह का मुरतकिब हुवा

और उस को बुरा ही जानता रहा । दूसरा "इन्हिमाक़" कि कबीरा का आदी हो गया और उस से बचने की परवाह न रही । तीसरा "जुहूद"

कि हराम को अच्छा जान कर इरतिकाब करे, इस दरजे वाला ईमान से महरूम हो जाता है, पहले दो दरजों में जब तक अकबरे कबाइर (कुफ़

व शिर्क) का इरतिकाब न करे उस पर मोमिन का इत्लाक़ होता है । यहां "फ़ासिकीन" से वोही ना फ़रमान मुराद हैं जो ईमान से ख़ारिज हो

गए, कुरआने करीम में कुपफ़ार पर भी फ़ासिक़ का इत्लाक़ हुवा है : "إِنَّ الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفٰسِقُونَ" । बा'ज मुफ़स्सरीन ने यहां फ़ासिक़ से

काफ़िर मुराद लिये, बा'ज ने मुनाफ़िक़, बा'ज ने यहूद । 49 : इस से वोह अहद मुराद है जो अल्लाह तआला ने कुतुबे साबिका में हुजूर सथियदे

आलम आलादे आदम से लिया कि उस की रबूबिय्यत का इक़्ार करें, इस का बयान इस आयत में है "وَأَذِّنْ لِقَوْمٍ... الْآيَةَ" । दूसरा अहद

अम्बिया के साथ मख़सूस है कि रिसालत की तब्लीग़ फ़रमाएं और दीन की इक़ामत करें, इस का बयान आयए "وَأَذِّنْ لِقَوْمٍ... الْآيَةَ" में है ।

तीसरा अहद उलमा के साथ ख़ास है कि हक़ को न छुपाएं, इस का बयान "وَأَذِّنْ لِقَوْمٍ... الْآيَةَ" में है । 50 (الف) : रिश्ता व

कराबत के तअल्लुकात, मुसलमानों की दोस्ती व महब्वत, तमाम अम्बिया का मानना, कुतुबे इलाही की तस्दीक़, हक़ पर जम्अ होना येह वोह चीज़ें

हैं जिन के मिलाने का हुकम फ़रमाया गया इन में क़अ करना, बा'ज को बा'ज से नाहक़ जुदा करना, तफ़रूकों की बिना डालना मन्मअ फ़रमाया

गया । 50 (ب) : दलाइले तौहीदो नुबुव्वत और जज़ाए कुफ़रो ईमान के बाद अल्लाह तआला ने अपनी आ़म व ख़ास ने'मतों का और

आसारे कुदरत व अज़ाइबो हिक्मत का ज़िक़र फ़रमाया और कबाहते कुफ़र दिल नशीं करने के लिये कुपफ़ार को ख़िताब फ़रमाया कि तुम किस

तरह खुदा के मुन्किर होते हो बा वुजूदे कि तुम्हारा अपना हाल उस पर ईमान लाने का मुक्तज़ी है कि तुम मुर्दा थे । मुर्दा से जिस्मे बेजान मुराद

है, हमारे उर्फ़ में भी बोलते हैं ज़मीन मुर्दा हो गई, अरबी में भी मौत इस मा'नी में आई, खुद कुरआने पाक में इशाद हुवा : "يٰۤاَيُّهَا الْاَرْضُ بَعْدَ مَوْتِهَا"

جَبِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ ۗ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٩﴾

में है⁵¹ फिर आस्मान की तरफ इस्तवा (क़स्द) फ़रमाया तो ठीक सात आस्मान बनाए और वोह सब

شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٩﴾ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ جَاعِلٌ فِى الْاَرْضِ

कुछ जानता है⁵² और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया मैं ज़मीन में अपना नाइब बनाने

خَلِيْفَةً ۗ قَالُوْۤا اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ

वाला हूँ⁵³ बोले क्या ऐसे को नाइब करेगा जो इस में फ़साद फैलाए और खूँ रेज़ियां करे⁵⁴

وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۗ قَالَ اِنِّيْۤ اَعْلَمُ مَا لَا

और हम तुझे सराहते हुए तेरी तस्बीह करते और तेरी पाकी बोलते हैं फ़रमाया मुझे मा'लूम है जो तुम

تَعْلَمُوْنَ ۗ وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ

नहीं जानते⁵⁵ और **अल्लाह** तआला ने आदम को तमाम अश्या के नाम सिखाए⁵⁶ फिर सब अश्या मलाएका पर पेश कर के

तो मतलब यह है कि तुम बेजान जिस्म थे उन्सुर की सूत में, फिर गिज़ा की शकल में, फिर अख़लात की शान में, फिर नुत्फ़े की हालत में, उस ने तुम को जान दी, जिन्दा फ़रमाया, फिर उम्र की मीआद पूरी होने पर तुम्हें मौत देगा, फिर तुम्हें जिन्दा करेगा इस से या क़ब्र की जिन्दीगी मुराद है जो सुवाल के लिये होगी या हश्र की, फिर तुम हिसाब व जज़ा के लिये उस की तरफ़ लौटाए जाओगे, अपने इस हाल को जान कर तुम्हारा कुफ़्र करना निहायत अज़ीब है। एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का यह भी है कि كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ का ख़िताब मोमिनीन से है और मतलब यह है कि तुम किस तरह काफ़िर हो सकते हो दरआं हाले कि तुम जहल की मौत से मुर्दा थे **अल्लाह** तआला ने तुम्हें इल्म व इमान की जिन्दीगी अता फ़रमाई, इस के बा'द तुम्हारे लिये वोही मौत है जो उम्र गुज़रने के बा'द सब को आया करती है, इस के बा'द वोह तुम्हें हकीकी दाइमी हयात अता फ़रमाएगा फिर तुम उस की तरफ़ लौटाए जाओगे और वोह तुम्हें ऐसा सवाब देगा जो न किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना न किसी दिल पर उस का ख़तरा गुज़रा। 51 : या'नी कानें, सब्जे, जानवर, दरिया, पहाड़ जो कुछ ज़मीन में हैं सब **अल्लाह** तआला ने तुम्हारे दीनी व दुन्यवी नफ़अ के लिये बनाए, दीनी नफ़अ इस तरह कि ज़मीन के अज़ाइबात देख कर तुम्हें **अल्लाह** तआला की हिक्मत को क़ुदरत की मा'रिफ़त हो, और दुन्यवी मनाफ़अ यह कि खाओ पियो आराम करो अपने कामों में लाओ, तो इन ने'मतों के बा वुजूद तुम किस तरह कुफ़्र करोगे। **मसअला** : कर्खी व अबू बक्र राज़ी वगैरा ने "حَلَقَ لَكُمْ" को काबिले इन्तिफ़अ अश्या के मुबाहुल अस्ल होने की दलील क़ार दिया है। 52 : या'नी यह ख़िल्क़त व ईजाद **अल्लाह** तआला के आलिमे ज़मीअ अश्या होने की दलील है क्यूं कि ऐसी पुर हिक्मत मख़्लूक का पैदा करना बिगैर इल्मे मुहीत के मुम्किन व मुतसव्वर नहीं। मरने के बा'द जिन्दा होना काफ़िर मुहाल जानते थे इन आयतों में उन के बुतलान पर क़वी बुरहान काइम फ़रमा दी कि जब **अल्लाह** तआला कादिर है, अलीम है और अबदान के मादे जम्अ व हयात की सलाहि्यत भी रखते हैं तो मौत के बा'द हयात कैसे मुहाल हो सकती है? पैदाइश आस्मानो ज़मीन के बा'द **अल्लाह** तआला ने आस्मान में फ़िरिश्तों को और ज़मीन में जिन्नात को सुकूनत दी, जिन्नात ने फ़साद अंगेज़ी की तो मलाएका की एक जमाअत भेजी जिस ने इन्हें पहाड़ों और जज़ीरों में निकाल भगाया। 53 : "ख़लीफ़ा" अहक़ाम व अवामिर के इज़रा व दीगर तसरूफ़ात में अस्ल का नाइब होता है, यहां ख़लीफ़ा से हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** मुराद हैं अगर्चे और तमाम अम्बिया भी **अल्लाह** तआला के ख़लीफ़ा हैं, हज़रते दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** के हक़ में फ़रमाया : "يٰۤاٰدَمُ اِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ"। फ़िरिश्तों को खिलाफ़ते आदम की ख़बर इस लिये दी गई कि वोह इन के ख़लीफ़ा बनाए जाने की हिक्मत दरयाफ़्त कर के मा'लूम कर लें और उन पर ख़लीफ़ा की अज़मतो शान ज़ाहिर हो कि इन को पैदाइश से क़बल ही ख़लीफ़ा का लक़ब अता हुवा और आस्मान वालों को इन की पैदाइश की बिशारत दी गई। **मसअला** : इस में बन्दों को ता'लीम है कि वोह काम से पहले मशवरा किया करें और **अल्लाह** तआला इस से पाक है कि उस को मशवरे की हाज़त हो। 54 : मलाएका का मक़सद ए'तिराज़ या हज़रते आदम पर ता'न नहीं बल्कि हिक्मतते खिलाफ़त दरयाफ़्त करना है और इन्सानों की तरफ़ फ़साद अंगेज़ी की निस्बत करना इस का इल्म या उन्हें **अल्लाह** तआला की तरफ़ से दिया गया हो, या लौहे महफूज़ से हासिल हुवा हो, और या खुद उन्हों ने जिन्नात पर क़ियास किया हो। 55 : या'नी मेरी हिक्मतें तुम पर ज़ाहिर नहीं। बात यह है कि इन्सानों में अम्बिया भी होंगे, औलिया भी, उलमा भी और वोह इल्मी व अमली दोनों फ़ज़ीलतों के जामेअ होंगे। 56 : **अल्लाह** तआला ने हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** पर तमाम अश्या व जुम्ला मुसम्मयात पेश फ़रमा

فَقَالَ أَنبِيُّنِي بِأَسْمَاءِ هَؤُلَاءِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝٣١ قَالُوا

फ़रमाया सच्चे हो तो इन के नाम तो बताओ⁵⁷ बोले

سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ۗ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝٣٢

पाकी है तुझे हमें कुछ इल्म नहीं मगर जितना तूने हमें सिखाया बेशक तू ही इल्म व हिक्मत वाला है⁵⁸

قَالَ يَا آدَمُ أَنْبِئْهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ ۚ فَلَمَّا أَنْبَأَهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ ۗ قَالَ

फ़रमाया ऐ आदम बता दे इन्हें सब अश्या के नाम जब आदम ने उन्हें सब के नाम बता दिये⁵⁹ फ़रमाया

أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَأَعْلَمُ مَا

मैं न कहता था कि मैं जानता हूँ आस्मानों और ज़मीन की सब छुपी चीज़ें और मैं जानता हूँ जो कुछ

تُبْدُونَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ۝٣٣ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ

तुम ज़ाहिर करते और जो कुछ तुम छुपाते हो⁶⁰ और याद करो जब हम ने फ़िरिशतों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो

فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۗ أَبَىٰ وَاسْتَكْبَرَ ۗ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٣٤ وَقُلْنَا

तो सब ने सज्दा किया सिवाए इब्लिस के मुन्करि हुवा और गुरूर किया और काफ़िर हो गया⁶¹ और हम ने फ़रमाया

कर आप को उन के अस्मा व सिफ़त व अप्आल व ख़वास व उसूले उलूम व सनाआत सब का इल्म ब तरीके इल्हाम अता फ़रमाया । 57 : या'नी अगर तुम अपने इस ख़याल में सच्चे हो कि मैं कोई मख़्लूक़ तुम से ज़ियादा आलिम पैदा न करूंगा और ख़िलाफ़्त के तुम ही मुस्तहिक् हो तो इन चीज़ों के नाम बताओ क्यूं कि ख़लीफ़ का काम तसर्रुफ़ व तदबीर और अदलो इन्साफ़ है और यह बिग़ैर इस के मुम्किन नहीं कि ख़लीफ़ को उन तमाम चीज़ों का इल्म हो जिन पर उस को मुतसर्रिफ़ फ़रमाया गया और जिन का उस को फ़ैसला करना है । **मस्अला** : **अल्लाह** तआला ने हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** के मलाएका पर अफ़ज़ल होने का सबब इल्म ज़ाहिर फ़रमाया, इस से साबित हुवा कि इल्मे अस्मा ख़ल्वतों और तन्हाइयों की इबादत से अफ़ज़ल है । **मस्अला** : इस आयत से येह भी साबित हुवा कि अम्बिया **السَّلَام** मलाएका से अफ़ज़ल हैं । 58 : इस में मलाएका की तरफ़ से अपने इज्ज व कुसूर का ए'तिराफ़ इस अन्न का इच्हार है कि उन का सुवाल इस्तिफ़सारन था न कि ए'तिराज़न । और अब उन्हें इन्सान की फ़ज़ीलत और इस की पैदाइश की हिक्मत मा'लूम हो गई जिस को वोह पहले न जानते थे । 59 : या'नी हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** ने हर चीज़ का नाम और उस की पैदाइश की हिक्मत बता दी । 60 : मलाएका ने जो बात ज़ाहिर की थी वोह येह थी कि इन्सान फ़साद अंगेज़ी व ख़ूनरेज़ी करेगा और जो बात छुपाई थी वोह येह थी कि मुस्तहिक्के ख़िलाफ़्त वोह खुद हैं और **अल्लाह** तआला उन से अफ़ज़लो आ'लम कोई मख़्लूक़ पैदा न फ़रमाएगा । **मस्अला** : इस आयत से इन्सान की शराफ़्त और इल्म की फ़ज़ीलत साबित होती है और येह भी कि **अल्लाह** तआला की तरफ़ ता'लीम की निस्बत करना सहीह है अगर्चे उस को मुअल्लिम न कहा जाएगा क्यूं कि मुअल्लिम पेशावर ता'लीम देने वाले को कहते हैं । **मस्अला** : इस से येह भी मा'लूम हुवा कि जुम्ला लुगात और कुल जबानें **अल्लाह** तआला की तरफ़ से हैं । **मस्अला** : येह भी साबित हुवा कि मलाएका के उलूम व कमालात में ज़ियादती होती है । 61 : **अल्लाह** तआला ने हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** को तमाम मौजूदात का नमूना और आलमे रूहानी व जिस्मानी का मज्मूआ बनाया और मलाएका के लिये हुसूले कमालात का वसीला किया तो उन्हें हुक्म फ़रमाया कि हज़रते आदम को सज्दा करें क्यूं कि इस में शुक्र गुज़ारी और हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** की फ़ज़ीलत के ए'तिराफ़ और अपने मक़ूले की मा'ज़िरत की शान पाई जाती है । बा'ज़ मुफ़रिस्सरीन का कौल है कि **अल्लाह** तआला ने हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** को पैदा करने से पहले ही मलाएका को सज्दे का हुक्म दिया था, उन की सनद येह आयत है : **«فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ط»** (يعاذن) सज्दे का हुक्म तमाम मलाएका को दिया गया था येही असहह है । (نارن) **मस्अला** : सज्दा दो तरह का होता है एक सज्दए इबादत जो ब कस्दे परस्तिश किया जाता है, दूसरा सज्दए तहिय्यत जिस से मस्जूद की ता'ज़ीम मन्ज़ूर होती है न कि इबादत । **मस्अला** : सज्दए इबादत **अल्लाह** तआला के लिये ख़ास है किसी और के लिये नहीं हो सकता, न किसी शरीअत में कभी जाइज़ हुवा । यहां जो मुफ़रिस्सरीन सज्दए इबादत मुराद लेते हैं वोह फ़रमाते हैं कि सज्दा ख़ास **अल्लाह** तआला के लिये था और हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** किब्ला बनाए गए थे तो वोह मस्जूद इलैह थे न कि मस्जूद लहू

يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا

ऐ आदम तू और तेरी बीबी इस जन्नत में रहो और खाओ इस में से बे रोक टोक जहां तुम्हारा जी चाहे

وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣٥﴾ فَازْلَمَهُمَا

मगर उस पेड़ के पास न जाना⁶² कि हृद से बढ़ने वालों में हो जाओगे⁶³ तो शैतान ने

الشَّيْطَانَ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ

जन्नत से उन्हें लज्जिश दी और जहां रहते थे वहां से उन्हें अलग कर दिया⁶⁴ और हम ने फरमाया नीचे उतरो⁶⁵ आपस में एक

لِبَعْضٍ عَدُوٌّ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٣٦﴾ فَتَلَقَىٰ

तुम्हारा दूसरे का दुश्मन और तुम्हें एक वक्त तक ज़मीन में ठहरना और बरतना है⁶⁶ फिर सीख लिये

آدَمُ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۗ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٣٧﴾ قُلْنَا

आदम ने अपने रब से कुछ कलिमे तो **ALLAH** ने उस की तौबा कबूल की⁶⁷ बेशक वोही है बहुत तौबा कबूल करने वाला मेहरबान हम ने फरमाया

मगर यह कौल ज़ईफ है क्यूं कि इस सज्दे से हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَامُ का फज़्लो शरफ जाहिर फरमाना मक्सूद था और मस्जुद इलैह का साजिद से अफज़ल होना कुछ ज़रूर नहीं। जैसा कि का'बए मुअज़्जमा हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का किब्ला व मस्जुद इलैह है बा वुजूदे कि हुज़ूर उस से अफज़ल हैं। दूसरा कौल यह है कि यहां सज्दए इबादत न था सज्दए तहिय्यत था और ख़ास हज़रते आदम

के लिये था, ज़मीन पर पेशानी रख कर था न कि सिर्फ झुकना, येही कौल सहीह है और इसी पर जम्हूर हैं। (मार्क) **मस्अला** : सज्दए तहिय्यत पहली शरीअतों में जाइज़ था, हमारी शरीअत में मन्सूख किया गया अब किसी के लिये जाइज़ नहीं है क्यूं कि जब हज़रते सलमान

ने हुज़ुरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को सज्दा करने का इरादा किया तो हुज़ूर ने फरमाया कि मख्लूक को न चाहिये कि **ALLAH**

तआला के सिवा किसी को सज्दा करे। (मार्क) मलाएका में सब से पहले सज्दा करने वाले हज़रते जिब्रील हैं फिर मीकाईल फिर इसराफ़ील फिर इज़राईल फिर और मलाइकाए मुकर्रबीन, येह सज्दा जुमुआ के रोज़ वक़ते ज़वाल से अस् तक किया गया। एक कौल येह भी है कि मलाइकाए मुकर्रबीन सो बरस और एक कौल में पांच सो बरस सज्दे में रहे, शैतान ने सज्दा न किया और बराहे तकबुर येह ए'तिकाद करता रहा कि वोह हज़रते आदम से अफज़ल है, उस के लिये सज्दे का हुक्म تَعَالَى तआला ख़िलाफ़े हिकमत है, इस ए'तिकादे बातिल से वोह काफ़िर हो गया। **मस्अला** : आयत में दलालत है कि हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَامُ फ़िरिशतों से अफज़ल हैं कि उन से इन्हें सज्दा कराया गया। **मस्अला** :

तकबुर निहायत कबीह है इस से कभी मुतकब्बर की नौबत कुफ़र तक पहुंचती है। (य़हादिस) 62 : इस से गन्दुम या अंगूर वगैरा मुराद है। 63 : जुल्म के मा'ना हैं : किसी शै को बे महल वज़अ करना, येह मन्मूअ है और अम्बिया मा'सूम हैं इन से गुनाह सरजद नहीं होता, यहां जुल्म ख़िलाफ़े औला के मा'नी में है। **मस्अला** : अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَامُ को ज़ालिम कहना इहानत व कुफ़र है जो कहे वोह काफ़िर हो जाएगा, **ALLAH** तआला मालिको मौला है जो चाहे फ़रमाए इस में उन की इज़्ज़त है, दूसरे की क्या मजाल कि ख़िलाफ़े अदब कलिमा ज़बान पर लाए और ख़िताबे हज़रते हक़ को अपनी जुरअत के लिये सनद बनाए, हमें ता'जीमो तौकीर और अदब व ताअत का हुक्म फ़रमाया हम पर येही लाज़िम है। 64 : शैतान ने किसी तरह हज़रते आदम व हव्वा (عَلَيْهِمَا السَّلَامُ) के पास पहुंच कर कहा कि मैं तुम्हें शजरे खुल्द बता दू ! हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَامُ ने इन्कार फ़रमाया, उस ने क़सम खाई कि मैं तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह हूँ, उन्हें ख़याल हुवा कि **ALLAH** पाक की झूटी क़सम कौन खा सकता है ? बई ख़याल हज़रते हव्वा ने उस में से कुछ खाया फिर हज़रते आदम को दिया उन्होंने ने भी तनावुल किया, हज़रते आदम को ख़याल हुवा कि لَا تَقْرَبَا की नहय तन्ज़ीही है तहरीमी नहीं क्यूं कि अगर वोह तहरीमी समझते तो हरगिज़ ऐसा न करते कि अम्बिया मा'सूम होते हैं, यहां हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَامُ से इज्तिहाद में ख़ता हुई और ख़ताए इज्तिहादी मा'सियत नहीं होती। 65 : हज़रते आदम व हव्वा और उन की जुरिय्यत को जो उन के सुल्ब में थी जन्नत से ज़मीन पर जाने का हुक्म हुवा, हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَامُ ज़मीने हिन्द में "सरान्दीप" के पहाड़ों पर और हज़रते हव्वा "जदे" में उतारे गए। (ग़ारन) हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَامُ की बरकत से ज़मीन के अश्जार में पाकीजा खुशबू पैदा हुई। 66 : इस से इख़ितामे उम्र या'नी मौत का वक़त मुराद है और हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَامُ के लिये बिशारत है कि वोह दुन्या में सिर्फ़ इतनी मुदत के लिये हैं इस के बा'द फिर उन्हें जन्नत की तरफ़ रज़ूअ फ़रमाना है और आप की औलाद के लिये मआद पर दलालत है कि दुन्या की जिन्दगी मुअय्यन वक़त तक है उम्र तमाम होने के बा'द उन्हें आख़िरत की तरफ़ रज़ूअ करना है। 67 : आदम عَلَيْهِ السَّلَامُ ने ज़मीन पर आने

أَهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا فَمَا يَأْتِيَكُمْ مِنْ يَدِي هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا

तुम सब जन्नत से उतर जाओ फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ से कोई हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत का पैरव हुवा उसे

خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا

न कोई अन्देशा न कुछ गम⁶⁸ और वोह जो कुफ़ करें और मेरी आयतें झुटलाएंगे

أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٩﴾ لِيَبَيِّنَ إِسْرَائِيلَ إِذْ كَرُوا

वोह दोजख वाले हैं उन को हमेशा उस में रहना ऐ या'कूब की औलाद⁶⁹ याद करो

نِعْمَتِي الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا بِعَهْدِي أَوْفٍ بِعَهْدِكُمْ وَإِيَّايَ

मेरा वोह एहसान जो मैं ने तुम पर किया⁷⁰ और मेरा अहद पूरा करो मैं तुम्हारा अहद पूरा करूंगा⁷¹ और खास मेरा

के बा'द तीन सो बरस तक हया से आस्मान की तरफ सर न उठाया अगर्चे हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام "कसीरुल बुका" (या'नी बहुत जियादा

रोने वाले) थे, आप के आंसू तमाम ज़मीन वालों के आंसूओं से जियादा हैं मगर हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام इस क़दर रोए कि आप के आंसू हज़रते

दावूद عَلَيْهِ السَّلَام और तमाम अहले ज़मीन के आंसूओं के मज्मूए से बढ़ गए। (गारन) तबरानी व हाकिम व अबू नुऐम व बहकी ने हज़रते अली

मुर्तज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरफूअन रिवायत की, कि जब हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर इताब हुवा तो आप फ़िरे तौबा में हैरान थे, इस परेशानी के

आलम में याद आया कि वक़ते पैदाइश में ने सर उठा कर देखा था कि अर्श पर लिखा है: "لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ" मैं समझा था कि बारगाहे

इलाही में वोह रुत्बा किसी को मुयस्सर नहीं जो हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को हासिल है कि **اَللّٰهُ** तआला ने उन का नाम अपने नामे

अक़दस के साथ अर्श पर मक्तूब फ़रमाया, लिहाज़ा आप ने अपनी दुआ में "رَبَّنَا ظَلَمْنَا آلِهَتِنَا بِالْجَبَالِثِ لَعْنَةُ رَبِّنا عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّهُمْ كَانُوا فِي عَذَابٍ مُّهِينٍ" के साथ यह अर्ज किया: "اَسْئَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ اَنْ تُغْفِرَ لِيْ"

इब्ने मुन्ज़र की रिवायत में येह कलिमे हैं: "اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَعَلَيْكَ وَكَرَامَتِهِ عَلَيْكَ اَنْ تُغْفِرَ لِيْ عَطِيَّتِيْ" या'नी या रब ! मैं तुझ से तेरे

बन्दए खास मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के जाहो मर्तबत के तुफ़ैल में और उस करामत के सदके में जो उन्हें तेरे दरबार में हासिल है

मरिफ़रत चाहता हूँ। येह दुआ करनी थी कि हक़ तआला ने उन की मरिफ़रत फ़रमाई। **मस्अला**: इस रिवायत से साबित है कि मक्बूलाने

बारगाह के वसीले से दुआ ब हक़के फुलां और ब जाहे फुलां कह कर मांगना जाइज़ और हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की सुनत है। **मस्अला**:

اَللّٰهُ तआला पर किसी का हक़ वाजिब नहीं होता लेकिन वोह अपने मक्बूलों को अपने फ़ज़रो करम से हक़ देता है इसी तफ़ज़्जुलिये हक़ के

वसीले से दुआ की जाती है, सहीह अहदादीस से येह हक़ साबित है जैसे वारिद हुवा: "مَنْ اَمِنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَوَضَعَ مِيزَانًا كَانَ يُدْخِلُهُ الْجَنَّةَ"

(जो ईमान लाया **اَللّٰهُ** पर और उस के रसूल पर और नमाज़ काइम की और रमज़ान के रोजे रखे, **اَللّٰهُ** के जिम्मे करम पर है कि उसे

जन्नत में दाखिल करे)। हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा दसवीं मुहर्रम को क़बूल हुई। जन्नत से इख़्राज के वक़्त और ने'मतों के साथ अरबी

ज़बान भी आप से सल्ब कर ली गई थी बजाए इस के ज़बान मुबारक पर सुरयानी जारी कर दी गई थी क़बूले तौबा के बा'द फिर ज़बाने अरबी

अता हुई। (मरिज़) **मस्अला**: तौबा की अरल "रूजुअ इलल्लाह" है, इस के तीन रुकन हैं: **एक** ए'तिराफ़े ज़ुर्म, **दूसरे** नदामत, **तीसरे** अज़्मे

तर्क। अगर गुनाह क़ाबिले तलाफ़ी हो तो उस की तलाफ़ी भी लाज़िम है मसलन तारिके सलात की तौबा के लिये पिछली नमाज़ों की क़ज़ा

पढना भी ज़रूरी है। तौबा के बा'द हज़रते जिब्रईल ने ज़मीन के तमाम जानवरों में हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िलाफ़त का ए'लान किया

और सब पर उन की फ़रमां बरदारी लाज़िम होने का हुक्म सुनाया, सब ने क़बूले ताअत का इज़हार किया। (मरिज़) **68**: येह मोमिनीने

सालिहीन के लिये बिशारत है कि न उन्हें फ़ज़ए अक्बर (सब से बड़ी घबराहट) के वक़्त ख़ौफ़ हो न आख़िरत में ग़म, वोह बे ग़म जन्नत में

दाख़िल होंगे। **69**: इसराईल ब मा'ना अब्दुल्लाह अ़बरी ज़बान का लफ़ज़ है, येह हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام का लक़ब है। (मरक) कल्बी

मुफ़रिसर ने कहा: **اَللّٰهُ** तआला ने "يَا أَيُّهَا النَّاسُ اغْبُدُوا" (ऐ लोगो ! अपने रब को पूजो) फ़रमा कर पहले तमाम इन्सानों को उमूमन

दा'वत दी, फिर "اِدْفَالِ رَبِّكَ" फ़रमा कर उन के मब्दअ (पैदाइश) का ज़िक़्र किया, इस के बा'द खुसूसियत के साथ बनी इसराईल को दा'वत

दी, येह लोग यहूदी हैं और यहां से "سَيِّفُول" तक इन से कलाम जारी है। कभी ब मुलातफ़त (इनायत व मेहरबानी करते हुए) इन्आम याद दिला

कर दा'वत दी जाती है कभी ख़ौफ़ दिलाया जाता है, कभी हुज्जत काइम की जाती है कभी उन की बद अमली पर तौबीख़ होती है, कभी गुज़शता

उक़ूबात का ज़िक़्र किया जाता है। **70**: येह एहसान कि तुम्हारे आबा को फ़िरऔन से नजात दिलाई, दरिया को फ़ाड़ा, अब्र को साएबान

बनाया, इन के इलावा और एहसानात जो आगे आते हैं उन सब को याद करो, और याद करना येह है कि **اَللّٰهُ** तआला की इताअत व

बन्दगी कर के शुक्र बजा लाओ क्यूं कि किसी ने'मत का शुक्र न करना ही उस का भुलाना है। **71**: या'नी तुम ईमान व ताअत बजा ला कर

मेरा अहद पूरा करो, मैं जज़ा व सवाब दे कर तुम्हारा अहद पूरा करूंगा, इस अहद का बयान आयए "وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ" में है।

فَارْهَبُونِ ۝۴۰ وَأَمْنُوا بِمَا أَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُونُوا

ही डर रखो⁷² और ईमान लाओ उस पर जो मैं ने उतारा उस की तस्दीक करता हुवा जो तुम्हारे साथ है और सब से

أَوَّلَ كَافِرٍ بِهِ ۝ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا ۝ وَإِيَّايَ فَاتَّقُونِ ۝۴۱

पहले उस के मुन्किर न बनो⁷³ और मेरी आयतों के बदले थोड़े दाम न लो⁷⁴ और मुझी से डरो

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝۴۲

और हक़ से बातिल को न मिलाओ और दीदा व दानिस्ता हक़ न छुपाओ

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ ۝۴۳ أَتَأْمُرُونَ

और नमाज़ काइम रखो और ज़कात दो और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करो⁷⁵ क्या लोगों को

النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ أَفَلَا

भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो हालां कि तुम किताब पढ़ते हो तो क्या तुम्हें

تَعْقَلُونَ ۝۴۴ وَأَسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى

अक़ल नहीं⁷⁶ और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो और बेशक नमाज़ ज़रूर भारी है मगर उन पर

الْخَشَعِينَ ۝۴۵ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلْقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ

जो दिल से मेरी तरफ़ झुकते हैं⁷⁷ जिन्हें यकीन है कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उसी की

72 : मसअला : इस आयत में शुक्र ने 'मत व वफ़ाए अहद के वाजिब होने का बयान है और यह भी कि मोमिन को चाहिये कि **अल्लाह** के सिवा किसी से न डरे । **73 :** या'नी कुरआने पाक और तौरैत व इन्जील पर जो तुम्हारे साथ हैं ईमान लाओ और अहले किताब में पहले काफ़िर न बनो कि जो तुम्हारे इत्तिबाअ में कुफ़रइख़्तियार करे उस का वबाल भी तुम पर हो । **74 :** इन आयत से तौरैत व इन्जील की वोह आयत मुराद हैं जिन में हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की ना'त व सिफ़त है, मक्सद येह है कि हुजूर की ना'त दौलते दुन्या के लिये मत छुपाओ कि मताए दुन्या समने कलील और ने'मते आख़िरत के मुक़ाबिल बे हकीकत है । **शाने नुज़ूल :** येह आयत का'ब बिन अशरफ़ और दूसरे रुअसा व उलमाए यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जो अपनी कौम के जाहिलों और कमीनों से टके वुसूल कर लेते और उन पर सालाने मुक़रर करते थे और उन्होंने ने फ़लों और नक़द मालों में अपने हक़ मुअय्यन कर लिये थे उन्हें अन्देशा हुवा कि तौरैत में जो हुजूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की ना'त व सिफ़त है अगर उस को जाहिर करें तो कौम हुजूर पर ईमान ले आएगी और उन की कुछ पुरसिश न रहेगी, येह तमाम मनाफ़ेअ जाते रहेंगे, इस लिये उन्होंने ने अपनी किताबों में त़य़ीर की और हुजूर की ना'त को बदल डाला, जब उन से लोग दरयाफ़्त करते कि तौरैत में हुजूर के क्या औसाफ़ मज्कूर हैं ? तो वोह छुपा लेते और हरगिज़ न बताते, इस पर येह आयत नाज़िल हुई । **75 :** इस आयत में नमाज़ व ज़कात की फ़र्ज़ियत का बयान है और इस तरफ़ भी इशारा है कि नमाज़ों को उन के हुक्क की रिआयत और अरक़ान की हिफ़ाज़त के साथ अदा करो । **मसअला :** जमाअत की तरगीब भी है, हदीस शरीफ़ में है जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना तन्हा पढ़ने से सत्ताईस दरजे ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है । **76 :** **शाने नुज़ूल :** उलमाए यहूद से उन के मुसल्मान रिश्तेदारों ने दीने इस्लाम की निस्बत दरयाफ़्त किया तो उन्होंने ने कहा कि तुम इस दीन पर काइम रहो हुजूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का दीन हक़ और कलाम सच्चा है ! इस पर येह आयत नाज़िल हुई, एक कौल येह है कि आयत उन यहूदियों के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने ने मुशिरकीने अरब को हुजूर के मबऊस होने की ख़बर दी थी और हुजूर की इत्तिबाअ करने की हिदायत की थी फिर जब हुजूर मबऊस हुए तो येह हिदायत करने वाले हसद से खुद काफ़िर हो गए और इस पर इन्हें तौबीख़ की गई । **77 :** या'नी अपनी हाज़तों में सब्र और नमाज़ से मदद चाहो । क्या पाकीज़ा ता'लीम है ! सब्र मुसीबतों का अख़्लाकी

رَاجِعُونَ ﴿٣٦﴾ يُبْنَى إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ

तरफ़ फिरना⁷⁸ ऐ औलादे या'कूब याद करो मेरा वोह एहसान जो मैं ने तुम पर किया

وَإِنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٧﴾ وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ

और यह कि इस सारे ज़माने पर तुम्हें बड़ाई दी⁷⁹ और डरो उस दिन से जिस दिन कोई जान दूसरे का बदला

نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ

न हो सकेगी⁸⁰ और न काफ़िर के लिये कोई सिफ़ारिश मानी जाए और न कुछ ले कर उस की जान छोड़ी जाए और न उन की

يُضْرَوْنَ ﴿٣٨﴾ وَإِذْ نَجَّيْنَكُمْ مِنَ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ

मदद हो⁸¹ और याद करो जब हम ने तुम को फिराउन वालों से नजात बख़्शा⁸² कि तुम पर बुरा अज़ाब करते थे⁸³

يُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِّنْ

तुम्हारे बेटों को ज़बू करते और तुम्हारी बेटियों को जिन्दा रखते⁸⁴ और उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से

मुकाबला है इन्सान अदलो अज़म, हक़ परस्ती पर बिगैर इस के काइम नहीं रह सकता। सब्र की तीन किस्में हैं (1) शिद्दत व मुसीबत पर नफ़्स को रोकना। (2) ताअत व इबादत की मशक्कतों में मुस्तकिल रहना। (3) मा'सियत की तरफ़ माइल होने से तबीअत को बाज रखना। बा'ज मुफ़स्सिरीने ने यहां सब्र से रोज़ा मुराद लिया है, वोह भी सब्र का एक फ़र्द है। इस आयत में मुसीबत के वक़्त नमाज़ के साथ इस्तिआनत की ता'लीम भी फ़रमाई क्यूं कि वोह इबादते बदनिअ्या व नफ़सानिअ्या की जामेअ है और इस में कुबे इलाही हासिल होता है, हज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام अहम उमूर के पेश आने पर मशगूले नमाज़ हो जाते थे, इस आयत में येह भी बताया गया कि मोमिनीने सादिकीन के सिवा औरों पर नमाज़ गिरा है। 78 : इस में बिशारत है कि आखिरत में मोमिनीन को दीदारे इलाही की ने'मत मिलेगी। 79 : "الْعَالَمِينَ" का इस्तिराक़ हकीकी नहीं, मुराद येह है कि मैं ने तुम्हारे आबा को उन के ज़माने वालों पर फ़ज़ीलत दी या फ़ज़ले जुर्ई मुराद है जो और किसी उम्मत की फ़ज़ीलत का नाफ़ी नहीं हो सकता, इसी लिये उम्मते मुहम्मदियह के हक़ में इशाद हुवा : "كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ" (روح البیان ج 10) 80 : वोह रोज़े कियामत है। आयत में नफ़्स दो मरतबा आया है पहले से नफ़से मोमिन दूसरे से नफ़से काफ़िर मुराद है। 81 : यहां से रकूअ के आखिर तक दस ने'मतों का बयान है जो उन बनी इसराईल के आबा को मिलीं। 82 : क़ौमे क़िब्ल व अमालीक से जो मिस्र का बादशाह हुवा उस को फिराउन कहते हैं। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने के फिराउन का नाम वलीद बिन मुसअब बिन रय्यान है, यहां इसी का ज़िक्र है, इस की उम्र चार सो बरस से ज़ियादा हुई, आले फिराउन से इस के मुत्बिईन मुराद हैं। 83 : अज़ाब सब बुरे होते हैं "سُوءَ الْعَذَابِ" फिराउन (कानی الجلالین و غیره) "बुरा अज़ाब" तरजमा किया। फिराउन ने बनी इसराईल पर निहायत बे दर्दी से मेहनतो मशक्कत के दुश्वार काम लाज़िम किये थे, पथथरों की चटानें काट कर ढोते ढोते उन की कमरें गरदनं ज़ख्मी हो गई थीं, ग़रीबों पर टेक्स मुकर्रर किये थे जो गुरूबे आफ़ताब से कब्ल ब जन्न (ज़बर दस्ती) वुसूल किये जाते थे, जो नादार किसी दिन टेक्स अदा न कर सका उस के हाथ गरदन के साथ मिला कर बांध दिये जाते थे और महीने भर तक इसी मुसीबत में रखा जाता था और तरह तरह की बे रहमाना सख़ियां थीं। 84 : फिराउन ने ख़्वाब देखा कि बैतुल मक्दिदस की तरफ़ से आग आई उस ने मिस्र को घेर कर तमाम क़िब्तियों को जला डाला बनी इसराईल को कुछ ज़रर न पहुंचाया इस से उस को बहुत वदशत हुई, काहिनो ने ता'बीर दी कि बनी इसराईल में एक लडका पैदा होगा जो तेरे हलाक और ज़वाले सलत्नत का बाइस होगा, येह सुन कर फिराउन ने हुक्म दिया कि बनी इसराईल में जो लडका पैदा हो क़त्ल कर दिया जाए, दाइयां तपतीश के लिये मुकर्रर हुईं, बारह हज़ार व ब रिवायते (और एक रिवायत के मुताबिक) सत्तर हज़ार लडके क़त्ल कर डाले गए और नव्वे हज़ार हम्ल गिरा दिये गए, और मशिय्यते इलाही से उस क़ौम के बूढ़े जल्द जल्द मरने लगे, क़ौमे क़िब्ल के रुअसा ने घबरा कर फिराउन से शिकायत की, कि बनी इसराईल में मौत की गर्म बाजारी है, इस पर उन के बच्चे भी क़त्ल किये जाते हैं तो हमें ख़िदमत गार कहां से मुयस्सर आएंगे ? फिराउन ने हुक्म दिया कि एक साल बच्चे क़त्ल किये जाएं और एक साल छोड़े जाएं तो जो साल छोड़ने का था उस में हज़रते हारून पैदा हुए और क़त्ल के साल हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की विलादत हुई।

سَابِغُمْ عَظِيمٌ ﴿٢٩﴾ وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمْ الْبَحْرَ فَأَنْجَيْنَاكُمْ وَأَغْرَقْنَا آلَ

बड़ी बला थी या बड़ा इन्आम⁸⁵ और जब हम ने तुम्हारे लिये दरिया फाड़ दिया तो तुम्हें बचा लिया और फिरऔन

فِرْعَوْنَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥٠﴾ وَإِذْ وَعَدْنَا مُوسَىٰ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ثُمَّ

वालों को तुम्हारी आंखों के सामने डुबो दिया⁸⁶ और जब हम ने मूसा से चालीस रात का वा'दा फरमाया फिर

اتَّخَذْتُمُ الْعَجَلِ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِنْ

उस के पीछे तुम ने बछड़े की पूजा शुरू कर दी और तुम ज़ालिम थे⁸⁷ फिर इस के बा'द हम ने

بَعْدِ ذَلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٢﴾ وَإِذِ اتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ وَالْفُرْقَانَ

तुम्हें मुआफ़ी दी⁸⁸ कि कहीं तुम एहसान मानो⁸⁹ और जब हम ने मूसा को किताब अता की और हक़ व बातिल में तमीज़ कर देना

85 : “बला” इम्तिहान व आज्माइश को कहते हैं, आज्माइश ने’मत से भी होती है और शिद्दतो मेहनत से भी, ने’मत से बन्दे की शुक्र गुजारी और मेहनत से उस के सब्र का हाल ज़ाहिर होता है। अगर “ذَلِكُمْ” का इशारा फिरऔन के मजालिम की तरफ़ हो तो “बला” से मेहनतो मुसीबत मुराद होगी और अगर उन मजालिम से नजात देने की तरफ़ हो तो ने’मत। **86 :** यह दूसरी ने’मत का बयान है जो बनी इसराईल पर फरमाई कि उन्हें फिरऔनियों के जुल्मो सितम से नजात दी और फिरऔन को मअ उस की कौम के उन के सामने गर्क किया, यहां “आले फिरऔन” से फिरऔन मअ अपनी कौम के मुराद है जैसे कि “كُرْمَانِيحِ اَدَمَ” में हज़रते आदम व औलादे आदम दोनों दाखिल हैं। (م) मुख़सर वाकिआ यह है कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ब हुक्मे इलाही शब में बनी इसराईल को मिस्र से ले कर रवाना हुए, सुब्ह को फिरऔन उन की जुस्तजू में लश्करे गिरां ले कर चला और उन्हें दरिया के किनारे जा पाया, बनी इसराईल ने लश्करे फिरऔन देख कर हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَام से फिरयाद की, आप ने ब हुक्मे इलाही दरिया में अपना असा मारा, इस की बरकत से ऐन दरिया में बारह खुशक रस्ते पैदा हो गए, पानी दीवारों की तरह खड़ा हो गया, उन आबी दीवारों में जाली की मिसल रोशन दान बन गए, बनी इसराईल की हर जमाअत उन रस्तों में एक दूसरे को देखती और बाहम बातें करती गुज़ गई। फिरऔन दरियाई रस्ते देख कर उन में चल पड़ा जब इस का तमाम लश्कर दरिया के अन्दर आ गया तो दरिया हालते अस्ली पर आया और तमाम फिरऔनी उस में गर्क हो गए। दरिया का अर्ज़ चार फरसंग (बारह मील से ज़ाद फासिला) था यह वाकिआ बहरे कुल्जुम का है जो बहरे फ़ार्स के किनारे पर है, या बहूर मा वराए मिस्र का जिस को इसाफ़ कहते हैं। बनी इसराईल लबे दरिया फिरऔनियों के गर्क का मन्ज़र देख रहे थे। यह गर्क मुहर्रम की दसवीं तारीख़ हुवा हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَام ने इस दिन शुक्र का रोज़ा रखा, सय्यदे आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के ज़माने तक भी यहूद इस दिन का रोज़ा रखते थे, हुज़ूर ने भी इस दिन का रोज़ा रखा और फरमाया कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَام की फ़तह की खुशी मनाने और इस की शुक्र गुजारी करने के हम यहूद से ज़ियादा हक़दार हैं। **मस्अला :** इस से मा’लूम हुवा कि आशूरे का रोज़ा सुन्नत है। **मस्अला :** यह भी मा’लूम हुवा कि अम्बिया पर जो इन्आमे इलाही हो उस की यादगार काइम करना और शुक्र बजा लाना मस्नून है। **मस्अला :** यह भी मा’लूम हुवा कि ऐसे उमूर में दिन का तअय्युन सुन्नते रसूलुल्लाह है صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ। **मस्अला :** यह भी मा’लूम हुवा कि अम्बिया की यादगार अगर कुपफ़र भी काइम करते हों जब भी इस को छोड़ा न जाए। **87 :** फिरऔन और फिरऔनियों के हलाक के बा’द जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَام बनी इसराईल को ले कर मिस्र की तरफ़ लौटे और इन की दरख़्वास्त पर **alccus** तआला ने अताए तौरैत का वा’दा फरमाया और इस के लिये मीकात मुअय्यन किया जिस की मुदत मआ इज़ाफ़ा एक माह दस रोज़ थी, महीना जुल का’दा और दस दिन जुल हिज्जा के, हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَام कौम में अपने भाई हारून عَلَيْهِ الصَّلَام को अपना ख़लीफ़ा व जा नशीन बना कर तौरैत हासिल करने के लिये कोहे तूर पर तशरीफ़ ले गए, चालीस शब वहां ठहरे इस अर्से में किसी से बात न की, **alccus** तआला ने ज़बर जदी अल्वाह में तौरैत आप पर नाज़िल फरमाई। यहां सामरी ने सोने का जवाहिरात से मुरस्सअ बछड़ा बना कर कौम से कहा कि यह तुम्हारा मा’बूद है। वोह लोग एक माह हज़रत का इन्तिज़ार कर के सामरी के बहकाने से बछड़ा पूजने लगे सिवाए हज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلَام और आप के बारह हज़ार हम राहियों के, तमाम बनी इसराईल ने गौसाला (बछड़े) को पूजा। **88 :** “अफ़व” की कैफ़ियत यह है कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَام ने फरमाया कि तौबा की सूरत यह है कि जिन्होंने बछड़े की परस्तिश नहीं की है वोह परस्तिश करने वालों को क़त्ल करें और मुजरिम ब रिज़ा व तस्लीम सुकून के साथ क़त्ल हो जाएं, वोह इस पर राज़ी हो गए, सुब्ह से शाम तक सत्तर हज़ार क़त्ल हो गए, तब हज़रते मूसा व हारून عَلَيْهِمَا الصَّلَام ब तज़र्रोंअ व ज़ारी (रोते गिड़गिड़ते) बारगाहे हक़ की तरफ़ मुत्तज़ी हुए, वहय आई कि जो क़त्ल हो चुके शहीद हुए, बाक़ी मफ़ूर फरमाए गए, इन में के कातिल व मक्तूल सब जन्मती हैं। **मस्अला :** शिकं

لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿٥٢﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ إِنِّكُمْ ظَلَمْتُمْ

कि कहीं तुम राह पर आओ और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा ऐ मेरी कौम तुम ने बछड़ा बना

أَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلِ فَتُوبُوا إِلَى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ ط

कर अपनी जानों पर जुल्म किया तो अपने पैदा करने वाले की तरफ रुजूअ लाओ तो आपस में एक दूसरे को कत्ल करो⁹⁰

ذِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ ط فَتَابَ عَلَيْكُمْ ط إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ

येह तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़्दीक तुम्हारे लिये बेहतर है तो उस ने तुम्हारी तौबा कबूल की बेशक वोही है बहुत तौबा कबूल करने वाला

الرَّحِيمِ ﴿٥٣﴾ وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَى لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّى نَرَى اللَّهَ جَهْرَةً

मेहरबान⁹¹ और जब तुम ने कहा ऐ मूसा हम हरगिज़ तुम्हारा यकीन न लाएंगे जब तक अलानिया खुदा को न देख लें

فَأَخَذْتُمْ الصُّعِقَةَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥٤﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِ

तो तुम्हें कड़क ने आ लिया और तुम देख रहे थे फिर मेरे पीछे हम ने तुम्हें

مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٥﴾ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ

ज़िन्दा किया कि कहीं तुम एहसान मानो और हम ने अब्र को तुम्हारा साएबान किया⁹² और तुम पर

से मुसल्मान मुरतद हो जाता है। **मस्अला** : मुरतद की सज़ा कत्ल है क्यूं कि **अल्लाह** तआला से बगावत कत्ल व खूरेजी से सख्त तर जुर्म है। **फाएदा** : गौसाला बना कर पूजने में बनी इसराईल के कई जुर्म थे एक तस्वीर साज़ी जो हुराम है, दूसरे हज़रते हारून **عليه السلام** की ना फुरमानी, तीसरे गौसाला पूज कर मुशिरक हो जाना, येह जुल्म आले फिरऔन के मज़ालिम से भी ज़ियादा शदीद हैं क्यूं कि येह अपभाल उन से बा'दे इमान सरज़द हुए इस लिये मुस्तहिक तो इस के थे कि अज़ाबे इलाही उन्हें मोहलत न दे और फिरफ़ैर हलाकत से कुफ़्र पर उन का ख़ातिमा हो जाए लेकिन हज़रते मूसा व हारून **عليهما السلام** की बदौलत उन्हें तौबा का मौक़अ दिया गया, येह **अल्लाह** तआला का बड़ा फज़ल है। **89** : इस में इशारा है कि बनी इसराईल की इस्ति'दाद फिरऔनियों की तरह बातिल न हुई थी और इन की नस्ल से सालिहीन पैदा होने वाले थे चुनान्चे इन में हज़ारहा नबी व सालेह पैदा हुए। **90** : येह कत्ल उन के लिये कफ़्फ़ारा था। **91** : जब बनी इसराईल ने तौबा की और कफ़्फ़ारे में अपनी जानें दे दीं तो **अल्लाह** तआला ने हुक्म फुरमाया कि हज़रते मूसा **عليه السلام** इन्हें गौसाला परस्ती की उज़्र ख़ाही के लिये हाज़िर लाएं, हज़रत उन में से सत्तर आदमी मुन्तख़ब कर के तूर पर ले गए वहां वोह कहने लगे : ऐ मूसा ! हम आप का यकीन न करेगे जब तक खुदा को अलानिया न देख लें, इस पर आस्मान से एक होलनाक आवाज़ आई जिस की हैबत से वोह मर गए। हज़रते मूसा **عليه السلام** ने ब तज़रोंअ (आज़िजी के साथ) अर्ज़ की, कि मैं बनी इसराईल को क्या जवाब दूंगा ? इस पर **अल्लाह** तआला ने उन्हें यके बा'द दीगरे ज़िन्दा फुरमा दिया। **मस्अला** : इस से शाने अम्बिया मा'लूम होती है कि हज़रते मूसा **عليه السلام** से "لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ" (हम हरगिज़ तुम्हारा यकीन न लाएंगे) कहने की शामत में बनी इसराईल हलाक किये गए। हुज़ूर सथियदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के अहद वालों को आगाह किया जाता है कि अम्बिया की जनाब में तर्के अदब ग़ज़बे इलाही का बाइस होता है इस से डरते रहें। **मस्अला** : येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआला अपने मक्बूलाने बारगाह की दुआ से मुर्दे ज़िन्दा फुरमाता है। **92** : हज़रते मूसा **عليه السلام** फारिग़ हो कर लश्करे बनी इसराईल में पहुंचे और आप ने उन्हें हुक्मे इलाही सुनाया कि मुल्के शाम हज़रते इब्राहीम **عليه السلام** और उन की औलाद का मदफन है, उसी में बैतुल मक्दिस है, उस को अमालका से आजाद कराने के लिये जिहाद करो और मिस्र छोड़ कर वहीं वतन बनाओ, मिस्र का छोड़ना बनी इसराईल पर निहायत शाक़ था अव्वल तो उन्होंने ने इसी में पसो पेश किया और जब ब जब्रो इक्राह हज़रते मूसा व हज़रते हारून **عليهما السلام** की रिक्ाबे सअ़ादत में रवाना हुए तो राह में जो कोई सख़्ती व दुश्वारी पेश आती हज़रते मूसा **عليه السلام** से शिकायतें करते, जब उस सहारा में पहुंचे जहां न सब्ज़ा था न साया न ग़ल्ला हमराह था वहां धूप की गरमी और भूक की शिकायत की, **अल्लाह** तआला ने ब दुआए हज़रते मूसा **عليه السلام** अब्रे सफेद को उन का साएबान बनाया जो रात दिन उन के साथ चलता, शब को उन के लिये नूरी सुतून उतरता जिस की रोशनी में काम करते, उन के कपड़े मैले और पुराने

الْمَنِّ وَالسَّلْوَىٰ ۖ كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ ۖ وَمَا ظَلَمُونَا وَلٰكِن

मन्न और सलवा उतारा खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीजें⁹³ और उन्होंने ने कुछ हमारा न बिगाड़ा हां

كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٥٤﴾ وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا

अपनी ही जानों का बिगाड़ करते थे और जब हम ने फरमाया उस बस्ती में जाओ⁹⁴ फिर उस में

مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَاغِدًا ۖ وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ

जहां चाहो बे रोक टोक खाओ और दरवाजे में सज्दा करते दाखिल हो⁹⁵ और कहो हमारे गुनाह मुआफ़ हो

نَعْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ ۖ وَسَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٥﴾ فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا

हम तुम्हारी ख़ताएं बख़्शा देंगे और करीब है कि नेकी वालों को और ज़ियादा दें⁹⁶ तो ज़ालिमों ने और बात बदल दी

قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا مِّن

जो फ़रमाई गई थी उस के सिवा⁹⁷ तो हम ने आस्मान से उन पर अज़ाब

السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٥٦﴾ وَإِذْ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا

उतारा⁹⁸ बदला उन की बे हुक्मी का और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिये पानी मांगा तो हम ने फ़रमाया

न होते, नाखून और बाल न बढ़ते, उस सफ़र में जो लडका पैदा होता उस का लिबास उस के साथ पैदा होता जितना वोह बढ़ता लिबास भी बढ़ता। 93 : “मन्न” तुरन्जबीन की तरह एक शीरी चीज़ थी रोज़ाना सुब्हे सादिक से तुलूए आफ़ताब तक हर शरख़ के लिये एक साअ की क़दर आस्मान से नाज़िल होती, लोग उस को चादरों में ले कर दिन भर खाते रहते। “सलवा” एक छोटा परिन्द होता है उस को “हवा” लाती, येह शिकार कर के खाते, दोनों चीज़ें शम्बा को तो मुल्लक़ न आतीं, बाकी हर रोज़ पहुंचतीं जुमुआ को और दिनों से दूनी आतीं। हुक्म येह था कि जुमुआ को शम्बा के लिये भी हस्बे ज़रूरत जम्अ कर लो मगर एक दिन से ज़ियादा का जम्अ न करो, बनी इसराईल ने इन ने’मतों की नाशुकी की, ख़िरी जम्अ किये, वोह सड़ गए और उन की आमद बन्द कर दी गई, येह उन्होंने ने अपना ही नुक़सान किया कि दुन्या में ने’मत से महरूम और आख़िरत में सज़ावार अज़ाब के हुए। 94 : उस बस्ती से बैतुल मक्दिस मुराद है या अरीहा जो बैतुल मक्दिस के करीब है जिस में अमालका आबाद थे और उस को ख़ाली कर गए, वहां ग़ल्ले मेवे ब कसरत थे। 95 : येह दरवाज़ा उन के लिये ब मन्ज़िला का’बा के था कि इस में दाख़िल होना और इस की तरफ़ सज्दा करना सबबे कफ़फ़ार ए जुनूब क़रार दिया गया। 96 : मस्अला : इस आयत से मा’लूम हुवा कि ज़बान से इस्तिफ़ार करना और बदनी इबादत सज्दा वगैरा बजा लाना तौबा का मुतम्मिम (कामिल व पूरा करने वाला) है। मस्अला : येह भी मा’लूम हुवा कि मशहूर गुनाह की तौबा ब ए’लान होनी चाहिये। मस्अला : येह भी मा’लूम हुवा कि मक़ामते मुतबरका जो रहमते इलाही के मौरिद हों वहां तौबा करना और ताअत बजा लाना समरते नेक और सुरअते क़बूल का सबब होता है। (ख़ाज़ि) इसी लिये सालिहीन का दस्तूर रहा है कि अम्बिया व औलिया के मवालिद (पैदाइश गाह) व मज़ारात पर हाज़िर हो कर इस्तिफ़ार व ताअत बजा लाते हैं। उर्स व ज़ियारत में भी येह फ़ाएदा मुतसव्वर है। 97 : बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि बनी इसराईल को हुक्म हुवा था कि दरवाजे में सज्दा करते हुए दाख़िल हों और ज़बान से “حِطَّةٌ” कलिमाए तौबा व इस्तिफ़ार कहते जाएं, उन्होंने ने दोनों हुक्मों की मुख़ालफ़त की, दाख़िल तो हुए सुरीनों के बल घिसटते और बजाए कलिमाए तौबा के तमस्बुर से “حَبَّةٌ فِي شَعْرَةٍ” कहा जिस के मा’ना है बाल में दाना। 98 : येह अज़ाब ताऊन था जिस से एक साअत में चौबीस हज़ार हलाक हो गए। मस्अला : सिहाह की हदीस में है कि ताऊन पिछली उम्मतों के अज़ाब का बकिय्या है, जब तुम्हारे शहर में वाकेअ हो वहां से न भागो, दूसरे शहर में हो तो वहां न जाओ। मस्अला : सहीह हदीस में है कि जो लोग मक़ामे वबा में रिज़ाए इलाही पर साबिर रहें अगर वोह वबा से महफूज़ रहें जब भी उन्हें शहादत का सवाब मिलेगा।

أَصْرِبُ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ط فَاَنْفَجَرْتُ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ط قَدْ

इस पथर पर अपना असा मारो फौरन उस में से बारह चश्मे बह निकले⁹⁹ हर

عَلِمَ كُلُّ أَنْاسٍ مَشْرَبَهُمْ ط كَلُوا وَاشْرَبُوا مِنْ رِزْقِ اللَّهِ وَ لَا

गुरौह ने अपना घाट पहचान लिया खाओ और पियो खुदा का दिया¹⁰⁰ और

تَعْتَوْنِي الْآرْضُ مُفْسِدِينَ ٦٠ وَ إِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَى لَنْ نَصْبِرَ عَلَىٰ

ज़मीन में फ़साद उठाते न फ़िरो¹⁰¹ और जब तुम ने कहा ऐ मूसा¹⁰² हम से तो एक खाने पर¹⁰³

طَعَامٍ وَ أَحَدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُثْبِتُ الْآرْضُ مِنْ

हरगिज़ सब न होगा तो आप अपने रब से दुआ कीजिये कि ज़मीन की उगाई हुई चीज़ें हमारे लिये निकाले

بَقْلِهَا وَ قَتَائِبِهَا وَ فُومِهَا وَ عَدْسِهَا وَ بَصِلِهَا ط قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ

कुछ साग और ककड़ी और गेहूँ और मसूर और पियाज़ फ़रमाया क्या अदना चीज़

الَّذِي هُوَ أَذْيُ بِالذِّي هُوَ خَيْرٌ ط اِهْبِطُوا مِصْرًا فَإِنَّ لَكُمْ مَّا

को बेहतर के बदले मांगते हो¹⁰⁴ अच्छा मिस्र¹⁰⁵ या किसी शहर में उतरो वहां तुम्हें मिलेगा

سَأَلْتُمْ ط وَ ضَرَبْتَ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةَ وَ الْبَسْكَتَةَ ٦١ وَ بَاءٌ وَ بَعْضٌ مِّنْ

जो तुम ने मांगा¹⁰⁶ और उन पर मुकर्रर कर दी गई ख़वारी और नादारी¹⁰⁷ और खुदा के ग़ज़ब में

99 : जब बनी इसराईल ने सफ़र में पानी न पाया शिद्दते प्यास की शिकायत की तो हज़रते मूसा عليه السلام को हुक्म हुवा कि अपना असा पथर

पर मारो आप के पास एक मुरब्बअ पथर था जब पानी की ज़रूरत होती आप उस पर असा मारते उस से बारह चश्मे जारी हो जाते और

सब सैराब होते। यह बड़ा मो'जिज़ा है लेकिन सय्यिदे अम्बिया صل الله عليه وسلم के अंगुशते मुबारक से चश्मे जारी फ़रमा कर जमाअते कसीरा

को सैराब फ़रमाना इस से बहुत आ'जम व आ'ला है क्यूं कि उज़्जे इन्सानी से चश्मे जारी होना पथर की निस्बत ज़ियादा आ'जब (तअज्जुब

ख़ैज़) है। 100 : या'नी आस्मानी त़आम "मन्न व सल्वा" खाओ और इस पथर के चश्मों का पानी पियो जो तुम्हें फ़ज़्ले इलाही

से बे मेहनत मुयस्सर है। 101 : ने'मतों के ज़िक्र के बा'द बनी इसराईल की ना लियाक़ती (ना अहली), दू हिम्मती (बुज़दिली) और ना

फ़रमानी के चन्द वाकिआत बयान फ़रमाए जाते हैं। 102 : बनी इसराईल की यह अदा भी निहायत बे अदबाना थी कि पैग़म्बरे ऊलुल अज़्म

को नाम ले कर पुकारा, या नबिय्यल्लाह, या रसूलल्लाह ! या और कोई ता'जीम का कलिमा न कहा। (अहमद) जब अम्बिया का खाली नाम

लेना बे अदबी है तो इन को बशर और एलची कहना किस तरह गुस्ताखी न होगा ! ग़रज़ अम्बिया के ज़िक्र में बे ता'जीमी का शाएबा भी

ना जाइज़ है। 103 : "एक खाने" से एक किस्म का खाना मुराद है। 104 : जब वोह इस पर भी न माने तो हज़रते मूसा عليه السلام ने बारगाहे

इलाही में दुआ की इश्राद हुवा "اهْبِطُوا"। 105 : "मिस्र" अरबी में शहर को भी कहते हैं कोई शहर हो, और ख़ास शहर या'नी मिस्रे मूसा

عليه السلام का नाम भी है, यहाँ दोनों में से हर एक मुराद हो सकता है। बा'ज़ का ख़याल है कि यहाँ ख़ास शहरे मिस्र मुराद नहीं हो सकता

क्यूं कि इस के लिये यह लफ़्ज़ ग़ैर मुन्सरिफ़ हो कर मुस्ता'मल होता है और इस पर तन्वीन नहीं आती जैसा कि दूसरी आयत में वारिद है :

"أَلَيْسَ لِي مُلْكٌ مِصْرَ" और "أَدْخَلُوا مِصْرَ" मगर यह खयाल सहीह नहीं क्यूं कि सुकूने औसत की वजह से लफ़्ज़े हिन्द की तरह इस को

मुन्सरिफ़ पढ़ना दुरुस्त है नह्व में इस की तसरीह मौजूद है। इलावा बरीं हसन वगैरा की किराअत में मिस्र बिला तन्वीन आया है और बा'ज़

मसाहिफ़े हज़रते उस्मान और मुस्हफ़े उबय رضي الله تعالى عنهم में भी ऐसा ही है इसी लिये हज़रते मुर्तजिम رضي الله تعالى عنه ने तरजमे में दोनों एहतिमालों

को अख़ज़ फ़रमाया है और शहरे मुअय्यन के एहतिमाल को मुक़द्दम किया। 106 : या'नी साग, ककड़ी वगैरा गो इन चीज़ों की तलब गुनाह

اللَّهُ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيَّ

लौटे¹⁰⁸ यह बदला था इस का कि वोह **ALLAH** की आयतों का इन्कार करते और अम्बिया को नाहक शहीद

بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۝٦١ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا

करते¹⁰⁹ यह बदला था उन की ना फ़रमानियों और हृद से बढ़ने का बेशक ईमान वाले

وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصْرَىٰ وَالصَّبِيَّانَ مَنِ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ

नीज़ यहूदियों और नसरानियों और सितारा परस्तों में से वोह कि सच्चे दिल से **ALLAH** और पिछले दिन पर ईमान लाएं

وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

और नेक काम करें उन का सवाब उन के रब के पास है और न उन्हें कुछ अन्देशा हो और न

يَحْزَنُونَ ۝٦٢ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ ۖ خُذُوا

कुछ गम¹¹⁰ और जब हम ने तुम से अहद लिया¹¹¹ और तुम पर तूर को ऊंचा किया¹¹² लो जो कुछ

مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝٦٣ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ

हम तुम को देते हैं जोर से¹¹³ और उस के मज़मून याद करो इस उम्मीद पर कि तुम्हें परहेज़ गारी मिले फिर इस के

न थी लेकिन “मन्न व सल्वा” जैसी ने’मते बे मेहनत छोड़ कर इन की तरफ़ माइल होना पस्त ख़याली है, हमेशा इन लोगों का मैलाने तब्बू पस्ती ही की तरफ़ रहा, और हज़रते मूसा व हारून वगैरा जलीलुल क़द्र बुलन्द हिम्मत अम्बिया (عليهم السلام) के बा’द बनी इसराईल की लईमी (कमीनगी) व कम हौसलगी का पूरा जुहर हुवा, और तसल्लुते जालूत व हादिसए बुख़े नस्सर के बा’द तो वोह बहुत ही ज़लीलो ख़वार हो गए, इस का बयान “طُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ” में है। 107 : यहूद की ज़िल्लत तो येह कि दुन्या में कहीं नाम को इन की सल्लतन नहीं और नादारी येह कि माल मौजूद होते हुए भी हिर्स से मोहताज ही रहते हैं। 108 : अम्बिया व सुलहा की बदौलत जो रुबे इन्हें हासिल हुए थे उन से महरूम हो गए, इस गुज़ब का बाइस सिर्फ़ येही नहीं कि इन्हों ने आस्मानी गिज़ाओं के बदले अर्जी पैदावार की ख़्वाहिश की या इसी तरह की और ख़ताएं जो ज़मानए हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام में सादिर हुई बल्कि अहदे नुबुव्वत से दूर होने और ज़मानए दराज़ गुज़रने से इन की इस्ति’दादें बातिल हुई और निहायत क़बीह अपआल और अज़ीम जुर्म इन से सरज़द हुए, येह इन की इस ज़िल्लतो ख़वारी का बाइस हुए। 109 : जैसा कि इन्हों ने हज़रते ज़करिय्या व यहूया व शा’या عَلَيْهِمُ السَّلَام को शहीद किया और येह क़त्ल ऐसे नाहक थे जिन की वजह खुद येह कातिल भी नहीं बता सकते। 110 : शाने नुज़ूल : इब्ने जरीर व इब्ने अबी हातिम ने सुह्री से रिवायत की, कि येह आयत सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के अस्हाब के हक़ में नाज़िल हुई। (باب العول) 111 : कि तुम तौरैत मानोगे और उस पर अमल करोगे। फिर तुम ने उस के अहकाम को शाक़ व गिरां जान कर क़बूल से इन्कार कर दिया या बा वुजूदे कि तुम ने खुद ब इल्हाह (गिड़गिड़ा कर) हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से ऐसी आस्मानी किताब की इस्तिद्आ की थी जिस में क़वानीने शरीअत व आईने इबादत मुफ़ससल मज़कूर हों और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने तुम से बार बार उस के क़बूल करने और उस पर अमल करने का अहद लिया था, जब वोह किताब अता हुई तुम ने उस के क़बूल करने से इन्कार कर दिया और अहद पूरा न किया। 112 : बनी इसराईल की अहद शिकनी के बा’द हज़रते जिब्रील ने ब हुक्मे इलाही तूर पहाड़ को उठा कर उन के सरों पर क़दरे कामत फ़ासिले पर मुअल्लक़ कर दिया और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : या तो तुम अहद क़बूल करो, वरना पहाड़ तुम पर गिरा दिया जाएगा और तुम कुचल डाले जाओगे, इस में सूरतन वफ़ाए अहद पर इक्वाह था और दर हक़ीक़त पहाड़ का सरों पर मुअल्लक़ कर देना आयते इलाही और कुदरते हक़ की बुरहाने क़बी है, इस से दिलों को इत्मीनान हासिल होता है कि बेशक येह रसूल मज़हे कुदरते इलाही हैं। येह इत्मीनान इन को मानने और अहद पूरा करने का अस्ल सबब है। 113 : या’नी ब कोशिश तमाम।

مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوْلَا فِضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِّنَ

बा'द तुम फिर गए तो अगर **अल्लाह** का फ़ज़ल और उस की रहमत तुम पर न होती तो तुम टोटे (नुक्सान)

الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ وَّلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِيْنَ اَعْتَدُوْا مِّنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا

वालों में हो जाते¹¹⁴ और बेशक ज़रूर तुम्हें मा'लूम है तुम में के वोह जिन्हों ने हफ्ते में सरकशी की¹¹⁵ तो हम ने उन

لَهُمْ كُوْنُوْا قَرَدًا خَسِيْرًا ﴿٢٤﴾ فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّبٰبِيْنَ يَدِيْهَا وَمَا

से फ़रमाया कि हो जाओ बन्दर धुत्कारे हुए तो हम ने उस बस्ती का येह वाक़िआ उस के आगे और

خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَاذْ قٰلَ مُوسٰى لِقَوْمِهِ اِنَّ اللّٰهَ

पीछे वालों के लिये इब्रत कर दिया और परहेज़ गारों के लिये नसीहत और जब मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया खुदा तुम्हें

يٰمُرْكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقْرَةً ۗ قَالُوْٓا اَتَتَّخِذُنَا هُرُوْٓا ۗ قٰلَ اَعُوْذُ

हुक़्म देता है कि एक गाय ज़ब़्द करो¹¹⁶ बोले कि आप हमें मस्ख़रा बनाते हैं¹¹⁷ फ़रमाया खुदा की

بِاللّٰهِ اِنْ اَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٢٦﴾ قَالُوْٓا اَدْعُ لِنٰرِكَ يٰبِيْنَ لَنَا مَا

पनाह कि मैं जाहिलों से होउं¹¹⁸ बोले अपने रब से दुआ कीजिये कि वोह हमें बता दे गाय

114 : यहां फ़ज़्लो रहमत से या तौफ़ीके तौबा मुराद है या ताख़ीरे अज़ाब । (मारक وغیره) एक कौल येह है कि फ़ज़्ले इलाही व रहमते हक़ से हुज़ूर सरवरे आलम **صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की ज़ाते पाक मुराद है, मा'ना येह हैं कि अगर तुम्हें ख़ातमुल मुरसलीन **صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के वुजूद की दौलत न मिलती और आप की हिदायत नसीब न होती तो तुम्हारा अन्जाम हलाक व ख़ुसरान होता । **115** : शहरे "ऐला" में बनी इसराईल आबाद थे उन्हें हुक़्म था कि शम्बा का दिन इबादत के लिये ख़ास कर दें, इस रोज़ शिकार न करें और दुन्यावी मशाग़िल तर्क कर दें, उन के एक गुरौह ने येह चाल की, कि जुमुआ को दरिया के किनारे किनारे बहुत से गढ़े खोदते और शम्बा की सुब्द को दरिया से उन गढ़ों तक नालियां बनाते जिन के ज़रीए पानी के साथ आ कर मछलियां गढ़ों में कैद हो जातीं, यक़शम्बा (इतवार) को उन्हें निकालते और कहते कि हम मछली को पानी से शम्बा (हफ्ते) के रोज़ नहीं निकालते, चालीस या सत्तर साल तक येही अमल रहा, जब हज़ुरते दावूद **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** की नुबुव्वत का अहद आया आप ने उन्हें इस से मन्ज़ु किया और फ़रमाया कैद करना ही शिकार है जो शम्बा को करते हो इस से बाज़ आओ वरना अज़ाब में गिरिफ़्तार किये जाओगे, वोह बाज़ न आए, आप ने दुआ फ़रमाई **अल्लाह** तआला ने उन्हें बन्दरों की शक़ल में मस्ख़ कर दिया, अक्लो हवास तो उन के बाकी रहे मगर कुव्वते गोयाई जाइल हो गई, बदनों से बदनू निकलने लगी, अपने इस हाल पर रोते रोते तीन रोज़ में सब हलाक हो गए उन की नस्ल बाकी न रही, येह सत्तर हज़ार के करीब थे । बनी इसराईल का दूसरा गुरौह जो बारह हज़ार के करीब था उन्हें इस अमल से मन्ज़ु करता रहा जब येह न माने तो उन्होंने ने उन के और अपने महल्लों के दरमियान दीवार बना कर अ़लाहदगी कर ली उन सब ने नजात पाई । बनी इसराईल का तीसरा गुरौह साक़ित (ख़ामोश) रहा । उस के हक़ में हज़ुरते इब्ने अ़ब्बास के सामने इक़्रिमा ने कहा कि वोह मग़फ़ूर हैं क्यूं कि अमून् बिल मा'रूफ़ फ़ज़ै किफ़ाय है बा'ज़ का अदा करना कुल का हुक़्म रखता है, उन के सुकूत की वजह येह थी कि येह उन के पन्द पज़ीर होने (नसीहत क़बूल करने) से मायूस थे, इक़्रिमा की येह तक्रीर हज़ुरते इब्ने अ़ब्बास को बहुत पसन्द आई और आप ने सुरूर से उठ कर उन से मुआनक़ा किया और उन की पेशानी को बोसा दिया । (ख़ अमर) **मस्अला** : इस से मा'लूम हुवा कि सुरूर का मुआनक़ा सुन्ते सहाबा है इस के लिये सफ़र से आना और ग़ैबत के बा'द मिलना शर्त नहीं । **116** : बनी इसराईल में आमील नामी एक मालदार था उस के चचाज़ाद भाई ने ब तमए व़िरासत उस को क़त्ल कर के दूसरी बस्ती के दरवाज़े पर डाल दिया और खुद सुब्द को उस के खून का मुदई बना, वहां के लोगों ने हज़ुरते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** से दरख़्वास्त की, कि आप दुआ फ़रमाएं कि **अल्लाह** तआला हकीक़ते हाल ज़ाहिर फ़रमाए, इस पर हुक़्म सादिर हुवा कि एक गाय ज़ब़्द कर के उस का कोई हिस्सा मक्तूल के मारें वोह जिन्दा हो कर क़ातिल को बता देगा । **117** : क्यूं कि मक्तूल का हाल मा'लूम होने और गाय के ज़ब़्द में कोई मुनासबत मा'लूम नहीं होती । **118** : ऐसा जवाब जो सुवाल से रब न रखे जाहिलों का काम है या येह मा'ना है कि मुहाक़मा

هِيَ ۱ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقْرَةٌ لَا فَارِضٌ وَلَا بَكْرٌ ۚ عَوَانٌ بَيْنَ

कैसी है कहा वोह फ़रमाता है कि वोह एक गाय है न बूढ़ी और न औसर (बछिया) बल्कि इन दोनों के

ذَلِكَ ۚ فَافْعَلُوا مَا تُمَرُونَ ۝ ٦٨ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا

बीच में तो करो जिस का तुम्हें हुकम होता है बोले अपने रब से दुआ कीजिये हमें बता दे उस

لُونَهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقْرَةٌ صَفْرَاءٌ ۚ فَاقْعُ لُونَهَا تَسْرُ

का रंग क्या है कहा वोह फ़रमाता है वोह एक पीली गाय है जिस की रंगत डहडहाती (गहरी चमकदार)

النَّظِيرِينَ ۝ ٦٩ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ ۚ إِنَّ الْبَقَرَ تَشْبَهُ

देखने वालों को खुशी देती बोले अपने रब से दुआ कीजिये कि हमारे लिये साफ़ बयान करे वोह गाय कैसी है बेशक गायों में हम को

عَلَيْنَا وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ۝ ٧٠ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقْرَةٌ

शुबा पड़ गया और **अल्लाह** चाहे तो हम राह पा जाएंगे¹¹⁹ कहा वोह फ़रमाता है कि वोह एक गाय है

لَا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَا شِيَةَ فِيهَا ۚ

जिस से खिदमत नहीं ली जाती कि ज़मीन जोते और न खेती को पानी दे बे ऐब है जिस में कोई दाग़ नहीं

قَالُوا النَّجْتِ بِالْحَقِّ ۚ فذَبْحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ۝ ٧١ وَإِذْ

बोले अब आप ठीक बात लाए¹²⁰ तो उसे ज़ब्द किया और ज़ब्द करते मा'लूम न होते थे¹²¹ और जब

(इन्साफ़ तलबी) के मौक़अ पर इस्तिहज़ा जाहिलों का काम है अम्बिया की शान इस से बरतर है। अल क़िस्सा जब बनी इसराईल ने समझ लिया कि गाय का ज़ब्द करना लाज़िम है तो उन्होंने ने आप से उस के औसाफ़ दरयाफ़्त किये। हदीस शरीफ़ में है कि अगर बनी इसराईल बहस न निकालते तो जो गाय ज़ब्द कर देते काफ़ी हो जाती। 119: हुज़ूर सय्यिदे आलम عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया अगर वोह إِنْ شَاءَ اللَّهُ न कहते तो कभी वोह गाय न पाते। **मसअला**: हर नेक काम में إِنْ شَاءَ اللَّهُ कहना मुस्तहब व बाइसे बरकत है। 120: या'नी अब तशफ़ूकी हुई और पूरी शान व सिफ़त मा'लूम हुई। फिर उन्होंने ने गाय की तलाश शुरुअ की, उन अत्राफ़ में ऐसी सिर्फ़ एक गाय थी, उस का हाल यह है कि बनी इसराईल में एक सालेह शख़्स थे उन का एक सगीरुस्सिन बच्चा था और उन के पास सिवाए एक गाय के बच्चे के कुछ न रहा था, उन्होंने ने उस की गरदन पर मोहर लगा कर **अल्लाह** के नाम पर छोड़ दिया और बारगाहे हक़ में अर्ज़ किया: या रब! मैं इस बछिया को इस फ़रज़न्द के लिये तेरे पास वदीअत (अमानत) रखता हूँ जब यह फ़रज़न्द बड़ा हो येह इस के काम आए, उन का तो इन्तिकाल हो गया, बछिया जंगल में ब हिफ़ज़े इलाही परवरिश पाती रही। येह लडका बड़ा हुवा और बि फ़ज़िलही सालेह व मुत्तकी हुवा, मां का फ़रमां बरदार था, एक रोज़ इस की वालिदा ने कहा: ऐ नूरे नज़र! तेरे बाप ने तेरे लिये फुलां जंगल में खुदा के नाम एक बछिया छोड़ दी है, वोह अब जवान हो गई उस को जंगल से ला और **अल्लाह** से दुआ कर कि वोह तुझे अता फ़रमाए, लडके ने गाय को जंगल में देखा और वालिदा की बताई हुई अलामते उस में पाई और उस को **अल्लाह** की क़सम दे कर बुलाया वोह हाज़िर हुई, जवान उस को वालिदा की खिदमत में लाया, वालिदा ने बाज़ार में ले जा कर तीन दीनार पर फ़रोख़्त करने का हुकम दिया और येह शर्त की, कि सौदा होने पर फिर इस की इजाज़त हासिल की जाए, उस ज़माने में गाय की क़ीमत उन अत्राफ़ में तीन दीनार ही थी, जवान जब उस गाय को बाज़ार में लाया तो एक फ़िरिश्ता ख़रीदार की सूत में आया और उस ने गाय की क़ीमत छ⁶ दीनार लगा दी मगर इस शर्त से कि जवान वालिदा की इजाज़त का पाबन्द न हो, जवान ने येह मन्ज़ूर न किया और वालिदा से तमाम क़िस्सा कहा, उस की वालिदा ने छ⁶ दीनार क़ीमत मन्ज़ूर करने की तो इजाज़त दी मगर बैअ में फिर दोबारा अपनी मरज़ी दरयाफ़्त करने की शर्त की। जवान फिर बाज़ार में आया इस मरतबा फ़िरिश्ते ने बारह दीनार क़ीमत लगाई और कहा कि वालिदा की इजाज़त पर मौक़ूफ़ न

قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَاذْرَأْ تُمْ فِيهَا ۗ وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٤٦﴾

तुम ने एक खून किया तो एक दूसरे पर उस की तोहमत डालने लगे और **अल्लाह** को ज़ाहिर करना जो तुम छुपाते थे

فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بَعْضَهَا ۗ كَذَلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ ۗ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ

तो हम ने फ़रमाया उस मक्तूल को इस गाय का एक टुकड़ा मारो ¹²² **अल्लाह** यही मुर्दे जिलाएगा और तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है

لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ

कि कहीं तुम्हें अक्ल हो ¹²³ फिर इस के बाद तुम्हारे दिल सख्त हो गए ¹²⁴ तो वोह

كَالْحِجَارَةِ ۗ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ۗ وَإِنَّمِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ

पथरों की मिसल हैं बल्कि उन से भी ज़ियादा करे (सख्त) और पथरों में तो कुछ वोह हैं जिन से नदियां बह

الْأَنْهَارُ ۗ وَإِنَّمِنَ مِمَّا يَشْتَقُّ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ ۗ وَإِنَّمِنَ مِمَّا يَكْبِتُ

निकलती हैं और कुछ वोह हैं जो फट जाते हैं तो उन से पानी निकलता है और कुछ वोह हैं जो

يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۗ وَمَا لِلَّهِ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٤٨﴾ أَقْتَضَعُونَ

अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं ¹²⁵ और **अल्लाह** तुम्हारे कौतकों (बुरे कामों) से बे खबर नहीं तो ऐ मुसलमानो ! क्या तुम्हें येह तमअ है

रखो, जवान ने न माना और वालिदा को इत्तिलाअ दी वोह साहिबे फ़िरासत समझ गई कि येह खरीदार नहीं कोई फ़िरिश्ता है जो आज्माइश

के लिये आता है, बेटे से कहा कि अब की मरतबा उस खरीदार से येह कहना कि आप हमें इस गाय के फरोख्त करने का हुक्म देते हैं या

नहीं ? लड़के ने येही कहा, फ़िरिश्ते ने जवाब दिया कि अभी इस को रोके रहो, जब बनी इसराईल खरीदने आए तो इस की कीमत येह मुकर्र

करना कि इस की खाल में सोना भर दिया जाए, जवान गाय को घर लाया और जब बनी इसराईल जुस्तजू करते हुए उस के मकान पर पहुंचे

तो येही कीमत तै की और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की ज़मानत पर वोह गाय बनी इसराईल के सिपुर्द की। **मसाइल** : इस वाक़िअ से कई मस्अले

मा'लूम हुए (1) जो अपने इयाल को **अल्लाह** के सिपुर्द करे **अल्लाह** तआला उस की ऐसी उम्दा परवरिश फ़रमाता है। (2) जो अपना माल

अल्लाह के भरोसे पर उस की अमानत में दे **अल्लाह** उस में बरकत देता है। (3) वालिदैन की फ़रमां बरदारी **अल्लाह** तआला को पसन्द

है। (4) गैबी फैज़ कुरबानी व खैरात करने से हासिल होता है। (5) राहे खुदा में नफ़ीस माल देना चाहिये। (6) गाय की कुरबानी अफ़ज़ल

है। **121** : बनी इसराईल के मुसलसल सुवालात और अपनी रुस्वाई के अन्देशे और गाय की गिरानिये कीमत से येह ज़ाहिर होता था कि वोह

ज़ब्द का क़स्द नहीं रखते मगर जब उन के सुवालात शाफ़ी जवाबों से ख़त्म कर दिये गए तो उन्हें ज़ब्द करना ही पड़ा। **122** : बनी इसराईल

ने गाय ज़ब्द कर के उस के किसी उज़्व से मुर्दा को मारा वोह ब हुक्मे इलाही ज़िन्दा हुवा उस के हल्क से खून के फ़व्वारे जारी थे उस ने अपने

चचाज़ाद भाई का बताया कि इस ने मुझे क़त्ल किया, अब उस को भी इक्कार करना पड़ा और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस पर किसास का

हुक्म फ़रमाया, इस के बाद शरअ का हुक्म हुवा कि **मस्अला** : क़ातिल मक्तूल की मीरास से महरूम रहेगा। **मस्अला** : लेकिन अगर अदिल

ने बागी को क़त्ल किया या किसी हम्ला आवर से जान बचाने के लिये मुदाफ़अत की उस में वोह क़त्ल हो गया तो मक्तूल की मीरास से

महरूम न होगा। **123** : और तुम समझो कि बेशक **अल्लाह** तआला मुर्दे ज़िन्दा करने पर क़ादिर है और रोज़े जज़ा मुर्दों को ज़िन्दा करना

और हिसाब लेना हक़ है। **124** : और ऐसे बड़े निशानहाए कुदरत से तुम ने इब्रत हासिल न की। **125** : ब ई हमा तुम्हारे दिल असर पज़ीर

नहीं, पथरों में भी **अल्लाह** ने इदराक व शुज़र दिया है उन्हें ख़ौफ़ इलाही होता है वोह तस्बीह करते हैं "إِنَّ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ" मुस्लिम

शरीफ़ में हज़रते जाबिर رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ से मरवी है कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : "मैं उस पथर को पहचानता हूँ जो बि'सत से पहले

मुझे सलाम किया करता था।" तिरमिजी में हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ से मरवी है : मैं सय्यिदे आलम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के साथ अत्राफ़े मक्का में गया

जो दरख़्त या पहाड़ सामने आता था "السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ" अर्ज़ करता था।

أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ

कि यह यहूदी तुम्हारा यकीन लाएंगे और इन में का तो एक गुरौह वोह था कि **اللَّهُ** का कलाम सुनते फिर

يُحَرِّفُونَهُ مِنْ بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤٥﴾ وَإِذَا الْقَوَالِيْنَ

समझने के बा'द उसे दानिस्ता बदल देते¹²⁶ और जब मुसलमानों से

أَمْؤُوا قَالُوا آمَنَّا ۗ وَإِذَا خَلَا بِبَعْضِهِمْ إِلَىٰ بَعْضٍ قَالُوا أَتُحَدِّثُونَهُمْ

मिलें तो कहें हम ईमान लाए¹²⁷ और जब आपस में अकेले हों तो कहें वोह इल्म जो **اللَّهُ** ने तुम पर खोला मुसलमानों

بِمَافَتْحِ اللَّهِ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوكُمْ بِهِ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٤٦﴾

से बयान किये देते हो कि उस से तुम्हारे ख के यहां तुम्हीं पर हुज्जत लाएं क्या तुम्हें अक्ल नहीं

أَوْ لَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٤٧﴾ وَمِنْهُمْ

क्या नहीं जानते कि **اللَّهُ** जानता है जो कुछ वोह छुपाते हैं और जो कुछ जाहिर करते हैं और उन में कुछ

أُمِّيُونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانِيًّا وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٤٨﴾

अनपढ़ हैं जो किताब¹²⁸ को नहीं जानते मगर ज़बानी पढ़ लेना¹²⁹ या कुछ अपनी मन घड़त और वोह निरे गुमान में हैं

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هَذَا

तो खराबी है उन के लिये जो किताब अपने हाथ से लिखें फिर कह दें यह

مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۗ فَوَيْلٌ لَهُمْ مِمَّا كَتَبَتْ

खुदा के पास से है कि इस के इवज़ थोड़े दाम हासिल करें¹³⁰ तो खराबी है उन के लिये उन के

126 : जैसे उन्होंने ने तौरैत में तहरीफ की और सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की ना'त बदल डाली । **127** : शाने नुजूल : यह आयत उन

यहूदियों की शान में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के ज़माने में थे । इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا** ने फ़रमाया : यहूदी मुनाफ़िक़ जब

सहाबए किराम से मिलते तो कहते कि जिस पर तुम ईमान लाए उस पर हम भी ईमान लाए, तुम हक़ पर हो और तुम्हारे आका मुहम्मद मुस्तफ़ा

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ सच्चे हैं उन का कौल हक़ है, हम उन की ना'त व सिफ़्त अपनी किताब तौरैत में पाते हैं उन लोगों पर रुअसाए यहूद मलामत

करते थे, इस का बयान "وَإِذَا خَلَا بِبَعْضِهِمْ" में है । (गारन) **فَأَعَدَا** : इस से मा'लूम हुवा कि हक़पोशी और सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के

औसाफ़ का छुपाना और कमालात का इन्कार करना यहूद का तरीका है आज कल के बहुत से गुमराहों की येही आदत है । **128** : किताब से

तौरैत मुराद है । **129** : "अमानी" (अमानी) **أُمِّيٌّ** (उम्निय्या) की जम्अ है और इस के मा'नी ज़बानी पढ़ने के हैं । हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا**

से मरवी है कि आयत के मा'ना येह हैं कि किताब को नहीं जानते मगर सिर्फ़ ज़बानी पढ़ लेना बिगैर मा'ना समझे । (गारन) बा'ज मुफ़स्सरीन

ने येह मा'ना भी बयान किये हैं कि **أُمِّيٌّ** से वोह झूटी घड़ी हुई बातें मुराद हैं जो यहूदियों ने अपने उलमा से सुन कर बे तहकीक़ मान ली

थीं । **130** : शाने नुजूल : जब सय्यिदे अम्बिया **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** मदीनए तय्यिबा तशरीफ़ फ़रमा हुए तो उलमाए तौरैत व रुअसाए यहूद को

कवी अन्देशा हो गया कि उन की रोज़ी जाती रहेगी और सरदारी मिट जाएगी क्यूं कि तौरैत में हज़ूर का हुल्य़ा और औसाफ़ मजकूर हैं जब

लोग हज़ूर को इस के मुबातिक़ पाएंगे फ़ौरन ईमान ले आएंगे और अपने उलमा व रुअसा को छोड़ देंगे, इस अन्देशे से उन्होंने ने तौरैत में

أَيُّدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُونَ ﴿٤٩﴾ وَقَالُوا لَنْ تَسْنَأَ النَّارُ إِلَّا

हाथों के लिखे से और खुराबी उन के लिये उस कमाई से और बोले हमें तो आग न छूएगी मगर

أَيَّامًا مَّعْدُودَةً ۗ قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَنْ يُخْلَفَ اللَّهُ

गिनती के दिन¹³¹ तुम फरमा दो क्या खुदा से तुम ने कोई अहद ले रखा है जब तो **الله** हरगिज़ अपना अहद खिलाफ न

عَهْدَةً أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٠﴾ بَلَى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً

करेगा¹³² या खुदा पर वोह बात कहते हो जिस का तुम्हें इल्म नहीं हां क्यूं नहीं जो गुनाह कमाए

وَأَحَاطَتْ بِهَا خَطِيئَتُهُ فَاُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۗ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٥١﴾

और उस की ख़ता उसे घेर ले¹³³ वोह दोख़ वालों में है उन्हें हमेशा उस में रहना

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۗ هُمْ فِيهَا

और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोह जन्नत वाले हैं उन्हें हमेशा

خَالِدُونَ ﴿٥٢﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا

उस में रहना और जब हम ने बनी इसराईल से अहद लिया कि **الله** के सिवा किसी को न

اللَّهِ ۚ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ

पूजा और मां बाप के साथ भलाई करो¹³⁴ और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों से

तहरीफ व तय़ीर कर डाली और हुलिया शरीफ़ बदल दिया, मसलन तौरैत में आप के औसाफ़ येह लिखे थे कि आप ख़ूबरू हैं, बाल ख़ूब सूत, आंखें सुर्मर्गी, क़द मियाना है, इस को मिटा कर उन्होंने ने येह बनाया कि वोह बहुत दराज़ क़ामत हैं, आंखें कन्जी नीली, बाल उलझे हैं येही अ़वाम को सुनाते येही किताबे इलाही का मज़मून बताते और समझते कि लोग हुज़ूर को इस के खिलाफ़ पाएंगे तो आप पर ईमान न लाएंगे हमारे गिरवीदा रहेंगे और हमारी कमाई में फ़क़ न आएगा। 131 : शाने नुज़ूल : हुज़रते इब्ने अब्बास رضي الله عنه से मरवी है कि यहूद कहते थे कि वोह दोख़ में हरगिज़ दाख़िल न होंगे मगर सिफ़ इतनी मुद्दत के लिये जितने अर्से उन के आबाओ अन्दाद ने गौसाला (बछड़ा) पूजा था और वोह चालीस रोज़ हैं इस के बा'द वोह अज़ाब से छूट जाएंगे, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। 132 : क्यूं कि किज़्ब बड़ा ऐब है और ऐब **الله** तआला पर मुहाल, लिहाज़ा उस का किज़्ब तो मुम्किन नहीं लेकिन जब **الله** तआला ने तुम से सिफ़ चालीस रोज़ के अज़ाब के बा'द छोड़ देने का वा'दा ही नहीं फ़रमाया तो तुम्हारा कौल बातिल हुवा। 133 : इस आयत में गुनाह से शिर्क व कुफ़्र मुराद है और इहाता करने से येह मुराद है कि नजात की तमाम राहें बन्द हो जाएं और कुफ़्र व शिर्क ही पर उस को मौत आए क्यूं कि मोमिन ख़्वाह कैसा भी गुनाहगार हो गुनाहों से घिरा नहीं होता इस लिये कि ईमान जो आ'ज़म ताअत है वोह इस के साथ है। 134 : **الله** तआला ने अपनी इबादत का हुक्म फ़रमाने के बा'द वालिदैन् के साथ भलाई करने का हुक्म दिया इस से मा'लूम होता है कि वालिदैन् की ख़िदमत बहुत ज़रूरी है। वालिदैन् के साथ भलाई के येह मा'ना हैं कि ऐसी कोई बात न कहे और ऐसा कोई काम न करे जिस से इन्हें ईज़ा हो और अपने बदन व माल से इन की खिदमत में दरेग न करे जब इन्हें ज़रूरत हो इन के पास हाज़िर रहे। मस्अला : अगर वालिदैन् अपनी खिदमत के लिये नवाफ़िल छोड़ने का हुक्म दें तो छोड़ दे इन की खिदमत नफ़्ल से मुक़द्दम है। मस्अला : वाजिबात वालिदैन् के हुक्म से तर्क नहीं किये जा सकते। वालिदैन् के साथ एहसान के तरीके जो अहादीस से साबित हैं येह हैं कि तहे दिल से उन के साथ महब्वत रखे रफ़्तारो गुफ़्तार, निशस्तो बरखास्त में अदब लाज़िम जाने, उन की शान में ता'ज़ीम के लफ़्ज़ कहे, उन को राज़ी करने की सई करता रहे, अपने नफ़ीस माल को उन से न बचाए, उन के मरने के बा'द उन की वसियतें जारी करे, उन के लिये फ़ातिहा, सदक़ात, तिलावते कुरआन से ईसाले सवाब करे, **الله** तआला

وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ

और लोगों से अच्छी बात कहे¹³⁵ और नमाज़ काइम रखो और ज़कात दो फिर तुम फिर गए¹³⁶

إِلَّا قَلِيلًا مِّنْكُمْ وَأَنْتُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٨٣﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ

मगर तुम में के थोड़े¹³⁷ और तुम रू गर्दा हो¹³⁸ और जब हम ने तुम से अहद लिया

لَا تَسْفِكُونَ دِمَاءَكُمْ وَلَا تَخْرُجُونَ أَنْفُسَكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ

कि अपनों का खून न करना और अपनों को अपनी बस्तियों से न निकालना फिर

أَقْرَرْتُمْ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ﴿٨٤﴾ ثُمَّ أَنْتُمْ هَؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنْفُسَكُمْ

तुम ने इस का इक़्ार किया और तुम गवाह हो फिर यह जो तुम हो अपनों को क़त्ल करने लगे

وَتَخْرُجُونَ فَرِيقًا مِّنْكُمْ مِنْ دِيَارِهِمْ تَظَاهَرُونَ عَلَيْهِمْ بِالْإِثْمِ

और अपने में एक गुरौह को उन के वतन से निकालते हो उन पर मदद देते हो (उन के मुख़ालिफ़ को) गुनाह

وَالْعُدْوَانَ ۗ وَإِنْ يَأْتِوكُمُ اسْرِي تَفْدُوهُمْ وَهُمْ مَحْرَمٌ عَلَيْكُمْ

और ज़ियादती में और अगर वोह कैदी हो कर तुम्हारे पास आएं तो बदला दे कर छुड़ा लेते हो और उन का निकालना तुम पर

إِخْرَاجُهُمْ ۗ أَفْتَوْمُونَ بِبَعْضِ الْكِتَابِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ ۗ فَمَا

हराम है¹³⁹ तो क्या खुदा के कुछ हुक्मों पर ईमान लाते और कुछ से इन्कार करते हो तो जो

से उन की मग़िफ़रत की दुआ करे, हफ़्तावार उन की क़त्र की ज़ियारत करे। (بخ اعراب) वालिदैन के साथ भलाई करने में येह भी दाख़िल है कि अगर वोह गुनाहों के आदी हों या किसी बद मज़हबी में गिरिफ़्तार हों तो उन को ब नरमी इस्लाह व तक्वा और अक़ीदए हक्का की तरफ़ लाने की कोशिश करता रहे। (٤٨٠) 135 : अच्छी बात से मुराद नेकियों की तरगीब और बदियों से रोकना है। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि मा'ना येह हैं कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की शान में हक़ और सच बात कहो, अगर कोई दरयाप्त करे तो हुज़ूर के कमालात व औसाफ़ सच्चाई के साथ बयान कर दो, आप की ख़ूबियां न छुपाओ। 136 : अहद के बा'द 137 : जो ईमान ले आए मिस्ल हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के अस्हाब कि इन्हों ने तो अहद पूरा किया। 138 : और तुम्हारी क़ौम की आदत ही ए'राज करना और अहद से फिर जाना है। 139 : शाने नुज़ूल : तौरैत में बनी इसराईल से अहद लिया गया था कि वोह आपस में एक दूसरे को क़त्ल न करें, वतन से न निकालें और जो बनी इसराईल किसी की कैद में हो उस को माल दे कर छुड़ा लें, इस अहद पर उन्हों ने इक़्ार भी किया, अपने नफ़स पर शाहिद भी हुए लेकिन काइम न रहे और इस से फिर गए। सूरते वाकिआ येह है कि नवाहे मदीना में यहूद के दो फ़िर्के "बनी कुरैज़ा" और "बनी नज़ीर" सुकूनत रखते थे और मदीना शरीफ़ में दो फ़िर्के "औस व ख़ज़रज" रहते थे, बनी कुरैज़ा औस के हलीफ़ थे और बनी नज़ीर ख़ज़रज के या'नी हर एक कबीले ने अपने हलीफ़ के साथ क़समा क़समी की थी (यक़ीन दिहानी कराई थी) कि अगर हम में से किसी पर कोई हम्ला आवर हो तो दूसरा उस की मदद करेगा। औस और ख़ज़रज बाहम जंग करते थे, बनी कुरैज़ा औस की और बनी नज़ीर ख़ज़रज की मदद के लिये आते थे और हलीफ़ के साथ हो कर आपस में एक दूसरे पर तलवार चलाते थे, बनी कुरैज़ा बनी नज़ीर को और वोह बनी कुरैज़ा को क़त्ल करते थे और उन के घर वीरान कर देते थे, उन्हें उन के मसाकिन से निकाल देते थे लेकिन जब उन की क़ौम के लोगों को उन के हलीफ़ कैद करते थे तो वोह उन को माल दे कर छुड़ा लेते थे। मसलन अगर बनी नज़ीर का कोई शख़्स औस के हाथ में गिरिफ़्तार होता तो बनी कुरैज़ा औस को माली मुआवज़ा दे कर उस को छुड़ा लेते बा वुजूदे कि अगर वोही शख़्स लड़ाई के वक़्त उन के मौक़अ पर आ जाता तो उस के क़त्ल

جَزَاءٌ مَّنْ يَّفْعَلُ ذَلِكَ مِنْكُمْ إِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ١٤٠

तुम में ऐसा करे उस का बदला क्या है मगर यह कि दुनिया में रुस्वा हो¹⁴⁰

وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يُرَدُّونَ إِلَىٰ أَشَدِّ الْعَذَابِ ۗ وَمَا لِلَّهِ بِغَافِلٍ عَمَّا

और कियामत में सख्त तर अज़ाब की तरफ़ फेरे जाएंगे और **अल्लाह** तुम्हारे कौतकों (बुरे कामों) से

تَعْمَلُونَ ١٤١ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۗ

वे ख़बर नहीं¹⁴¹ यह हैं वोह लोग जिन्होंने ने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी मोल ली

فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنصَّرُونَ ١٤٢ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ

तो न उन पर से अज़ाब हलका और न उन की मदद की जाए और बेशक हम ने मूसा को

الْكِتَابَ وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ ۗ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ

किताब अता की¹⁴² और इस के बा'द पै दर पै रसूल भेजे¹⁴³ और हम ने ईसा बिन मरयम को

الْبَيْتَ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ ۗ أَفَكُلَّمَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ

खुली निशानियां अता फ़रमाई¹⁴⁴ और पाक रूह से¹⁴⁵ उस की मदद की¹⁴⁶ तो क्या जब तुम्हारे पास कोई रसूल वोह ले कर आए जो तुम्हारे

में हरगिज़ दरेग न करते। इस फ़ैल पर मलामत की जाती है कि जब तुम ने अपनों की खूनरेजी न करने, उन को बस्तियों से न निकालने, उन

के असीरों को छुड़ाने का अहद किया था तो इस के क्या मा'ना कि कत्ल व इख़्राज में तो दर गुज़र न करो और गिरफ़्तार हो जाएं तो छुटाते

फिरो, अहद में से कुछ मानना और कुछ न मानना क्या मा'ना रखता है? जब तुम कत्ल व इख़्राज से बाज़ न रहे तो तुम ने अहद शिकनी की

और ह़राम के मुरतक़िब हुए और इस को हलाल जान कर काफ़िर हो गए। **मस्अला** : इस आयत से मा'लूम हुवा कि जुल्म व ह़राम पर इमदाद

करना भी ह़राम है। **मस्अला** : यह भी मा'लूम हुवा कि ह़रामे कर्ई को हलाल जानना कुफ़्र है। **मस्अला** : यह भी मा'लूम हुवा कि किताबे

इलाही के एक हुक्म का न मानना भी सारी किताब का न मानना और कुफ़्र है। **फ़ाएदा** : इस में यह तब्दीह भी है कि जब अहकामे इलाही

में से बा'ज का मानना बा'ज का न मानना कुफ़्र हुवा तो यहूद का हज़रत सय्यिदे अम्बिया **عَلَيْهِ السَّلَام** का इन्कार करने के साथ हज़रते मूसा

की नुबुव्वत को मानना कुफ़्र से नहीं बचा सकता। **140** : दुनिया में तो यह रुस्वाई हुई कि बनी कुरैज़ा 3 हिजरी में मारे गए, एक

रोज़ में इन के सात सो आदमी कत्ल किये गए थे और बनी नज़ीर इस से पहले ही जला वतन कर दिये गए, हलीफ़ों की खातिर अहदे इलाही

की मुख़ालफ़त का यह वबाल था। **मस्अला** : इस से मा'लूम हुवा कि किसी की तरफ़ दारी में दीन की मुख़ालफ़त करना इलावा उख़वी

अज़ाब के दुनिया में भी ज़िल्लतो रुस्वाई का बाइस होता है। **141** : इस में जैसी ना फ़रमानों के लिये वईदे शदीद है कि **अल्लाह** तआला

तुम्हारे अफ़आल से बे ख़बर नहीं है तुम्हारी ना फ़रमानियों पर अज़ाबे शदीद फ़रमाएगा ऐसे ही इस आयत में मोमिनीन व सालिहीन के लिये मुज्दा

है कि उन्हें आ'माले हसन की बेहतरीन जज़ा मिलेगी। **142** : इस किताब से तौरैत मुराद है जिस में **अल्लाह** तआला के तमाम अहद

मज्कूर थे सब से अहम अहद यह थे कि हर ज़माने के पैग़म्बरों की इताअत करना, उन पर ईमान लाना और उन की ता'ज़ीमो तौक़ीर करना।

143 : हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** के ज़माने से हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** तक मुतवातिर अम्बिया आते रहे, उन की ता'दाद चार हज़ार बयान की गई

है, यह सब हज़रत शरीअते मूसवी के मुहाफ़िज़ और उस के अहकाम जारी करने वाले थे, चूँकि ख़ातमुल अम्बिया के बा'द नुबुव्वत किसी को नहीं

मिल सकती इस लिये शरीअते मुहम्मदिय्यह की हिफ़ाज़त व इशाअत की खिदमत रब्बानी उलमा और मुजहिदीने मिल्लत को अता हुई। **144** :

इन निशानियों से हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** के मो'जिज़ात मुराद हैं जैसे मुर्दे जिन्दा करना, अन्धे और बरस वाले को अच्छा करना, परिन्द पैदा करना,

ग़ैब की ख़बर देना वगैरा। **145** : "रूहे कुदुस" से हज़रते जिब्रील मुराद हैं कि रूहानी हैं वहय लाते हैं जिस से कुलूब की हयात है, वोह हज़रते

ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** के साथ रहने पर मामूर थे, आप 33 साल की उम्र शरीफ़ में आस्मान पर उठा लिये गए उस वक़्त तक हज़रते जिब्रील सफ़र, हज़र

में कभी आप से जुदा न हुए, ताईदे रूहुल कुदुस हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** की जलील फ़ज़ीलत है। सय्यिदे आलम **عَلَيْهِ السَّلَام** के सदके में हज़ूर

के बा'ज उम्मतियों को भी ताईदे रूहुल कुदुस मुयस्सर हुई। सहीह बुख़ारी वगैरा में है कि हज़रते हस्सान **رضي الله عنه** के लिये मिम्बर बिछया जाता

أَنْفُسِكُمْ اسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا

नफ्स की खाहिश नहीं तकबुर करते हो तो उन (अम्बिया) में एक गुरौह को तुम झुटलाते और एक गुरौह को शहीद करते हो¹⁴⁷ और यहूदी बोले हमारे

قُلُوبَنَا غَلْفٌ ۖ بَلْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾ وَ

दिलों पर पर्दे पड़े हैं¹⁴⁸ बल्कि **अल्लाह** ने उन पर ला'नत की उन के कुफ़्र के सबब तो उन में थोड़े ईमान लाते हैं¹⁴⁹ और

لَبَّاءُ جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۖ وَكَانُوا مِنْ قَبْلُ

जब उन के पास **अल्लाह** की वोह किताब (कुरआन) आई जो उन के साथ वाली किताब (तौरैत) की तस्दीक़ फ़रमाती है¹⁵⁰ और इस से पहले उसी नबी

يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَلَمَّا جَاءَهُمْ مَّا عَرَفُوا كَفَرُوا

के वसीले से काफ़िरों पर फ़तह मांगते थे¹⁵¹ तो जब तशरीफ़ लाया उन के पास वोह जाना पहचाना उस से मुन्किर हो

بِهِ ۖ فَلَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٨٩﴾ بِسَبَأٍ اشْتَرُوا بِهَا أَنْفُسَهُمْ أَن

बैठे¹⁵² तो **अल्लाह** की ला'नत मुन्किरों पर किस बुरे मोलों उन्होंने ने अपनी जानों को ख़रीदा कि

يَكْفُرُوا بِهَا أَنزَلَ اللَّهُ بَعْثًا أَلَّا نُنزِّلَ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ

अल्लाह के उतारे से मुन्किर हों¹⁵³ इस की जलन से कि **अल्लाह** अपने फ़ज़ल से अपने जिस बन्दे पर चाहे

مِّنْ عِبَادِهِ ۖ فَبَاءُوا بِغَضَبٍ عَلَىٰ غَضَبٍ ۖ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ

वह्य उतारे¹⁵⁴ तो ग़ज़ब पर ग़ज़ब के सज़ावार हुए¹⁵⁵ और काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का

वोह ना'त शरीफ़ पढ़ते, हुज़ूर उन के लिये फ़रमाते: "اللَّهُمَّ اِيْدُهُ بِرُوحِ الْفُلْسِ" (ऐ **अल्लाह**! हज़रते जिब्रील **عليه السلام** के ज़रीफ़ इन की मदद फ़रमा) 146: फिर भी ऐ यहूद! तुम्हारी सरकशी में फ़र्क़ न आया। 147: यहूद पैग़म्बरों के अहक़ाम अपनी ख़्वाहिशों के खिलाफ़ पा कर उन्हें झुटलाते और मौक़अ पाते तो कुल्ल कर डालते थे जैसे कि उन्होंने ने हज़रते शा'या व ज़करिय्या (**عليهما السلام**) और बहुत से अम्बिया को शहीद किया, सय्यिदे अम्बिया **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के भी दर पै रहे, कभी आप पर जादू किया, कभी ज़हर दिया, तरह तरह के फ़रेब व इरादए कल्ल किये।

148: यहूद ने येह इस्तिहज़ान कहा था उन की मुराद येह थी कि हुज़ूर की हिदायत को इन के दिलों तक राह नहीं है, **अल्लाह** तआला ने इस का रद फ़रमाया कि बे दीन झूटे हैं, कुलुब **अल्लाह** तआला ने फ़ितरत पर पैदा फ़रमाए इन में कबूले हक़ की लियाक़त रखी, इन के कुफ़्र की शामत है कि इन्हों ने सय्यिदे अम्बिया **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की नुबुव्वत का ए'तिराफ़ करने के बा'द इन्कार किया, **अल्लाह** तआला ने इन पर ला'नत फ़रमाई इस का असर है कि कबूले हक़ की ने'मत से महरूम हो गए। 149: येही मजमून दूसरी जगह इशाद हुवा:

"بَلْ طَعِبَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا" (बल्कि **अल्लाह** ने उन के कुफ़्र के सबब उन के दिलों पर मोहर लगा दी है तो ईमान नहीं लाते मगर थोड़े) 150: सय्यिदे अम्बिया **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की नुबुव्वत और हुज़ूर के औसाफ़ के बयान में। 151: शाने नुज़ूल: सय्यिदे अम्बिया **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की बि'सत और कुरआने करीम के नुज़ूल से क़ब्ल यहूद अपने हाज़ात के लिये हुज़ूर के नामे पाक के वसीले से दुआ करते और काम्याब होते थे और इस तरह दुआ किया करते थे: "اللَّهُمَّ افْحَعْ عَلَيْنَا وَانصُرْنَا بِالنَّبِيِّ الْأَمِيِّ" या रब! हमें नबिय्ये उम्मी के सदके में फ़त्हो नुसरत अता फ़रमा। मस्अला: इस से मा'लूम हुवा कि मकबूलाने हक़ के वसीले से दुआ कबूल होती है। येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूर से क़ब्ल जहान में हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी का शोहरा था उस वक़्त भी हुज़ूर के वसीले से ख़ल्क की हाज़त रवाई होती थी। 152: येह इन्कार इनाद व हसद और हुब्बे रियासत की वजह से था। 153: या'नी आदमी को अपनी जान की ख़लासी के लिये वोही करना चाहिये जिस से रिहाई की उम्मीद हो। यहूद ने येह बुरा सौदा किया कि **अल्लाह** के नबी और उस की किताब के मुन्किर हो गए। 154: यहूद की ख़्वाहिश थी कि ख़त्मे नुबुव्वत का मन्सब बनी इसराईल में से किसी को मिलता जब देखा कि वोह महरूम रहे, बनी इस्राईल नवाजे गए तो हसद से मुन्किर हो गए। मस्अला: इस से मा'लूम हुवा कि हसद हराम और महरूमियों का बाइस है। 155: या'नी अन्वाओ अक़साम के ग़ज़ब के

مُهَيِّنٌ ۙ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ امْنُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا نَوْمٌ مِنْ

अज्ञाब है¹⁵⁶ और जब उन से कहा जाए कि **اللَّهُ** के उतारे पर ईमान लाओ¹⁵⁷ तो कहते हैं वोह जो हम पर उतरा

بِمَا أَنْزَلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَاءَهُ ۗ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِمَا

उस पर ईमान लाते हैं¹⁵⁸ और बाकी से मुन्किर होते हैं हालां कि वोह हक है उन के पास वाले की तस्दीक

مَعَهُمْ ۗ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنْبِيَاءَ اللَّهِ مِنْ قَبْلُ إِنْ كُنْتُمْ

फरमाता हुवा¹⁵⁹ तुम फरमाओ कि फिर अगले अम्बिया को क्यूं शहीद किया अगर तुम्हें अपनी किताब

مُؤْمِنِينَ ۙ ۙ وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعَجَلَ

पर ईमान था¹⁶⁰ और बेशक तुम्हारे पास मूसा खुली निशानियां ले कर तशरीफ लाया फिर तुम ने इस के बा'द¹⁶¹ बछड़े

مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ۙ ۙ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمْ

को मा'बूद बना लिया और तुम ज़ालिम थे¹⁶² और याद करो जब हम ने तुम से पैमान लिया¹⁶³ और कोहे तूर को तुम्हारे सरों पर

الطُّورَ ۗ خُذُوا مَا آتَيْنَكُمْ بِقُوَّةٍ وَأَسْعُوا ۗ قَالُوا اسْبِعْنَا وَعَصِيًّا ۙ

बुलन्द किया लो जो हम तुम्हें देते हैं जोर से और सुनो बोले हम ने सुना और न माना

وَأَشْرَبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۗ قُلْ بِسْمَايَا مُرْكُمُ بِهِ

और उन के दिलों में बछड़ा रच रहा था उन के कुफ़ के सबब तुम फरमा दो क्या बुरा हुक्म देता है तुम को

إِيَّانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۙ ۙ قُلْ إِنْ كُنْتُمْ لَكُمْ الدَّارُ الْآخِرَةُ

तुम्हारा ईमान अगर ईमान रखते हो¹⁶⁴ तुम फरमाओ अगर पिछला घर

عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً ۙ مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَسَبُّوا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ

اللَّهُ के नज़दीक ख़ालिस तुम्हारे लिये हो न औरों के लिये तो भला मौत की आरजू तो करो अगर

सजावार हुए । 156 : इस से मा'लूम हुवा कि ज़िल्लतो इहानत वाला अज्ञाब कुफ़र के साथ खास है, मोमिनीन को गुनाहों की वजह से

अज्ञाब हुवा भी तो ज़िल्लतो इहानत के साथ न होगा, **اللَّهُ** तआला ने फरमाया : "وَلِلَّهِ الْغَنَةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ" (और इज़्जत तो

اللَّهُ और उस के रसूल और मुसलमानों ही के लिये है) 157 : इस से कुरआने पाक और तमाम वोह किताबें और सहाइफ़ मुराद हैं जो

اللَّهُ तआला ने नाज़िल फरमाए या'नी सब पर ईमान लाओ । 158 : इस से उन की मुराद तौरैत है । 159 : या'नी तौरैत पर ईमान लाने

का दा'वा ग़लत है चूंकि कुरआने पाक जो तौरैत का मुसद्दिक (तस्दीक करने वाला) है इस का इन्कार तौरैत का इन्कार हो गया । 160 : इस

में भी उन की तकज़ीब है कि अगर तौरैत पर ईमान रखते तो अम्बिया **عليهم السلام** को हरगिज़ शहीद न करते । 161 : या'नी हज़रते मूसा

عليه السلام के तूर पर तशरीफ़ ले जाने के बा'द । 162 : इस में भी उन की तकज़ीब है कि शरीअते मूसवी के मानने का दा'वा झूटा है अगर

तुम मानते तो हज़रते मूसा **عليه السلام** के असा और यदे बैजा वगैरा खुली निशानियों के देखने के बा'द गौसाला परस्ती (बछड़े की पूजा) न

करते । 163 : तौरैत के अहकाम पर अमल करने का । 164 : इस में भी उन के दा'वाए ईमान की तकज़ीब है ।

صَادِقِينَ ﴿٩٣﴾ وَلَنْ يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ

सच्चे हो¹⁶⁵ और हरगिज़ कभी इस की आरजू न करेंगे¹⁶⁶ उन बद आ'मालियों के सबब जो आगे कर चुके¹⁶⁷ और **अल्लाह** खूब जानता है

بِالظَّالِمِينَ ﴿٩٤﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَى حَيَاتِهِ وَمِنَ الَّذِينَ

ज़ालिमों को और बेशक तुम ज़रूर उन्हें पाओगे कि सब लोगों से ज़ियादा जीने की हवस रखते हैं और मुश्रिकों से

أَشْرَكُوا يَوْمَئِذٍ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرَ أَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِبُرْزُخٍ

एक को तमन्ना है कि कहीं हजार बरस जिये¹⁶⁸ और वोह उसे अज़ाब

مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُعَمَّرَ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٩٥﴾ قُلْ مَنْ كَانَ

से दूर न करेगा इतनी उम्र दिया जाना और **अल्लाह** उन के कौतक (बुरे अमल) देख रहा है तुम फ़रमा दो जो कोई

عَدُوًّا وَالْجَبْرِيْلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ

जिब्रील का दुश्मन हो¹⁶⁹ तो उस (जिब्रील) ने तो तुम्हारे दिल पर **अल्लाह** के हुक्म से यह कुरआन उतारा अगली किताबों की

يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٩٦﴾ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ

तस्दीक़ फ़रमाता और हिदायत और बिशारत मुसलमानों को¹⁷⁰ जो कोई दुश्मन हो **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्तों

165 : यहूद के बातिल दआवी (झूठे दा'वों) में से एक यह दा'वा था कि जन्नत खास उन्हीं के लिये है इस का रद्द फ़रमाया जाता है कि अगर तुम्हारे जो'म में जन्नत तुम्हारे लिये खास है और आख़िरत की तरफ़ से तुम्हें इम्तीयान है, आ'माल की हाज़त नहीं तो जन्नती ने'मतों के मुक़ाबले में दुन्यवी मसाइब क्यूं बरदाश्त करते हो ? मौत की तमन्ना करो कि तुम्हारे दा'वे की बिना पर तुम्हारे लिये बाइसे राहत है, अगर तुम ने मौत की तमन्ना न की तो यह तुम्हारे किज़्ब की दलील होगी । हदीस शरीफ़ में है कि अगर वोह मौत की तमन्ना करते तो सब हलाक हो जाते और रूए ज़मीन पर कोई यहूदी बाक़ी न रहता । **166** : यह ग़ैब की खबर और मो'जिज़ा है कि यहूद बा वुजूद निहायत ज़िद और शिद्दत मुख़ालफ़त के भी तमन्नाए मौत का लफ़ज़ ज़बान पर न ला सके । **167** : जैसे नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान और कुरआन के साथ कुफ़्र और तौरैत की तहरीफ़ वगैरा । **मस्अला** : मौत की महब्वत और लिकाए परवर दगार का शौक **अल्लाह** के मक्बूल बन्दों का तरीका है । हज़रते उमर رضي الله عنه हर नमाज़ के बा'द दुआ फ़रमाते : "اللَّهُمَّ ارْزُقْنِي شَهَادَةً فِي سَبِيلِكَ وَوَفَاءَةً بِبَلَدِ رَسُولِكَ" या रब ! मुझे अपनी राह में शहादत और अपने रसूल के शहर में वफ़ात नसीब फ़रमा । बिल उमूम तमाम सहाबए किबार और बिल खुसूस शुहदाए बद्रो उहुद अस्हाबे बैअते रिज़वान मौत फ़ी सबीलिल्लाह की महब्वत रखते थे, हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رضي الله عنه ने लश्करे कुफ़फ़ार के सरदार रुस्तम बिन फरख़ जाद के पास जो ख़्त भेजा उस में तहरीर फ़रमाया था : "إِنَّ مَعِيَ قَوْمًا يُحِبُّونَ الْمَوْتَ كَمَا يُحِبُّونَ الْأَعْرَابَ الْخَمْرَ" या'नी मेरे साथ ऐसी कौम है जो मौत को इतना महबूब रखती है जितना अज़मी शराब को । इस में लतीफ़ इशारा था कि शराब की नाक़िस मस्ती को महब्वते दुन्या के दीवाने पसन्द करते हैं और अहलुल्लाह मौत को महबूबे हकीकी के विसाल का ज़रीआ समझ कर महबूब जानते हैं । फ़िल जुम्ला अहले इमान आख़िरत की रग़बत रखते हैं और अगर तूले हयात की तमन्ना भी करें तो वोह इस लिये होती है कि नेकियां करने के लिये कुछ और अर्सा मिल जाए जिस से आख़िरत के लिये ज़खीरए सआदत ज़ियादा कर सकें अगर गुज़स्ता अय्याम में गुनाह हुए हैं तो उन से तौबा व इस्तिग़फ़र कर लें । **मस्अला** : सिहाह की हदीस में है कोई दुन्यवी मुसीबत से परेशान हो कर मौत की तमन्ना न करे । और दर हकीक़त हवादिसे दुन्या से तंग आ कर मौत की दुआ करना सन्नो रिज़ा व तस्लीमो तवक्कुल के ख़िलाफ़ व ना जाइज़ है । **168** : मुश्रिकीन का एक गुरौह मजूसी है आपस में तहिय्यत व सलाम के मोक़अ पर कहते हैं : "ज़िह हज़ार साल" या'नी हजार बरस जियो, मतलब यह है कि मजूसी मुश्रिक हज़ार बरस जीने की तमन्ना रखते हैं, यहूदी इन से भी बढ़ गए कि इन्हें हिंस ज़िन्दगानी सब से ज़ियादा है । **169** : **शाने नुज़ूल** : यहूद के आ़लिम अब्दुल्लाह बिन सूरिया ने हुज़ूर सय्यिदे आलम صلى الله عليه وسلم से कहा : आप के पास आस्मान से कौन फ़िरिश्ता आता है ? फ़रमाया : जिब्रील । इब्ने सूरिया ने कहा : वोह हमारा दुश्मन है, अज़ाबे शिद्दत और ख़सफ़ उतारता है, कई मरतबा हम से अ़दावत कर चुका है, अगर आप के पास मीकाइल आते तो हम आप पर इमान ले आते । **170** : तो यहूद की अ़दावत जिब्रील के साथ बे मा'ना है बल्कि अगर उन्हें इन्साफ़ होता तो वोह जिब्रीले अमीन से महब्वत करते और उन के शुक्र गुज़ार होते कि वोह ऐसी किताब लाए जिस से उन की किताबों की तस्दीक़ होती है । और "بُشْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ" (बिशारत मुसलमानों को)

وَأَرْسَلْنَا وَجَبْرَئِيلَ وَمِيكَائِيلَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ ﴿٩٨﴾ وَلَقَدْ

और उस के रसूलों और जिब्रील और मीकाईल का तो **अल्लाह** दुश्मन है काफ़िरों का¹⁷¹ और बेशक

أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفَاسِقُونَ ﴿٩٩﴾ أَوْ كَلَّمَا

हम ने तुम्हारी तरफ़ रोशन आयतें उतारीं¹⁷² और इन के मुन्किर न होंगे मगर फ़ासिक् लोग और क्या जब कभी

عَهْدًا وَعَهْدًا نَبَذَهُ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٠﴾

कोई अहद करते हैं उन में एक फ़रीक् इसे फेंक देता है बल्कि उन में बहुतेरों को ईमान नहीं¹⁷³

وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ

और जब उन के पास तशरीफ़ लाया **अल्लाह** के यहां से एक रसूल¹⁷⁴ उन की किताबों की तस्दीक़ फ़रमाता¹⁷⁵ तो किताब

مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لِيُكْتَبَ اللَّهُ وِرَاءَهُمْ كَانْتَهُمْ

वालों से एक गुरौह ने **अल्लाह** की किताब अपने पीठ पीछे फेंक दी¹⁷⁶ गया वोह

لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾ وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيْطَانُ عَلَىٰ مُلْكٍ سُلَيْمٍ ﴿١٠٢﴾

कुछ इल्म ही नहीं रखते¹⁷⁷ और उस के पैरव हुए जो शैतान पढ़ा करते थे सल्तनते सुलैमान के जमाने में¹⁷⁸ और

फ़रमाने में यहूद का रद है कि अब तो जिब्रील हिदायत व बिशारत ला रहे हैं फिर भी तुम अदावत से बाज़ नहीं आते । 171 : इस से

मा'लूम हुवा कि अम्बिया व मलाएका की अदावत कुफ़्र और ग़ज़बे इलाही का सबब है और महबूबाने हक़ से दुश्मनी खुदा से

दुश्मनी करना है । 172 : शाने नुजूल : येह आयत इन्ने सूरिया यहूदी के जवाब में नाज़िल हुई जिस ने हुज़ूर सय्यदे आलम

से कहा था कि ऐ मुहम्मद ! आप हमारे पास कोई ऐसी चीज़ न लाए जिसे हम पहचानते और न आप पर कोई वाजेह

आयत नाज़िल हुई जिस का हम इत्तिबाअ करते । 173 : शाने नुजूल : येह आयत मालिक बिन सैफ़ यहूदी के जवाब में नाज़िल हुई

जब हुज़ूर सय्यदे आलम **अल्लाह** तआला के वोह अहद याद दिलाए जो हुज़ूर पर ईमान लाने के

मुतअल्लिक़ किये थे तो इन्ने सैफ़ ने अहद ही का इन्कार कर दिया । 174 : या'नी सय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा **अल्लाह** तआला के

सय्यदे आलम तौरैत व ज़बूर वग़ैरा की तस्दीक़ फ़रमाते थे और खुद इन किताबों में भी हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी की

बिशारत और आप के औसाफ़ व अहवाल का बयान था इस लिये हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी और आप का वुजूदे मुबारक ही इन किताबों

की तस्दीक़ है तो हाल इस का मुक्तज़ी था कि हुज़ूर की आमद पर अहले किताब का ईमान अपनी किताबों के साथ और ज़ियादा पुख्ता

होता मगर इस के बर अक्स उन्हों ने अपनी किताबों के साथ भी कुफ़्र किया । सुदी का कौल है कि जब हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी हुई तो

यहूद ने तौरैत से मुकाबला कर के तौरैत व कुरआन को मुताबिक पाया तो तौरैत को भी छोड़ दिया । 176 : या'नी उस किताब की तरफ़ बे

इलतिफ़ती की । सुफ़्यान बिन उयैना का कौल है कि यहूद ने तौरैत को हरीर व दीबा के रेशमी ग़िलाफ़ों में ज़र व सीम के साथ मुतल्ला व

मुज़य्यन कर के रख लिया और उस के अहकाम को न माना । 177 : इन आयात से मा'लूम होता है कि यहूद के चार फ़िर्के थे : एक तौरैत

पर ईमान लाया और उस ने उस के हुकूक को भी अदा किया, येह मोमिनीने अहले किताब हैं इन की ता'दाद थोड़ी है और "अक़रुहम्" से इन

का पता चलता है । दूसरा फ़िर्का जिस ने बिल ए'लान तौरैत के अहद तोड़े उस की हुदद से बाहर हुए, सरकशी इख़्तियार की "नसूदे फ़रीक़् मन्हम्"

(एक गुरौह ने **अल्लाह** की किताब अपने पीठ पीछे फेंक दी) में उन का बयान है । तीसरा फ़िर्का वोह जिस ने अहद शिकनी का ए'लान तो

न किया लेकिन अपनी जहालत से अहद शिकनी करते रहे उन का ज़िक़ "बल अक़रुहम् लायूमिनून" (बल्कि उन में से बहुतेरों को ईमान नहीं)

में है । चौथे फ़िर्के ने जाहिरी तौर पर तो अहद माने और बातिन में बगावत व इनाद से मुखालफ़त करते रहे येह तसनोअ से जाहिल बनते

थे "कानहम् लायैल्मून" (गया वोह कुछ इल्म ही नहीं रखते) में इन पर दलालत है । 178 : शाने नुजूल : हज़रते सुलैमान **अल्लाह** के जमाने

में बनी इसराईल जादू सीखने में मशगूल हुए तो आप ने उन को इस से रोका और उन की किताबें ले कर अपनी कुरसी के नीचे दफ़न कर

दीं, हज़रते सुलैमान **अल्लाह** की वफ़ात के बा'द शयातीन ने वोह किताबें निकलवा कर लोगों से कहा कि सुलैमान **अल्लाह** इसी

مَا كَفَرَ سُلَيْمٌ وَلَكِنَّ الشَّيْطَانَ كَفَرُوا وَيَعْلَمُونَ النَّاسَ السَّحْرَ

सुलैमान ने कुफ़्र न किया¹⁷⁹ हां शैतान काफ़िर हुए¹⁸⁰ लोगों को जादू सिखाते हैं

وَمَا أُنزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوتَ وَمَارُوتَ وَمَا يَعْلَمَانِ

और वोह (जादू) जो बाबिल में दो फ़िरिशतों हारूत व मारूत पर उतरा और वोह दोनों किसी को कुछ

مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ فَيَتَعَلَّمُونَ

न सिखाते जब तक येह न कह लेते कि हम तो निरी आज्माइश हैं तो अपना ईमान न खो¹⁸¹ तो उन से

مِنْهُمَا مَا يَفْرِقُونَ بِهِ بَيْنَ الْبَرِّ وَالظُّلْمِ وَمَا هُمْ بِضَارِّينَ بِهِ

सीखते वोह जिस से जुदाई डालें मर्द और उस की औरत में और इस से ज़रर नहीं पहुंचा सकते

مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ

किसी को मगर खुदा के हुक्म से¹⁸² और वोह सीखते हैं जो उन्हें नुक़सान देगा नफ़्अ न देगा और

لَقَدْ عَلِمُوا لِنَ اشْتَرَاهُ مَالَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلْقٍ وَلَيْسَ مَا

बेशक ज़रूर उन्हें मा'लूम है कि जिस ने येह सौदा लिया आख़िरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं और बेशक क्या बुरी चीज़ है वोह

شَرًّا بِهِ أَنْفُسَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٢﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَاتَّقَوْا

जिस के बदले उन्हें ने अपनी जाने बेची किसी तरह उन्हें इल्म होता¹⁸³ और अगर वोह ईमान लाते¹⁸⁴ और परहेज गारी करते

لَسَوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ لَّو كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

तो **अल्लाह** के यहां का सवाब बहुत अच्छा है किसी तरह उन्हें इल्म होता ऐ ईमान वाले¹⁸⁵

के जोर से सलतनत करते थे, बनी इसराईल के सुलहा व डलमा ने तो इस का इन्कार किया, लेकिन उन के जुह्वाल जादू को हज़रते सुलैमान **عليه السلام** का इल्म बता कर इस के सीखने पर टूट पड़े अम्बिया की किताबें छोड़ दीं और हज़रते सुलैमान **عليه السلام** पर मलामत शुरू की, सय्यिदे आलम **صلى الله عليه وسلم** के ज़माने तक इसी हाल पर रहे **अल्लाह** तआला ने हुज़ूर पर हज़रते सुलैमान **عليه السلام** की बराअत में येह आयत नाज़िल फ़रमाई । 179 : क्यूं कि वोह नबी हैं और अम्बिया कुफ़्र से क़अन मा'सूम होते हैं उन की तरफ़ सेह्र की निस्बत बातिल व ग़लत है क्यूं कि सेह्र का कुफ़्रियात से ख़ाली होना नादिर है । 180 : जिन्हों ने हज़रते सुलैमान **عليه السلام** पर जादूगरी की झूठी तोहमत लगाई । 181 : या'नी जादू सीख कर और इस पर अमल व ए'तिकाद कर के और इस को मुबाह जान कर काफ़िर न बन । येह जादू फ़रमां बरदार व ना फ़रमान के दरमियान इम्तियाज़ व आज्माइश के लिये नाज़िल हुवा, जो इस को सीख कर इस पर अमल करे काफ़िर हो जाएगा, बशर्ते कि इस जादू में मुनाफ़िये ईमान कलिमात व अफ़आल हों और जो इस से बचे न सीखे, या सीखे और इस पर अमल न करे और इस के कुफ़्रियात का मो'तकिद न हो वोह मोमिन रहेगा, येही इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी का क़ौल है । **मसअला** : जो सेह्र कुफ़्र है उस का आमिल अगर मर्द हो क़त्ल कर दिया जाएगा । **मसअला** : जो सेह्र कुफ़्र नहीं मगर उस से जाने हलाक की जाती हैं उस का आमिल कुत्ताए त्रीक (डाकू, राहजनों) के हुक्म में है मर्द हो या औरत । **मसअला** : जादूगरी की तौबा क़बूल है । (मारक) 182 **मसअला** : इस से मा'लूम हुवा मुअस्सिरे हकीकी **अल्लाह** तआला है और तासीरे अस्बाब तहूते मशियत है । 183 : अपने अन्जामे कार व शिदते अज़ाब का । 184 : हज़रत सय्यिदे काफ़नात **صلى الله عليه وسلم** और कुरआने पाक पर 185 : शाने नुज़ूल : जब हुज़ूरे

لَا تَقُولُوا أَرْعَانَا وَقُولُوا انظُرْنَا وَأَسْعُوا ۗ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٧﴾

राइना न कहे और यू अर्ज करो कि हुजूर हम पर नज़र रखें और पहले ही से बगौर सुनो¹⁸⁶ और काफ़ि़रों के लिये दर्दनाक अज़ाब है¹⁸⁷

مَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الشُّرَكِيِّنَ أَنْ يُنَزَّلَ

वोह जो काफ़िर हैं किताबी या मुशिरक¹⁸⁸ वोह नहीं चाहते

عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ

कि तुम पर कोई भलाई उतरे तुम्हारे रब के पास से¹⁸⁹ और **अल्लाह** अपनी रहमत से खास करता है जिसे चाहे

وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿١٠٥﴾ مَا نَنْسَخُ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ

और **अल्लाह** बड़े फ़ज़ल वाला है जब कोई आयत हम मन्सूख़ फ़रमाएँ या भुला दे¹⁹⁰ तो उस से

مِنْهَا أَوْ مِثْلَهَا ۗ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٠٦﴾ أَلَمْ تَعْلَمْ

बेहतर या उस जैसी ले आएं क्या तुझे ख़बर नहीं कि **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है क्या तुझे ख़बर नहीं

أَنَّ اللَّهَ لَهُ مَلَكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ

कि **अल्लाह** ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की बादशाही और **अल्लाह** के सिवा तुम्हारा

अक्दस **عَلَىٰ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** सहाबा को कुछ ता'लीम व तल्कीन फ़रमाते तो वोह कभी कभी दरमियान में अर्ज किया करते: "رَاعِنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ" इस के येह मा'ना थे कि या रसूलल्लाह! हमारे हाल की रिआयत फ़रमाइये या'नी कलामे अक्दस को अच्छी तरह समझ लेने का मौक़अ दीजिये, यहूद की लुगत में येह कलिमा सूए अदब के मा'ना रखता था उन्हों ने इस निख्यत से कहना शुरू किया। हज़रते सा'द बिन मुआज़ यहूद की इस्तिलाह से वाकिफ़ थे, आप ने एक रोज़ येह कलिमा उन की ज़बान से सुन कर फ़रमाया: ऐ दुश्मनाने खुदा! तुम पर **अल्लाह** की ला'नत, अगर मैं ने अब किसी की ज़बान से येह कलिमा सुना उस की गरदन मार दूंगा, यहूद ने कहा: हम पर तो आप बरहम होते हैं मुसलमान भी तो येही कहते हैं, इस पर आप रन्जीदा हो कर ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हुए ही थे कि येह आयत नाज़िल हुई जिस में "رَاعِنَا" कहने की मुमानअत फ़रमा दी गई और इस मा'नी का दूसरा लफ़्ज़ "انظُرْنَا" (हुजूर हम पर नज़र रखें) कहने का हुक्म हुवा। **मस्अला**: इस से मा'लूम हुवा कि अम्बिया की ता'ज़ीमो तौकीर और इन की जनाब में कलिमाते अदब अर्ज करना फ़र्ज है और जिस कलिमे में तर्के अदब का शाएबा भी हो वोह ज़बान पर लाना मम्नूअ। **186**: और हमा तन गोश हो जाओ (इन्तिहाई तवज्जोह के साथ सुनो) ताकि येह अर्ज करने की ज़रूरत ही न रहे कि हुजूर! तवज्जोह फ़रमाएँ, क्यूँ कि दरबारे नुबुव्वत का येही अदब है। **मस्अला**: दरबारे अम्बिया में आदमी को अदब के आ'ला मरातिब का लिहाज़ लाज़िम है। **187**: **मस्अला**: "لِلْكَافِرِينَ" (और काफ़ि़रों के लिये दर्दनाक अज़ाब है) में इशारा है कि अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَام** की जनाब में बे अदबी कुफ़्र है। **188**: **शाने नुज़ूल**: यहूद की एक जमाअत मुसलमानों से दोस्ती व ख़ैर ख़्वाही का इज़हार करती थी उन की तक्ज़ीब में येह आयत नाज़िल हुई, मुसलमानों को बताया गया कि कुफ़्फ़र ख़ैर ख़्वाही के दा'वे में झूटे हैं। **189** (मस)। **189**: या'नी कुफ़्फ़र अहले किताब और मुशिरकीन दोनों मुसलमानों से बुज़्र रखते हैं और इस रन्ज में हैं कि इन के नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा **عَلَىٰ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को नुबुव्वत व वहुय अता हुई और मुसलमानों को येह ने'मते उज़्मा मिली। (ख़ारन वग़ैर)। **190**: **शाने नुज़ूल**: कुरआने करीम ने शराइए साबिक़ा (पहली शरीअत) व कुतुबे क़दीमा को मन्सूख़ फ़रमाया तो कुफ़्फ़र को बहुत तवहूश (दुख) हुवा और उन्हों ने इस पर ता'न किये, इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि मन्सूख़ भी **अल्लाह** की तरफ़ से है और नासिख़ भी दोनों ऐन हिक्मत हैं। और नासिख़ कभी मन्सूख़ से ज़ियादा सहल व अन्फ़अ (आसान और फ़ाएदे मन्द) होता है कुदरते इलाही पर यकीन रखने वाले को इस में जाए तरहुद नहीं, काएनात में मुशाहदा किया जाता है कि **अल्लाह** तआला दिन से रात को, गरमा से सरमा को, जवानी से बचपन को, बीमारी से तन्दुरुस्ती को, बहार से ख़ज़ां को मन्सूख़ फ़रमाता है, येह तमाम नसख़ व तब्दील उस की कुदरत के दलाइल हैं तो एक आयत और एक हुक्म के मन्सूख़ होने में क्या तअज़्जुब? नसख़ दर हकीक़त हुक्मे साबिक़ को मुद्त का बयान होता है कि वोह हुक्म उस मुद्त के लिये था और ऐन हिक्मत था, कुफ़्फ़र की ना फ़हमी कि नसख़ पर ए'तिराज़ करते

وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١٠٧﴾ أَمْ تَرِيدُونَ أَنْ تَسْأَلُوا رَسُولَكُمْ كَمَا سَأَلِ

न कोई हिमायती न मददगार क्या येह चाहते हो कि अपने रसूल से वैसा सुवाल करो जो पहले

مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ ۖ وَمَنْ يَتَّبِدَلِ الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءً

मूसा से हुवा था¹⁹¹ और जो ईमान के बदले कुफ़र ले¹⁹² वोह ठीक रास्ते (से)

السَّبِيلِ ﴿١٠٨﴾ وَدَّ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَرُدُّونَكُمْ مِّنْ بَعْدِ

बहक गया बहुत किताबियों ने चाहा¹⁹³ काश तुम्हें ईमान के बा'द कुफ़र की

إِيمَانِكُمْ كُفْرًا ۗ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ

तरफ़ फेर दें अपने दिलों की जलन से¹⁹⁴ बा'द इस के कि हक़ उन पर ख़ूब ज़ाहिर हो

الْحَقُّ ۖ فَاعْفُوا وَاصْفَحُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ

चुका है तो तुम छोड़ो और दर गुज़र करो यहां तक कि **ALLAH** अपना हुक्म लाए बेशक **ALLAH** हर

हैं। और अहले किताब का ए'तिराज़ उन के मो'तकिदात के लिहाज़ से भी ग़लत है, उन्हें हज़रते आदम عليه السلام की शरीअत के अहकाम की मन्सूखियत तस्लीम करना पड़ेगी, येह मानना ही पड़ेगा कि शम्बा के रोज़ दुन्यवी काम इन से पहले हराम न थे इन पर हराम हुए, येह भी इक़्ार ना गुज़ीर होगा कि तौरैत में हज़रते नूह عليه السلام की उम्मत के लिये तमाम चौपाए हलाल होना बयान किया गया और हज़रते मूसा عليه السلام पर बहुत से हराम कर दिये गए, इन उमूर के होते हुए नस्ख़ का इन्कार किस तरह मुम्किन है। **मस्अला** : जिस तरह आयत दूसरी आयत से मन्सूख़ होती है इसी तरह हदीसे मुतवातिर से भी होती है। **मस्अला** : नस्ख़ कभी सिर्फ़ तिलावत का होता है कभी सिर्फ़ हुक्म का, कभी तिलावत व हुक्म दोनों का। बैहकी ने अबू उमामा से रिवायत की, कि एक अन्सारी सहाबी शब को तहज़ुद के लिये उठे और सूएए फ़ातिहा के बा'द जो सूरत हमेशा पढ़ा करते थे उस को पढ़ना चाहा लेकिन वोह बिल्कुल याद न आई और सिवाए "بِسْمِ اللَّهِ" के कुछ न पढ़ सके, सुब्ह को दूसरे अश्हाब से इस का जिक्र किया उन हज़रात ने फ़रमाया हमारा भी येही हाल है वोह सूरत हमें भी याद थी और अब हमारे हाफ़िज़े में भी न रही, सब ने सय्यिदे आलम صلّى الله عليه وسلّم की ख़िदमत में वाकिआ अर्ज़ किया, हुज़ुरे अकरम ने फ़रमाया : आज शब वोह सूरत उठा ली गई उस के हुक्म व तिलावत दोनों मन्सूख़ हुए, जिन कागज़ों पर वोह लिखी गई थी उन पर नक्श तक बाकी न रहे। **191** **शाने नुज़ूल** : यहूद ने कहा : ऐ मुहम्मद ! صلّى الله عليه وسلّم हमारे पास आप ऐसी किताब लाइये जो आस्मान से एक बारगी नाज़िल हो, उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। **192** : या'नी जो आयतें नाज़िल हो चुकी हैं उन के कबूल करने में बे जा बहूस करे और दूसरी आयतें तलब करे। **मस्अला** : इस से मा'लूम हुवा कि जिस सुवाल में मफ़सदा (फ़साद) हो वोह बुजुर्गों के सामने पेश करना जाइज़ नहीं और सब से बड़ा मफ़सदा येह है कि उस से ना फ़रमानी ज़ाहिर होती हो। **193** : **शाने नुज़ूल** : जंगे उहुद के बा'द यहूद की जमाअत ने हज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान और अम्मार बिन यासिर رضي الله عنهما से कहा कि अगर तुम हक़ पर होते तो तुम्हें शिकस्त न होती, तुम हमारे दीन की तरफ़ वापस आ जाओ, हज़रते अम्मार ने फ़रमाया तुम्हारे नज़दीक अहद शिकनी कैसी है ? उन्होंने ने कहा निहायत बुरी। आप ने फ़रमाया मैं ने अहद किया है कि ज़िन्दगी के आख़िर लम्हे तक सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صلّى الله عليه وسلّم से न फिरंगा और कुफ़र न इख़्तियार करुंगा और हज़रते हुज़ैफ़ा ने फ़रमाया मैं राजी हुवा **ALLAH** के रब होने, मुहम्मद मुस्तफ़ा صلّى الله عليه وسلّم के रसूल होने, इस्लाम के दीन होने, कुरआन के इमाम होने, का'बे के किब्ला होने, मोमिनीन के भाई होने से, फिर येह दोनों साहिब हुज़ुर صلّى الله عليه وسلّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप को वाकिए की ख़बर दी, हुज़ुर ने फ़रमाया : तुम ने बेहतर किया और फ़लाह पाई। इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **194** : इस्लाम की हक़कानिय्यत जानने के बा'द यहूद का मुसल्मानों के कुफ़र व इरतिदाद की तमन्ना करना और येह चाहना कि वोह ईमान से महरूम हो जाएं हसदन था, हसद बड़ा ही ऐब है। **मस्अला** : हदीस शरीफ़ में है सय्यिदे आलम صلّى الله عليه وسلّم ने फ़रमाया : "हसद से बचो वोह नेकियों को इस तरह खाता है जैसे आग़ खुशक लकड़ी को।" **मस्अला** : हसद हराम है। **मस्अला** : अगर कोई शख़्स अपने मालो दौलत या असरो वजाहत से गुमराही व बे दीनी फैलाता हो तो उस के फ़ितने से महफूज़ रहने के लिये उस के ज़वाले ने'मत की तमन्ना हसद में दाख़िल नहीं और हराम भी नहीं।

شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝۹۰ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَمَا تَقَدَّمُوا

चीज पर कादिर है और नमाज़ काइम रखो और ज़कात दो¹⁹⁵ और अपनी जानों के लिये

لَا تُفْسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ

जो भलाई आगे भेजोगे उसे **अल्लाह** के यहां पाओगे बेशक **अल्लाह** तुम्हारे काम

بَصِيرٌ ۝۹۱ وَقَالُوا لَنْ يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَن كَانَ هُودًا أَوْ نَصْرًا ۗ

देख रहा है और अहले किताब बोले हरगिज़ जन्नत में न जाएगा मगर वोह जो यहूदी या नसरानी हो¹⁹⁶

تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۗ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝۹۲ بَلَىٰ مَن

येह उन की खयाल बन्दियां हैं तुम फ़रमाओ लाओ अपनी दलील¹⁹⁷ अगर सच्चे हो हां क्यूं नहीं जिस ने

أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۗ وَلَا خَوْفٌ

अपना मुंह झुकाया **अल्लाह** के लिये और वोह नेकोकार है¹⁹⁸ तो उस का नेग (बदला) उस के रब के पास है और उन्हें

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝۹۳ وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصْرِي عَلَىٰ

न कुछ अन्देशा हो और न कुछ ग़म¹⁹⁹ और यहूदी बोले नसरानी कुछ

شَيْءٍ ۗ وَقَالَتِ النَّصْرِي لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ ۗ وَهُمْ يَتْلُونَ

नहीं और नसरानी बोले यहूदी कुछ नहीं²⁰⁰ हालां कि वोह किताब

الْكِتَابَ ۗ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۗ فَاللَّهُ يَحْكُمُ

पढ़ते हैं²⁰¹ इसी तरह जाहिलों ने उन की सी बात कही²⁰² तो **अल्लाह** क़ियामत

195 : मोमिनीन को यहूद से दर गुज़र का हुक्म देने के बा'द उन्हें अपने इस्लाहे नफ़स की तरफ़ मुतवज्जेह फ़रमाता है। **196** : या'नी यहूद कहते हैं कि जन्नत में सिर्फ़ यहूदी दाख़िल होंगे और नसरानी कहते हैं कि फ़क़त नसरानी और येह मुसल्मानों को दीन से मुन्हरिफ़ करने के लिये कहते हैं, जैसे नस्पख़ वगैरा के लचर (बेहूदा) शुबुहात उन्होंने ने इस उम्मीद पर पेश किये थे कि मुसल्मानों को अपने दीन में कुछ तरहुद हो जाए, इसी तरह इन को जन्नत से मायूस कर के इस्लाम से फेरने की कोशिश करते हैं, चुनान्चे आखिरे पारह में उन का येह मक़ूला मज़कूर है : "وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصْرًا يَهْتَدُوا" (और किताबी बोले यहूदी या नसरानी हो जाओ राह पाओगे) **अल्लाह** तआला उन के इस खयाल का रद फ़रमाता है। **197** : **मस्अला** : इस आयत से मा'लूम हुवा कि नफ़ी के मुद्दई को भी दलील लाना ज़रूर है बिगैर इस के दा'वा बातिल व ना मस्मूअ (ना मक़बूल) होगा। **198** : ख़्बाह वोह किसी ज़माने, किसी नस्ल, किसी क़ौम का हो। **199** : इस में इशारा है कि यहूदो नसारा का येह दा'वा कि जन्नत के फ़क़त वोही मालिक हैं बिल्कुल ग़लत है क्यूं कि दुखूले जन्नत मुरत्तब है अक़ीदए सहीहा व अमले सालेह पर और येह उन्हें मुयस्सर नहीं। **200** **शाने नुज़ूल** : नजरान के नसारा का वपद सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की ख़िदमत में आया तो उलमाए यहूद आए और दोनों में मुनाज़रा शुरूअ हो गया, आवाज़ें बुलन्द हुई शोर मचा, यहूद ने कहा कि नसारा का दीन कुछ नहीं और हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** और इन्जील शरीफ़ का इन्कार किया, इसी तरह नसारा ने यहूद से कहा कि तुम्हारा दीन कुछ नहीं और तौरैत शरीफ़ व हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** का इन्कार किया। इस बाब में येह आयत नाज़िल हुई। **201** : या'नी बा वुजूद इल्म के उन्होंने ने ऐसी जाहिलाना गुफ्तगू की। हालां कि इन्जील शरीफ़ जिस को नसारा मानते हैं उस में तौरैत शरीफ़ व हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** की नुबुव्वत की तस्दीक है, इसी तरह तौरैत जिस

بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١١٣﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ

के दिन उन में फैसला कर देगा जिस बात में झगड़ रहे हैं और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन ²⁰³ जो

مَنْعَ مَسْجِدِ اللَّهِ أَنْ يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهَا ۗ أُولَٰئِكَ مَا

अब्लाह की मस्जिदों को रोके उन में नामे खुदा लिये जाने से ²⁰⁴ और उन की वीरानी में कोशिश करे ²⁰⁵ उन को न

كَانَ لَهُمْ أَنْ يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ ۗ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۗ وَلَهُمْ

पहुंचता था कि मस्जिदों में जाएं मगर डरते हुए उन के लिये दुनिया में रुस्वाई है ²⁰⁶ और उन के लिये

فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١٤﴾ وَ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۗ فَأَيْنَمَا تَوَلَّوْا

आखिरत में बड़ा अज़ाब ²⁰⁷ और पूरब व पश्चिम (मशरिफ़ व मगरिब) सब अब्लाह ही का है तो तुम जिधर मुंह करो उधर वज्हुल्लाह

فَتَمَّ وَجْهَ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ

(खुदा की रहमत तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जेह) है बेशक अब्लाह वुसअत वाला इल्म वाला है और बोले खुदा ने अपने लिये औलाद रखी

को यहूदी मानते हैं उस में हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की नुबुव्वत और उन तमाम अहकाम की तस्दीक है जो आप को अब्लाह तआला की तरफ़ से अता हुए। **202 :** उलमाए अहले किताब की तरह। उन जाहिलों ने जो न इल्म रखते थे न किताब जैसा कि बुत परस्त, आतश परस्त वगैरा उन्होंने ने हर एक दिन वाले की तक़ीब शुरुअ की और कहा कि वोह कुछ नहीं, उन्हीं जाहिलों में से मुशिकीने अरब भी हैं जिन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ और आप के दीन की शान में ऐसे ही कलिमात कहे। **203 :** शाने नुज़ूल : येह आयत बैतुल मक्दिस की बे हुर्मती के मुतअल्लिक नाज़िल हुई जिस का मुख़्तसर वाकिआ येह है कि रूम के नसरानियों ने बनी इसराईल पर फ़ौज कशी की उन के मर्दाने कार आज्मा को क़त्ल किया, जुरिय्यत को कैद किया, तौरैत शरीफ़ को जलाया, बैतुल मक्दिस को वीरान किया उस में नजासतें डालीं, खिन्ज़ीर ज़ब्द किये **مَعَاذَ اللَّهِ**, बैतुल मक्दिस ख़िलाफ़ते फ़ारूकी तक इसी वीरानी में रहा, आप के अहदे मुबारक में मुसल्मान में इस को बिना (आबाद) किया। एक कौल येह भी है कि येह आयत मुशिकीने मक्का के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने इब्तिदाए इस्लाम में हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ और आप के अस्हाब को का'बे में नमाज़ पढ़ने से रोका था और जंगे हुदैबिया के वक्त इस में नमाज़ व हज़ से मन्अ किया था। **204 :** "ज़िक्र" नमाज़, खुल्बा, तस्वीह, वा'ज़, ना'त शरीफ़ सब को शामिल है और "ज़िक्रुल्लाह" को मन्अ करना हर जगह बुरा है खास कर मस्जिदों में जो इसी काम के लिये बनाई जाती हैं। **मस्अला :** जो शख्स मस्जिद को जिक्र व नमाज़ से मुअत्तल कर दे वोह मस्जिद का वीरान करने वाला और बहुत ज़ालिम है। **205 :** मस्अला : मस्जिद की वीरानी जैसे जिक्र व नमाज़ के रोकने से होती है ऐसे ही इस की इमारत के नुक़सान पहुंचाने और बे हुर्मती करने से भी। **206 :** दुनिया में उन्हें येह रुस्वाई पहुंची कि क़त्ल किये गए, गिरिफ़्तार हुए, जला वतन किये गए, ख़िलाफ़ते फ़ारूकी व उस्मानी में मुल्के शाम उन के कब्ज़े से निकल गया, बैतुल मक्दिस से जिल्लत के साथ निकाले गए। **207 :** शाने नुज़ूल : सहाबए किराम रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के साथ एक अंधेरी रात सफ़र में थे, जिहते किब्ला मा'लूम न हो सकी, हर एक शख्स ने जिस तरफ़ उस का दिल जमा नमाज़ पढ़ी, सुब्द को सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में हाल अर्ज किया तो येह आयत नाज़िल हुई। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जिहते किब्ला मा'लूम न हो सके तो जिस तरफ़ दिल जमे कि येह किब्ला है उसी तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़े। इस आयत के शाने नुज़ूल में दूसरा कौल येह है कि येह उस मुसाफ़िर के हक़ में नाज़िल हुई जो सुवारी पर नफ़ल अदा करे उस की सुवारी जिस तरफ़ मुतवज्जेह हो जाए उसी तरफ़ उस की नमाज़ दुरुस्त है, बुख़ारी व मुस्लिम की अहादीस से येह साबित है। एक कौल येह है कि जब तह्वीले किब्ला का हुक्म दिया गया तो यहूद ने मुसल्मानों पर ता'ना ज़नी की उन के रद में येह आयत नाज़िल हुई बताया गया कि मशरिफ़ो मगरिब सब अब्लाह का है, जिस तरफ़ चाहे किब्ला मुअय्यन फ़रमाए किसी को ए'तिराज़ का क्या हक़। (غارن) एक कौल येह है कि येह आयत दुआ के हक़ में वारिद हुई, हुज़ूर से दरयाफ़्त किया गया कि किस तरफ़ मुंह कर के दुआ की जाए ? उस के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई। एक कौल येह है कि येह आयत हक़ से गुरेज़ व फ़िराज में है और "اِنَّمَا نُوَلِّوْا" (तो तुम जिधर मुंह करो उधर वज्हुल्लाह है) का ख़िताब उन लोगों को है जो जिक्र इलाही से रोकते और मस्जिदों की वीरानी में सई करते हैं वोह दुनिया की रुस्वाई और अज़ाबे आख़िरत से कहीं भाग नहीं सकते क्यूं कि मशरिफ़ो मगरिब सब अब्लाह का है जहां भांगे वोह गिरिफ़्त फ़रमाएगा। इस तक्दीर पर "वज्हुल्लाह" के मा'ना खुदा का कुर्ब

سُبْحٰنَهُ ۙ بَلْ لَّهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ كُلُّ لَّهُ قٰنِطُوْنَ ﴿١١٦﴾

पाकी है उसे²⁰⁸ बल्कि उसी की मिल्क है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है²⁰⁹ सब उस के हुज़ूर गरदन डाले हैं

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَاِذَا قَضٰى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهُ كُنْ

नया पैदा करने वाला आस्मानों और ज़मीन का²¹⁰ और जब किसी बात का हुक्म फ़रमाए तो उस से येही फ़रमाता है कि हो जा

فَيَكُوْنُ ﴿١١٧﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يَكْتُمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاتِيْنَا

वोह फ़ौरन हो जाती है²¹¹ और जाहिल बोले²¹² **اللَّهُ** हम से क्यूं नहीं कलाम करता²¹³ या हमें कोई

اٰيَةٌ ۗ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ۗ تَشَابَهَتْ

निशानी मिले²¹⁴ इन से अगलों ने भी ऐसी ही कही इन की सी बात इन के उन के दिल

قُلُوْبِهِمْ ۗ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُوْنَ ﴿١١٨﴾ اِنَّا اَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ

एक से है²¹⁵ बेशक हम ने निशानियां खोल दीं यकीन वालों के लिये²¹⁶ बेशक हम ने तुम्हें हक़ के साथ भेजा

بَشِيْرًا وَّاَنْذِيْرًا ۗ وَلَا تَسْئَلْ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ﴿١١٩﴾ وَلَنْ تَرْضٰى

खुश ख़बरी देता और डर सुनाता और तुम से दोख़ वालों का सुवाल न होगा²¹⁷ और हरगिज़ तुम से

عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصْرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۗ قُلْ اِنْ هٰدٰى اللّٰهُ

यहूद और नसारा राजी न होंगे जब तक तुम उन के दीन की पैरवी न करो²¹⁸ तुम फ़रमा दो कि **اللَّهُ** ही की हिदायत

व हुज़ूर है। (ع) एक कौल येह भी है कि मा'ना येह हैं कि अगर कुफ़्फ़ार ख़ानए का'बा में नमाज़ से मन्अ करें तो तुम्हारे लिये तमाम ज़मीन

मस्जिद बना दी गई है जहां से चाहो किब्ले की तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ो। **208 : शाने नुज़ूल** : यहूद ने हज़रते उज़ैर (عَلَيْهِ السَّلَام) को और

नसारा ने हज़रते मसीह (عَلَيْهِ السَّلَام) को खुदा का बेटा कहा, मुशिकीने अरब ने फ़िरिशतों को खुदा की बेटियां बताया उन के रद में येह आयत

नाज़िल हुई फ़रमाया : "سُبْحٰنَهُ" वोह पाक है इस से कि उस के औलाद हो, उस की तरफ़ औलाद की निस्वत करना उस को ऐब लगाना

और बे अदबी है, हदीस में है कि **اللَّهُ** तआला फ़रमाता है : इब्ने आदम ने मुझे गाली दी, मेरे लिये औलाद बताई, मैं औलाद और बीवी

से पाक हूं। **209** : और मम्लूक होना औलाद होने के मुनाफ़ी है, जब तमाम जहान उस का मम्लूक है तो कोई औलाद कैसे हो सकता है।

मस्अला : अगर कोई अपनी औलाद का मालिक हो जाए वोह उसी वक़्त आज़ाद हो जाएगी। **210** : जिस ने बिगैर किसी मिसाले साबिक़

के अश्या को अ़दम से वुजूद अ़ता फ़रमाया। **211** : या'नी काएनात उस के इरादा फ़रमाते ही वुजूद में आ जाती है। **212** : या'नी अहले

किताब या मुशिकीन। **213** : या'नी बे वासिता खुद क्यूं नहीं फ़रमाता जैसा कि मलाएका व अम्बिया से कलाम फ़रमाता है। येह उन का

कमाले तकब्बुर और निहायत सरकशी थी, उन्हों ने अपने आप को अम्बिया व मलाएका के बराबर समझा। **शाने नुज़ूल** : राफ़ेअ बिन खुज़ैमा

ने हुज़ुरे अक्दस **صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से कहा : अगर आप **اللَّهُ** के रसूल हैं तो **اللَّهُ** से फ़रमाइये वोह हम से कलाम करे हम खुद सुनें, इस पर

येह आयत नाज़िल हुई। **214** : येह उन आयत का इनादन इन्कार है जो **اللَّهُ** तआला ने अ़ता फ़रमाई। **215** : कोरी व नाबीनाई और कुफ़

व क़सावत में। इस में नबिये करीम **صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की तस्कीने ख़ातिर फ़रमाई गई कि आप उन की सरकशी और मुआनिदाना (दुश्मनाना) इन्कार

से रन्जीदा न हों पिछले कुफ़्फ़ार भी अम्बिया के साथ ऐसा ही करते थे। **216** : या'नी आयाते कुरआनी व मो'जिज़ाते बाहिरात इन्साफ़ वाले को

सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ **صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की नुबुव्वत का यकीन दिलाने के लिये काफ़ी हैं मगर जो तालिबे यकीन न हो वोह दलाइल से फ़ापदा

नहीं उठा सकता। **217** : कि वोह क्यूं ईमान न लाए ? इस लिये कि आप ने अपना फ़र्ज़ तब्लीग़ पूरे तौर पर अदा फ़रमा दिया। **218** : और येह

هُوَ الْهُدَىٰ ۖ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۗ

हिदायत है²¹⁹ और (ऐ सुनने वाले कसे बाशद) अगर तू उन की ख्वाहिशों का पैरव हुवा बा'द इस के कि तुझे इल्म आ चुका

مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝١٢٠ أَلَّذِينَ اتَّيَهُمُ الْكُتُبَ

तो **अल्लाह** से तेरा कोई बचाने वाला न होगा और न मददगार²²⁰ जिन्हें हम ने किताब दी है

يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلَاوَتِهِ ۗ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ فَأُولَٰئِكَ

वोह जैसी चाहिये इस की तिलावत करते हैं वोही इस पर ईमान रखते हैं और जो इस के मुन्किर हों तो वोही

هُمُ الْخٰسِرُونَ ۝١٢١ لِيَبْنِيَ اِسْرَآءِيْلَ اذْ كُرُوْا نِعْمَتِي الَّتِي اَنْعَمْتُ

जियांकार (नुकसान उठाने वाले) हैं²²¹ ऐ औलादे या'कूब याद करो मेरा एहसान जो मैं ने

عَلَيْكُمْ وَاِنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَي الْعٰلَمِيْنَ ۝١٢٢ وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي

तुम पर किया और वोह जो मैं ने उस ज़माने के सब लोगों पर तुम्हें बड़ाई दी और डरो उस दिन से कि कोई

نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْءًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ ۗ

जान दूसरे का बदला न होगी और न उस को कुछ ले कर छोड़ें और न काफ़िर को कोई सिफ़ारिश नफ़ दे²²²

وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝١٢٣ وَاِذْ اَبْتَلٰٓ اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتٰهَنْ ۗ قَالَ

और न उन की मदद हो और जब²²³ इब्राहीम को उस के रब ने कुछ बातों से आजमाया²²⁴ तो उस ने वोह पूरी कर दिखाई²²⁵ फ़रमाया

اِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ۗ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي ۗ قَالَ لَا يَنَالُ

मैं तुम्हें लोगों का पेशवा बनाने वाला हूँ अर्ज की और मेरी औलाद से फ़रमाया मेरा अहद

ना मुम्किन क्यूं कि वोह बातिल पर हैं। 219 : वोही क़ाबिले इत्तिबाअ है और उस के सिवा हर एक राह बातिल व ज़लालत। 220 : येह ख़िताब उम्मेत मुहम्मदिय्यह को है कि जब तुम ने जान लिया कि सय्यिदे अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام तुम्हारे पास हक़ व हिदायत लाए तो तुम हरगिज़ कुपफ़र की ख्वाहिशों का इत्तिबाअ न करना, अगर ऐसा किया तो तुम्हें कोई अज़ाबे इलाही से बचाने वाला नहीं। (ग़ारन) 221 : शाने नुज़ूल : हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : येह आयत अहले सफ़ीना के बाब में नाज़िल हुई जो जा'फ़र बिन अबी तालिब के साथ हज़िरे बारगाहे रिसालत हुए थे, उन की ता'दाद चालीस थी, बत्तीस अहले हबशा और आठ शामी राहिव, उन में बहीरा राहिव भी थे। मा'ना येह हैं कि दर हकीकत तौरैत शरीफ़ पर ईमान लाने वाले वोही हैं जो इस की तिलावत का हक़ अदा करते हैं और बिग़ैर तहरीफ़ व तब्दील पढ़ते हैं और इस के मा'ना समझते और मानते हैं और इस में हुज़ूर सय्यिदे काएनात मुहम्मद मुस्तफ़ा عَلَيْهِ السَّلَام की ना'त व सिफ़त देख कर हुज़ूर पर ईमान लाते हैं और जो हुज़ूर के मुन्किर होते हैं वोह तौरैत शरीफ़ पर ईमान नहीं रखते। 222 : इस में यहूद का रद है जो कहते थे हमारे बाप दादा बुजुर्ग गुज़रे हैं हमें शफ़अत कर के छुड़ा लेंगे, उन्हें मायूस किया जाता है कि शफ़अत काफ़िर के लिये नहीं। 223 : हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की विलादत सर ज़मीने अहवाज़ में ब मक़ामे सूस हुई, फिर आप के वालिद आप को बाबिल मुल्के नमरूद में ले आए, यहूदो नसारा व मुशिरकीने अरब सब आप के फ़ज़्लो शरफ़ के मो'तरिफ़ और आप की नस्ल में होने पर फ़ख़्र करते हैं, **अल्लाह** तआला ने आप के वोह हालात बयान फ़रमाए जिन से सब पर इस्लाम का क़बूल करना लाज़िम हो जाता है क्यूं कि जो चीज़ें **अल्लाह** तआला ने आप पर वाज़िब कीं वोह इस्लाम के ख़साइस में से हैं। 224 : खुदाई आज़माइश येह है कि बन्दे पर कोई पाबन्दी लाज़िम फ़रमा कर दूसरों पर उस के ख़रे खोटे होने का इज़हार कर दे। 225 : जो बातें **अल्लाह** तआला

عَهْدِي الظَّالِمِينَ ﴿١٢٢﴾ وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا وَ

जालिमों को नहीं पहुंचता²²⁶ और याद करो जब हम ने इस घर को²²⁷ लोगों के लिये मरजअ और अमान बनाया²²⁸ और

اتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى ۖ وَعَهِدْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ أَنَّ

इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज का मकाम बनाओ²²⁹ और हम ने ताकीद फरमाई इब्राहीम व इस्माईल को कि

طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْعَاكِفِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿١٢٥﴾ وَإِذْ قَالَ

मेरा घर खूब सुथरा करो तवाफ वालों और ए'तिकाफ वालों और रुकूअ व सुजूद वालों के लिये और जब अर्ज की

إِبْرَاهِيمَ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا بَلَدًا آمِنًا وَارْزُقْ أَهْلَهُ مِنَ الثَّمَرَاتِ مَنْ

इब्राहीम ने कि ऐ रब मेरे इस शहर को अमान वाला कर दे और इस के रहने वालों को तरह तरह के फलों से रोजी दे जो

أَمِنَ مِنْهُمْ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَأُمَتِّعُهُ قَلِيلًا ثُمَّ

इन में से अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाएं²³⁰ फरमाया और जो काफिर हुवा थोड़ा बरतने को उसे भी दूंगा फिर

أَصْطَرَّةً إِلَىٰ عَذَابِ النَّارِ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٢٦﴾ وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ

उसे अजाबे दोख की तरफ मजबूर करूंगा और वोह बहुत बुरी जगह है पलटने की और जब उठता था इब्राहीम

الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ ۖ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ

इस घर की नीवें (बुन्यादे) और इस्माईल येह कहते हुए कि ऐ रब हमारे हम से कबूल फरमा²³¹ बेशक तू ही है

ने हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام पर आजमाइश के लिये वाजिब की थीं उन में मुफस्सरीन के चन्द कौल हैं, क़तादा का कौल है कि वोह मनासिके हज हैं। मुजाहिद ने कहा इस से वोह दस चीजें मुराद हैं जो अगली आयात में मजकूर हैं। हजरते इब्ने अब्बास का एक कौल येह है कि वोह दस चीजें येह हैं : (1) मूँछें कतरवाना (2) कुल्ली करना (3) नाक में सफाई के लिये पानी इस्ति'माल करना (4) मिस्वाक करना (5) सर में मांग निकालना (6) नाखुन तरशवाना (7) बगल के बाल दूर करना (8) मूए जेरे नाफ की सफाई (9) खतना (10) पानी से इस्तिन्जा करना। येह सब चीजें हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام पर वाजिब थीं और हम पर इन में से बा'ज वाजिब हैं बा'ज सुन्नत। 226 मसअला : या'नी आप की औलाद में जो जालिम (काफिर) हैं वोह इमामत का मन्सब न पाएंगे। मसअला : इस से मा'लूम हुवा कि काफिर मुसल्मानों का पेशवा नहीं हो सकता और मुसल्मानों को उस का इत्तिबाअ जाइज नहीं। 227 : "बैत" से का'बा शरीफ मुराद है और इस में तमाम हरम शरीफ दाखिल है। 228 : अमन बनाने से येह मुराद है कि हरमे का'बा में क़त्लो गारत हराम है या येह कि वहां शिकार तक को अमन है यहां तक कि हरम शरीफ में शेर भेड़िये भी शिकार का पीछा नहीं करते छोड़ कर लौट जाते हैं। एक कौल येह है कि मोमिन इस में दाखिल हो कर अजाब से मामूम हो जाता है। "हरम" को हरम इस लिये कहा जाता है कि इस में क़त्ल, जुल्म, शिकार हराम व मन्मुअ है। (अहमद) अगर कोई मुजरिम भी दाखिल हो जाए तो वहां उस से तअर्रुज न किया जाएगा। (मारक) 229 : मकामे इब्राहीम वोह पथर है जिस पर खड़े हो कर हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने का'बाए मुअज्जमा की बिना (ता'मीर) फरमाई और उस में आप के क़दम मुबारक का निशान था, उस को नमाज का मकाम बनाने का अम्र इस्तिहबाब के लिये है। एक कौल येह भी है कि इस नमाज से तवाफ की दो रकअतें मुराद हैं। (अहमद) 230 : चूंकि इमामत के बाब में "لَا يَسْأَلُ عَهْدِي الظَّالِمِينَ" (मेरा अहद जालिमों को नहीं पहुंचता) इशाद हो चुका था इस लिये हजरते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने इस दुआ में मोमिनीन को खास फरमाया और येही शाने अदब थी, अल्लाह तआला ने करम किया दुआ कबूल फरमाई और इशाद फरमाया कि रिज़क सब को दिया जाएगा मोमिन को भी काफिर को भी लेकिन काफिर का रिज़क थोड़ा है या'नी सिर्फ दुन्यवी ज़िन्दगी में वोह बहरा मन्द हो सकता है। 231 : पहली मरतबा का'बाए मुअज्जमा की बुन्याद हजरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने रखी और बा'दे तूफाने नूह फिर

السَّبِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٢٤﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمِينَ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا

सुनता जानता ऐ रब हमारे और कर हमें तेरे हुजूर गरदन रखने वाले²³² और हमारी औलाद में से

أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۖ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ

एक उम्मत तेरी फ़रमां बरदार और हमें इबादत के काइदे बता और हम पर अपनी रहमत के साथ रुजूअ फ़रमा²³³ बेशक तू ही है

التَّوَابُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٨﴾ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ

बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान ऐ रब हमारे और भेज इन में²³⁴ एक रसूल इन्हीं में से कि इन पर तेरी आयतें तिलावत

إِلَيْكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ ۗ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ

फ़रमाएँ और इन्हें तेरी किताब²³⁵ और पुख़्ता इल्म सिखाए²³⁶ और इन्हें ख़ूब सुथरा फ़रमा दे²³⁷ बेशक तू ही है ग़ालिब

الْحَكِيمُ ﴿١٢٩﴾ وَمَنْ يَّرْغَبْ عَنْ مِّلَّةِ إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَن سَفِهَ نَفْسَهُ ۗ وَلَقَدِ

हिक्मत वाला और इब्राहीम के दीन से कौन मुंह फेरे²³⁸ सिवा उस के जो दिल का अहमक है और बेशक ज़रूर

हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने उसी बुन्याद पर ता'मीर फ़रमाई, येह ता'मीर ख़ास आप के दस्ते मुबारक से हुई, इस के लिये पथर उठा कर

लाने की खिदमत व सआदत हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام को मुयस्सर हुई, दोनों हज़रत ने उस वक़्त येह दुआ की, कि या रब हमारी येह ताअत

व खिदमत क़बूल फ़रमा । **232** : वोह हज़रत **अबूअह** तआला के मुतीओ मुख़्लिस बन्दे थे फिर भी येह दुआ इस लिये है कि ताअत व

इख़लास में और ज़ियादा कमाल की तलब रखते हैं, जौके ताअत सैर नहीं होता । سُبْحٰنَ اللّٰهِ (हर कोई अपनी

इस्तिताअत के मुताबिक ही गौरो फ़िक्र करता है) । **233** : हज़रते इब्राहीम व इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام मा'सूम हैं आप की तरफ़ से तो येह तवाजोअ

है और **अबूअह** वालों के लिये ता'लीम है । **मसआला** : कि येह मक़ाम क़बूले दुआ का है और यहाँ दुआ व तौबा सुन्नते इब्राहीमी है । **234** : या'नी

हज़रते इब्राहीम व हज़रते इस्माईल की ज़ुरिय्यत में । येह दुआ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के लिये थी, या'नी का'बए मुअज़्ज़म की ता'मीर

की अज़ीम खिदमत बजा लाने और तौबा व इस्तिफ़ार करने के बा'द हज़रते इब्राहीम व इस्माईल ने येह दुआ की, कि या रब ! अपने महबूब

नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को हमारी नस्ल में ज़ाहिर फ़रमा और येह शरफ़ हमें इनायत कर, येह दुआ क़बूल हुई और इन दोनों

साहिबों की नस्ल में हुजूर के सिवा कोई नबी नहीं हुवा, औलादे हज़रते इब्राहीम में बाकी अम्बिया हज़रते इस्हाक़ की नस्ल से हैं । **मसआला** :

सय्यिदे आलाम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने अपना मीलाद शरीफ़ खुद बयान फ़रमाया, इमाम बग़वी ने एक हदीस रिवायत की, कि हुजूर ने फ़रमाया :

मैं **अबूअह** तआला के नज्दीक "खातमुन्नबिय्यीन" लिखा हुवा था व हाले कि हज़रते आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) के पुतला का ख़मीर हो रहा था,

मैं तुम्हें अपने इब्तिदाए हाल की खबर दूँ, मैं दुआए इब्राहीम हूँ, बिशारते ईसा हूँ, अपनी वालिदा के उस ख़्वाब की ता'बीर हूँ जो उन्होंने मेरी

विलादत के वक़्त देखा और उन के लिये एक नूरे सातेअ (फैलता हुवा नूर) ज़ाहिर हुवा जिस से मुल्के शाम के ऐवान व कुसूर उन के लिये

रोशन हो गए । इस हदीस में दुआए इब्राहीम से येही दुआ मुराद है जो इस आयत में मज़कूर है, **अबूअह** तआला ने येह दुआ क़बूल फ़रमाई

और आख़िर ज़माने में हुजूर सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को मक़स फ़रमाया أَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَىٰ إِحْسَانِهِ **235** : इस

किताब से कुरआने पाक और इस की ता'लीम से इस के हकाइक़ व मआनी का सिखाना मुराद है । **236** : हिक्मत के मा'ना में बहुत

अक़वाल हैं बा'जु के नज्दीक हिक्मत से फ़िकह मुराद है, क़तादा का कौल है कि हिक्मत सुन्नत का नाम है, बा'जु कहते हैं कि हिक्मत इल्मे

अहक़ाम को कहते हैं, खुलासा येह कि हिक्मत इल्मे असरार है । **237** : सुथरा करने के येह मा'ना हैं कि लौहे नुफ़ूस व अरवाह को कदूरत

(आलूदगियों) से पाक कर के हिजाब उठा दें और आईनए इस्ति'दाद की जिला फ़रमा कर इन्हें इस क़ाबिल कर दें कि इन में हकाइक़

की जल्वा गरी हो सके । **238 शाने नुज़ूल** : उलमाएँ यहूद में से हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम ने इस्लाम लाने के बा'द अपने दो भतीजों मुहाजिर

व सलमा को इस्लाम की दा'वत दी और उन से फ़रमाया कि तुम को मा'लूम है कि **अबूअह** तआला ने तौरैत में फ़रमाया है कि मैं औलादे

इस्माईल से एक नबी पैदा करूंगा जिन का नाम अहमद होगा जो उन पर ईमान लाएगा राहयाब (रास्ता पाने वाला) होगा, जो उन पर ईमान न

लाएगा मलक़न है, येह सुन कर सलमा ईमान ले आए और मुहाजिर ने इस्लाम से इन्कार कर दिया, इस पर **अबूअह** तआला ने येह आयत नाज़िल

फ़रमा कर ज़ाहिर कर दिया कि जब हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने खुद उस रसूले मुअज़्ज़म के मक़स होने की दुआ फ़रमाई तो जो उन के दीन

اصْطَفَيْنَهُ فِي الدُّنْيَا ۗ وَ اِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِذْ قَالَ

हम ने दुनिया में उसे चुन लिया²³⁹ और बेशक वोह आखिरत में हमारे खास कुर्ब की काबिलियत वालों में है²⁴⁰ जब कि उस से

لَهُ رَبُّهُ اَسْلِمٌ ۗ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٣١﴾ وَ وصىٰ بِهَا اِبْرٰهِيْمَ

उस के रब ने फ़रमाया गरदन रख अर्ज़ की मैं ने गरदन रखी उस के लिये जो रब है सारे जहान का और इसी दिन की वसियत की इब्राहीम ने

بَنِيهِ وَيَعْقُوْبُ ۗ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللهَ اصْطَفٰ لَكُمْ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا

अपने बेटों को और या'कूब ने कि ऐ मेरे बेटो ! बेशक **الله** ने यह दिन तुम्हारे लिये चुन लिया तो न मरना

وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ اَمْ كُنْتُمْ شٰهِدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۗ اِذْ

मगर मुसल्मान बल्कि तुम में के खुद मौजूद थे²⁴¹ जब या'कूब को मौत आई जब कि

قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِي ۗ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَ اِلٰهَ

उस ने अपने बेटों से फ़रमाया मेरे बाद किस की पूजा करोगे बोले हम पूजेंगे उसे जो खुदा है आप का और आप के

اٰبَائِكَ اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْحٰقَ الْهٰٓءِ اِحْدًا ۗ وَ نَحْنُ لَهٗ

वालियों इब्राहीम व इस्माईल²⁴² व इस्हाक़ का एक खुदा और हम उस के

مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٣﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ لَكُمْ مَّا

हुज़ूर गरदन रखे हैं यह²⁴³ एक उम्मत है कि गुज़र चुकी²⁴⁴ उन के लिये है जो उन्होंने ने कमाया और तुम्हारे लिये है जो

كَسَبْتُمْ ۗ وَ لَا تَسْئَلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٤﴾ وَ قَالُوْا كُنُوْا هُوْدًا

तुम कमाओ और उन के कामों की तुम से पुरसिश न होगी और किताबी बोले²⁴⁵ यहूदी

से फिरे वोह हज़रते इब्राहीम के दिन से फिरा। इस में यहूदो नसारा व मुश्रिकीने अरब पर ता'रीज़ है जो अपने आप को इफ़ितख़ारन (फ़ख़ करते

हुए) हज़रते इब्राहीम **عليه السلام** की तरफ़ मन्सूब करते थे, जब उन के दिन से फिर गए तो शराफ़त कहां रही ? 239 : रिसालत व खुल्लत के साथ

रसूल व खलील बनाया। 240 : जिन के लिये बुलन्द दर्जे हैं। तो जब हज़रते इब्राहीम **عليه السلام** करामते दारैन के जामेअ हैं तो उन की

तरीक़त व मिल्लत से फिरे वाला ज़रूर नादान व अहमक़ है। 241 : शाने नुज़ूल : यह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई, उन्होंने ने कहा

था कि हज़रते या'कूब **عليه السلام** ने अपनी वफ़ात के रोज़ अपनी औलाद को यहूदी रहने की वसियत की थी, **الله** तआला ने उन के इस

बोहतान के रद में यह आयत नाज़िल फ़रमाई। (عزّاز) मा'ना यह है कि ऐ बनी इसराईल ! तुम्हारे पहले लोग हज़रते या'कूब **عليه السلام** के

आख़िर वक़्त उन के पास मौजूद थे जिस वक़्त उन्होंने ने अपने बेटों को बुला कर उन से इस्लाम व तौहीद का इक़्ार लिया था और यह इक़्ार

लिया था जो आयत में मंज़ूर है। 242 : हज़रते इस्माईल **عليه السلام** को हज़रते या'कूब **عليه السلام** के आबा में दाख़िल करना तो इस लिये

है कि आप उन के चचा हैं और चचा ब मन्ज़िला बाप के होता है जैसा कि हदीस शरीफ़ में है। और आप का नाम हज़रते इस्हाक़ **عليه السلام**

से पहले जि़क़्र फ़रमाना दो वजह से है एक तो यह कि आप हज़रते इस्हाक़ **عليه السلام** से चौदह साल बड़े हैं, दूसरे इस लिये कि आप सथियदे

आलम **صلّى الله عليه وسلم** के जद हैं 243 : या'नी हज़रते इब्राहीम व या'कूब **عليهما السلام** और इन की मुसल्मान औलाद। 244 : ऐ यहूद ! तुम

इन पर बोहतान मत उठाओ। 245 : शाने नुज़ूल : हज़रते इब्ने अब्बास **رضي الله عنهما** ने फ़रमाया कि यह आयत रुअसाए यहूद और नज़रान

أَوْ نَصْرِي تَهْتَدُوا ۗ قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ

या नसरानी हो जाओ रह पाओगे तुम फ़रमाओ बल्कि हम तो इब्राहीम का दीन लेते हैं जो हर बातिल से जुदा थे और मुश्रिकों

الشُّرِكِينَ ﴿١٣٥﴾ قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ إِلَى

से न थे²⁴⁶ यूँ कहो कि हम ईमान लाए **अल्लाह** पर और उस पर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो उतारा गया

إِبْرَاهِيمَ وَاسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ

इब्राहीम व इस्माइल व इस्हाक़ व या'कूब और इन की औलाद पर और जो अ़ता किये गए मूसा

وَعِيسَىٰ وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ

व ईसा और जो अ़ता किये गए बाकी अम्बिया अपने रब के पास से हम इन में किसी पर ईमान में फ़र्क़

مِنْهُمْ ۗ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٦﴾ فَإِنْ آمَنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنْتُمْ بِهِ فَقَدِ

नहीं करते और हम **अल्लाह** के हज़ूर गरदन रखे हैं फिर अगर वोह भी यूँही ईमान लाए जैसा तुम लाए जब तो

اهْتَدَوْا ۗ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ ۗ وَهُوَ

वोह हिदायत पा गए और अगर मुंह फेरें तो वोह निरी ज़िद में है²⁴⁷ तो ऐ महबूब अन्क़रीब **अल्लाह** उन की तरफ़ से तुम्हें क़िफ़ायत करेगा और वोही है

السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣٧﴾ صِبْغَةَ اللَّهِ ۗ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً ۗ

सुनता जानता²⁴⁸ हम ने **अल्लाह** की रैनी (रंगाई) ली²⁴⁹ और **अल्लाह** से बेहतर किस की रैनी (रंगाई)

के नसरानियों के जवाब में नाज़िल हुई, यहूदियों ने तो मुसलमानों से येह कहा था कि हज़रते मूसा (عليه السلام) तमाम अम्बिया में सब से

अफ़ज़ल हैं और तौरैत तमाम क़िताबों से अफ़ज़ल है और यहूदी दीन तमाम अद्यान से आ'ला है, इस के साथ उन्होंने ने हज़रत सय्यदे काएनात

मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** और इन्जील शरीफ़ व कुरआन शरीफ़ के साथ कुफ़र कर के मुसलमानों से कहा था कि यहूदी बन जाओ,

इसी तरह नसरानियों ने भी अपने ही दीन को हक़ बता कर मुसलमानों से नसरानी होने को कहा था, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **246 :**

इस में यहूदो नसारा वग़ैरा पर ता'रीज़ है कि तुम मुश्रिक हो इस लिये मिल्लते इब्राहीम पर होने का दा'वा जो तुम करते हो वोह बातिल है।

इस के बा'द मुसलमानों को ख़िताब फ़रमाया जाता है कि वोह उन यहूदो नसारा से येह कह दें "قُولُوا آمَنَّا... أَلَا يَتَذَكَّرُ" **247 :** और उन में तलबे

हक़ का शाएबा भी नहीं। **248 :** येह **अल्लाह** की तरफ़ से ज़िम्मा है कि वोह अपने हबीब **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को ग़लबा अ़ता फ़रमाएगा और

इस में ग़ैब की ख़बर है कि आधिन्दा हासिल होने वाली फ़तहो ज़फ़र का पहले से इज़हार फ़रमाया, इस में नबी **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** का मो'जिज़ा है

कि **अल्लाह** तआला का येह ज़िम्मा पूरा हुवा और येह ग़ैबी ख़बर सादिक़ हो कर रही, कुफ़फ़ार के हसद व इनाद और उन के मकाइद (मक्रो

फ़रेब) से हज़ूर को ज़रर न पहुंचा, हज़ूर की फ़तह हुई, बनी कुरैज़ा क़त्ल हुए, बनी नज़ीर जला वतन किये गए, यहूदो नसारा पर जिज़्या मुक़रर

हुवा। **249 :** या'नी जिस तरह रंग कपड़े के ज़ाहिरो बातिन में नुफ़ूज़ (सरायत) करता है इसी तरह दीने इलाही के ए'तिकादाते हक़का हमारे

रगो पै में समा गए, हमारा ज़ाहिरो बातिन क़ल्बो क़ालिब उस के रंग में रंग गया, हमारा रंग ज़ाहिरी रंग नहीं जो कुछ फ़ाएदा न दे बल्कि येह

नुफ़ूस को पाक करता है, ज़ाहिर् में उस के आसार औज़ाअ व अफ़आल से नुमूदार होते हैं। नसारा जब अपने दीन में किसी को दाख़िल करते

या उन के यहां कोई बच्चा पैदा होता तो पानी में ज़र्द रंग डाल कर उस में उस शख़्स या बच्चे को गो़ता देते और कहते कि अब येह सच्चा

नसरानी हुवा, इस का इस आयत में रद फ़रमाया कि येह ज़ाहिरी रंग किसी काम का नहीं।

وَنَحْنُ لَهُ عِبَادٌ ﴿١٣٨﴾ قُلْ أَتَحَاجُّونَنِي فِي اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ

और हम उसी को पूजते हैं तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** के बारे में हम से झगड़ते हो²⁵⁰ हालांकि वोह हमारा भी मालिक और तुम्हारा भी²⁵¹

وَلَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ ﴿١٣٩﴾ أَمْ

और हमारी करनी हमारे साथ और तुम्हारी करनी तुम्हारे साथ और हम निरे उसी के हैं²⁵² बल्कि

تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ

तुम यूं कहते हो कि इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व या'कूब और इन के बेटे

كَانُوا هُودًا أَوْ نَصْرَىٰ ۗ قُلْ أَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللَّهُ ۗ وَمَنْ أَظْلَمُ

यहूदी या नसरानी थे तुम फ़रमाओ क्या तुम्हें इल्म ज़ियादा है या **अल्लाह** को²⁵³ और उस से बढ़ कर ज़लिम कौन

مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةَ عِنْدَ اللَّهِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٠﴾

जिस के पास **अल्लाह** की तरफ़ की गवाही हो और वोह उसे छुपाए²⁵⁴ और खुदा तुम्हारे कौतकों (बुरे आ'माल) से बे ख़बर नहीं

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْأَلُونَ

वोह एक गुरौह है कि गुज़र गया उन के लिये उन की कमाई और तुम्हारे लिये तुम्हारी कमाई और उन के कामों की

عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤١﴾

तुम से पुरसिश न होगी

250 : शाने नुज़ूल : यहूद ने मुसलमानों से कहा हम पहली किताब वाले हैं, हमारा किब्ला पुराना है, हमारा दीन क़दीम है, अम्बिया हम में से हुए हैं, अगर सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** नबी होते तो हम में से ही होते, इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई ।

251 : उसे इख़्तियार है कि अपने बन्दों में से जिसे चाहे नबी बनाए, अरब में से हो या दूसरों में से । **252** : किसी दूरे को **अल्लाह** के साथ शरीक नहीं करते और इबादतो ताअत ख़ालिस उसी के लिये करते हैं तो हम मुस्तहिके इक्राम हैं । **253** : इस का क़र्इ जवाब येह है कि **अल्लाह** ही आ'लम (ज़ियादा इल्म वाला) है तो जब उस ने फ़रमाया : "مَا كَانَ إِبْرَاهِيمَ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا" (इब्राहीम न यहूदी थे और न नसरानी) तो तुम्हारा येह कौल बातिल हुवा । **254** : येह यहूद का हाल है, जिन्हों ने **अल्लाह** तआला की शहादतें छुपाई जो तौरैत शरीफ़ में मज़कूर थीं कि मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** उस के नबी हैं और उन की येह ना'त व सिफ़ात हैं और हज़रते इब्राहीम मुसल्मान हैं और दीने मक़बूल इस्लाम है न यहूदियत व नसरानियत ।

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّهُمْ عَن قِبَلَتِهِمُ الَّذِي كَانُوا

अब कहेंगे²⁵⁵ वे वुकूफ़ लोग किस ने फेर दिया मुसल्मानों को उन के उस क़िल्बे से जिस पर

عَلَيْهَا قُلْ لِلَّهِ الشَّرْقُ وَالْمَغْرِبُ ۖ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ

शे²⁵⁶ तुम फ़रमा दो कि पूरब पश्चिम (मशरिफ़ व मगरिब) सब अब्बाह ही का है²⁵⁷ जिसे चाहे सीधी राह

مُسْتَقِيمٍ ﴿١٣٢﴾ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى

चलाता है और बात यूँ ही है कि हम ने तुम्हें किया सब उम्मतों में अफ़ज़ल कि तुम लोगों पर

النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۗ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي

गवाह हो²⁵⁸ और यह रसूल तुम्हारे निगहबान व गवाह²⁵⁹ और ऐ महबूब तुम पहले जिस

255 शाने नुज़ूल : यह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जब बजाए बैतुल मक्दिस के का'बए मुअज़्ज़मा को क़िल्बा बनाया गया इस पर उन्होंने ने ता'न किये क्यूं कि यह उन्हें ना गवार था और वोह नस्ख के काइल न थे। एक कौल पर यह आयत मुशिरकीने मक्का के और एक कौल पर मुनाफ़िक्कीन के हक़ में नाज़िल हुई और यह भी हो सकता है कि इस से कुफ़्फ़ार के यह सब गुरौह मुराद हों क्यूं कि ता'नो तश्नीअ में सब शरीक थे और कुफ़्फ़ार के ता'न करने से क़ब्ल कुरआने पाक में इस की ख़बर दे देना ग़ैबी ख़बरों में से है। ता'न करने वालों को वे वुकूफ़ इस लिये कहा गया कि वोह निहायत वाज़ेह बात पर मो'तरिज़ हुए बा वुजूदे कि अम्बियाए साबिक्कीन ने नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां के ख़साइस में आप का लक़ब जुल क़िल्बतैन (दो क़िल्बों वाला) जिफ़्र फ़रमाया और तह्वीले क़िल्बा (क़िल्बे का तब्दील होना) उस की दलील है कि येही वोह नबी हैं जिन की पहले अम्बिया ख़बर देते आए ! ऐसे रोशन निशान से फ़ाएदा न उठाना और मो'तरिज़ होना कमाले हमाक़त है। **256 :** क़िल्बा उस जिहत को कहते हैं जिस की तरफ़ आदमी नमाज़ में मुंह करता है, यहां क़िल्बा से बैतुल मक्दिस मुराद है। **257 :** उसे इख़्तियार है जिसे चाहे क़िल्बा बनाए किसी को क्या जाए ए'तिराज़ ! बन्दे का काम फ़रमां बरदारी है। **258 :** दुन्या व आख़िरत में। **मस्अला :** दुन्या में तो यह कि मुसल्मान की शहादत मोमिन काफ़िर सब के हक़ में शरअन मो'तबर है और काफ़िर की शहादत मुसल्मान पर मो'तबर नहीं। **मस्अला :** इस से यह भी मा'लूम हुवा कि इस उम्मत का इज़्माअ हुज्जते लाज़िमुल क़बूल है। **मस्अला :** अम्वात के हक़ में भी इस उम्मत की शहादत मो'तबर है रहमत व अज़ाब के फ़िरिशते इस के मुताबिक़ अमल करते हैं। सिहाह की हदीस में है कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के सामने एक जनाज़ा गुज़रा सहाबा ने उस की ता'रीफ़ की हुज़ूर ने फ़रमाया : वाजिब हुई, फिर दूसरा जनाज़ा गुज़रा सहाबा ने उस की बुराई की हुज़ूर ने फ़रमाया : वाजिब हुई। हज़रते उमर ने दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर क्या चीज़ वाजिब हुई ? फ़रमाया : पहले जनाज़े की तुम ने ता'रीफ़ की उस के लिये जन्मत वाजिब हुई, दूसरे की तुम ने बुराई बयान की उस के लिये दोजख़ वाजिब हुई, तुम ज़मीन में अब्बाह के शुहदा (गवाह) हो, फिर हुज़ूर ने यह आयत तिलावत फ़रमाई। **मस्अला :** यह तमाम शहादतें सुलहाए उम्मत और अहले सिद्क़ के साथ खास हैं और इन के मो'तबर होने के लिये ज़बान की निगह दाशत शर्त है। जो लोग ज़बान की एह्तियात नहीं करते और बे जा ख़िलाफ़े शरअ कलिमात उन की ज़बान से निकलते हैं और नाहक़ ला'नत करते हैं सिहाह की हदीस में है कि रोज़े कियामत न वोह शाफ़ेअ होंगे न शाहिद। इस उम्मत की एक शहादत यह भी है कि आख़िरत में जब तमाम अव्वलीनो आख़िरीन जम्अ होंगे और कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा : क्या तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से डराने और अहक़ाम पहुंचाने वाले नहीं आए ? तो वोह इन्कार करेंगे और कहेंगे कोई नहीं आया। हज़रते अम्बिया से दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा। वोह अर्ज़ करेंगे कि यह झूटे हैं हम ने इन्हें तब्लीग़ की, इस पर उन से إِقَامَةُ لِلْمُحْجَةِ दलील त़लब की जाएगी ! वोह अर्ज़ करेंगे कि उम्मत मुहम्मदिय्यह हमारी शाहिद है, येह उम्मत पैग़म्बरों की शहादत देगी कि इन हज़रात ने तब्लीग़ फ़रमाई, इस पर गुज़रता उम्मत के कुफ़्फ़ार कहेंगे इन्हें क्या मा'लूम येह हम से बा'द हुए थे, दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा : तुम कैसे जानते हो ? येह अर्ज़ करेंगे या रब ! तूने हमारी तरफ़ अपने रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को भेजा, कुरआने पाक नाज़िल फ़रमाया, उन के ज़रीए से हम क़र्द व यक्कीनी तौर पर जानते हैं कि हज़रते अम्बिया ने फ़र्ज़ तब्लीग़ अला वजिहल कमाल अदा किया। फिर सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से आप की उम्मत की निस्वत दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा, हुज़ूर उन की तस्दीक़ फ़रमाएंगे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अश्याए मा'रूफ़ा में शहादत तसामोअ (सुनने) के साथ भी मो'तबर है या'नी जिन चीज़ों का इल्मे यक्कीनी सुनने से हासिल हो उस पर भी शहादत दी जा सकती है। **259 :** उम्मत को तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की इत्तिलाअ के ज़रीए से अहवाले उमम व तब्लीग़े अम्बिया का इल्मे क़र्द व यक्कीनी हासिल है और रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ब करमे इलाही नूरे नुबुव्वत से हर शख़्स के हाल और उस

كُنْتُ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَىٰ عَقْبَيْهِ ۗ

260 किन्ले पर थे हम ने वोह इसी लिये मुकर्रर किया था कि देखें कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उलटे पाउं फिर जाता है

وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَىٰ الَّذِينَ هَدَىٰ اللَّهُ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ

और बेशक येह भारी थी मगर उन पर जिन्हें **अल्लाह** ने हिदायत की और **अल्लाह** की शान नहीं

لِيُضِيعَ آيَاتِنَا ۗ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿۲۶۱﴾ قَدْ نَرَىٰ

कि तुम्हारा ईमान अकारत (जाएअ) करे²⁶¹ बेशक **अल्लाह** आदमियों पर बहुत मेहरबान मेहर (रहूम) वाला है हम देख रहे हैं

تَقْلَبَ وَجْهَكَ فِي السَّمَاءِ ۚ فَلَنُؤَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا ۗ فَوَلِّ وَجْهَكَ

बार बार तुम्हारा आस्मान की तरफ मुंह करना²⁶² तो जरूर हम तुम्हें फेर देंगे उस किन्ले की तरफ जिस में तुम्हारी खुशी है अभी अपना मुंह फेर दो

شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۗ

मस्जिदे हराम की तरफ और ऐ मुसल्मानो तुम जहां कहीं हो अपना मुंह इसी की तरफ करो²⁶³

وَإِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۗ وَمَا اللَّهُ

और वोह जिन्हें किताब मिली है जरूर जानते हैं कि येह उन के रब की तरफ से हक है²⁶⁴ और **अल्लाह** उन के

بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ﴿۲۶۲﴾ وَلَئِن آتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ

कौतकों (बुरे आ'माल) से बे खबर नहीं और अगर तुम उन किताबियों के पास हर निशानी ले कर

की हकीकते ईमान और आ'माले नेको बद और इख्लासो निफाक सब पर मुत्तलअ हैं। **मस्अला** : इसी लिये हुजूर की शहादत दुन्या में ब हुक्मे शरअ उम्मत के हक में मक्बूल है। येही वजह है कि हुजूर ने अपने जमाने के हाजिरीन के मुतअल्लिक जो कुछ फरमाया मसलन सहाबा व अज्वाज व अहले बेत के फजाइलो मनाकिब या गाइबों और बा'द वालों के लिये मिस्ल हजरते उवैस व इमाम महदी वगैरा के, उस पर ए'तिकाद वाजिब है। **मस्अला** : हर नबी को उन की उम्मत के आ'माल पर मुत्तलअ किया जाता है ताकि रोजे क्रियामत शहादत दे सके चूंकि हमारे नबिये करीम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की शहादत आम होगी इस लिये हुजूर तमाम उम्मतों के अहवाल पर मुत्तलअ हैं। **फ़ाएदा** : यहां शहीद ब मा'ना मुत्तलअ भी हो सकता है क्यूं कि शहादत का लफ्ज इल्म व इत्तिलाअ के मा'ना में भी आया है **فَاللَّهُ تَعَالَى: وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ** (अल्लाह तआला ने फरमाया : और **अल्लाह** हर चीज पर गवाह है)। **260** : सय्यिदे आलम पहले का'बे की तरफ (मुंह कर के) नमाज पढ़ते थे, बा'दे हिजरत बैतुल मक्दिस की तरफ नमाज पढ़ने का हुक्म हुवा, सतरह महीने के करीब इस तरफ नमाज पढ़ी, फिर का'बे शरीफ की तरफ मुंह करने का हुक्म हुवा। इस तहवील (किब्ला तब्दील करने) की एक येह हिक्मत इशाद हुई कि इस से मोमिन व काफिर में फर्क व इम्तियाज हो जाएगा, चुनान्चे ऐसा ही हुवा। **261 शाने नुजूल** : बैतुल मक्दिस की तरफ नमाज पढ़ने के जमाने में जिन सहाबा ने वफात पाई उन के रिश्तेदारों ने तहवीले किब्ला के बा'द उन की नमाजों का हुक्म दरयाफत किया ! इस पर येह आयते करीमा नाजिल हुई और इत्मीनान दिलाया गया कि उन की नमाजें जाएअ नहीं, उन पर सवाब मिलेगा। **फ़ाएदा** : नमाज को ईमान से ता'बीर फरमाया गया क्यूं कि इस की अदा और ब जमाअत पढ़ना दलीले ईमान है। **262 शाने नुजूल** : सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को का'बे का किब्ला बनाया जाना पसन्दे खातिर (महबूब) था और हुजूर इस उम्मीद में आस्मान की तरफ नजर फरमाते थे इस पर येह आयत नाजिल हुई, आप नमाज ही में का'बे की तरफ फिर गए मुसल्मानों ने भी आप के साथ इसी तरफ रुख किया। **मस्अला** : इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआला को आप की रिजा मन्जूर है और आप ही की खातिर का'बे को किब्ला बनाया गया। **263** : इस से साबित हुवा कि नमाज में रू ब किब्ला होना फर्ज है। **264** : क्यूं कि उन की किताबों में हुजूर के औसाफ के सिल्लिसले में येह भी मन्जूर था कि आप बैतुल मक्दिस से का'बे की तरफ फिरेंगे और उन

آيَةٌ مَا تَبِعُوا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ

आओ वोह तुम्हारे क़िल्ले की पैरवी न करेंगे²⁶⁵ और न तुम उन के क़िल्ले की पैरवी करो²⁶⁶ और वोह आपस में भी एक दूसरे

قِبْلَةَ بَعْضٍ ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۗ

के क़िल्ले के ताबेअ नहीं²⁶⁷ और [ऐ सुनने वाले कसे बाशद] अगर तू उन की ख्वाहिशों पर चला बा'द इस के कि तुझे इल्म मिल चुका

إِنَّكَ إِذَا لِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٣٥﴾ الَّذِينَ اتَّبَعْتَهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا

तो उस वक़्त तू ज़रूर सितमगार (ज़ालिम) होगा जिन्हें हम ने किताब अता फ़रमाई²⁶⁸ वोह इस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे

يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۗ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ

आदमी अपने बेटों को पहचानता है²⁶⁹ और बेशक उन में एक गुरौह जान बूझ कर हक़ छुपाते

يَعْلَمُونَ ﴿١٣٦﴾ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُبْتِرِينَ ﴿١٣٧﴾ وَلِكُلِّ

है²⁷⁰ (ऐ सुनने वाले) येह हक़ है तेरे रब की तरफ़ से (या हक़ वोही है जो तेरे रब की तरफ़ से हो) तो ख़बरदार तू शक न करना और हर एक के लिये तवज्जोह की

وَجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيَهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۗ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمْ

एक सम्त है कि वोह उसी की तरफ़ मुंह करता है तो येह चाहो कि नेकियों में औरों से आगे निकल जाएं तुम कहीं हो **अल्लाह** तुम सब को

اللَّهُ جَبِيعًا ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٣٨﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ

इकठ्ठा ले आएगा²⁷¹ बेशक **अल्लाह** जो चाहे करे और जहां से आओ²⁷²

अम्बिया ने बिशारतों के साथ हुजूर का येह निशान बताया था कि आप बैतुल मक्दिस और का'बा दोनों क़िल्लों की तरफ़ नमाज़ पढ़ेंगे। **265** : क्यूं कि निशानी उस को नाफ़अ हो सकती है जो किसी शुबे की वजह से मुन्किर हो, येह तो हसद व इनाद से इन्कार करते हैं इन्हें इस से क्या नफ़अ होगा। **266** : मा'ना येह है कि येह क़िल्ला मन्सूख़ न होगा तो अब अहले किताब को येह तमअ न रखना चाहिये कि आप इन में से किसी के क़िल्ले की तरफ़ रुख़ करेंगे। **267** : हर एक का क़िल्ला जुदा है। यहूद तो सख़ए बैतुल मक्दिस (बैतुल मक्दिस में रखी एक चटान) को अपना क़िल्ला क़रार देते हैं और नसारा बैतुल मक्दिस के उस मकान शक़ी को जहां नफ़खे रूह हज़रत मसीह (हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की रूह मुबारक फूकना) वाकेअ हुवा। **268** : या'नी उलमाए यहूदो नसारा। **269** : मतलब येह है कि कुतुबे साबिका में नबिये आखिरुज्जमां हुजूर सय्यदे आलम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के औसाफ़ ऐसे वाजेह और साफ़ बयान किये गए हैं जिन से उलमाए अहले किताब को हुजूर के खातमुल अम्बिया होने में कुछ शक बाकी नहीं रह सकता और वोह हुजूर के इस मन्सबे आली को अतम (पूरे) यक़ीन के साथ जानते हैं। अहबारे यहूद (यहूदियों के उलमा) में से अब्दुल्लाह बिन सलाम मुशरफ़ ब इस्लाम हुए तो हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ने उन से दरयाफ़्त किया कि आयए "يَعْرِفُونَهُ" (या'नी उलमाए यहूदो नसारा वोह इस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे आदमी अपने बेटों को पहचानता है) में जो मा'रिफ़त बयान की गई है उस की क्या शान है ? उन्होंने ने फ़रमाया कि ऐ उमर ! मैं ने हुजूर को देखा तो बे इशितबाह (बिग़ैर किसी शको शुबा के) पहचान लिया और मेरा हुजूर को पहचानना अपने बेटों के पहचानने से ब दरजहा ज़ियादा अतम व अक्मल है ! हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ने फ़रमाया : येह कैसे ? उन्होंने ने कहा कि मैं गवाही देता हूं कि हुजूर **अल्लाह** की तरफ़ से उस के भेजे रसूल हैं, इन के औसाफ़ **अल्लाह** तआला ने हमारी किताब तौरैत में बयान फ़रमाए हैं, बेटे की तरफ़ से ऐसा यक़ीन किस तरह हो ! औरतों का हाल ऐसा कड़ई किस तरह मा'लूम हो सकता है ! हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ने उन का सर चूम लिया। **मस्अला** : इस से मा'लूम हुवा कि ग़ैर महल्ले शहवत में दीनी महब्वत से पेशानी चूमना जाइज़ है। **270** : या'नी तौरैत व इन्जील में जो हुजूर की ना'त व सिफ़त है उलमाए अहले किताब का एक गुरौह उस को हसदन व इनादान दीदा व दानिस्ता छुपाता है। **मस्अला** : हक़ का छुपाना मा'सियत व गुनाह है। **271** : रोज़े क्रियामत सब को जम्अ फ़रमाएगा और आ'माल की जज़ा देगा। **272** : या'नी

فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ وَإِنَّهُ لِلْحَقِّ مِنْ رَبِّكَ ۖ وَمَا

अपना मुंह मस्जिदे ह्राम की तरफ़ करो और वोह जरूर तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ है और

اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿۱۳۹﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ

اللَّهُ तुम्हारे कामों से गाफ़िल नहीं और ऐ महबूब तुम जहां से आओ अपना मुंह

شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۚ

मस्जिदे ह्राम की तरफ़ करो और ऐ मुसलमानो तुम जहां कहीं हो अपना मुंह इसी की तरफ़ करो

لِيَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ ۚ فَلَا

कि लोगों को तुम पर कोई हुज्जत न रहे²⁷³ मगर जो उन में ना इन्साफ़ी करें²⁷⁴ तो उन से न

تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي ۚ وَلَا تَمَّ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿۱۴۰﴾

डरो और मुझ से डरो और येह इस लिये है कि मैं अपनी ने'मत तुम पर पूरी करूं और किसी तरह तुम हिदायत पाओ

كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِنْكُمْ يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ

जैसे हम ने तुम में भेजा एक रसूल तुम में से²⁷⁵ कि तुम पर हमारी आयतें तिलावत फ़रमाता है और तुम्हें पाक करता²⁷⁶

وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿۱۴۱﴾

और किताब और पुख़्ता इल्म सिखाता है²⁷⁷ और तुम्हें वोह ता'लीम फ़रमाता है जिस का तुम्हें इल्म न था

فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ﴿۱۴۲﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चरचा करूंगा²⁷⁸ और मेरा हक़ मानो और मेरी ना शुक्री न करो ऐ ईमान

ख़्वाह किसी शहर से सफ़र के लिये निकलो नमाज़ में अपना मुंह मस्जिदे ह्राम (का'बे) की तरफ़ करो । 273 : और कुफ़ार को येह ता'न करने का मौक़अ न मिले कि इन्हों ने कुरैश की मुखालफ़त में हज़रते इब्राहीम व इस्माईल علیهما السلام का किब्ला भी छोड़ दिया बा वुजूदे कि नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ उन की औलाद में हैं और उन की अज़मतो बुजुर्गी मानते भी हैं । 274 : और बराहे इनाद बे जा ए'तिराज़ करें । 275 : या'नी सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ । 276 : नजासते शिर्क व जुनूब से । 277 : हिक्मत से मुफ़स्सिरीन ने फ़िक्ह मुराद ली है । 278 : ज़िक्र तीन तरह का होता है : (1) लिसानी (2) कल्बी (3) बिल जवारेह । ज़िक्रे लिसानी : तस्बीह, तक्दीस, सना वगैरा बयान करना है, ख़ुत्बा, तौबा, इस्तिफ़ार, दुआ वगैरा इस में दाख़िल हैं । ज़िक्रे कल्बी : اللّٰهُ तआला की ने'मतों का याद करना, उस की अज़मतो किब्रियाई और उस के दलाइले कुदरत में गौर करना, उलमा का इस्तिम्बात, मसाइल में गौर करना भी इसी में दाख़िल है । ज़िक्र बिल जवारेह : येह है कि आ'जा ताअते इलाही में मशगूल हों जैसे हज़ के लिये सफ़र करना, येह ज़िक्र बिल जवारेह में दाख़िल है । नमाज़ तीनों किस्म के ज़िक्र पर मुश्तमिल है तस्बीह व तक्वीर सना व क़िराअत तो ज़िक्रे लिसानी है, और खुशूओ खुजूअ व इख़्लास ज़िक्रे कल्बी, और क़ियाम रुकूअ व सुजूद वगैरा ज़िक्र बिल जवारेह है । इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : اللّٰهُ तआला फ़रमाता है : तुम ताअत बजा ला कर मुझे याद करो मैं तुम्हें अपनी इमदाद के साथ याद करूंगा । सहीहेन की हदीस में है कि اللّٰهُ तआला फ़रमाता है कि अगर बन्दा मुझे तन्हाई में याद करता है तो मैं भी उस को ऐसे ही याद फ़रमाता हूँ और अगर वोह मुझे जमाअत में याद करता है तो मैं उस को उस से बेहतर जमाअत में याद करता हूँ । कुरआनो हदीस में ज़िक्र के बहुत फ़जाइल वारिद हैं और येह हर तरह के ज़िक्र को शामिल हैं, ज़िक्र बिल जहर (बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने) को भी और

اٰمَنُوۡا سَتَعۡيُبُوۡا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۙ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيۡنَ ﴿۱۵۳﴾ وَلَا

वालो सब्र और नमाज़ से मदद चाहो²⁷⁹ बेशक **अल्लाह** साबिरो के साथ है और जो

تَقُوۡلُوۡا لِمَنۢ يُقَتَّلُ فِيۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ اَمۡوَاتٌ ۙ بَلۡ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنۡ لَا

खुदा की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो²⁸⁰ बल्कि वोह जिन्दा हैं हां तुम्हें

تَشْعُرُوۡنَ ﴿۱۵۴﴾ وَلَنَبۡدُوۡنَكُمۡ بِشَیۡءٍ مِّنَ الْخَوۡفِ وَالْجُوۡعِ وَنَقۡصٍ مِّنۡ

ख़बर नहीं²⁸¹ और ज़रूर हम तुम्हें आजमाएंगे कुछ डर और भूक से²⁸² और कुछ

الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّرَاتِ ۙ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيۡنَ ﴿۱۵۵﴾ الَّذِيۡنَ اِذَا

मालों और जानों और फलों की कमी से²⁸³ और खुश ख़बरी सुना उन सब्र वालों को कि जब उन पर

اَصَابَتْهُمۡ مُّصِیۡبَةٌۭۭ॑

कोई मुसीबत पड़े तो कहें हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की तरफ़ फिरना²⁸⁴ यह लोग हैं

बिल इख़फ़ा को भी । 279 : हदीस शरीफ़ में है कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को जब कोई सख़्त मुहिम पेश आती तो नमाज़ में मशगूल हो जाते, और नमाज़ से मदद चाहने में नमाज़े इस्तिस्का व सलाते हाज़त दाख़िल है । 280 शाने नुज़ूल : यह आयत शुहदाए बद्र के हक़ में नाज़िल हुई । लोग शुहदा के हक़ में कहते थे कि फुलां का इन्तिकाल हो गया वोह दुन्यवी आसाइश से महरूम हो गया ! उन के हक़ में यह आयत नाज़िल हुई । 281 : मौत के बा'द ही **अल्लाह** तआला शुहदा को ह्यात अता फ़रमाता है, उन की अरवाह पर रिज़क पेश किये जाते हैं, उन्हें राहतें दी जाती हैं, उन के अमल जारी रहते हैं, अज़्रो सवाब बढ़ता रहता है, हदीस शरीफ़ में है कि शुहदा की रूहें सब्ज़ परिन्दों के कालिब (रूप) में जन्नत की सैर करती और वहां के मेवे और ने'मतें खाती हैं । मसअला : **अल्लाह** तआला के फ़रमां बरदार बन्दों को क़ब्र में जन्तती ने'मतें मिलती हैं । शहीद वोह मुसल्मान मुकल्लफ़ ताहिर है जो तेज़ हथियार से जुल्मन मारा गया हो और उस के क़त्ल से माल भी वाजिब न हुवा हो, या मा'रिकाए जंग में मुर्दा या ज़ख़मी पाया गया और उस ने कुछ आसाइश न पाई । उस पर दुन्या में यह अहक़ाम हैं कि न उस को गुस्ल दिया जाए न कफ़न, अपने कपड़ों में ही रखा जाए, इसी तरह उस पर नमाज़ पढ़ी जाए, इसी हालत में दफ़न किया जाए । आख़िरत में शहीद का बड़ा रुत्बा है । बा'ज़ शुहदा वोह हैं कि उन पर दुन्या के येह अहक़ाम तो जारी नहीं होते लेकिन आख़िरत में उन के लिये शहादत का दरजा है जैसे डूब कर या जल कर, या दीवार के नीचे दब कर मरने वाला, तलबे इल्म, सफ़रे हज़, गरज़ राहे खुदा में मरने वाला, और निफ़ास में मरने वाली औरत, और पेट के मरज़ और ताऊन और ज़ातुल जम्ब और सिल (पस्ली के दर्द और फेफ़ड़ों की बीमारी व पुराने बुख़ार) में, और जुमुआ के रोज़ मरने वाले वगैरा । 282 : आज्माइश से फ़रमां बरदार व ना फ़रमान के हाल का ज़ाहिर करना मुराद है । 283 : इमाम शाफ़ेई **عَلَيْهِ الرّٰحْمَةُ** ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि ख़ौफ़ से **अल्लाह** का डर, भूक से रमज़ान के रोज़े, मालों की कमी से ज़कात व सदक़ात देना, जानों की कमी से अमराज़ के ज़रीए मौतें होना, फ़लों की कमी से औलाद की मौत मुराद है इस लिये कि औलाद दिल का फल होती है हदीस शरीफ़ में है सय्यिदे आलम **صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : जब किसी बन्दे का बच्चा मरता है **अल्लाह** तआला मलाएका से फ़रमाता है तुम ने मेरे बन्दे के बच्चे की रूह क़ब्ज़ की ? वोह अर्ज़ करते हैं कि हां या रब ! फिर फ़रमाता है : तुम ने उस के दिल का फल ले लिया ? अर्ज़ करते हैं हां या रब ! फ़रमाता है : इस पर मेरे बन्दे ने क्या कहा ? अर्ज़ करते हैं उस ने तेरी हम्द की और "إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ" पढ़ा ! फ़रमाता है : उस के लिये जन्नत में मक़ान बनाओ और उस का नाम "बैतुल हम्द" रखो । हिकमत : मुसीबत के पेश आने से क़ब्ल ख़बर देने में कई हिकमतें हैं एक तो येह कि इस से आदमी को वक़्ते मुसीबत सब्र आसान हो जाता है । एक येह कि जब काफ़िर देखें कि मुसल्मान बला व मुसीबत के वक़्त साबिरो शाकिर और इस्तिक्लाल के साथ अपने दीन पर काइम रहता है तो उन्हें दीन की ख़ूबी मा'लूम और इस की तरफ़ रबत हो । एक येह कि आने वाली मुसीबत की क़ब्ले वुकूअ इत्तिलाअ ग़ैबी ख़बर और नबी **صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** का मो'जिज़ा है । एक हिकमत येह कि मुनाफ़िक़ीन के क़दम इब्बाला (मुसीबत में मुब्तला होने) की ख़बर से उखड़ जाएं और मोमिन व मुनाफ़िक़ में इम्तियाज़ हो जाए । 284 : हदीस शरीफ़ में है कि वक़्त मुसीबत के "إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ"

عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٤﴾ إِنَّ

जिन पर इन के रब की दुरुदें हैं और रहमत और येही लोग राह पर हैं बेशक

الصَّافَا وَالْمَرَوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ ۚ فَسَنَ حَجَّ الْبَيْتِ أَوْ اعْتَرَفَ فَلَا

सफ़ा और मर्वह²⁸⁵ **ALLAH** के निशानों से हैं²⁸⁶ तो जो इस घर का हज या उमरह करे उस पर कुछ

جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ

गुनाह नहीं कि इन दोनों के फेरे करे²⁸⁷ और जो कोई भली बात अपनी तरफ से करे तो **ALLAH** नेकी का सिला देने वाला

عَلَيْمٌ ﴿١٥٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيْتِ وَالْهُدَىٰ مِنْ

ख़बरदार है बेशक वोह जो हमारी उतारी हुई रोशन बातों और हिदायत को छुपाते हैं²⁸⁸

بَعْدَ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ۚ أُولَئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ

बा'द इस के कि लोगों के लिये हम उसे किताब में वाजेह फ़रमा चुके उन पर **ALLAH** की ला'नत है और ला'नत करने वालों

पढ़ना रहमते इलाही का सबब होता है, येह भी हदीस में है कि मोमिन की तकलीफ को **ALLAH** तआला कफ़फ़ार गुनाह बनाता है। **285** : सफ़ा व मर्वह मक्कए मुकर्रमा के दो पहाड़ हैं जो का'बए मुअज़्ज़मा के मुक़ाबिल जानिबे शर्क वाक़ेअ हैं, मर्वह शिमाल की तरफ़ माइल, और सफ़ा जुनूब की तरफ़ जबले अबी कुबैस के दामन में है हज़रते हाजिरा और हज़रते इस्माईल **عَلَيْهِ السَّلَام** ने इन दोनों पहाड़ों के करीब इस मक़ाम पर जहाँ चाहे ज़मज़म है व हुक्मे इलाही सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई, उस वक़्त येह मक़ाम संगलाख़ बयाबान था, न यहाँ सब्ज़ा था न पानी न खुदों नोश का कोई सामान, रिज़ाए इलाही के लिये इन मक्बूल बन्दों ने सब्र किया। हज़रते इस्माईल **عَلَيْهِ السَّلَام** बहुत खुर्द साल (कम उम्र) थे तिश्नगी से जब उन की जाँ बलबी की हालत हुई तो हज़रते हाजिरा बेताब हो कर कोहे सफ़ा पर तशरीफ़ ले गई वहाँ भी पानी न पाया तो उतर कर नशेब के मैदान में दौड़ती हुई मर्वह तक पहुँची इस तरह सात मरतबा गदिश हुई और **ALLAH** तआला ने "أَنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ" का जल्वा इस तरह जाहिर फ़रमाया कि ग़ैब से एक चश्मा "ज़मज़म" नुमूदार किया और इन के सब्र इख़लास की बरकत से इन के इत्तिबाअ में इन दोनों पहाड़ों के दरमियान दौड़ने वालों को मक्बूले बारगाह किया और इन दोनों को महल्ले इजाबते दुआ बनाया। **286** : "شَعَائِرِ اللَّهِ" से दीन के आ'लाम या'नी निशानियाँ मुराद हैं ख़्वाह वोह मकानात हों जैसे का'बा, अरफ़ात, मुज्दलिफ़ा, जिमारे सलासा, सफ़ा, मर्वह, मिना, मसाजिद। या अज़मिनह जैसे रमज़ान, अशहरे हराम, इदे फ़िज़ व अज़्हा, जुमुआ, अय्यामे तशरीक। या दूसरे अलामात जैसे अज़ान, इक़ामत, नमाज़े बा जमाअत, नमाज़े जुमुआ, नमाज़े इदैद, ख़तना येह सब शआइरे दीन हैं। **287** शाने नुज़ूल : ज़मानए जाहिलिय्यत में सफ़ा व मर्वह पर दो बुत रखे थे, सफ़ा पर जो बुत था उस का नाम असाफ़ और जो मर्वह पर था उस का नाम नाइला था, कुफ़फ़ार जब सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई करते तो इन बुतों पर ता'जीमन हाथ फेरते, अहदे इस्लाम में बुत तोड़ दिये गए लेकिन चूँकि कुफ़फ़ार यहाँ मुश्रिकाना फ़े'ल करते थे इस लिये मुसल्मानों को सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई करना गिरां हुवा कि इस में कुफ़फ़ार के मुश्रिकाना फ़े'ल के साथ कुछ मुशाबहत है। इस आयत में उन का इत्मीनान फ़रमा दिया गया कि चूँकि तुम्हारी निय्यत ख़ालिस इबादते इलाही की है तुम्हें अन्देशए मुशाबहत नहीं ! और जिस तरह का'बे के अन्दर ज़मानए जाहिलिय्यत में कुफ़फ़ार ने बुत रखे थे, अब अहदे इस्लाम में बुत उठा दिये गए और का'बा शरीफ़ का त्वाफ़ दुरुस्त रहा और वोह शआइरे दीन में से रहा इसी तरह कुफ़फ़ार की बुत परस्ती से सफ़ा व मर्वह के शआइरे दीन होने में कुछ फ़र्क़ नहीं आया। **मस्अला** : सई (या'नी सफ़ा व मर्वह के दरमियान दौड़ना) वाजिब है हदीस से साबित है सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने इस पर मुदावमत फ़रमाई है, इस के तर्क से दम देना या'नी कुरबानी वाजिब होती है। **मस्अला** : सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई हज व उमरह दोनों में लाजिम है। फ़र्क़ येह है कि हज के अन्दर अरफ़ात में जाना और वहाँ से त्वाफ़े का'बा के लिये आना शर्त है, और उमरह के लिये अरफ़ात में जाना शर्त नहीं। **मस्अला** : उमरह करने वाला अगर बैरूने मक्का से आए उस को बराहे रास्त मक्कए मुकर्रमा में आ कर त्वाफ़ करना चाहिये और अगर मक्के का साकिन (रहने वाला) हो तो उस को चाहिये कि हरम से बाहर जाए वहाँ से त्वाफ़े का'बा का एहराम बांध कर आए। हज व उमरह में एक फ़र्क़ येह भी है कि हज साल में एक ही मरतबा हो सकता है क्यूँ कि अरफ़ात में अरफ़ा के दिन या'नी नवीं ज़िल हिज्जा को जाना जो हज में शर्त है साल में एक ही मरतबा मुम्किन है और उमरह हर दिन हो सकता है इस के लिये कोई वक़्त मुअय्यन नहीं। **288** : येह आयत उन उलमाए यहूद की शान में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की ना'त शरीफ़ और आयते रज्म और तौरैत के दूसरे अहकाम को छुपाया

اللَّعْنُونَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُّوا فَأُولَٰئِكَ أَتُوبُ

की ला'नत²⁸⁹ मगर वोह जो तौबा करें और संवारे (इस्लाह करें) और ज़ाहिर कर दें तो मैं उन की तौबा क़बूल

عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَأَمَاتُوا هُمْ

फरमाऊंगा और मैं ही हूँ बड़ा तौबा क़बूल फ़रमाने वाला मेहरबान बेशक वोह जिन्हों ने कुफ़ किया और काफ़िर

كُفَّارًا ۖ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمُ لعنةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٦١﴾

ही मरे उन पर ला'नत है **ALLAH** और फ़िरिशतों और आदमियों सब की²⁹⁰

خُلْدِينَ فِيهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿١٦٢﴾

हमेशा रहेंगे उस में न उन पर से अज़ाब हलका हो और न उन्हें मोहलत दी जाए

وَإِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٣﴾ إِنَّ فِي خَلْقِ

और तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है²⁹¹ उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं मगर वोही बड़ी रहमत वाला मेहरबान बेशक

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي

आस्मानों²⁹² और ज़मीन की पैदाइश और रात व दिन का बदलते आना और कशती कि

करते थे। **मसअला** : उल्लूमे दीन का इज़हार फ़र्ज़ है। **289** : ला'नत करने वालों से मलाएका व मोमिनीन मुराद हैं, एक क़ौल येह है कि

ALLAH के तमाम बन्दे मुराद हैं। **290** : मोमिन तो काफ़िरो पर ला'नत करेगे ही, काफ़िर भी रोजे क़ियामत बाहम एक दूसरे पर ला'नत

करेगे। **मसअला** : इस आयत में उन पर ला'नत फ़रमाई गई जो कुफ़्र पर मरे। इस से मा'लूम हुवा कि जिस की मौत कुफ़्र पर

मा'लूम हो उस पर ला'नत करनी जाइज़ है। **मसअला** : गुनहगार मुसल्मान पर बिता'यीन (उस का नाम ले कर) ला'नत करना जाइज़

नहीं लेकिन अलल इत्लाक जाइज़ है जैसा कि हदीस शरीफ़ में चोर और सूद ख़ार वगैरा पर ला'नत आई है। **291 शाने नुज़ूल** :

कुफ़्राने ने सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से कहा : आप अपने रब की शान व सिफ़त बयान फ़रमाइये ! इस पर येह आयत नाज़िल

हुई और उन्हें बता दिया कि मा'बूद सिर्फ़ एक है, न वोह मुतजज़्ज़ी होता है न मुन्क़सिम, न उस के लिये मिस्ल न नज़ीर, उलूहियत

व रबूबियत में कोई उस का शरीक नहीं, वोह यक्ता है अपने अफ़ाल में, मस्नूअत को तन्हा उसी ने बनाया, वोह अपनी ज़ात में

अकेला है कोई उस का क़सीम (शरीक) नहीं, अपने सिफ़त में यगाना है कोई उस का शबीह नहीं। अबू दावूद व तिरमिज़ी की हदीस

में है कि **ALLAH** तअ़ाला का इस्मे आ'ज़म इन दो आयतों में है एक येही आयत "وَإِلَهُكُمْ" दूसरी "وَاللَّهُ" **292** :

का'बए मुअज़्ज़मा के गिर्द मुशिरकीन के तीन सौ साठ बुत थे जिन्हें वोह मा'बूद ए'तिक़ाद करते थे, उन्हें येह सुन कर बड़ी हैरत हुई कि

मा'बूद सिर्फ़ एक ही है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! इस लिये उन्होंने ने हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से ऐसी आयत त़लब की

जिस से वहदानियत पर इस्तिदलाल सहीह हो। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें येह बताया गया कि आस्मान और उस की

बुलन्दी और उस का बिगैर किसी सुतून और अ़लाके के काइम रहना और जो कुछ उस में नज़र आता है आफ़ताब महताब सितारे वगैरा

येह तमाम, और ज़मीन और इस की दराज़ी और पानी पर मफ़रूश (बिछा हुवा) होना, और पहाड़ दरिया चश्मे, मआदिन जवाहिर

दरख़्त सब्ज़ा फ़ल, और शबो रोज़ का आना जाना घटना बढ़ना, कशियाँ और उन का मुसख़्ख़र होना वा वुजूद बहुत से वज़्न और बोझ

के रूए आब (पानी की सल्ह) पर रहना और आदमियों का उन में सुवार हो कर दरिया के अज़ाइब देखना और तिज़ारतों में उन से बार

बरदारी (वज़्न उठाने) का काम लेना, और बारिश और उस से खुशक व मुर्दा हो जाने के बा'द ज़मीन का सर सब्जो शादाब करना और

ताज़ा जिन्दगी अ़ता फ़रमाना, और ज़मीन को अन्वाओ अक़साम के जानवरों से भर देना जिन में बे शुमार अज़ाइबे हिकमत वदीअत

(रखे हुए) हैं, इसी तरह हवाओं की गर्दिश और इन के ख़वास और हवा के अज़ाइबात, और अन्न (बादल) और उस का इतने क़सीर

पानी के साथ आस्मान व ज़मीन के दरमियान मुअल्लक रहना, येह आठ अन्वाअ हैं जो हज़रते क़ादिर मुख़ार के इल्मो हिकमत और

उस की वहदानियत पर बुरहाने क़वी (मज़बूत दलाइल) हैं और इन की दलालत वहदानियत पर बे शुमार वुजूह से है। इम्जाली बयान

येह है कि येह सब उमूरे मुम्किन हैं और इन का वुजूद बहुत से मुख़लिफ़ तरीक़ों से मुम्किन था मगर वोह मख़सूस शान से वुजूद में

فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ

दरिया में लोगों के फाएदे ले कर चलती है और वोह जो **अल्लाह** ने आस्मान से पानी उतार कर

فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ ۝

मुर्दा ज़मीन को उस से जिला दिया और ज़मीन में हर किसम के जानवर फैलाए और

تَصْرِيفِ الرِّيحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ

हवाओं की गर्दिश और वोह बादल कि आस्मान व ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है

لَايَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ (163) وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ

इन सब में अक्ल मन्दों के लिये ज़रूर निशानियां हैं और कुछ लोग **अल्लाह** के सिवा और मा'बूद बना

أَنْدَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِلَّهِ ۝ وَلَوْ

लेते हैं कि उन्हें **अल्लाह** की तरह महबूब रखते हैं और ईमान वालों को **अल्लाह** के बराबर किसी की महबूबत नहीं और कैसी हो अगर

يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرُونَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ

देखें ज़ालिम वोह वक़्त जब कि अज़ाब उन की आंखों के सामने आएगा इस लिये कि सारा जोर खुदा को है और इस लिये कि

اللَّهُ شَرِيدُ الْعَذَابِ ۝ (165) إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا

अल्लाह का अज़ाब बहुत सख़्त है जब बेज़ार होंगे पेशवा अपने पैरवों से²⁹³

आए, येह दलालत करता है कि ज़रूर इन के लिये मूजिद है कादिर व हकीम जो ब मुक्तजाए हिकमतो मशियत जैसा चाहता है बनाता है, किसी को दख़ल व ए'तिराज़ की मजाल नहीं। वोह मा'बूद बिल यकीन वाहिदे यकता है क्यूं कि अगर उस के साथ कोई दूसरा मा'बूद भी फ़र्ज़ किया जाए तो उस को भी इन मक्दूरत पर कादिर मानना पड़ेगा! अब दो हाल से ख़ाली नहीं या तो ईजाद व तासीर में दोनों मुत्तफ़िकुल इरादा होंगे, या न होंगे अगर हों तो एक ही शै के वुजूद में दो मुअस्सिरों का तासीर करना लाज़िम आएगा और येह मुहाल है क्यूं कि येह मुस्तलज़िम है मा'लूल के दोनों से मुस्तानी होने को और दोनों की तरफ़ मुफ़्तकिर होने को। क्यूं कि इल्लत जब मुस्तक़िल्ला हो तो मा'लूल सिफ़ उसी की तरफ़ मोहताज होता है दूसरे की तरफ़ मोहताज नहीं होता, और दोनों को इल्लते मुस्तक़िल्ला फ़र्ज़ किया गया है तो लाज़िम आएगा कि मा'लूल दोनों में से हर एक की तरफ़ मोहताज हो और हर एक से ग़नी हो, तो नकीज़ैन मुत्तमअ हो गई और येह मुहाल है। और अगर येह फ़र्ज़ करो कि तासीर उन में से एक की है तो तरजीह बिला मुरज्जिह लाज़िम आएगी और दूसरे का इज्ज लाज़िम आएगा जो इलाह होने के मुनाफ़ि है। और अगर येह फ़र्ज़ करो कि दोनों के इरादे मुख़लिफ़ होते हैं तो तमानुअ व ततारुद लाज़िम आएगा कि एक किसी शै के वुजूद का इरादा करे और दूसरा उसी हाल में उस के अदम का, तो वोह शै एक ही हाल में मौजूद व मा'दूम दोनों होगी या दोनों न होगी, येह दोनों तक्दीरें बातिल हैं तो ज़रूर है कि या मौजूद होगी या मा'दूम एक ही बात होगी, अगर मौजूद हुई तो अदम का चाहने वाला आज़िज हुवा इलाह न रहा और अगर मा'दूम हुई तो वुजूद का इरादा करने वाला मजबूर रहा इलाह न रहा! साबित हो गया कि इलाह एक ही हो सकता है और येह तमाम अन्वाअ बे निहायत वुजूह से उस की तौहीद पर दलालत करते हैं 293 : येह रोज़े कियामत का बयान है जब मुशिरकीन और उन के पेशवा जिन्हों ने उन्हें कुफ़ की तरगीब दी थी एक जगह जम्अ होंगे और अज़ाब नाज़िल होता हुवा देख कर एक दूसरे से बेज़ार हो जाएंगे।

وَرَأَوْا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ﴿۱۷۶﴾ وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا

और देखेंगे अज़ाब और कट जाएंगी उन की सब डोरे²⁹⁴ और कहेंगे पैरव

لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا ۗ كَذَلِكَ يَرِيهِمُ اللَّهُ

काश हमें लौट कर जाना होता (दुनिया में) तो हम उन से तोड़ देते (जुदा हो जाते) जैसे उन्होंने ने हम से तोड़ दी यूँही **اللَّهُ** उन्हें दिखाएगा

أَعْمَالَهُمْ حَسِرَاتٍ عَلَيْهِمْ ۗ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ ﴿۱۷۷﴾ يَا أَيُّهَا

उन के काम उन पर हस्तें हो कर²⁹⁵ और वोह दोख़ से निकलने वाले नहीं ऐ

النَّاسُ كُلُّوْا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا ۗ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۗ

लोगो खाओ जो कुछ ज़मीन में²⁹⁶ हलाल पाकीज़ा है और शैतान के क़दम पर क़दम न रखो

إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿۱۷۸﴾ إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَنْ

बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है वोह तो तुम्हें येही हुक्म देगा बदी और बे हयाई का और येह कि

تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿۱۷۹﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ

اللَّهُ पर वोह बात जोड़ो जिस की तुम्हें ख़बर नहीं और जब उन से कहा जाए **اللَّهُ** के उतारे पर

اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۗ أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا

चलो²⁹⁷ तो कहें बल्कि हम तो उस पर चलेंगे जिस पर अपने बाप दादा को पाया क्या अगर्चे उन के बाप दादा न

يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿۱۸۰﴾ وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الذِّبْيِ

कुछ अक्ल रखते हों न हिदायत²⁹⁸ और काफ़ि़रों की कहावत उस की सी है जो

294 : या'नी वोह तमाम तअल्लुकात जो दुनिया में उन के माबैन थे ख़्वाह वोह दोस्तियां हों या रिश्तेदारियां, या बाहमी मुवाफ़क़त के अहद । 295 : या'नी **اللَّهُ** तआला उन के बुरे आ'माल उन के सामने करेगा तो उन्हें निहायत हसरत होगी कि उन्होंने ने येह काम क्यूं किये थे, एक कौल येह है कि जन्नत के मक़ामात दिखा कर उन से कहा जाएगा कि अगर तुम **اللَّهُ** तआला की फ़रमां बरदारी करते तो येह तुम्हारे लिये थे, फिर वोह मसाकिन व मनाज़िल मोमिनीन को दिये जाएंगे इस पर उन्हें हस्तो नदामत होगी । 296 : येह आयत उन अश़्खास के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने बिजार (ज़मानए जाहिलियत के नामज़द मख़सूस जानवरों) वगैरा को ह़राम करार दिया था । इस से मा'लूम हुवा कि **اللَّهُ** तआला की हलाल फ़रमाई हुई चीज़ों को ह़राम करार देना उस की रज़ाकियत से बगावत है, मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है **اللَّهُ** तआला फ़रमाता है : जो माल मैं अपने बन्दों को अता फ़रमाता हू वोह उन के लिये हलाल है, और इसी में है कि मैं ने अपने बन्दों को बातिल से बे तअल्लुक पैदा किया, फिर उन के पास शयातीन आए और उन्हों ने दीन से बहकाया और जो मैं ने उन के लिये हलाल किया था उस को ह़राम ठहराया । एक और हदीस में है हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا** ने फ़रमाया : मैं ने येह आयत सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के सामने तिलावत की तो हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास ने खडे हो कर अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! दुआ फ़रमाइये कि **اللَّهُ** तआला मुझे मुस्तजाबुद्दा'वात कर दे ! हुज़ूर ने फ़रमाया : ऐ सा'द अपनी ख़ूराक पाक करो मुस्तजाबुद्दा'वात हो जाओगे ! उस जाते पाक की क़सम ! जिस के दस्ते कुदरत में मुहम्मद **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की जान है आदमी अपने पेट में ह़राम का लुक़मा डालता है तो चालीस रोज़ तक क़बूलियत से महरूम रहती है । 297 : तौहीद व कुरआन पर ईमान लाओ और पाक चीज़ों को हलाल जानो जिन्हें **اللَّهُ** ने हलाल किया । 298 : जब बाप दादा दीन के उमूर को

يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً ط صَّمُّ بِكُمْ عُنَى فَهَمَلًا

पुकारे ऐसे को कि खाली चीख पुकार के सिवा कुछ न सुने²⁹⁹ बहरे गूंगे अन्धे तो उन्हें

يَعْقِلُونَ ﴿١٤١﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كَلُّوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَ

समझ नहीं³⁰⁰ ऐ ईमान वालो खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीजें और

اشْكُرُوا لِلَّهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١٤٢﴾ إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْبَيْتَةَ

अल्लाह का एहसान मानो अगर तुम उसी को पूजते हो³⁰¹ उस ने येही तुम पर ह्राम किये हैं मुर्दार³⁰²

وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخَنزِيرِ وَمَا أُهْلَ بِهِ لِغَيْرِ اللَّهِ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ

और खून³⁰³ और सुअर का गोश्त³⁰⁴ और वोह जानवर जो गैरे खुदा का नाम ले कर ज़ब्द किया गया³⁰⁵ तो जो नाचार हो³⁰⁶ न यूं कि

بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ط إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٤٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ

ख़्वाहिश से खाए और न यूं कि ज़रूरत से आगे बढ़े तो उस पर गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है वोह जो

يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ وَيَشْتَرُونَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا

छुपाते हैं³⁰⁷ अल्लाह की उतारी किताब और उस के बदले ज़लील कीमत ले लेते हैं³⁰⁸

न समझते हों और राहे रास्त पर न हों तो उन की पैरवी करना हम़ाक़्त व गुमराही है। 299 : या'नी जिस तरह चौपाए चराने वाले की सिर्फ़ आवाज़ ही सुनते हैं कलाम के मा'ना नहीं समझते येही हाल इन कुफ़्फ़ार का है कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की सदाए मुबारक को सुनते हैं लेकिन उस के मा'ना दिल नशीन कर के इशारे फ़ैज़ बुन्याद से फ़ाएदा नहीं उठाते। 300 : येह इस लिये कि वोह हक़ बात सुन कर मुन्तफ़ेअ न हुए, कलामे हक़ उन की ज़बान पर जारी न हुवा, नसीहतों से उन्होंने ने फ़ाएदा न उठाया। 301 मस्अला : इस आयत से मा'लूम हुवा कि अल्लाह तआला की ने'मतों पर शुक्र वाजिब है। 302 : जो हलाल जानवर बिग़ैर ज़ब्द किये मर जाए या उस को तरीके शरअ के ख़िलाफ़ मारा गया हो मसलन गला घोट कर, या लाठी पथ्थर ढेले गुल्ले गोली से मार कर हलाक़ किया गया हो, या वोह गिर कर मर गया हो, या किसी जानवर ने साँग से मारा हो, या किसी दरिन्दे ने हलाक़ किया हो उस को मुर्दार कहते हैं, और इसी के हुक्म में दाख़िल है जिन्दा जानवर का वोह उज़्व जो काट लिया गया हो। मस्अला : मुर्दार जानवर का खाना ह्राम है मगर उस का पका हुवा चमड़ा काम में लाना और उस के बाल, साँग, हड्डी, पेट्टे, सुम (खुर) से फ़ाएदा उठाना जाइज़ है। 303 मस्अला : खून हर जानवर का ह्राम है अगर बहने वाला हो, दूसरी आयत में फ़रमाया : «أَوْ دَمًا مُسْفُوحًا»। 304 मस्अला : ख़िन्ज़ीर नजिसुल ऐन (बिल्कुल नापाक) है इस का गोश्त, पोस्त, बाल, नाखून वग़ैरा तमाम अज्ज़ा नजिस व ह्राम हैं किसी को काम में लाना जाइज़ नहीं। चूँकि ऊपर से खाने का बयान हो रहा है इस लिये यहां गोश्त के ज़िक़र पर इक्तिफ़ा फ़रमाया गया। 305 मस्अला : जिस जानवर पर वक्ते ज़ब्द ग़ैरे खुदा का नाम लिया जाए ख़्वाह तन्हा या खुदा के नाम के साथ अत्फ़ से मिला कर (मसलन : بِسْمِ اللّٰهِ وَتَحْمِيْدُ رَسُوْلِ اللّٰهِ) वोह ह्राम है। मस्अला : और अगर नामे खुदा के साथ ग़ैर का नाम बिग़ैर अत्फ़ मिलाया (मसलन : بِسْمِ اللّٰهِ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللّٰهِ) तो मक्रूह है। मस्अला : अगर ज़ब्द फ़कत् अल्लाह के नाम पर किया और इस से क़ब्ल या बा'द ग़ैर का नाम लिया मसलन येह कहा कि अक़ीके का बकरा, वलीमे का दुम्बा, या जिस की तरफ़ से वोह ज़बीहा है उसी का नाम लिया, या जिन औलिया के लिये ईसाले सवाब मन्ज़ूर है उन का नाम लिया तो येह जाइज़ है इस में कुछ हरज नहीं। 306 (ग़ैरामयी) : “मुज्तर” (नाचार) वोह है जो ह्राम चीज़ के खाने पर मजबूर हो और उस को न खाने से ख़ौफ़े जान हो ख़्वाह शिद्दत की भूक या नादारी की वजह से जान पर बन जाए और कोई हलाल चीज़ हाथ न आए, या कोई शख़्स ह्राम खाने पर ज़ब्र करता हो और उस से जान का अन्देशा हो ऐसी हालत में जान बचाने के लिये ह्राम चीज़ का क़दरे ज़रूरत या'नी इतना खा लेना जाइज़ है कि ख़ौफ़े हलाक़त न रहे। 307 शाने नुज़ूल : यहूद के उलमा व रुअसा जो उम्मीद रखते थे कि नबिय्ये आख़िरुज्जमां صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ इन में से मक्क़स होंगे जब उन्होंने ने देखा कि सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ दूसरी क़ौम में से मक्क़स फ़रमाए गए तो उन्हें येह अन्देशा हुवा कि लोग तौरैत व इन्ज़ील में हुज़ूर के

أُولَئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

वोह अपने पेट में आग ही भरते हैं³⁰⁹ और **अल्लाह** क़ियामत के दिन उन से बात न करेगा

وَلَا يُزَكِّيهِمْ ۗ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٤٢﴾ أُولَئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالََةَ

और न उन्हें सुधरा करे और उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है वोह लोग हैं जिन्होंने ने हिदायत के बदले

بِالْهُدَى وَالْعَذَابُ بِالْمُغْفِرَةِ ۗ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٤٣﴾ ذَلِكَ

गुमराही मोल ली और बख़्शिश के बदले अज़ाब तो किस दरजे उन्हें आग की सहार (बरदाश्त) है यह

بِأَنَّ اللَّهَ نَزَّلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِي الْكِتَابِ لَفِي

इस लिये कि **अल्लाह** ने किताब हक़ के साथ उतारी और बेशक जो लोग किताब में इख़िलाफ़ डालने लगे³¹⁰ वोह जरूर

شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۗ لَيْسَ الْبِرُّ أَنْ تُولُوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ

परले सिरे के झगड़ालू हैं कुछ अस्ल नेकी यह नहीं कि मुंह मशरिफ़ या मगरिब की तरफ़

وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ

करो³¹¹ हां अस्ल नेकी यह कि ईमान लाए **अल्लाह** और क़ियामत और फ़िरिश्तों

وَالْكِتَابِ وَالْبَيِّنَاتِ ۗ وَآتَى الْمَالَ عَلَى حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَ

और किताब और पैग़म्बरों पर³¹² और **अल्लाह** की महबूबत में अपना अज़ीज माल दे रिश्तेदारों और यतीमों और

औसाफ़ देख कर आप की फ़रमां बरदारी की तरफ़ झुक पड़ेगे और इन के नज़राने हदिये तोहफे तहाइफ़ सब बन्द हो जाएंगे हुकूमत जाती रहेगी ! इस ख़याल से उन्हें हसद पैदा हुवा और तौरैत व इन्जील में जो हुजूर की ना'त व सिफ़त और आप के वक़्ते नुबुव्वत का बयान था उन्होंने ने उस को छुपाया इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई । **मसअला** : छुपाना येह भी है कि किताब के मज्बून पर किसी को मुत्तलअ न होने दिया जाए न वोह किसी को पढ़ कर सुनाया जाए न दिख़ाया जाए, और येह भी छुपाना है कि ग़लत तावीलें कर के मा'ना बदलने की कोशिश की जाए और किताब के अस्ल मा'ना पर पर्दा डाला जाए । **308** : या'नी दुन्या के हक़ीर नफ़अ के लिये इख़्फ़ाए हक़ करते हैं । **309** : क्यूं कि येह रिश्वतें और येह माले हराम जो हक़पोशी के इवज उन्होंने ने लिया है उन्हें आतशे जहन्म में पहुँचाएगा । **310** **शाने नुज़ूल** : येह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई कि उन्होंने ने तौरैत में इख़िलाफ़ किया बा'ज ने इस को हक़ कहा, बा'ज ने बातिल, बा'ज ने ग़लत तावीलें कीं, बा'ज ने तहरीफ़ें । एक कौल येह है कि येह आयत मुशिरकीन के हक़ में नाज़िल हुई ! इस सूरत में किताब से कुरआन मुराद है, और उन का इख़िलाफ़ येह है कि बा'ज उन में से इस को शे'र कहते थे, बा'ज सेहूर, बा'ज कहानत । **311** **शाने नुज़ूल** : येह आयत यहूदो नसारा के हक़ में नाज़िल हुई क्यूं कि यहूद ने बैतुल मक्दिस के मशरिफ़ को और नसारा ने उस के मगरिब को किब्ला बना रखा था, और हर फ़रीक़ का गुमान था कि सिर्फ़ इस किब्ले ही की तरफ़ मुंह करना काफी है, इस आयत में इन का रद फ़रमा दिया गया कि बैतुल मक्दिस का किब्ला होना मन्सूख़ हो गया । (मारब) मुफ़स्सरीन का एक कौल येह भी है कि येह ख़िताब अहले किताब और मोमिनीन सब को आम है और मा'ना येह है कि सिर्फ़ रूब किब्ला होना अस्ल नेकी नहीं जब तक अक़ाइद दुरुस्त न हों और दिल इख़्लास के साथ रब्बे किब्ला की तरफ़ मुतवज्जेह न हो । **312** : इस आयत में नेकी के छ⁶ तरीके इर्शाद फ़रमाए (1) ईमान लाना (2) माल देना (3) नमाज़ काइम करना (4) ज़कात देना (5) अहद पूरा करना (6) सब्र करना । ईमान की तफ़सील येह है कि एक तो **अल्लाह** तआला पर ईमान लाए कि वोह ह्य्यो कय्यूम, अलीम, हकीम, समीअ, बसीर, ग़नी, कदीर, अज़ली, अबदी, वाहिद, **لَا شَرِيكَ لَهُ** है । दूसरे क़ियामत पर ईमान लाए कि वोह हक़ है उस में बन्दों का हिसाब होगा, आ'माल की जज़ा दी जाएगी, मक्बूलाने हक़ शफ़ाअत करेगे, सय्यिदे आलम **عَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** सआदत मन्दों को हौजे कौसर पर सेराब फ़रमाएंगे, पुल सिरात पर गुज़र होगा, और उस रोज़ के तमाम अहवाल जो कुरआन में आए या सय्यिदे अम्बिया ने बयान फ़रमाए सब हक़ हैं । तीसरे

السَّكِينِ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ

मिस्कीनों और राहगीर और साइलों को और गरदनें छुड़ाने में³¹³ और नमाज़ काइम रखे

وَأَتَى الزَّكَاةَ وَالسُّؤْفُونَ بَعَثَهُم إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّابِرِينَ فِي

और ज़कात दे और अपना कौल पूरा करने वाले जब अहद करें और सब्र वाले

الْبُاسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَحِينَ الْبَأْسِ أُولَئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَ

मुसीबत और सख्ती में और जिहाद के वक़्त येही हैं जिन्होंने अपनी बात सच्ची की और

أُولَئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿٤٤﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ

येही परहेज़ गार हैं ऐ ईमान वालो तुम पर फ़र्ज़ है³¹⁴ कि जो नाहक मारे जाएं

الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ أَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْأَنْثَى

उन के खून का बदला लो³¹⁵ आज़ाद के बदले आज़ाद और गुलाम के बदले गुलाम और औरत के

بِالْأَنْثَى فَمن عَفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٍ فَاتَّبَاعُ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءُ

बदले औरत³¹⁶ तो जिस के लिये उस के भाई की तरफ़ से कुछ मुआफ़ी हुई³¹⁷ तो भलाई से तकाज़ा हो और

फ़रिश्तो पर ईमान लाए कि वोह **अल्लाह** की मख़्कूक और फ़रमां बरदार बन्दे हैं, न मर्द हैं न औरत, उन की ता'दाद **अल्लाह** जानता है, चार उन में से बहुत मुकर्रब हैं जिब्रईल, मीकाईल, इसराफ़ील, इज़राईल **عليهم السلام** चौथे कुतुबे इलाहिय्यह पर ईमान लाना कि जो किताब **अल्लाह** तआला ने नाज़िल फ़रमाई हक़ है, उन में चार बड़ी किताबें हैं (1) तौरैत जो हज़रते मूसा पर (2) इन्जील जो हज़रते ईसा पर (3) ज़बूर हज़रते दावूद पर (4) कुरआन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा पर नाज़िल हुई, और पचास सहीफ़ हज़रते शीस पर, तीस हज़रते इदरीस पर, दस हज़रते आदम पर, दस हज़रते इब्राहीम पर नाज़िल हुए। **पांचवें** तमाम अम्बिया पर ईमान लाना कि वोह सब **अल्लाह** के भेजे हुए हैं और मा'सूम या'नी गुनाहों से पाक हैं, उन की सहीह ता'दाद **अल्लाह** जानता है, उन में से तीन सो तेरह रसूल हैं। "نبيين" ब सीगए जम्अ मुजक्कर सालिम ज़िक्र फ़रमाना इशारा करता है कि अम्बिया मर्द होते हैं कोई औरत कभी नबी नहीं हुई जैसा कि **الآيه...** **فَمَنْ عَفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٍ فَاتَّبَاعُ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءُ** (तेमिअमी) या'नी मैं **अल्लाह** पर ईमान लाया और उन तमाम उमूर पर जो सथियदे अम्बिया **صلى الله عليه وسلم** **अल्लाह** के पास से लाए।

313 : ईमान के बा'द आ'माल का और इस सिलसले में माल देने का बयान फ़रमाया, इस के छ⁶ मसरफ़ ज़िक्र किये। गरदनें छुड़ाने से गुलामों का आज़ाद करना मुराद है, येह सब मुस्तहब तौर पर माल देने का बयान था। **मस्अला** : इस आयत से मा'लूम होता है कि सदका देना ब हालते तन्दुरुस्ती ज़ियादा अन्न रखता है ब निस्बत इस के कि मरते वक़्त ज़िन्दगी से मायूस हो कर दे। **मस्अला** : हदीस शरीफ़ में है कि रिश्तेदार को सदका देने में दो सवाब हैं : एक सदक़े का, एक सिलए रेहम का। (नसली शरीफ) **314 शाने नुज़ूल** : येह आयत औस व ख़ज़रज के बारे में नाज़िल हुई, इन में से एक कबीला दूसरे से कुव्वते ता'दाद, माल व शरफ़ में ज़ियादा था उस ने कसम खाई थी कि वोह अपने गुलाम के बदले दूसरे कबीले के आज़ाद को और औरत के बदले मर्द को, और एक के बदले दो को क़त्ल करेगा ! ज़मानए जाहिलिय्यत में लोग इस किसम की तअदी (ज़ियादती) के आदी थे, अहदे इस्लाम में येह मुआमला हज़ूर सथियदे अम्बिया **صلى الله عليه وسلم** की खिदमत में पेश हुवा तो येह आयत नाज़िल हुई और अदल व मुसावात का हुक्म दिया गया और इस पर वोह लोग राजी हुए। कुरआने करीम में किसास (खून का बदला लेने) का मस्अला कई आयतों में बयान हुवा है, इस आयत में किसास व अफ़व दोनों के मस्अले हैं और **अल्लाह** तआला के इस एहसान का बयान है कि उस ने अपने बन्दों को किसास व अफ़व में मुख़्तार किया चाहें किसास लें या अफ़व करें। आयत के अब्वल में किसास के वुजूब का बयान है। **315** : इस से हर कातिल बिल अ़मद (जान बूझ कर क़त्ल करने वाले) पर किसास का वुजूब साबित होता है ख़्वाह उस ने आज़ाद को क़त्ल किया हो या गुलाम को, मुसल्मान को या काफ़िर को, मर्द को या औरत को क्यूं कि **فَيَسِيلُ** जो जम्अ है वोह सब को शामिल है, हां जिस को दलीले शरई ख़ास करे वोह मख़्मूस हो जाएगा। **316** : इस आयत में बताया गया जो क़त्ल

إِلَيْهِ بِحُسَانٍ ۖ ذَٰلِكَ تَخْفِيفٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَرَاحَةٌ ۖ فَمِن أَعْتَادِي

अच्छी तरह अदा यह तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारा बोझ हलका करना है और तुम पर रहमत तो इस के बाद जो ज़ियादती

بَعْدَ ذَٰلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ١٤٨ ۚ وَلكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يَاۤوَلِي

करे³¹⁸ उस के लिये दर्दनाक अज़ाब है और खून का बदला लेने में तुम्हारी ज़िन्दगी है ऐ

الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ ١٤٩ ۚ كُتِبَ عَلَيْكُمُ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ

अक़ल मन्दे³¹⁹ कि तुम कहीं बचो तुम पर फ़र्ज़ हुवा कि जब तुम में किसी को मौत आए

إِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۚ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ ۚ حَقًّا

अगर कुछ माल छोड़े तो बसियत कर जाए अपने मां बाप और करीब के रिश्तेदारों के लिये मुवाफ़िके दस्तूर³²⁰ यह वाजिब है

عَلَى الْمُسْتَقِينَ ۝ ١٥٠ ۖ فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَ مَا سَبَعَهُ فَإِنبَاءٌ شُهُ عَلَى الَّذِينَ

परहेज़ गारों पर तो जो बसियत को सुन सुना कर बदल दे³²¹ उस का गुनाह उन्हीं बदलने

يُبَدِّلُونَهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَبِيْعٌ عَلِيمٌ ۝ ١٥١ ۖ فَمَنْ خَافَ مِنْ مَّرْصٍ جَنَفًا وَّ

वालों पर है³²² बेशक **अल्लाह** सुनता जानता है फिर जिसे अन्देशा हुवा कि बसियत करने वाले ने कुछ बे इन्साफ़ी या

إِشْبَاقًا صَدَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ ١٥٢ ۚ يَا أَيُّهَا

गुनाह किया तो उस ने उन में सुल्ह करा दी उस पर कुछ गुनाह नहीं³²³ बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है ऐ

करेगा वोही क़त्ल किया जाएगा ख़्वाह आज़ाद हो या गुलाम, मर्द हो या औरत, और अहले जाहिलियत का येह तरीका जुल्म है जो उन में राज़ था कि आज़ादों में लड़ाई होती तो वोह एक के बदले दो को क़त्ल करते, गुलामों में होती तो बचाए गुलाम के आज़ाद को मारते, औरतों में होती तो औरत के बदले मर्द को क़त्ल करते और महुज़ कातिल के क़त्ल पर इक्तिफ़ा न करते, इस को मन्अ फ़रमाया गया । 317 : मा'ना येह हैं कि जिस कातिल को वलिये मक्तूल कुछ मुआफ़ करें और उस के ज़िम्मे माल लाज़िम किया जाए उस पर औलियाए मक्तूल तकाज़ा करने में नैक रविश इख़्तियार करें और कातिल ख़ूबहा खुश मुआमलगी के साथ अदा करे इस में सुल्ह बर माल (माल पर सुल्ह करने) का बयान है । (तैरिअो) **मस्अला** : वलिये मक्तूल को इख़्तियार है कि ख़्वाह कातिल को बे इवज़ मुआफ़ करे या माल पर सुल्ह करे, अगर वोह इस पर राजी न हो और किसास चाहे तो किसास ही फ़र्ज़ रहेगा । (मल) **मस्अला** : अगर मक्तूल के तमाम औलिया किसास मुआफ़ कर दें तो कातिल पर कुछ लाज़िम नहीं रहता । **मस्अला** : अगर माल पर सुल्ह करें तो किसास साकित हो जाता है और माल वाजिब होता है । (तैरिअो) **मस्अला** : वलिये मक्तूल को कातिल का भाई फ़रमाने में दलालत है इस पर कि क़त्ल अगचें बड़ा गुनाह है मगर इस से अखुव्वते ईमानी क़त्अ नहीं होती, इस में ख़वारिज का इब्ताल है जो मुतकिबे कबीरा को काफ़िर कहते हैं । 318 : या'नी ब दस्तूरे जाहिलियत ग़ैर कातिल को क़त्ल करे, या दियत क़बूल करने और मुआफ़ करने के बाद क़त्ल करे 319 : क्यूं कि किसास मुक़रर होने से लोग क़त्ल से बाज़ रहेंगे और जानें बचेंगी । 320 : या'नी मुवाफ़िक दस्तूरे शरीअत के अदल करे और एक तिहाई माल से ज़ियादा की बसियत न करे, और मोहताजों पर मालदारों को तरजीह न दे । **मस्अला** : इब्तिदाए इस्लाम में येह बसियत फ़र्ज़ थी, जब मीरास के अहकाम नाज़िल हुए मन्सूख़ की गई, अब ग़ैर वारिस के लिये तिहाई से कम में बसियत करना मुस्तहब है बशर्ते कि वारिस मोहताज न हों या तर्का मिलने पर मोहताज न रहें, वरना तर्का बसियत से अफ़ज़ल है । (तैरिअो) 321 : ख़्वाह वसी हो या वली या शाहिद । और वोह तब्दील किताबत में करे या तक्सीम में या अदाए शहादत में, अगर वोह बसियत मुवाफ़िके शरअ है तो बदलने वाला गुनहगार है । 322 : और दूसरे ख़्वाह वोह मूसी हों या मूसालहू बरी हैं । 323 : मा'ना येह हैं कि वारिस, या वसी, या इमाम, या काज़ी जिस को भी मूसी की तरफ़ से ना इन्साफ़ी या नाहक़ कारवाई का अन्देशा हो वोह अगर

الَّذِينَ آمَنُوا كَتَبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كَتَبَ عَلَى الَّذِينَ مِن

ईमान वालों³²⁴ तुम पर रोजे फर्ज किये गए जैसे अगलों पर फर्ज हुए

قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿۱۸۳﴾ أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ ۖ فَمَن كَانَ مِنكُم

थे कि कहीं तुम्हें परहेज गारी मिले³²⁵ गिनती के दिन हैं³²⁶ तो तुम में जो कोई

مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ

बीमार या सफ़र में हो³²⁷ तो इतने रोजे और दिनों में और जिन्हें इस की ताकत न हो

فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ ۖ فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ ۗ وَأَن

वोह बदला दें एक मिसकीन का खाना³²⁸ फिर जो अपनी तरफ़ से नेकी ज़ियादा करे³²⁹ तो वोह उस के लिये बेहतर है और

تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿۱۸۴﴾ شَهْرَ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ

रोज़ा रखना तुम्हारे लिये ज़ियादा भला है अगर तुम जानो³³⁰ रमज़ान का महीना जिस में

فِيهِ الْقُرْآنُ هُدىً لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ ۗ فَمَن

कुरआन उतरा³³¹ लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फैसले की रोशन बातें तो तुम में जो कोई

मूसालहू या वारिसों में शरअ के मुवाफ़िक सुल्ह करा दे तो गुनहगार नहीं क्यूं कि उस ने हक़ की हिमायत के लिये बातिल को बदला । एक कौल येह भी है कि मुराद वोह शरअ है जो वक्ते वसियत देखे कि मूसी हक़ से तजावुज़ करता और खिलाफ़ शरअ तरीका इख़्तियार करता है तो उस को रोक दे और हक़ व इन्साफ़ का हुक्म करे । 324 : इस आयत में रोज़ों की फ़र्जियत का बयान है । रोज़ा शरअ में इस का नाम है कि मुसल्मान ख़्वाह मर्द हो या हैज़ व निफ़ास से ख़ाली औरत सुब्हे सादिक से गुरुबे आफ़ताब तक ब नित्यते इबादत खुर्दो नोश व मुजामअत (खाना पीना और जिमाअ करना) तर्क करे । (मासिरी और) रमज़ान के रोज़े 10 शा'बान 2 हि. को फ़र्ज किये गए । (दरमदर) इस आयत से साबित होता है कि रोज़े इबादते कदीमा हैं ज़मानए आदम عَلَيْهِ السّلام से तमाम शरीअतों में फ़र्ज होते चले आए अगर्चे अय्याम व अहक़ाम मुख़्तलिफ़ थे मगर अस्ल रोज़े सब उम्मतों पर लाज़िम रहे । 325 : और तुम गुनाहों से बचो । क्यूं कि येह करे नफ़्स का सबब और मुत्कीन का शिआर है । 326 : या'नी सिर्फ़ रमज़ान का एक महीना । 327 : सफ़र से वोह मुराद है जिस की मसाफ़त तीन दिन से कम न हो । इस आयत में **اعلأ** तआला ने मरीज़ व मुसाफ़िर को रुख़्त दी कि अगर उस को रमज़ान मुबारक में रोज़ा रखने से मरज़ की ज़ियादती या हलाक का अन्देशा हो, या सफ़र में शिदती तकलीफ़ का तो वोह मरज़ व सफ़र के अय्याम में इफ़तार करे और बजाए इस के अय्यामे मन्हिय्या के सिवा और दिनों में इस की कज़ा करे, अय्यामे मन्हिय्या पांच दिन हैं जिन में रोज़ा रखना जाइज़ नहीं दोनो ईदें और ज़िल हिज्जा की ग्यारहवीं, बारहवीं, तेरहवीं तारीख़ें । **मसअला** : मरीज़ को महज़ वहम पर रोज़े का इफ़तार जाइज़ नहीं जब तक दलील या तजरिबे या ग़ैर जाहिरुल फ़िस्क़ तबीब की ख़बर से इस का ग़लबए ज़न न हो कि रोज़ा मरज़ के तूल या ज़ियादती का सबब होगा । **मसअला** : जो बिलफ़'ल बीमार न हो लेकिन मुसल्मान तबीब येह कहे कि वोह रोज़ा रखने से बीमार हो जाएगा वोह भी मरीज़ के हुक्म में है । **मसअला** : हामिला या दूध पिलाने वाली औरत को अगर रोज़ा रखने से अपनी या बच्चे की जान का या उस के बीमार हो जाने का अन्देशा हो तो उस को भी इफ़तार जाइज़ है । **मसअला** : जिस मुसाफ़िर ने तुलूए फ़ज़्र से कब्ल सफ़र शुरूअ किया उस को तो रोज़े का इफ़तार जाइज़ है लेकिन जिस ने बा'दे तुलूअ सफ़र किया उस को उस दिन का इफ़तार जाइज़ नहीं । 328 **मसअला** : जिस बूढ़े मर्द या औरत को पीरानासाली (बुढ़ापे) के जो'फ़ से रोज़ा रखने की कुदरत न रहे और आयिन्दा कुव्वत हासिल होने की उम्मीद भी न हो उस को शैखे फ़ानी कहते हैं, उस के लिये जाइज़ है कि इफ़तार करे और हर रोज़े के बदले निस्फ़ साअ या'नी एक सो पछतर रुपिया और एक अठनी भर गेहूँ या गेहूँ का आटा या इस से दूने जव या इस की कीमत बतौरे फ़िदया दे । **मसअला** : अगर फ़िदया देने के बा'द रोज़ा रखने की कुव्वत आ गई तो रोज़ा वाजिब होगा । **मसअला** : अगर शैखे फ़ानी नादार हो और फ़िदया देने की कुदरत न रखे तो **اعلأ** तआला से इस्तिफ़ार करे और अपने अफ़वे तक़ीर (कोताही की बख़्शिश) की दुआ करता रहे । 329 : या'नी फ़िदये की मिक्दार से ज़ियादा दे 330 : इस से मा'लूम हुवा कि अगर्चे मुसाफ़िर व मरीज़ को इफ़तार

شَهْدَ مِنْكُمْ الشَّهْرَ فَلْيَصِبْهُ ۖ وَمَنْ كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ

येह महीना पाए ज़रूर इस के रोजे रखे और जो बीमार या सफ़र में हो

فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ

तो इतने रोजे और दिनों में **اللَّهُ** तुम पर आसानी चाहता है और तुम पर दुश्वारी

الْعُسْرَ ۗ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَيْتُمْ وَلَعَلَّكُمْ

नहीं चाहता और इस लिये कि तुम गिनती पूरी करो³³² और **اللَّهُ** की बड़ाई बोलो इस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत की और कहीं तुम

تَشْكُرُونَ ﴿١٨٥﴾ وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۗ أُجِيبُ

हक़ गुज़ार हो और ऐ महबूब जब तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़दीक हूँ³³³ दुआ क़बूल करता हूँ

دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۗ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ

पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे³³⁴ तो उन्हें चाहिये मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लाएं कि कहीं

يُرْشِدُونِ ﴿١٨٦﴾ أَجَلٌ لَّكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثِ إِلَىٰ نِسَائِكُمْ ۗ هُنَّ

राह पाएँ रोज़ों की रातों में अपनी औरतों के पास जाना तुम्हारे लिये हलाल हुवा³³⁵ वोह

की इजाज़त है लेकिन ज़ियादा बेहतर व अफ़ज़ल रोज़ा रखना ही है। **331** : इस के मा'ना में मुफ़स्सरीन के चन्द अक्वाल हैं : (1) येह कि रमज़ान वोह है जिस की शानो शराफ़त में कुरआने पाक नाज़िल हुवा (2) येह कि कुरआने करीम के नुज़ूल की इब्तिदा रमज़ान में हुई (3) येह कि कुरआने करीम बि तमामिही रमज़ान मुबारक की शबे क़द्र में लौहे महफूज़ से आस्माने दुन्या की तरफ़ उतारा गया और बैतुल इज़्ज़त में रहा, येह इसी आस्मान पर एक मक़ाम है यहाँ से वक़तन फ़ वक़तन हस्बे इक्तिजाए हिकमत जितना जितना मन्जुरे इलाही हुवा जिब्रिले अमीन लाते रहे, येह नुज़ूल तेईस साल के अर्से में पूरा हुवा। **332** : हदीस में है हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया कि महीना उन्तीस दिन का भी होता है तो चांद देख कर रोज़े शुरू करो और चांद देख कर इफ़तार करो, अगर 29 रमज़ान को चांद की रूयत न हो तो तीस दिन की गिनती पूरी करो। **333** : इस में तालिबाने हक़ की तलब मौला का बयान है जिन्होंने न इश्के इलाही पर अपने हवाइज़ को कुरबान कर दिया, वोह उसी के तलब गार हैं उन्हें कुर्बो विसाल के मुज्दे से शादक़ाम फ़रमाया। **शाने नुज़ूल** : एक जमाअते सहाबा ने ज़ब्बए इश्के इलाही में सय्यिदे अ़लम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से दरयाफ़्त किया कि हमारा रब कहां है ? इस पर नवीदे कुर्ब से सरफ़राज़ कर के बताया गया कि **اللَّهُ** तआला मकान से पाक है जो चीज़ किसी से मकानी कुर्ब रखती हो वोह उस के दूर वाले से ज़रूर बा'द रखती है और **اللَّهُ** तआला सब बन्दों से करीब है मकानी की येह शान नहीं। मनाज़िले कुर्ब में रसाई बन्दे को अपनी ग़फ़लत दूर करने से मुयस्सर आती है। **334** : "दुआ" अर्ज़े हाज़त है, और इजाबत येह है कि परवर दगार अपने बन्दे की दुआ पर "لَيْكُ عِبْدِي" फ़रमाता है। मुराद अत्ता फ़रमाना दूसरी चीज़ है वोह भी कभी उस के करम से फ़िलफ़ौर होती है कभी ब मुक़्तजाए हिकमत किसी ताख़ीर से, कभी बन्दे की हाज़त दुन्या में रवा फ़रमाई जाती है कभी आख़िरत में, कभी बन्दे का नफ़अ दूसरी चीज़ में होता है वोह अत्ता की जाती है कभी बन्दा महबूब होता है उस की हाज़त रवाई में इस लिये देर की जाती है कि वोह अर्से तक दुआ में मशग़ुल रहे, कभी दुआ करने वाले में सिदको इख़लास वग़ैरा शराइते क़बूल नहीं होते इसी लिये **اللَّهُ** के नेक और मक्बूल बन्दों से दुआ कराई जाती है। **मसअला** : ना जाइज़ अग्र की दुआ करना जाइज़ नहीं। दुआ के आदाब में से है कि हुज़ुरे कल्ब के साथ क़बूल का यकीन रखते हुए दुआ करे और शिकायत न करे कि मेरी दुआ क़बूल न हुई, तिरमिज़ी की हदीस में है कि नमाज़ के बा'द हम्दो सना और दुरुद शरीफ़ पढ़े फिर दुआ करे। **335** **शाने नुज़ूल** : शराइए साबिक्म में इफ़तार के बा'द खाना पीना मुजामअत करना नमाजे इशा तक हलाल था बा'द नमाजे इशा येह सब चीज़ें शब में भी ह़राम हो जाती थीं, येह हुक्म ज़मानए अक्दस तक बाकी था, बा'ज सहाबा से रमज़ान की रातों में बा'दे इशा मुबाशरत वुकूअ में आई उन में हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** भी थे इस पर वोह हज़रत नादिम

لِبَاسٍ لَّكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٍ لَّهُنَّ ۗ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُونَ

तुम्हारी लिबास हैं और तुम उन के लिबास **अल्लाह** ने जाना कि तुम अपनी जानों को खियानत में

أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالَّذِينَ بَاشِرُوا هُنَّ وَأَبْتَغُوا مَا

डालते थे तो उस ने तुम्हारी तौबा कबूल की और तुम्हें मुआफ़ फ़रमाया³³⁶ तो अब उन से सोहबत करो³³⁷ और त़लब करो जो **अल्लाह** ने

كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ

तुम्हारे नसीब में लिखा हो³³⁸ और खाओ और पियो³³⁹ यहां तक कि तुम्हारे लिये ज़ाहिर हो जाए सफ़ेदी का डोरा

مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۚ ثُمَّ أَتُوا الصِّيَامَ إِلَى الْبَيْلِ ۚ وَلَا

सियाही के डोरे से पौ फट कर³⁴⁰ फिर रात आने तक रोज़े पूरे करो³⁴¹ और

تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ عَكْفُونَ ۚ فِي الْمَسْجِدِ ۚ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا

औरतों को हाथ न लगाओ जब तुम मस्जिदों में ए'तिकाफ़ से हो³⁴² यह **अल्लाह** की हदें हैं उन के

تَقْرُبُوهَا ۚ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لِنَّاسٍ لِّعَلَّهِمْ يَتَّقُونَ ﴿١٨٤﴾ وَلَا

पास न जाओ **अल्लाह** यूँ ही बयान करता है लोगों से अपनी आयतों कि कहीं उन्हें परहेज़ गारी मिले और

हुए और दरगाहे रिसालत में अर्ज़े हाल किया **अल्लाह** तआला ने मुआफ़ फ़रमाया और यह आयत नाज़िल हुई, और बयान कर दिया गया कि आयिन्दा के लिये रमज़ान की रातों में मग़रिब से सुब्हे सादिक् तक मुजामअत करना हलाल किया गया। **336** : इस खियानत से वोह मुजामअत मुराद है जो कब्ले इबाहत रमज़ान की रातों में मुसलमानों से सरज़द हुई थी, उस की मुआफ़ी का बयान फ़रमा कर उन की तस्कीन फ़रमा दी गई। **337** : येह अम्र इबाहत के लिये है कि अब वोह मुमानअत उठा दी गई और लयालिये रमज़ान (रमज़ान की रातों) में मुबाशरत मुबाह कर दी गई। **338** : इस में हिदायत है कि मुबाशरत नस्ल व औलाद हासिल करने की निय्यत से होनी चाहिये जिस से मुसलमान बढ़ें और दीन क़वी हो। मुफ़स्सिरीन का एक कौल येह भी है कि मा'ना येह हैं कि मुबाशरत मुबाफ़िके हुक्मे शरअ हो जिस महल में जिस तरीके से मुबाह फ़रमाई उस से तजावुज़ न हो। (मूँरामी) एक कौल येह भी है जो **अल्लाह** ने लिखा उस को त़लब करने के मा'ना हैं रमज़ान की रातों में कस्ते इबादत और बेदार रह कर शबे क़द्र की जुस्तजू करना। **339** : येह आयत सिरमा बिन कैस के हक़ में नाज़िल हुई, आप मेहनती आदमी थे एक दिन ब हालते रोज़ा दिन भर अपनी ज़मीन में काम कर के शाम को घर आए बीवी से खाना मांगा वोह पकाने में मसरूफ़ हुई येह थके थे आंख लग गई जब खाना तय्यार कर के इन्हें बेदार किया इन्हों ने खाने से इन्कार कर दिया क्यूं कि उस ज़माने में सो जाने के बा'द रोज़ादार पर खाना पीना मन्मूअ हो जाता था और इसी हालत में दूसरा रोज़ा रख लिया, जो'फ़ इन्तिहा को पहुंच गया था दोपहर को ग़शी आ गई, इन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई और रमज़ान की रातों में इन के सबब से खाना पीना मुबाह फ़रमाया गया जैसे कि हज़रते उमर رضي الله عنه की इनाबत व रुज़अ के बाइस कुरबत हलाल हुई। **340** : रात को सियाह डोरे से और सुब्हे सादिक् को सफ़ेद डोरे से तशबीह दी गई, मा'ना येह हैं कि तुम्हारे लिये खाना पीना रमज़ान की रातों में मग़रिब से सुब्हे सादिक् तक मुबाह फ़रमाया गया। (मूँरामी) **मस्अला** : सुब्हे सादिक् तक इजाज़त देने में इशारा है कि जनाबत रोज़े के मुनाफ़ी नहीं, जिस शख्स को ब हालते जनाबत सुब्हे हुई वोह गुस्ल कर ले उस का रोज़ा जाइज़ है (मूँरामी) **मस्अला** : इसी से उलमा ने येह मस्अला निकाला कि रमज़ान के रोज़े की निय्यत दिन में जाइज़ है। **341** : इस से रोज़े की आख़िर हद मा'लूम होती है और येह मस्अला साबित होता है कि ब हालते रोज़ा खुर्दो नोश व मुजामअत में से हर एक के इरतिकाब से कफ़ारा लाज़िम हो जाता है। (मूँरामी) **मस्अला** : उलमा ने इस आयत को सौमे विसाल या'नी तह के रोज़े के मन्मूअ होने की दलील करार दिया है। **342** : इस में बयान है कि रमज़ान की रातों में रोज़ादार के लिये जिमाअ हलाल है जब कि वोह मो'तकिफ़ न हो। **मस्अला** : ए'तिकाफ़ में औरतों से कुरबत और बोसो किनार हराम है। **मस्अला** : मर्दों के ए'तिकाफ़ के लिये मस्जिद ज़रूरी है। **मस्अला** : मो'तकिफ़ को मस्जिद

تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِيَأْكُلُوا

आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ और न हाकिमों के पास उन का मुक़द्दमा इस लिये पहुंचाओ कि लोगों का

فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٨﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ

कुछ माल ना जाइज़ तौर पर खा लो³⁴³ जान बूझ कर तुम से नए चांद

الْأَهْلَةِ ۗ قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ وَالْحَاجِّ ۗ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا

को पूछते हैं³⁴⁴ तुम फ़रमा दो वोह वक़्त की अ़लामतें हैं लोगों और हज़ के लिये³⁴⁵ और येह कुछ भलाई नहीं कि³⁴⁶ घरों में

الْبُيُوتِ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مِمَّنْ اتَّقَى ۚ وَآتَى الْبُيُوتِ مِنْ

पच्छीत (पिछली दीवार) तोड़ कर आओ हां भलाई तो परहेज़ गारी है और घरों में दरवाज़ों

أَبْوَابِهَا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٨٩﴾ وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ

से आओ³⁴⁷ और **اللّٰه** से डरते रहो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ और **اللّٰه** की राह में लड़ो³⁴⁸

में खाना पीना सोना जाइज़ है। **मस्अला** : औरतों का ए'तिकाफ़ उन के घरों में जाइज़ है। **मस्अला** : ए'तिकाफ़ हर ऐसी मस्जिद में जाइज़ है जिस में जमाअत काइम हो। **मस्अला** : ए'तिकाफ़ में रोज़ा शर्त है। **343** : इस आयत में बातिल तौर पर किसी का माल खाना ह़राम फ़रमाया गया ख़्वाह लूट कर या छीन कर या चोरी से, या ज़ूप से या ह़राम तमाशों या ह़राम कामों या ह़राम चीज़ों के बदले, या रिश्वत या झूठी गवाही या चुगल ख़ोरी से येह सब मन्मूअ व ह़राम है। **मस्अला** इस से मा'लूम हुवा कि ना जाइज़ फ़ाएदे के लिये किसी पर मुक़द्दमा बनाना और उस को हुक्काम तक ले जाना ना जाइज़ व ह़राम है, इसी तरह अपने फ़ाएदे की ग़ज़ से दूसरे को ज़र पहुंचाने के लिये हुक्काम पर असर डालना रिश्वत देना ह़राम है। जो हुक्काम रस लोग हैं (या'नी जिन की पहुंच हुक्करानों तक है) वोह इस आयत के हुक्म को पेशे नज़र रखें, ह़दीस शरीफ़ में मुसल्मानों के ज़र पहुंचाने वाले पर ला'नत आई है। **344 शाने नुज़ूल** : येह आयत हज़रते मुआज़ बिन जबल और सा'लबा बिन ग़न्म अन्सारी के जवाब में नाज़िल हुई, इन दोनों ने दरयाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ! चांद का क्या हाल है? इब्तिदा में बहुत बारीक निकलता है फिर रोज़ बरोज़ बढ़ता है यहां तक कि पूरा रोशन हो जाता है, फिर घटने लगता है और यहां तक घटता है कि पहले की तरह बारीक हो जाता है एक हाल पर नहीं रहता। इस सुवाल से मक्सद चांद के घटने बढ़ने की हिक़मतें दरयाफ़्त करना था। बा'ज़ मुफ़स्सरीन का ख़याल है कि सुवाल का मक्सद चांद के इख़लाफ़ात का सबब दरयाफ़्त करना था। **345** : चांद के घटने बढ़ने के फ़वाइद बयान फ़रमाए कि वोह वक़्त की अ़लामतें हैं और आदमियों के हज़ारहा दीनी व दुन्यावी काम इस से मुतअल्लिक हैं ज़राअत, तिजारत लैन दैन के मुआमलात, रोज़े और ईद के अवक़ात, औरतों की इह़तें, हैज़ के अय्याम, ह्म्ल और दूध पिलाने की मुह़तें और दूध छुड़ाने के वक़्त, और हज़ के अवक़ात इस से मा'लूम होते हैं क्यूं कि अव्वल में जब चांद बारीक होता है तो देखने वाला जान लेता है कि येह इब्तिदाई तारीख़ें हैं और जब चांद पूरा रोशन होता है तो मा'लूम हो जाता है कि येह महीने की दरमियानी तारीख़ है और जब चांद छुप जाता है तो मा'लूम होता है कि महीना ख़त्म पर है इसी तरह इन के माबैन अय्याम में चांद की हालतें दलालत किया करती हैं, फिर महीनों से साल का हिसाब होता है। येह वोह कुदरती जन्तरी है जो आस्मान के सफ़हें पर हमेशा खुली रहती है और हर मुल्क और हर ज़बान के लोग पढ़े भी और बे पढ़े भी सब इस से अपना हिसाब मा'लूम करते हैं। **346 शाने नुज़ूल** : ज़माने जाहिलिय्यत में लोगों की येह आदत थी कि जब वोह हज़ के लिये एह़राम बांधते तो किसी मकान में उस के दरवाजे से दाख़िल न होते, अगर ज़रूरत होती तो पच्छीत (मकान की पिछली दीवार) तोड़ कर आते और इस को नेकी जानते, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **347** : ख़्वाह हालते एह़राम हो या ग़ैर एह़राम। **348** : 6 सि.हि. में हुदैबिया का वाक़िआ पेश आया उस साल सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** मदीनए तय्यिबा से ब क़स्दे उमरह मक्कए मुकर्रमा रवाना हुए मुशिरकीन ने हुज़ूर **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोका और इस पर सुल्ह हुई कि आप साले आयिन्दा तशरीफ़ लाए तो आप के लिये तीन रोज़ मक्कए मुकर्रमा ख़ाली कर दिया जाएगा। चुनान्चे अगले साल 7 सि.हि. में हुज़ूर **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** उम्रए क़ज़ा के लिये तशरीफ़ लाए अब हुज़ूर के साथ एक हज़ार चार सो की जमाअत थी मुसल्मानों को येह अन्देशा हुवा कि कुफ़्फ़ार वफ़ाए अह़द न करेंगे और हरमे मक्का में शहरे ह़राम या'नी माहे ज़िल का'दा में जंग करेंगे और मुसल्मान ब हालते एह़राम हैं, इस

الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝۱۹۰

उन से जो तुम से लड़ते हैं³⁴⁹ और हद से न बढ़े³⁵⁰ **अल्लाह** पसन्द नहीं रखता हद से बढ़ने वालों को

وَأَقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ مِّنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُم

और काफ़ि़रों को जहां पाओ मारो³⁵¹ और उन्हें निकाल दो³⁵² जहां से उन्होंने ने तुम्हें निकाला था³⁵³

وَالْفِتْنَةَ أَشَدَّ مِنَ الْقَتْلِ ۗ وَلَا تَقْتُلُوهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

और उन का फ़साद तो क़त्ल से भी सख़्त है³⁵⁴ और मस्जिदे ह़राम के पास उन से न लड़ो

حَتَّى يُقْتَلُوكُمْ فِيهِ ۗ فَإِن قَتَلُوكُمْ فَاقْتُلُوهُمْ ۗ كَذَلِكَ جَزَاءُ

जब तक वोह तुम से वहां न लड़े³⁵⁵ और अगर तुम से लड़ें तो उन्हें क़त्ल करो³⁵⁶ काफ़ि़रों की येही

الْكَافِرِينَ ۝۱۹۱ فَإِنِ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝۱۹۲ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ

सज़ा है फिर अगर वोह बाज़ रहे³⁵⁷ तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है और उन से लड़ो यहां तक कि

لَا تَكُونَ فِتْنَةً وَيَكُونَ الدِّينُ لِلَّهِ ۗ فَإِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَىٰ

कोई फ़ितना न रहे और एक **अल्लाह** की पूजा हो फिर अगर वोह बाज़ आए³⁵⁸ तो ज़ियादती नहीं मगर

الظَّالِمِينَ ۝۱۹۳ الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَتُ قِصَاصٌ ۗ

ज़ालिमों पर * माहे ह़राम के बदले माहे ह़राम और अदब के बदले अदब है³⁵⁹

हालत में जंग करना गिरां है क्यूं कि ज़मानए जाहिलियत से इब्तिदाए इस्लाम तक न हरम में जंग जाइज़ थी न माहे ह़राम में न हालते एहराम में तो इन्हें तरहुद हुवा कि इस वक़्त जंग की इजाज़त मिलती है या नहीं ! इस पर येह आयत नाज़िल हुई । 349 : इस के मा'ना या तो येह हैं कि जो कुफ़्फ़ार तुम से लड़ें या जंग की इब्तिदा करें तुम उन से दीन की हिमायत और ए'जाज़ के लिये लड़ो ! येह हुक्म इब्तिदाए इस्लाम में था फिर मन्सूख़ किया गया और कुफ़्फ़ार से किताल करना वाजिब हुवा ख़्वाह वोह इब्तिदा करें या न करें, या येह मा'ना हैं कि जो तुम से लड़ने का इरादा रखते हैं । येह बात सारे ही कुफ़्फ़ार में है क्यूं कि वोह सब दीन के मुख़ालिफ़ और मुसल्मानों के दुश्मन हैं, ख़्वाह उन्होंने ने किसी वजह से जंग न की हो लेकिन मौक़अ पाणे पर चूकने वाले नहीं । येह मा'ना भी हो सकते हैं कि जो काफ़ि़र मैदान में तुम्हारे मुक़ाबिल आएँ और तुम से लड़ने वाले हों उन से लड़ो ! इस सूत में ज़ईफ़, बूढ़े, बच्चे मजनून, अन्धे, बीमार, औरतें वग़ैरा जो जंग की कुदरत नहीं रखते इस हुक्म में दाख़िल न होंगे उन को क़त्ल करना जाइज़ नहीं । 350 : जो जंग के काबिल नहीं उन से न लड़ो, या जिन से तुम ने अहद किया हो, या बिग़ैर दा'वत के जंग न करो क्यूं कि तरीक़ए शरअ येह है कि पहले कुफ़्फ़ार को इस्लाम की दा'वत दी जाए अगर इन्कार करें तो जिज़्या त़लब किया जाए, इस से भी मुन्किर हों तब जंग की जाए ! इस मा'ना पर आयत का हुक्म बाकी है मन्सूख़ नहीं । (तैरिअमी) 351 : ख़्वाह हरम हो या ग़ैरे हरम 352 : मक्कए मुकर्रमा से 353 : साले गुज़श्ता । चुनाच्चे रोज़े फ़तहे मक्का जिन लोगों ने इस्लाम क़बूल न किया उन के साथ येही किया गया । 354 : फ़साद से शिर्क मुराद है या मुसल्मानों को मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोकना । 355 : क्यूं कि येह हुरमते हरम (हरम की ता'ज़ीम) के ख़िलाफ़ है । 356 : कि उन्होंने ने हरम शरीफ़ की बे हुरमती की । 357 : क़त्ल व शिर्क से 358 : कुफ़ व बाति़ल परस्ती से 359 : जब गुज़श्ता साल ज़िल का'दा 6 सि.हि. में मुशिरकीने अरब ने माहे ह़राम की हुरमत व अदब का लिहाज़ न रखा और तुम्हें अदाए उमरह से रोका तो येह बे हुरमती उन से वाकेअ हुई और उस के बदले व तौफ़ीके इलाही 7 सि.हि. के ज़िल का'दा में तुम्हें मौक़अ मिला कि तुम उमए कज़ा को अदा करो ।

فَسِنِ اعْتَدَىٰ عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدَىٰ عَلَيْكُمْ ۖ

तो जो तुम पर ज़ियादती करे उस पर ज़ियादती करो उतनी ही जितनी उस ने की

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ السَّاتِقِينَ ﴿١٩٣﴾ وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ

और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** डर वालों के साथ है और **अल्लाह** की राह में खर्च

اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ وَأَحْسِنُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ

करो³⁶⁰ और अपने हाथों हलाकत में न पड़ो³⁶¹ और भलाई वाले हो जाओ बेशक भलाई वाले

الْحُسَيْنِ ﴿١٩٥﴾ وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ

अल्लाह के महबूब हैं और हज और उमरह **अल्लाह** के लिये पूरा करो³⁶² फिर अगर तुम रोके जाओ³⁶³ तो कुरबानी भेजो

مِنَ الْهَدْيِ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحَلَّهُ ۖ

जो मुयस्सर आए³⁶⁴ और अपने सर न मुंडाओ जब तक कुरबानी अपने ठिकाने न पहुंच जाए³⁶⁵

360 : इस से तमाम दीनी उमूर में ताअत व रिज़ाए इलाही के लिये खर्च करना मुराद है ख़्वाह जिहाद हो या और नेकियां। **361** : राहे खुदा में इन्फ़ाक का तर्क भी सबबे हलाक है और इसराफ़े बे जा भी, और इस तरह और चीज़ भी जो ख़तरा व हलाक का बाइस हो उन सब से बाज़ रहने का हुक्म है हत्ता कि बे हथियार मैदाने जंग में जाना या ज़हर खाना या किसी तरह खुदकुशी करना। **मस्अला** : उलमा ने इस से येह मस्अला अख़्ज़ किया है कि जिस शहर में ताऊन हो वहां न जाएं अगर्चे वहां के लोगों को वहां से भागना मन्मूअ है। **362** : और इन दोनों को इन के फ़राइज़ व शाराइत के साथ ख़ास **अल्लाह** के लिये बे सुस्ती व नुक्सान कामिल करो। हज नाम है एहराम बांध कर नर्वी ज़िल हिज्जा को अरफ़ात में ठहरने और का'बए मुअज़्ज़मा के तवाफ़ का। इस के लिये ख़ास वक़्त मुक़रर है जिस में येह अप़आल किये जाएं तो हज है। **मस्अला** : हज बक़ौले राजेह 9 हि. में फ़र्ज़ हुवा इस की फ़र्ज़ियत क़र्ज़ है। हज के फ़राइज़ येह हैं (1) एहराम (2) अरफ़ा में वुकूफ़ (3) तवाफ़े ज़ियारत। हज के वाजिबत (1) मुज्दलिफ़ा में वुकूफ़ (2) सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई (3) रम्ये जिमार (शयातीन को कंकरियां मारना) और (4) आफ़ाकी (मक्का के बाहर रहने वाले) के लिये तवाफ़े रुजूअ और (5) हल्क़ या तक्सीर (सर के बाल मूंडना या छोटे करवाना)। **उमरह** के रुकन तवाफ़ व सई हैं, और इस की शर्त एहराम व हल्क़ है। **हज व उमरह** के चार तरीके हैं (1) इफ़्राद बिल हज : वोह येह है कि हज के महीनों में या इन से क़ब्ल, मीक़ात से या इस से पहले हज का एहराम बांधे और दिल से इस की नियत करे ख़्वाह ज़बान से तल्बिया के वक़्त इस का नाम ले या न ले। (2) इफ़्राद बिल उमरह : वोह येह है कि मीक़ात से या इस से पहले, अश्हुरे हज में या इन से क़ब्ल, उमरह का एहराम बांधे और दिल से इस का क़स्द करे ख़्वाह वक़्ते तल्बिया ज़बान से इस का ज़िक़र करे या न करे, और इस के लिये अश्हुरे हज में या इस से क़ब्ल तवाफ़ करे ख़्वाह इस साल में हज करे या न करे मगर हज व उमरह के दरमियान इलमामे सहीह करे इस तरह कि अपने अहल की तरफ़ हलाल हो कर वापस हो। (इलमामे सहीह येह है कि उमरह के बा'द एहराम खोल कर अपने वतन को वापस जाए।) (3) क़िरान : येह है कि हज व उमरह दोनों को एक एहराम में जम्अ करे वोह एहराम मीक़ात से बांधा हो या इस से पहले, अश्हुरे हज में या इस से क़ब्ल, अब्वल से हज व उमरह दोनों की नियत हो ख़्वाह वक़्ते तल्बिया, ज़बान से दोनों का ज़िक़र करे या न करे, पहले उमरह के अप़आल अदा करे फिर हज के। (4) तमतोअ : येह है कि मीक़ात से या इस से पहले, अश्हुरे हज में या इस से क़ब्ल, उमरह का एहराम बांधे और अश्हुरे हज में उमरह करे या अक्सर तवाफ़ इस के अश्हुरे हज में हो ! और हलाल हो कर हज के लिये एहराम बांधे और इसी साल हज करे, और हज व उमरह के दरमियान अपने अहल के साथ इलमामे सहीह न करे। **मस्अला** : इस आयत से उलमा ने क़िरान साबित किया है। **363** : हज या उमरह से। बा'द शुरूअ करने और घर से निकलने और मोहरिम हो जाने के या'नी तुम्हें कोई मानेअ अदाए हज या उमरह से पेश आए ख़्वाह वोह दुश्मन का ख़ौफ़ हो या मरज़ वग़ैरा, ऐसी हालत में तुम एहराम से बाहर आ जाओ। **364** : ऊंट या गाय या बकरी और येह कुरबानी भेजना वाजिब है। **365** : या'नी हरम में जहां इस के ज़ब्द का हुक्म है। **मस्अला** : येह कुरबानी बैरूने हरम नहीं हो सकती।

فَنَنْكَاحُكُمْ مَرْيُومًا أَوْ بِنْتًا أُورُشَلِيمَ أَوْ بِنْتًا قَدِيسِيَّةً أَوْ بِنْتًا مَرْيَمَ

फिर जो तुम में बीमार हो या उस के सर में कुछ तकलीफ़ है³⁶⁶ तो बदला दे रोज़े³⁶⁷

أَوْ صَدَقَةً أَوْ نُسْكَ فَاذْأَمْنْتُمْ فَمَنْ تَسَّعَ بِالْعِمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ

या ख़ैरात³⁶⁸ या कुरबानी फिर जब तुम इत्मीनान से हो तो जो हज से उमरह मिलाने का फ़ाएदा उठाए³⁶⁹

فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي

उस पर कुरबानी है जैसी मुयस्सर आए³⁷⁰ फिर जिसे मक्दूर न हो तो तीन रोज़े हज के दिनों में

الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ تِلْكَ عَشْرَةٌ كَامِلَةٌ ذَلِكَ لِمَنْ لَمْ

रखे³⁷¹ और सात जब अपने घर पलट कर जाओ यह पूरे दस हुए यह हुक्म उस

يَكُنْ أَهْلُهُ حَاضِرِي السَّجْدِ الْحَرَامِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ

के लिये है जो मक्का का रहने वाला न हो³⁷² और **اللَّهُ** से डरते रहो और जान रखो कि

اللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَةٌ فَمَنْ فَرَضَ فِيهِنَّ

اللَّهُ का अज़ाब सख़्त है हज के कई महीने हैं जाने हुए³⁷³ तो जो उन में हज की नियत

الْحَجِّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ

करे³⁷⁴ तो न औरतों के सामने सोहबत का तज़िक़रा हो न कोई गुनाह न किसी से झगड़ा³⁷⁵ हज के वक़्त तक और तुम जो भलाई

366 : जिस से वोह सर मुंडाने के लिये मजबूर हो और सर मुंडा ले **367** : तीन दिन के **368** : छ⁶ मिस्कीनों का खाना हर मिस्कीन

के लिये पौने दो सेर गेहूँ। (दो किलो में अस्सी (80) ग्राम कम। "फ़तावा अहले सुन्नत") **369** : या'नी तमतोअ करे **370** : यह

कुरबानी तमतोअ की है हज के शुरु में वाजिब हुई ख़्वाह तमतोअ करने वाला फ़कीर हो, ईदे अज़्हा की कुरबानी नहीं जो फ़कीर

व मुसाफ़िर पर वाजिब नहीं होती। **371** : या'नी यकुम शब्वाल से नर्वी ज़िल हिज्जा तक एहराम बांधने के बा'द इस दरमियान में

जब चाहे रख ले ख़्वाह एक साथ या मुतफ़रि़क़ कर के, बेहतर यह है कि **7, 8, 9** ज़िल हिज्जा को रखे। **372 मसअला** : अहले मक्का

के लिये न तमतोअ है न क़िरान, और हुदूदे मवाक़ीत के अन्दर के रहने वाले अहले मक्का में दाख़िल हैं। **मवाक़ीत** : पांच हैं (1) जुल हुलैफ़ा

(2) ज़ाते इर्क़ (3) जुहफ़ा (4) कर्न (5) यलम्लम। "जुल हुलैफ़ा" अहले मदीना के लिये, "ज़ाते इर्क़" अहले इराक़ के लिये,

"जुहफ़ा" अहले शाम के लिये, "कर्न" अहले नज्द के लिये, "यलम्लम" अहले यमन के लिये। **373** : शब्वाल, जुल का'दा और

दस तारीखें ज़िल हिज्जा की। हज के अफ़आल इन्ही अय्याम में दुरुस्त हैं। **मसअला** : अगर किसी ने इन अय्याम से पहले हज का

एहराम बांधा तो जाइज़ है लेकिन ब कराहत। **374** : या'नी हज को अपने ऊपर लाज़िम व वाजिब करे एहराम बांध कर या तल्बिया

कह कर या हदी (कुरबानी का जानवर) चला कर। उस पर यह चीज़ें लाज़िम हैं जिन का आगे ज़िक़र फ़रमाया जाता है। **375** : "رَفَثٌ"

जिमाअ या औरतों के सामने ज़िक़रे जिमाअ या कलामे फ़ोहूश करना है, निकाह इस में दाख़िल नहीं। **मसअला** : मोहरिम व मोहरिमा

(एहराम वाले अजनबी मर्द व औरत) का निकाह जाइज़ है मुजामअत जाइज़ नहीं। "فُسُوقٌ" से मआसी व सय्यिआत, और "جِدَالٌ" से

झगड़ा मुराद है ख़्वाह वोह अपने रफ़ीकों या ख़ादिमों के साथ हो या गैरों के साथ।

خَيْرٍ يَعْلَمُهُ اللَّهُ ۖ وَتَزُودُوا فَإِنَّ خَيْرَ الرِّزَادِ التَّقْوَىٰ ۖ وَاتَّقُونِ

करो **अल्लाह** उसे जानता है³⁷⁶ और तोशा (सफर का खर्च) साथ लो कि सब से बेहतर तोशा परहेज गारी है³⁷⁷ और मुझ से डरते रहो

يَأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ ۗ

ए अक्ल वालो³⁷⁸ तुम पर कुछ गुनाह नहीं³⁷⁹ कि अपने रब का फ़ज़ल तलाश करो

فَإِذَا آفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفَتٍ فَأذْكُرُوا اللَّهَ عِندَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۖ وَ

तो जब अरफ़ात से पलटो³⁸⁰ तो **अल्लाह** की याद करो³⁸¹ मशअरे हराम के पास³⁸² और

أذْكُرُوهُ كَمَا هَدَيْتُمْ ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الضَّالِّينَ ۚ ثُمَّ

उस का जिक्र करो जैसे उस ने तुम्हें हिदायत फ़रमाई और बेशक तुम इस से पहले बहके हुए थे³⁸³ फिर बात

أَفِيضُوا مِمَّنْ حَيْثُ آفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ

येह है कि ए कुरैशियो तुम भी वहाँ से पलटो जहाँ से लोग पलटते हैं³⁸⁴ और **अल्लाह** से मुआफ़ी मांगो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला

رَحِيمٌ ۚ فَإِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَأذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ

मेहरबान है फिर जब अपने हज के काम पूरे कर चुको³⁸⁵ तो **अल्लाह** का जिक्र करो जैसे अपने बाप दादा का जिक्र करते थे³⁸⁶ बल्कि

376 : बदियों की मुमानअत के बा'द नेकियों की तरगीब फ़रमाई कि बजाए फ़िस्क के तक्वा और बजाए जिदाल के अख़लाके हमीदा इख़्तियार करो । **377** शाने नुज़ूल : बा'ज यमनी हज के लिये बे सामानी के साथ रवाना होते थे और अपने आप को मुतवक़िल कहते थे और मक्कए मुकर्रमा पहुँच कर सुवाल शुरुअ करते और कभी ग़स्ब व ख़ियानत के मुतक़िब होते उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई और हुक्म हुवा कि तोशा ले कर चलो ! औरों पर बार न डालो, सुवाल न करो कि बेहतर तोशा परहेज गारी है । एक कौल येह है कि तक्वा का तोशा साथ लो जिस तरह दुन्यवी सफ़र के लिये तोशा ज़रूरी है ऐसे ही सफ़रे आख़िरत के लिये परहेज गारी का तोशा लाज़िम है । **378** : या'नी अक्ल का मुक्तजा खौफ़े इलाही है जो **अल्लाह** से न डरे वोह बे अक्लों की तरह है । **379** शाने नुज़ूल : बा'ज मुसल्मानों ने ख़याल किया कि राहे हज में जिस ने तिजारत की या ऊंट किराए पर चलाए उस का हज ही क्या ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई । **मस्अला** : जब तक तिजारत से अफ़आले हज की अदा में फ़र्क़ न आए उस वक़्त तक तिजारत मुबाह है । **380** : "अरफ़ात" एक मक़ाम का नाम है जो मौक़िफ़ (हाजियों के ठहरने की जगह) है । ज़ह्हाक का कौल है कि हज़रते आदम और हज़रते हव्वा जुदाई के बा'द 9 ज़िल हिज्जा को अरफ़ात के मक़ाम पर जम्अ हुए और दोनों में तअरुफ़ हुवा, इस लिये इस दिन का नाम अरफ़ा और मक़ाम का नाम अरफ़ात हुवा । एक कौल येह है कि चूकि इस रोज़ बन्दे अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करते हैं इस लिये इस दिन का नाम अरफ़ा है । **मस्अला** : अरफ़ात में वुकूफ़ फ़ज्र है क्यूं कि इफ़ाजा (मशअरे हराम की तरफ़ जाना) बिला वुकूफ़ मुतसव्वर नहीं । **381** : तल्बिया व तहलील ("بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ" और "لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ" कहना) व तक्बीर व सना व दुआ के साथ या नमाज़े मगरिब व इशा के साथ **382** : मशअरे हराम जबले कुज़ह है जिस पर इमाम वुकूफ़ करता है । **मस्अला** : वादिये मुहस्सिर के सिवा तमाम मुज्दलिफ़ा मौक़िफ़ है इस में वुकूफ़ वाजिब है बे उज़्र तर्क करने से दम लाज़िम आता है, और मशअरे हराम के पास वुकूफ़ अफ़ज़ल है । **383** : तरीके जिक्र व इबादत कुछ न जानते थे । **384** : कुरैश मुज्दलिफ़ा में ठहरे रहते थे और सब लोगों के साथ अरफ़ात में वुकूफ़ न करते, जब लोग अरफ़ात से पलटते तो येह मुज्दलिफ़ा से पलटते और इस में अपनी बड़ाई समझते, इस आयत में उन्हें हुक्म दिया गया कि सब के साथ अरफ़ात में वुकूफ़ करें और एक साथ पलटें येही हज़रते इब्राहीम व इस्माईल **عليهما السلام** की सुन्नत है । **385** : तरीके हज का मुख़्तसर बयान येह है कि हाजी 8 ज़िल हिज्जा की सुब्द को मक्कए मुकर्रमा से मिना की तरफ़ रवाना हो वहाँ अरफ़ा या'नी 9 ज़िल हिज्जा की फ़ज़्र तक ठहरे, उसी रोज़ मिना से अरफ़ात आए । बा'दे ज़वाल इमाम दो ख़ुत्बे पढे यहाँ हाजी जोहर व अस्र की नमाज़ इमाम के साथ जोहर के वक़्त में जम्अ कर के पढे, इन दोनों नमाज़ों के लिये अज़ान एक होगी और तक्बीरों दो और दोनों नमाज़ों के दरमियान सुन्नते जोहर के सिवा कोई नफ़्त न पढ़ा जाए, इस जम्अ के लिये इमामे आ'ज़म ज़रूरी है अगर इमामे

أَشَدَّ ذِكْرًا ۱ فَمِنَ النَّاسِ مَنُ يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي

इस से ज़ियादा और कोई आदमी यूँ कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुनिया में दे और

الْآخِرَةِ مِنْ خَلْقٍ ۲۰۰ وَمِنْهُمْ مَنُ يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا

आखिरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं और कोई यूँ कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुनिया में

حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۲۰۱ أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ

भलाई दे और हमें आखिरत में भलाई दे और हमें अज़ाबे दोज़ख़ से बचा³⁸⁷ ऐसों को उन की कमाई से

مِمَّا كَسَبُوا ۱ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۲۰۲ وَادْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ

भाग है³⁸⁸ और **اللَّهُ** जल्द हिसाब करने वाला है³⁸⁹ और **اللَّهُ** की याद करो गिने हुए

مَعْدُودَاتٍ ۱ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۲ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَا

दिनों में³⁹⁰ तो जो जल्दी कर के दो दिन में चला जाए उस पर कुछ गुनाह नहीं और जो रह जाए तो उस

إِثْمَ عَلَيْهِ ۱ لِمَنِ اتَّقَى ۱ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۲۰۳

पर गुनाह नहीं परहेज़ गार के लिये³⁹¹ और **اللَّهُ** से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उसी की तरफ़ उठना है

आ'ज़म न हो, या गुमराह बंद मज़हब हो तो हर एक नमाज़ अलाहदा अपने अपने वक़्त में पढ़ी जाए। और अरफ़ात में गुरुब तक ठहरे फिर मुज्दलिफ़ा की तरफ़ लौटे और जबले कुज़ह के करीब उतरे, मुज्दलिफ़ा में मग़रिब व इशा की नमाज़ें जम्अ कर के इशा के वक़्त पढ़े और फ़ज़्र की नमाज़ ख़ूब अक्वल वक़्त अंधेरे में पढ़े। वादिये मुहस्सिर के सिवा तमाम मुज्दलिफ़ा और बतने ड़ना के सिवा तमाम अरफ़ात मौक़िफ़ है। जब सुब्ह ख़ूब रोशन हो तो रोज़े नहर या'नी 10 ज़िल हिज्जा को मिना की तरफ़ आए और बतने वादी से जमरए अक़बा की 7 मर्तबा रमी करे। फिर अगर चाहे कुरबानी करे फिर बाल मुंडाए या कतराए, फिर अय्यामे नहर में से किसी दिन त्वाफ़े ज़ियारत करे। फिर मिना आ कर तीन रोज़ इक़ामत करे और ग्यारहवीं के ज़वाल के बा'द तीनों जमरों की रमी करे उस जमरे से शुरूअ करे जो मस्जिद के करीब है फिर जो उस के बा'द है फिर जमरए अक़बा, हर एक की सात सात मरतबा, फिर अगले रोज़ ऐसा ही करे, फिर अगले रोज़ ऐसा ही, फिर मक्काए मुकर्रमा की तरफ़ चला आए। (तफ़सील कुतुबे फ़िक्ह में मज़कूर है)। 386 : ज़मानए जाहिलियत में अरब हज़ के बा'द का'बे के करीब अपने बाप दादा के फ़ज़ाइल बयान किया करते थे, इस्लाम में बताया गया कि यह शोहरत व खुदनुमाई की बेकार बातें हैं, बजाए इस के जौको शौक के साथ ज़िक्रे इलाही करो। मस्अला : इस आयत से ज़िक्रे जहर व ज़िक्रे जमाअत साबित होता है। 387 : दुआ करने वालों की दो फ़िस्में बयान फ़रमाई : एक वोह काफ़िर जिन की दुआ में सिर्फ़ तलबे दुनिया होती थी आखिरत पर उन का ए'तिकाद न था, उन के हक़ में इशाद हुवा कि आखिरत में उन का कुछ हिस्सा नहीं। दूसरे वोह ईमानदार जो दुनिया व आखिरत दोनों की बेहतरी की दुआ करते हैं। मस्अला : मोमिन दुनिया की बेहतरी जो तलब करता है वोह भी अग्रे जाइज़ और दीन की ताईद व तक्वियत के लिये, इस लिये इस की येह दुआ भी उमूरे दीन से है। 388 : मस्अला : इस आयत से साबित हुवा कि दुआ कस्ब व आ'माल में दाख़िल है। हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** अक्सर येही दुआ फ़रमाते थे "اللَّهُمَّ إِنِّي فِي الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةٌ وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ"। 389 : अन्क़रीब क़ियामत काइम कर के बन्दों का हिसाब फ़रमाएगा। तो चाहिये कि बन्दे ज़िक्रो दुआ व ताअत में जल्दी करें। 390 : उन दिनों से अय्यामे तशरीक (ज़िल हिज्जा के तीन दिन 11, 12, 13), और ज़िक्रुल्लाह से नमाज़ों के बा'द और रम्ये ज़िमार के वक़्त तक्बीर कहना मुराद है। 391 : बा'ज़ मुफ़स्सिरन का कौल है कि ज़मानए जाहिलियत में लोग दो फ़रीक़ थे बा'ज़ जल्दी करने वालों को गुनहगार बताते थे, बा'ज़ रह जाने वालों को। कुरआने पाक ने बयान फ़रमा दिया कि इन दोनों में कोई गुनहगार नहीं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْجِبُ قَوْلَهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهَدُ اللَّهُ عَلَى مَا

और बा'ज आदमी वोह है कि दुन्या की ज़िन्दगी में उस की बात तुझे भली लगे³⁹² और अपने दिल की बात पर **اللَّهُ** को

فِي قَلْبِهِ ۗ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ ۝ (۲.३) وَإِذَا تَوَلَّى سَعَى فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ

गवाह लाए और वोह सब से बड़ा झगड़ालू है और जब पीठ फेरे तो ज़मीन में फ़साद डालता

فِيهَا وَيُهْلِكُ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفُسَادَ ۝ (۲.५) وَإِذَا قِيلَ

फिरे और खेती और जाने तबाह करे और **اللَّهُ** फ़साद से राज़ी नहीं और जब उस से कहा

لَهُ اتَّبِعْ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ ۗ وَلَيْسَ الْبِهَادُ ۝ (۲.६)

जाए कि **اللَّهُ** से डर तो उसे और ज़िद चढ़े गुनाह की³⁹³ ऐसे को दोख़ काफ़ी है और वोह ज़रूर बहुत बुरा बिछोना है

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ سَاءُ وَفٍ

और कोई आदमी अपनी जान बेचता है³⁹⁴ **اللَّهُ** की मरज़ी चाहने में और **اللَّهُ** बन्दों पर

بِالْعِبَادِ ۝ (۲.८) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً وَلَا تَتَّبِعُوا

मेहरबान है ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे दाख़िल हो³⁹⁵ और शैतान

خُطُوتِ الشَّيْطَانِ ۗ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝ (۲.८) فَإِنْ زَلَلْتُمْ مِنْ بَعْدِ مَا

के क़दमों पर न चलो³⁹⁶ बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है और अगर इस के बा'द भी बिचलो (बहको) कि

392 शाने नुज़ूल : येह और इस से अगली आयत अज़स बिन शुरैक मुनाफ़िक़ के हक़ में नाज़िल हुई जो हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की ख़िदमत में हाज़िर हो कर बहुत लजाजत (खुशामद) से मीठी मीठी बातें करता था और अपने इस्लाम और आप की महबबत का दा'वा करता और इस पर क़समें खाता, और दरपर्दा फ़साद अंगेज़ी में मसरूफ़ रहता था, मुसल्मानों के मवेशी को इस ने हलाक़ किया और उन की खेती को आग़ लगा दी। **393** : गुनाह से जुल्म व सरकशी (करना) और नसीहत की तरफ़ इल्तिफ़ात न करना मुराद है। (फ़ारज़) **394 शाने नुज़ूल** : हज़रते सुहैब इब्ने सिनान रूमी मक्कए मुअज़्ज़मा से हिज़रत कर के हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की ख़िदमत में मदीनए तय्यिबा की तरफ़ रवाना हुए, मुशिरकीने कुरैश की एक जमाअत ने आप का तआकुब किया तो आप सुवारी से उतरे और तरकश से तीर निकाल कर फ़रमाने लगे कि ऐ कुरैश ! तुम में से कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि मैं तीर मारते मारते तमाम तरकश ख़ाली न कर दूँ, और फिर जब तक तलवार मेरे हाथ में रहे उस से मारूँ ! उस वक़्त तक तुम्हारी जमाअत का खेत (खातिमा) हो जाएगा ! अगर तुम मेरा माल चाहो जो मक्कए मुकर्रमा में मदफून् है तो मैं तुम्हें उस का पता बता दूँ तुम मुज़्न से तअर्रुज़ (छेड़छाड़) न करो ! वोह इस पर राज़ी हो गए और आप ने अपने तमाम माल का पता बता दिया, जब हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो येह आयत नाज़िल हुई, हुज़ूर ने तिलावात फ़रमाई और इश्आद फ़रमाया कि तुम्हारी येह जान फ़रोशी बड़ी नाफ़ेअ तिजाारत है। **395 शाने नुज़ूल** : अहले किताब में से अब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के अस्हाब हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** पर ईमान लाने के बा'द शरीअते मूसवी के बा'ज अहक़ाम पर काइम रहे, शम्बा (हफ़्ते के दिन) की ता'ज़ीम करते इस रोज़ शिकार से इज्तिनाब लाज़िम जानते, और ऊँट के दूध और गोशत से परहेज़ करते, और येह ख़याल करते कि येह चीज़ें इस्लाम में तो मुबाह हैं इन का करना ज़रूरी नहीं और तौरैत में इन से इज्तिनाब लाज़िम किया गया है तो इन के तर्क करने में इस्लाम की मुख़ालफ़त भी नहीं है और शरीअते मूसवी पर अमल भी होता है, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इश्आद फ़रमाया गया कि इस्लाम के अहक़ाम का पूरा इत्तिबाअ करो या'नी तौरैत के अहक़ाम मन्सूख़ हो गए अब उन से तमस्सुक (या'नी उन पर अमल) न करो। (फ़ारज़) **396** : उस के वसाविस व शुबुहात में न आओ।

جَاءَتْكُمْ الْبَيِّنَاتُ فَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿۲۰۹﴾ هَلْ يَنْظُرُونَ

तुम्हारे पास रोशन हुक्म आ चुके³⁹⁷ तो जान लो कि **अल्लाह** ज़बर दस्त हिक्मत वाला है काहे के इन्तिज़ार में हैं³⁹⁸

إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلَلٍ مِنَ الْعَمَامِ وَالْمَلَائِكَةُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ

मगर येही कि **अल्लाह** का अज़ाब आए छाप हुए बादलों में और फिरिश्ते उतरे³⁹⁹ और काम हो चुके

وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿۲۱۰﴾ سَلِّ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَمَا آتَيْنَهُمْ مِنْ آيَةِ

और सब कामों की रजुअ **अल्लाह** ही की तरफ़ है बनी इसराईल से पूछो हम ने कितनी रोशन निशानियां उन्हें

بَيِّنَةٍ ۖ وَمَنْ يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ

दों⁴⁰⁰ और जो **अल्लाह** की आई हुई ने'मत को बदल दे⁴⁰¹ तो बेशक **अल्लाह** का अज़ाब

الْعِقَابِ ﴿۲۱۱﴾ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُونَ مِنَ الَّذِينَ

सख़्त है काफ़िरों की निगाह में दुन्या की जिन्दगी आरास्ता की गई⁴⁰² और मुसल्मानों से हंसते

أَمْوًا ۖ وَالَّذِينَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ

है⁴⁰³ और डर वाले उन से ऊपर होंगे क़ियामत के दिन⁴⁰⁴ और खुदा जिसे

يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۲۱۲﴾ كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً ۗ فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِينَ

चाहे बे गिनती दे लोग एक दिन पर थे⁴⁰⁵ फिर **अल्लाह** ने अम्बिया भेजे

مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۗ وَأَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ

खुश ख़बरी देते⁴⁰⁶ और डर सुनाते⁴⁰⁷ और उन के साथ सच्ची किताब उतारी⁴⁰⁸ कि वोह लोगों में

397 : और बा वुजूद वाजेह दलीलों के इस्लाम की राह के ख़िलाफ़ रविश इज़्तिहार करो 398 : मिल्लते इस्लाम के छोड़ने और शैतान की फ़रमां बरदारी करने वाले 399 : जो अज़ाब पर मामूर हैं । 400 : कि उन के अम्बिया के मो'जिज़ात को उन के सिद्दके नुबुव्वत की दलील बनाया, उन के इश्राद और उन की किताबों को दिने इस्लाम की हक्कानिय्यत का शाहिद किया । 401 : **अल्लाह** की ने'मत से आयाते इलाहिय्यह मुराद हैं जो सबबे रुशदे हिदायत हैं और इन की बदौलत गुमराही से नजात हासिल होती है, इन्हीं में से वोह आयात हैं जिन में सय्यिदे आलम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की ना'त व सिफ़त और हुज़ूर की नुबुव्वत व रिसालत का बयान है । यहूदो नसारा की तहरीफ़े उस ने'मत की तब्दील है । 402 : वोह इसी की क़द्र करते और इसी पर मरते हैं 403 : और सामाने दुन्यवी से इन की बे रबती देख कर इन की तहक़ीर करते हैं, जैसा कि हज़रते अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद और अम्मार बिन यासिर और सुहेब व बिलाल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ को देख कर कुफ़्फ़ार तमस्खुर (मज़ाक़) करते थे और दौलते दुन्या के गुरूर में अपने आप को ऊंचा समझते थे । 404 : या'नी ईमानदार रोचे क़ियामत जन्नाते आलिया में होंगे और मग़ूरर कुफ़्फ़ार जहन्म में ज़लीलो ख़्वार । 405 : हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने से अहदे नूह तक सब लोग एक दिन और एक शरीअत पर थे, फिर इन में इख़िलाफ़ हुवा तो **अल्लाह** तबाला ने हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام को मब्ज़स फ़रमाया, येह बि'सत में पहले रसूल हैं । (غازن) 406 : ईमानदारों और फ़रमां बरदारों को सवाब की । (مدارك وغازن) 407 : काफ़िरों और ना फ़रमानों को अज़ाब का । (غازن) 408 : जैसा कि हज़रते आदम व शीस व इदरीस पर सहाइफ़ और हज़रते मूसा पर तौरैत, हज़रते दावूद पर ज़बूर, हज़रते ईसा पर इन्जील और ख़ातमुल अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ पर कुरआन ।

النَّاسِ فِيمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ ۖ وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ أُوتُوهُ مِنْ

उन के इख़्तिलाफ़ों का फैसला कर दे और किताब में इख़्तिलाफ़ उन्हीं ने डाला जिन को दी गई थी⁴⁰⁹ बा'द इस के कि

بَعْدَ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا لِمَا

उन के पास रोशन हुकम आ चुके⁴¹⁰ आपस की सरकशी से तो **अल्लाह** ने ईमान वालों को वोह हक़ बात सुझा दी

اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِآذِنِهِ ۖ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ

जिस में झगड़ रहे थे अपने हुकम से और **अल्लाह** जिसे चाहे

صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿۲۱۳﴾ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَسَأْيَاتِكُمْ

सीधी राह दिखाए क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी तुम पर

مِثْلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ۖ مَسَّتْهُمْ الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَاءُ وَزُلْزَلُوا

अगलों की सी रूदाद न आई⁴¹¹ पहुंची उन्हें सख़्ती और शिदत और हिला हिला डाले गए

حَتَّىٰ يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَىٰ نَصْرُ اللَّهِ ۗ أَلَا إِنَّ

यहां तक कि कह उठा रसूल⁴¹² और उस के साथ के ईमान वाले कब आएगी **अल्लाह** की मदद⁴¹³ सुन लो बेशक

نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ ﴿۲۱۴﴾ يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ ۗ قُلْ مَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ

अल्लाह की मदद करीब है तुम से पूछते हैं⁴¹⁴ क्या खर्च करें तुम फ़रमाओ जो कुछ माल नेकी में खर्च

خَيْرٍ فَلِلَّوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۗ

करो तो वोह मां बाप और करीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजों और राहगीर के लिये है

409 : येह इख़्तिलाफ़ तब्दील व तहरीफ़ और ईमान व कुफ़्र के साथ था जैसा कि यहूदो नसारा से वाक़ेअ हुवा । (غازن) 410 : या'नी येह इख़्तिलाफ़ नादानी से न था बल्कि 411 : और जैसी सख़्त्रियां उन पर गुज़र चुकीं अभी तक तुम्हें पेश न आईं । शाने नुज़ूल : येह आयत ग़ज़्ब अहज़ाब के मुतअल्लिक नाज़िल हुई जहां मुसलमानों को सर्दी और भूक वगैरा की सख़्त तकलीफें पहुंची थीं, इस में इन्हें सब्र की तल्कीन फ़रमाई गई और बताया गया कि राहे खुदा में तकालीफ़ बरदाश्त करना क़दीम से खासाने खुदा का मा'मूल रहा है, अभी तो तुम्हें पहलों की सी तकलीफें पहुंची भी नहीं हैं । बुख़ारी शरीफ़ में हज़रते खबबाब बिन अरत رضي الله عنه से मरवी है कि हज़ूर सय्यिदे आलम صلی الله عليه وسلم सायए का'बा में अपनी चादर मुबारक से तक्या किये हुए तशरीफ़ फ़रमा थे हम ने हज़ूर से अर्ज की, कि हज़ूर हमारे लिये क्यूं दुआ नहीं फ़रमाते, हमारी क्यूं मदद नहीं करते ? फ़रमाया : तुम से पहले लोग गिरिफ़तार किये जाते थे, ज़मीन में गढ़ा खोद कर उस में दबाए जाते थे, आरे से चीर कर दो टुकड़े कर डाले जाते थे और लोहे की कंधियों से उन के गोश्त नोचे जाते थे, और इन में की कोई मुसीबत उन्हें उन के दीन से रोक न सकती थी । 412 : या'नी शिदत इस निहायत (हद) को पहुंच गई कि उन उम्मतों के रसूल और उन के फ़रमां बरदार मोमिन भी तलबे मदद में जल्दी करने लगे बा वुजूदे कि रसूल बड़े साबिर होते हैं और उन के अस्हाब भी । लेकिन बा वुजूद इन इन्तिहाई मुसीबतों के वोह लोग अपने दीन पर काइम रहे और कोई मुसीबत व बला उन के हाल को मुतगय्यर न कर सकी । 413 : इस के जवाब में उन्हें तसल्ली दी गई और येह इशाद हुवा 414 शाने नुज़ूल : येह आयत अम्र बिन जमूह के जवाब में नाज़िल हुई जो बूढ़े शख़्स थे और बड़े मालदार थे, इन्हों ने हज़ूर सय्यिदे आलम صلی الله عليه وسلم से सुवाल किया था

وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿٢١٥﴾ كَتَبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالَ

और जो भलाई करो⁴¹⁵ बेशक **اللَّهُ** उसे जानता है⁴¹⁶ तुम पर फर्ज हुआ खुदा की राह में लड़ना

وَهُوَ كَرِيمٌ ۚ وَعَسَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَعَسَىٰ أَنْ

और वह तुम्हें ना गवार है⁴¹⁷ और करीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वह तुम्हारे हक में बेहतर हो और करीब है कि

تُحِبُّوا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢١٦﴾

कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वह तुम्हारे हक में बुरी हो और **اللَّهُ** जानता है और तुम नहीं जानते⁴¹⁸

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيهِ ۖ قُلْ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ ۖ

तुम से पूछते हैं माहे हराम में लड़ने का हुक्म⁴¹⁹ तुम फरमाओ इस में लड़ना बड़ा गुनाह है⁴²⁰

وَصَدٌّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَكُفْرًا بِهِ وَالسَّجْدِ الْحَرَامِ ۖ وَإِخْرَاجُ

और **اللَّهُ** की राह से रोकना और उस पर ईमान न लाना और मस्जिदे हराम से रोकना और उस के बसने

أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۗ وَلَا

वालों को निकाल देना⁴²¹ **اللَّهُ** के नज़्दीक येह गुनाह इस से भी बड़े हैं और इन का फसाद⁴²² क़त्ल से सख़्त तर है⁴²³ और

يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ حَتَّىٰ يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا ۗ وَمَنْ

हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे यहां तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें अगर बन पड़े⁴²⁴ और तुम में

कि क्या खर्च करें और किस पर खर्च करें ? इस आयत में उन्हें बता दिया गया कि जिस किस्म का और जिस क़दर माल क़लील या कसीर खर्च करो उस में सवाब है और मसारिफ़ उस के येह हैं। **मस्अला** : आयत में सदकए नाफ़िला का बयान है, मां बाप को ज़कात और सदकाते वाजिबा देना जाइज़ नहीं (मूल और) **415** : येह हर नेकी को आ़म है इन्फ़ाक हो या और कुछ, और बाकी मसारिफ़ भी इस में आ गए। **416** : उस की जज़ा अ़ता फ़रमाएगा। **417 मस्अला** : जिहाद फ़र्ज़ है जब इस की शराइत पाई जाएं, अगर काफ़िर मुसलमानों के मुल्क पर चढ़ाई करें तो जिहाद फ़र्ज़ ऐन होता है वरना फ़र्ज़ किफ़ाय़ा। **418** : कि तुम्हारे हक में क्या बेहतर है। तो तुम पर लाजिम है हुक्म इलाही की इ़ताअत करो और उसी को बेहतर समझो चाहे वोह तुम्हारे नफ़्स पर गिरां हो। **419 शाने नुज़ूल** : सय्यिदे आ़लाम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने अब्दुल्लाह बिन जहूश की सरकदगी में मुजाहिदीन की एक जमाअत रवाना फ़रमाई थी उस ने मुशिरकीन से क़िताल किया, उन का ख़याल था कि वोह रोज़ जुमादल उख़्रा का आख़िर दिन है मगर दर हक़ीक़त चांद **29** को हो गया था और वोह रजब की पहली तारीख़ थी, इस पर कुफ़फ़ार ने मुसलमानों को आर दिलाई कि तुम ने माहे हराम में जंग की और हुज़ूर से इस के मुतअल्लिक़ सुवाल होने लगे इस पर येह आयत नाजिल हुई। **420** : मगर सहाबा से येह गुनाह वाक़ेअ नहीं हुवा क्यूं कि उन्हें चांद होने की ख़बर ही न थी उन के नज़्दीक वोह दिन माहे हराम रजब का न था। **मस्अला** : माह हाए हराम में जंग की हुरमत का हुक्म आयए "فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ فِطْرَةَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۚ لَا تَبَدِّلْ دِينَهُ ۚ وَلَا يَسْأَلُكَ عَنِ الدِّينِ شَيْئًا ۚ الْإِيمَانُ الْكَمِيلُ ۚ" (तो मुशिरकों को मारो जहां पाओ) से मन्सूख़ हो गया। **421** : जो मुशिरकीन से वाक़ेअ हुवा कि उन्हीं ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लाम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** और आप के अस्हाब को साले हुदैबिया का 'ब'ए मुअज़्जमा से रोका और आप के जमानए कियामे मक्कए मुअज़्जमा में आप को और आप के अस्हाब को इतनी ईजाएं दीं कि वहां से हिजرات करना पड़ी **422** : या'नी मुशिरकीन का। कि वोह शिर्क करते हैं और सय्यिदे आ़लाम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** और मोमिनीन को मस्जिदे हराम से रोकते और तरह तरह की ईजाएं देते हैं **423** : क्यूं कि क़त्ल तो बा'ज़ हालत में मुबाह होता है और कुफ़र किसी हाल में मुबाह नहीं, और यहां तारीख़ का मशकूक होना उज़्र मा'कूल है और कुफ़फ़ार के कुफ़र के लिये तो कोई उज़्र ही नहीं। **424** : इस में ख़बर दी गई है कि कुफ़फ़ार मुसलमानों से हमेशा अ़दावत रखेंगे कभी इस के ख़िलाफ़ न होगा और जहां तक उन से मुम्किन होगा वोह मुसलमानों को दीन से मुन्हरिफ़ करने की सई करते

يُرْتَدُّ مِنْكُمْ عَنِ دِينِهِ فَيَبُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ

जो कोई अपने दीन से फिरे फिर काफ़िर हो कर मरे तो उन लोगों का किया अकारत गया

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿۲۱۴﴾

दुनिया में और आखिरत में⁴²⁵(الف) और वोह दोख़ वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ

वोह जो ईमान लाए और वोह जिन्हों ने **अल्लाह** के लिये अपने घरबार छोड़े और **अल्लाह** की राह में लड़े

أُولَئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿۲۱۵﴾ يَسْأَلُونَكَ

वोह रहमते इलाही के उम्मीद वार हैं और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है⁴²⁵(ब) तुम से शराब

عَنِ الْخَمْرِ وَالْبَيْسِرِ قُلْ فِيهَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ

और जूए का हुकम पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के कुछ दुन्यवी नफ़अ भी और

إِنَّهَا أَكْبَرُ مِنْ نَفْعِهَا وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلْ الْعَفْوَ

इन का गुनाह इन के नफ़अ से बड़ा है⁴²⁶ और तुम से पूछते हैं क्या खर्च करें⁴²⁷ तुम फ़रमाओ जो फ़ज़िल बचे⁴²⁸

रहेगे। **मस्अला** (الف) 425 : इस आयत में नाकाम रहेंगे। **मस्अला** : इस आयत से मा'लूम हुवा कि इरतिदाद (दीन से फिर जाने) से तमाम आ'माल बातिल हो जाते हैं। आखिरत में तो इस तरह कि उन पर कोई अन्नो सवाब नहीं, और दुन्या में इस तरह कि शरीअत मुरतद के कल्ल का हुकम देती है, उस की औरत उस पर हलाल नहीं रहती, वोह अपने अकारिब का वरसा पाने का मुस्तहिक नहीं रहता, उस का माल मा'सूम नहीं रहता, उस की मदहो सना व इमदाद जाइज़ नहीं। **शाने नुज़ूल** : अब्दुल्लाह बिन जहूश की सरकदगी में जो मुजाहिदीन भेजे गए थे उन की निस्बत बा'ज लोगों ने कहा कि चूकि उन्हें खबर न थी कि येह दिन रजब का है इस लिये उस रोज़ किताल करना गुनाह तो न हुवा लेकिन इस का कुछ सवाब भी न मिलेगा ! इस पर येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि उन का येह अमले जिहाद मक्बूल है और इस पर उन्हें उम्मीद वारे रहमते इलाही रहना चाहिये और येह उम्मीद क़त्अन पूरी होगी। **मस्अला** : "يَرْجُونَ" से ज़ाहिर हुवा कि अमल से अन्न वाजिब नहीं होता बल्कि सवाब देना महज़ फ़ज़ले इलाही है। **426** : हज़रते अली मुर्तज़ा رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ने फ़रमाया कि अगर शराब का एक कतुरा कूएं में गिर जाए फिर उस जगह मनारा बनाया जाए तो मैं उस पर अज़ान न कहूँ, और अगर दरिया में शराब का कतुरा पड़े फिर दरिया खुशक हो और वहां घास पैदा हो उस में अपने जानवरों को न चराऊँ ! **गुनाह** से किस कदर नफ़रत है। **رَزَقْنَا اللَّهُ تَعَالَى رِبَاغَهُمْ** ! गुनाह से किस कदर नफ़रत है। शराब 3 सि.हि. में गुज़ए अहज़ाब से चन्द रोज़ बा'द हराम की गई इस से कब्ल येह बताया गया था कि जूए और शराब का गुनाह इन के नफ़अ से ज़ियादा है। नफ़अ तो येही है कि शराब से कुछ सुरूर पैदा होता है या इस की खरीदो फ़रोख्त से तिज़ारती फ़ाएदा होता है, और जूए में कभी मुफ्त का माल हाथ आता है। और गुनाहों और मफ़सदों का क्या शुमार ! अक्ल का ज़वाल, गैरत व हम्ियत का ज़वाल, इबादात से महरूमो, लोगों से अदावतें, सब की नज़र में ख़्बार होना, दौलतो माल की इज़ाअत। **एक रिवायत** में है कि जिब्रीले अमीन ने हज़ुरे पुरनूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के हज़ुर में अर्ज़ किया कि **अल्लाह** तआला को जा'फ़रे तय्यार की चार ख़स्लतें पसन्द हैं हज़ुर ने हज़रते जा'फ़र رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ से दरयाप्त फ़रमाया : उन्हों ने अर्ज़ किया कि एक तो येह है कि मैं ने शराब कभी नहीं पी या'नी हुकमे हुरमत से पहले भी और इस की वजह येह थी कि मैं जानता था कि इस से अक्ल जाइल होती है और मैं चाहता था कि अक्ल और भी तेज़ हो, **दूसरी ख़स्लत** येह है कि ज़मानए जाहिलियत में भी मैं ने कभी बुत की पूजा नहीं की क्यूं कि मैं जानता था कि येह पथ्थर है न नफ़अ दे सके न ज़रर, **तीसरी ख़स्लत** येह है कि कभी मैं जिना में मुब्तला न हुवा कि इस को बे गैरती समझता था, **चौथी ख़स्लत** येह कि मैं ने कभी झूट नहीं बोला क्यूं कि मैं इस को कमीना पन ख़याल करता था। **मस्अला** : शतरन्ज, ताश वगैरा हार जीत के खेल और जिन पर बाजी लगाई जाए सब जूए में दाखिल और हराम हैं। **शाने नुज़ूल** : सय्यिदे आलम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने मुसल्मानों को सदका देने की रग़बत दिलाई तो आप से दरयाप्त किया गया कि मिक्दार इशाद फ़रमाएं कितना माल राहे खुदा में दिया जाए ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **428** : या'नी जितना

كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿۲۱۹﴾ فِي الدُّنْيَا

इसी तरह **ALLAH** तुम से आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम दुनिया और आख़िरत के काम सोच

الْآخِرَةِ ۖ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَىٰ ۖ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۖ وَإِنْ

कर करो⁴²⁹ और तुम से यतीमों का मसअला पूछते हैं⁴³⁰ तुम फ़रमाओ उन का भला करना बेहतर है और अगर

تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمَصْلِحِ ۖ وَلَوْ شَاءَ

अपना उन का खर्च मिला लो तो वोह तुम्हारे भाई हैं और खुदा ख़ूब जानता है बिगाड़ने वाले को संवारने वाले से और **ALLAH** चाहता

اللَّهُ لَا أَعْتَنُكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿۲۲۰﴾ وَلَا تَتَّكِحُوا الشُّرَكَاتِ

तो तुम्हें मशक्कत में डालता बेशक **ALLAH** ज़बर दस्त हिकमत वाला है और शिक वाली औरतों से निकाह न करो

حَتَّىٰ يُؤْمِنَ ۖ وَلَا مَؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ ۖ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ وَلَا

जब तक मुसलमान न हो जाएं⁴³¹ और बेशक मुसलमान लौंडी मुश्रिका से अच्छी⁴³² अगर्चे वोह तुम्हें भाती हो और

تَتَّكِحُوا الشُّرَكَاتِ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا ۖ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ

मुश्रिकों के निकाह में न दो जब तक वोह ईमान न लाएँ⁴³³ और बेशक मुसलमान गुलाम मुश्रिक से अच्छा

तुम्हारी हाजत से जाइद हो। इब्तिदाए इस्लाम में हाजत से जाइद माल का खर्च करना फर्ज था, सहाबए किराम अपने माल में से अपनी ज़रूरत की कद्र ले कर बाकी सब राहे खुदा में तसहुक कर देते थे! येह हुकम आयते ज़कात से मन्सूख हो गया। 429 : कि जितना तुम्हारी दुन्यवी ज़रूरत के लिये काफ़ी हो वोह ले कर बाकी सब अपने नपए आख़िरत के लिये ख़ैरात कर दो। (ग़ारन) 430 : कि इन के अम्वाल को अपने माल से मिलाने का क्या हुकम है। शाने नुजूल : आयत "إِنَّ الْيَتِيمَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا" के नुजूल के बा'द लोगों ने यतीमों के माल जुदा कर दिये और उन का खाना पीना अ़लाहदा कर दिया, इस में येह सूरतें भी पेश आई कि जो खाना यतीम के लिये पकाया और उस में से कुछ बच रहा वोह ख़राब हो गया और किसी के काम न आया उस में यतीमों का नुक़सान हुवा, येह सूरतें देख कर हज़रते अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने हुजूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से अर्ज किया कि अगर यतीम के माल की हिफ़ाज़त की नज़र से उस का खाना, उस के औलिया अपने खाने के साथ मिला लें तो इस का क्या हुकम है? इस पर येह आयत नाज़िल हुई और यतीमों के फ़ाएदे के लिये मिलाने की इजाज़त दी गई। 431 शाने नुजूल : हज़रते मरसद ग़नवी एक बहादुर शख्स थे सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने उन्हें मक्कए मुकर्रमा रवाना फ़रमाया ताकि वहां से तदबीर के साथ मुसलमानों को निकाल लाएँ! वहां अनाक़ नामी एक मुश्रिका औरत थी ज़मानए जाहिलियत में इन के साथ महब्वत रखती थी हसीन और मालदार थी, जब उस को इन की आमद की ख़बर हुई तो वोह आप के पास आई और तालिबे विसाल हुई, आप ने बख़ौफ़े इलाही उस से ए'राज किया और फ़रमाया कि इस्लाम इस की इजाज़त नहीं देता! तब उस ने निकाह की दरख़्वास्त की, आप ने फ़रमाया कि येह भी रसूले खुदा **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की इजाज़त पर मौक़ूफ़ है, अपने काम से फ़ारिग़ हो कर जब आप ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हुए तो हाल अर्ज कर के निकाह की बाबत दरयाफ़्त किया! इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (ग़मरामी) बा'ज उलमा ने फ़रमाया : जो कोई नबी **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के साथ कुफ़्र करे वोह मुश्रिक है ख़ाह **ALLAH** को वाहिद ही कहता हो और तौहीद का मुद्दई हो। (ग़ारन) 432 शाने नुजूल : एक रोज़ हज़रते अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने किसी ख़ता पर अपनी बांदी के तमांचा मारा फिर ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हो कर इस का ज़िक्र किया, सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने उस का हाल दरयाफ़्त किया। अर्ज किया कि वोह **ALLAH** तआला की वहदानियत और हुजूर की रिसालत की गवाही देती है, रमज़ान के रोज़े रखती है, ख़ूब वुजू करती और नमाज़ पढ़ती है! हुजूर ने फ़रमाया : वोह मोमिना है। आप ने अर्ज किया तो उस की क़सम! जिस ने आप को सच्चा नबी बना कर मक्क़स फ़रमाया मैं उस को आज़ाद कर के उस के साथ निकाह करूंगा। और आप ने ऐसा ही किया, इस पर लोगों ने ता'ना ज़नी की, कि तुम ने एक सियाह फ़ाम बांदी के साथ निकाह किया बा वुजूदे कि फुलां मुश्रिका हुरा (आज़ाद) औरत तुम्हारे लिये हाज़िर है वोह हसीन भी है मालदार भी है, इस पर नाज़िल हुवा "وَلَا تَأْتُوا الشُّرَكَاتِ" या'नी मुसलमान बांदी मुश्रिका से बेहतर है ख़ाह मुश्रिका आज़ाद हो और हुस्न व माल की वजह से अच्छी मा'लूम होती हो। 433 : येह औरत के

وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ ۖ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ ۗ وَاللَّهُ يَدْعُوا إِلَى الْجَنَّةِ

अगर्चे वोह तुम्हे भाता हो वोह दोजख की तरफ बुलाते हैं⁴³⁴ और **अल्लाह** जन्त और बख़िश की तरफ

وَالْمَغْفِرَةَ بِآدَانِهِ ۚ وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ ٢٢١

बुलाता है अपने हुकम से और अपनी आयतें लोगों के लिये बयान करता है कि कहीं वोह नसीहत मानें

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ ۗ قُلْ هُوَ أَذَى ۙ فَأَعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي

और तुम से पूछते हैं हैज का हुकम⁴³⁵ तुम फ़रमाओ वोह नापाकी है तो औरतों से अलग रहो

الْمَحِيضِ ۗ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهُرْنَ ۚ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ

हैज के दिनों और उन से नज़्दीकी न करो जब तक पाक न हो लें फिर जब पाक हो जाएं तो उन के पास जाओ

حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ۝ ٢٢٢

जहां से तुम्हें **अल्लाह** ने हुकम दिया बेशक **अल्लाह** पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को

نِسَاءً وَكُم حَرِّثَ لَكُمْ ۖ فَاتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ ۚ وَقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُمْ ۗ

तुम्हारी औरतें तुम्हारे लिये खेतियां हैं तो आओ अपनी खेती में जिस तरह चाहो⁴³⁶ और अपने भले का काम पहले करो⁴³⁷

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ مُّلَقَوٰهُ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ ٢٢٣

और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उस से मिलना है और ऐ महबूब बिशारत दो ईमान वालों को और

تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِأَيَّانِكُمْ أَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوا وَتُصَلِّحُوا بَيْنَ

अल्लाह को अपनी कसमों का निशाना न बना लो⁴³⁸ कि एहसान और परहेज गारी और लोगों में सुल्ह करने

औलिया को खिताब है। **मसअला** : मुसल्मान औरत का निकाह मुश्रिक व काफ़िर के साथ बातिल व हराम है। **434** : तो उन से इज्तिनाब ज़रूरी और उन के साथ दोस्ती व क़राबत ना रवा। **435 शाने नुजूल** : अरब के लोग यहूद व मजूस की तरह हाइज़ा औरतों से कमाले नफ़रत करते थे, साथ खाना पीना एक मकान में रहना गवारा न था, बल्कि शिदत यहां तक पहुंच गई थी कि उन की तरफ़ देखना और उन से कलाम भी हराम समझते थे, और नसारा इस के बर अक़स हैज के अय्याम में औरतों के साथ बड़ी महब्वत से मशगूल होते थे और इख़िलात् (मेलजोल) में बहुत मुबालगा करते थे। मुसल्मानों ने हज़ूर से हैज का हुकम दरयाफ़्त किया इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इफ़्सातो तफ़रीत की राहें छोड़ कर ए'तिदाल की ता'लीम फ़रमाई गई और बता दिया गया कि हालते हैज में औरतों से मुजामअत मन्मूअ है। **436** : या'नी औरतों की कुरबत से नस्ल का कस्द करो, न कज़ाए शहवत का। **437** : या'नी आ'माले सालिहा या जिमाअ से पहले "بِسْمِ اللَّهِ" पढ़ना। **438** : हज़रते अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने अपने बहनेई नो'मान बिन बशीर के घर जाने और उन से कलाम करने और उन के खुसूम (दुश्मनों) के साथ उन की सुल्ह कराने से कसम खा ली थी, जब इस के मुतअल्लिक उन से कहा जाता था तो कह देते थे कि मैं कसम खा चुका हूं इस लिये येह काम कर ही नहीं सकता ! इस बाब में येह आयत नाज़िल हुई और नेक काम करने से कसम खा लेने की मुमानअत फ़रमाई गई। **मसअला** : अगर कोई शख्स नेकी से बाज़ रहने की कसम खा ले तो उस को चाहिये कि कसम को पूरा न करे बल्कि वोह नेक काम करे और कसम का कफ़ारा दे। मुस्लिम शरीफ की हदीस में है रसूले अकरम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : जिस शख्स ने किसी अम्र पर कसम खा ली फिर मा'लूम हुवा कि ख़ैर और बेहतरी इस के ख़िलाफ़ में है तो चाहिये कि उस अम्रे ख़ैर को करे और कसम का कफ़ारा दे। **मसअला** : बा'ज मुफ़स्सरीन ने येह भी कहा है

النَّاسِ ۱ وَاللَّهُ سَيُيَعِّدُ لِيَوْمِ ۲۳۳ لَا يَأْخُذُكُمْ اللَّهُ بِاللَّعُونِ أَيْبَانِكُمْ

की कसम कर लो और **اللَّهُ** सुनता जानता है **اللَّهُ** तुम्हें नहीं पकड़ता उन कसमों में जो बे इरादा ज़बान से निकल जाए

وَلَكِنْ يَأْخُذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ ۱ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۲

हां इस पर गिरफ्त फ़रमाता है जो काम तुम्हारे दिल ने किये⁴³⁹ और **اللَّهُ** बख़्शने वाला हिल्म वाला है

لِلَّذِينَ يُؤَلُّونَ مِنْ نِسَائِهِمْ تَرْبُصٌ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ ۱ فَإِنْ فَاءُ ۲

वोह जो कसम खा बैठते हैं अपनी औरतों के पास जाने की उन्हें चार महीने की मोहलत है पस अगर इस मुद्दत में फिर आए

فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۱ ۲ وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَيُيَعِّدُ

तो **اللَّهُ** बख़्शने वाला मेहरबान है और अगर छोड़ देने का इरादा पक्का कर लिया तो **اللَّهُ** सुनता

عَلَيْكُمْ ۱ ۲ وَالْمُطَلَّاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ ۱ وَلَا

जानता है⁴⁴⁰ और तलाक़ वालियां अपनी जानों को रोके रहें तीन हैज़ तक⁴⁴¹ और

يَجِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ إِنْ كُنَّ يُؤْمِنَنَّ

उन्हें हलाल नहीं कि छुपाएं वोह जो **اللَّهُ** ने उन के पेट में पैदा किया⁴⁴² अगर **اللَّهُ** और

بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۱ وَبُعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِي ذَلِكَ إِنْ

क्रियामत पर ईमान रखती हैं⁴⁴³ और उन के शोहरों को इस मुद्दत के अन्दर उन के फेर लेने का हक़ पहुंचता है अगर

कि इस आयत से ब कसरत कसम खाने की मुमानअत साबित होती है। **439 मसअला** : कसम तीन तरह की होती है। (1) लगव (2) गमूस (3) मुअक़िदा। **लगव** : यह है कि किसी गुज़रे हुए अम्र पर अपने खयाल में सहीह जान कर कसम खाए और दर हकीकत वोह इस के खिलाफ़ हो। येह मुआफ़ है और इस पर कफ़ारा नहीं। **गमूस** : यह है कि किसी गुज़रे हुए अम्र पर दानिस्ता झूटी कसम खाए ! इस में गुनहगार होगा। **मुअक़िदा** : यह है कि किसी आयिन्दे अम्र पर कसद कर के कसम खाए ! इस कसम को अगर तोड़े तो गुनहगार भी है और कफ़ारा भी लाज़िम। **440 शाने नुज़ूल** : ज़मानए जाहिलिय्यत में लोगों का येह मा'मूल था कि अपनी औरतों से माल तलब करते अगर वोह देने से इन्कार करतीं तो एक साल दो साल तीन साल या इस से ज़ियादा अर्सा उन के पास न जाने और सोहबत तर्क करने की कसम खा लेते थे और उन्हें परेशानी में छोड़ देते थे, न वोह बेवा ही थीं कि कहीं अपना ठिकाना कर लेतीं न शोहर दार कि शोहर से आराम पातीं, इस्लाम ने इस जुल्म को मिटाया और ऐसी कसम खाने वालों के लिये चार महीने की मुद्दत मुअय्यन फ़रमा दी कि अगर औरत से चार महीने या इस से जाइद अर्से के लिये या गैर मुअय्यन मुद्दत के लिये तर्क सोहबत की कसम खा ले जिस को "ईला" कहते हैं तो इस के लिये चार माह इन्तिज़ार की मोहलत है, इस अर्से में ख़ूब सोच समझ ले कि औरत को छोड़ना इस के लिये बेहतर है या रखना, अगर रखना बेहतर समझे और इस मुद्दत के अन्दर रुजूअ करे तो निकाह बाकी रहेगा और कसम का कफ़ारा लाज़िम होगा, और अगर इस मुद्दत में रुजूअ न किया और कसम न तोड़ी तो औरत निकाह से बाहर हो गई और उस पर तलाक़े बाइन वाक़ेअ हो गई। **मसअला** : अगर मर्द सोहबत पर कादिर हो तो रुजूअ सोहबत ही से होगा और अगर किसी वज्ह से कुदरत न हो तो बा'दे कुदरत सोहबत का वा'दा रुजूअ है। **441** : इस आयत में मुतल्लका औरतों की इद्दत का बयान है जिन औरतों को उन के शोहरों ने तलाक़ दी, अगर वोह शोहर के पास न गई थीं और उन से खल्वते सहीहान न हुई थी जब तो उन पर तलाक़ की इद्दत ही नहीं है जैसा कि आयए "مَسَالِمُ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ" में इर्शाद है। और जिन औरतों को खुर्द साली (कम उम्री) या किल्ल सिनी (बुढ़ापे) की वज्ह से हैज़ न आता हो या जो हामिला हो उन की इद्दत का बयान सूरे तलाक़ में आएगा, बाकी जो आजाद औरतें हैं यहां उन की इद्दत व तलाक़ का बयान है कि उन की इद्दत तीन हैज़ है। **442** : वोह हम्ल हो या ख़ूने हैज़। क्यूं कि उस के छुपाने से रज्ज़त और वलद में जो शोहर का हक़ है वोह जाएअ होगा। **443** : या'नी येही मुक्तजाए ईमानदारी है।

أَرَادُوا إِصْلَاحًا وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ وَ

मिलाप चाहें⁴⁴⁴ और औरतों का भी हक़ ऐसा ही है जैसा इन पर है शरअ के मुवाफ़िक़⁴⁴⁵ और

لِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢٨﴾ الطَّلَاقُ مَرَّتَيْنِ ۚ

मर्दों को इन पर फज़ीलत है और **अल्लाह** ग़ालिब हिकमत वाला है यह तलाक़⁴⁴⁶ दो बार तक है

فَأَمْسَاكُ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ ۗ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ

फिर भलाई के साथ रोक लेना है⁴⁴⁷ या निकोई (अच्छे सुलूक) के साथ छोड़ देना है⁴⁴⁸ और तुम्हें रवा नहीं कि

تَأْخُذُوا مِمَّا آتَيْتُمُوهُنَّ شَيْئًا إِلَّا أَنْ يَخَافَا أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ

जो कुछ औरतों को दिया⁴⁴⁹ उस में से कुछ वापस लो⁴⁵⁰ मगर जब दोनों को अन्देशा हो कि **अल्लाह** की हदें काइम न

اللَّهُ ۚ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۗ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا

करेंगे⁴⁵¹ फिर अगर तुम्हें खौफ़ हो कि वोह दोनों ठीक इन्ही हदों पर न रहेंगे तो उन पर कुछ गुनाह नहीं उस में जो बदला

أَفْتَدَتْ بِهِ ۗ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۗ فَلَا تَعْتَدُوهَا ۚ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ

दे कर औरत छुट्टी ले⁴⁵² यह **अल्लाह** की हदें हैं इन से आगे न बढ़ो और जो **अल्लाह** की हदों से आगे

اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٢٩﴾ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدِ حَتَّىٰ

बढ़े तो वोही लोग ज़ालिम हैं फिर अगर तीसरी तलाक़ उसे दी तो अब वोह औरत इसे हलाल न होगी जब तक

444 : या'नी तलाके रज्द में इहत के अन्दर शोहर औरत से रुजूअ कर सकता है ख़्वाह औरत राज़ी हो या न हो लेकिन अगर शोहर को मिलाप मन्ज़ूर हो तो ऐसा करे, ज़र रसानी का क़स्द न करे जैसा कि अहले जाहिलियत औरत को परेशान करने के लिये करते थे।

445 : या'नी जिस तरह औरतों पर शोहरों के हुक्क की अदा वाजिब है इसी तरह शोहरों पर औरतों के हुक्क की रिआयत लाज़िम है।

446 : या'नी तलाके रज्द। **शाने नुज़ूल** : एक औरत ने सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की खिदमत में हाज़िर हो कर अज़्ज किया कि उस के शोहर ने कहा है कि वोह इस को तलाक़ देता और रज्अत करता रहेगा हर मरतबा जब तलाक़ की इहत गुज़रने के करीब होगी रज्अत कर लेगा फिर तलाक़ दे देगा इसी तरह उम्र भर इस को कैद रखेगा ! इस पर यह आयत नाज़िल हुई और इशार्द फ़रमा दिया

कि तलाके रज्द दो बार तक है इस के बा'द फिर तलाक़ देने पर रज्अत का हक़ नहीं। **447** : रज्अत कर के **448** : इस तरह कि रज्अत न करे और इहत गुज़र कर औरत बाइना हो जाए। **449** : या'नी महर **450** : तलाक़ देते वक्त **451** : जो हुक्के ज़ौज़ैन के मुतअल्लिक हैं। **452** : या'नी तलाक़ हासिल करे। **शाने नुज़ूल** : यह आयत जमीला बिन्ते अब्दुल्लाह के बाब में नाज़िल हुई, यह जमीला साबित

इब्ने कैस इब्ने शम्मास के निकाह में थीं और शोहर से कमाले नफ़रत रखती थीं, रसूले खुदा **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के हुज़ूर में अपने शोहर की शिकायत लाई और किसी तरह उन के पास रहने पर राज़ी न हुई, तब साबित ने कहा कि मैं ने इन को एक बाग़ दिया है अगर यह मेरे पास रहना गवारा नहीं करतीं और मुझ से अलाहदगी चाहती हैं तो वोह बाग़ मुझे वापस करें मैं इन को आज़ाद कर दूँ ! जमीला ने इस को मन्ज़ूर किया ! साबित ने बाग़ ले लिया और तलाक़ दे दी। इस तरह की तलाक़ को खुलअ कहते हैं। **मस्अला** : खुलअ तलाके बाइन होता है। **मस्अला** : खुलअ में लफ्जे "खुलअ" का जिक्र ज़रूरी है। **मस्अला** : अगर जुदाई की तलब गार औरत हो तो खुलअ में मिक्दारे महर से जाइद लेना मक्रूह है, और अगर औरत की तरफ़ से नुशूज़ (ना इत्तिफ़ाकी) न हो मर्द ही अलाहदगी चाहे तो मर्द को तलाक़ के इवज़ माल लेना मुत्लकन मक्रूह है।

تَنكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ ٥ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يَتَرَاجَعَا إِنْ

दूसरे ख़ावन्द के पास न रहे⁴⁵³ फिर वोह दूसरा अगर उसे तलाक़ दे दे तो इन दोनों पर गुनाह नहीं कि फिर आपस में मिल जाएं⁴⁵⁴ अगर

ظَنًّا أَنْ يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ٥ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ

समझते हों कि **अल्लाह** की हदें निबाहेंगे और ये **अल्लाह** की हदें हैं जिन्हें बयान करता है

يَعْلَمُونَ ٥ وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ

दानिश मन्दों के लिये और जब तुम औरतों को तलाक़ दो और उन की मीआद आ लगे⁴⁵⁵ तो उस वक़्त तक या भलाई के

بِعَرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِعَرُوفٍ ٥ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضَرَارًا لِتَعْتَدُوا ج

साथ रोक लो⁴⁵⁶ या निकोई (अच्छे सुलूक) के साथ छोड़ दो⁴⁵⁷ और उन्हें ज़रर देने के लिये रोकना न हो कि हद से बढ़ो

وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ٥ وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا ٥

और जो ऐसा करे वोह अपना ही नुक़सान करता है⁴⁵⁸ और **अल्लाह** की आयतों को ठठ्ठु न बना लो⁴⁵⁹

وَأذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ

और याद करो **अल्लाह** का एहसान जो तुम पर है⁴⁶⁰ और वोह जो तुम पर किताब

وَالْحِكْمَةَ يَعِظُكُمْ بِهِ ٥ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ

व हिक्मत⁴⁶¹ उतारी तुम्हें नसीहत देने को और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** सब कुछ

عَلِيمٌ ٥ وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ

जानता है⁴⁶² और जब तुम औरतों को तलाक़ दो और उन की मीआद पूरी हो जाए⁴⁶³ तो ऐ औरतों के वालियो उन्हें न रोको इस से कि

يَبْكُنَّ أَرْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضُوا بَيْنَهُنَّ بِالْعَرُوفِ ٥ ذَلِكَ يُوعِظُ بِهِ

अपने शोहरों से निकाह कर लें⁴⁶⁴ जब कि आपस में मुवाफ़िके शरअ रिज़ा मन्द हो जाएं⁴⁶⁵ येह नसीहत उसे दी जाती है

453 मस्अला : तीन तलाकों के बा'द औरत शोहर पर ब हुर्मते मुग़ल्लजा हराम हो जाती है अब न उस से रुजूअ हो सकता है न दोबारा निकाह जब तक कि हलाला न हो या'नी बा'दे इद्दत दूसरे से निकाह करे और वोह बा'दे सोहबत तलाक़ दे फिर इद्दत गुजरे। **454** : दोबारा निकाह कर लें। **455** : या'नी इद्दत तमाम होने के करीब हो। **शाने नुज़ूल** : येह आयत साबित बिन यसार अन्सारी के हक़ में नाज़िल हुई, इन्होंने अपनी औरत को तलाक़ दी थी और जब इद्दत करीबे ख़त्म होती थी रज्जत कर लिया करते थे ताकि औरत कैद में पड़ी रहे। **456** : या'नी निबाहने और अच्छा मुआमला करने की निय्यत से रज्जत करो **457** : और इद्दत गुजर जाने दो ताकि बा'दे इद्दत वोह आज़ाद हो जाएं। **458** : कि हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त कर के गुनहगार होता है। **459** : कि इन की परवाह न करो और इन के ख़िलाफ़ अमल करो। **460** : कि तुम्हें मुसल्मान किया और सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का उम्मत बनाया। **461** : किताब से कुरआन और हिक्मत से अहक़ामे कुरआन व सुन्नते रसूल صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ मुराद है। **462** : उस से कुछ मख़फ़ी नहीं। **463** : या'नी उन की इद्दत गुजर चुके **464** : जिन को उन्होंने अपने निकाह के लिये तजवीज़ किया हो ख़्वाह वोह नए हों या येही तलाक़ देने वाले, या इन से पहले जो तलाक़ दे चुके थे। **465** : अपने कुफू में महेरे मिस्ल पर। क्यू कि इस के ख़िलाफ़ की सूत में औलिया ए'तिराज़ व

مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ ذَلِكُمْ أَزْكَى لَكُمْ وَ

जो तुम में से **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान रखता हो यह तुम्हारे लिये ज़ियादा सुथरा और

أَطْهَرَ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾ وَالْوَالِدَاتُ يُرْضَعْنَ

पाकीज़ा है और **अल्लाह** जानता है और तुम नहीं जानते और माएं दूध पिलाएं अपने

أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ ۗ وَعَلَىٰ

बच्चों को⁴⁶⁶ पूरे दो बरस उस के लिये जो दूध की मुद्दत पूरी करनी चाहे⁴⁶⁷ और जिस का

الْمَوْلُودُ لَهُ يَرْضَعُهَا بِالْمَعْرُوفِ ۗ لَا تَكْفُلُ نَفْسٌ إِلَّا

बच्चा है⁴⁶⁸ उस पर औरतों का खाना पहनना है हस्बे दस्तूर⁴⁶⁹ किसी जान पर बोझ न रखा जाएगा मगर उस के

وَسَعَهَا ۗ لَا تَضَارُّ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَهُ بِوَلَدِهِ ۗ وَعَلَىٰ

मकदूर भर मां को ज़रूर न दिया जाए उस के बच्चे से⁴⁷⁰ और न औलाद वाले को उस की औलाद से⁴⁷¹ या मां ज़रूर न दे अपने बच्चे को और न औलाद वाला अपनी औलाद को⁴⁷² और जो

الْوَالِدَاتُ يُرْضَعْنَ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ ۗ وَعَلَىٰ

बाप का काइम मक़ाम है उस पर भी ऐसा ही वाजिब है फिर अगर मां बाप दोनों आपस की रिज़ा

तअर्रुज का हक़ रखते हैं। शाने नुज़ूल : मा'क़िल बिन यसार मुजनी की बहन का निकाह आसिम बिन अदी के साथ हुवा था, उन्होंने ने तलाक़ दी और इद्दत गुज़रने के बा'द फिर आसिम ने दरख़्वास्त की तो मा'क़िल बिन यसार मानेअ हुए ! उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। (तफ़्सीर अल-शरिफ़) 466 : बयाने तलाक़ के बा'द येह सुवाल तब्अन सामने आता है कि अगर तलाक़ वाली औरत की गोद में शीर ख़वार बच्चा हो तो इस जुदाई के बा'द उस की परवरिश का क्या तरीका होगा ? इस लिये येह करीने हिक्मत है कि बच्चे की परवरिश के मुतअल्लिक़ मां बाप पर जो अहक़ाम हैं वोह इस मौक़अ पर बयान फ़रमा दिये जाएं ! लिहाज़ा यहाँ उन मसाइल का बयान हुवा। **मस्अला** : मां ख़वाह मुतल्लक़ा हो या न हो उस पर अपने बच्चे को दूध पिलाना वाजिब है बशर्ते कि बाप को उजरत पर दूध पिलवाने की कुदरत व इस्तिताअत न हो या कोई दूध पिलाने वाली मुयस्सर न आए या बच्चा मां के सिवा और किसी का दूध कबूल न करे, अगर येह बातें न हों या'नी बच्चे की परवरिश ख़ास मां के दूध पर मौक़ुफ़ न हो तो मां पर दूध पिलाना वाजिब नहीं मुस्तहब है। 467 : या'नी इस मुद्दत का पूरा करना लाज़िम नहीं। अगर बच्चे को ज़रूरत न रहे और दूध छुड़ाने में उस के लिये ख़त़रा न हो तो इस से कम मुद्दत में भी छुड़ाना जाइज़ है। (तफ़्सीर अल-मज़ान वफ़ीरो) 468 : या'नी वालिद। इस अन्दाज़े बयान से मा'लूम हुवा कि नसब बाप की तरफ़ रुजूअ करता है। 469 **मस्अला** : बच्चे की परवरिश और उस को दूध पिलवाना बाप के जिम्मे वाजिब है इस के लिये वोह दूध पिलाने वाली मुक़रर करे लेकिन अगर मां अपनी रग़बत से बच्चे को दूध पिलाए तो मुस्तहब है। **मस्अला** : शोहर अपनी जौजा पर बच्चे के दूध पिलाने के लिये ज़ब्र नहीं कर सकती और न औरत शोहर से बच्चे के दूध पिलाने की उजरत तलब कर सकती है जब तक कि उस के निकाह या इद्दत में रहे। **मस्अला** : अगर किसी शख़्स ने अपनी जौजा को तलाक़ दी और इद्दत गुज़र चुकी तो वोह उस से बच्चे के दूध पिलाने की उजरत ले सकती है। **मस्अला** : अगर बाप ने किसी औरत को अपने बच्चे के दूध पिलाने पर उजरत मुक़रर किया और उस की मां उसी उजरत पर या बे मुआवज़ा दूध पिलाने पर राजी हुई तो मां ही दूध पिलाने की ज़ियादा मुस्तहिक़ है, और अगर मां ने ज़ियादा उजरत तलब की तो बाप को उस से दूध पिलवाने पर मजबूर न किया जाएगा। (तफ़्सीर अल-मदरक) 470 : या'नी उस को उस के ख़िलाफ़े मरजी दूध पिलाने पर मजबूर न किया जाए। 471 : ज़ियादा उजरत तलब करे 472 : मां का बच्चे को ज़रूर देना येह है कि उस को वक़्त पर दूध न दे और उस की निगरानी न रखे या अपने साथ मानूस कर लेने के बा'द छोड़ दे, और बाप का बच्चे को ज़रूर देना येह है कि मानूस बच्चे को मां से छीन ले या मां के हक़ में कोताही करे जिस से बच्चे को नुक़सान पहुंचे।

وَتَشَاوِرِ فَلَآ جُنَاحَ عَلَيْهَا وَإِن أَرَدْتُمْ أَن تَسْتَرْضِعُوا

और मश्वरे से दूध छुड़ाना चाहें तो उन पर गुनाह नहीं और अगर तुम चाहो कि दाइयों से अपने बच्चों को

أَوْلَادَكُمْ فَلَآ جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُمْ مَا آتَيْتُم بِالْمَعْرُوفِ ۖ وَ

दूध पिलवाओ तो भी तुम पर मुजायका नहीं जब कि जो देना ठहरा था भलाई के साथ उन्हें अदा कर दो और

اتَّقُوا اللَّهَ وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝۳۳ وَالَّذِينَ

अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है और तुम में जो

يَتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ

मरें और बीबियां छोड़ें वोह चार महीने दस दिन अपने आप को

أَشْهُرٍ وَعَشْرًا فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا

रोके रहे⁴⁷³ तो जब उन की इद्दत पूरी हो जाए तो ऐ वालियो तुम पर मुआखड़ा नहीं उस काम में

فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۖ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝۳۴ وَلَا

जो औरतें अपने मुआमले में मुवाफिके शरअ करें और अल्लाह को तुम्हारे कामों की खबर है और

جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا عَرَّضْتُمْ بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنُتُمْ فِي

तुम पर गुनाह नहीं इस बात में जो पर्दा रख कर तुम औरतों के निकाह का पयांम दो या अपने दिल में

أَنْفُسِكُمْ ۖ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ سَتَذْكُرُونَهُنَّ وَلَكِنْ لَا تَأْتُوا عِدْوَهنَّ

छुपा रखो⁴⁷⁴ अल्लाह जानता है कि अब तुम उन की याद करोगे⁴⁷⁵ हां उन से खुपया वा'दा न

سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۖ وَلَا تَعْرِمُوا عُقَدَةَ النِّكَاحِ حَتَّىٰ

कर रखो मगर येह कि इतनी ही बात कहो जो शरअ में मा'रूफ है और निकाह की गिरह पक्की न करो जब तक

473 : हामिला की इद्दत तो वज़्र हम्ल है जैसा कि सूए तलाक में मज़कूर है। यहां गैरे हामिला का बयान है जिस का शोहर मर जाए

उस की इद्दत चार माह दस रोज है इस मुद्दत में न वोह निकाह करे न अपना मस्कन छोड़े न बे उज़्र तेल लगाए न खुशबू लगाए न सिंगार

करे न रंगीन और रेशमी कपड़े पहने न मेहंदी लगाए न जदीद निकाह की बातचीत खुल कर करे, और जो तलाके बाइन की इद्दत में

हो उस का भी येही हुक्म है। अलबत्ता जो औरत तलाके रज्द की इद्दत में हो उस को जीनत और सिंगार करना मुस्तहब है। 474 : या'नी

इद्दत में निकाह और निकाह का खुला हुवा पयांम तो मन्मूअ है लेकिन पर्दे के साथ ख्वाहिशे निकाह का इज़हार गुनाह नहीं मसलन येह

कहे कि तुम बहुत नेक औरत हो, या अपना इरादा दिल ही में रखे और ज़बान से किसी तरह न कहे। 475 : और तुम्हारे दिलों में

ख्वाहिश होगी इसी लिये तुम्हारे वासिते ता'रीज मुबाह की गई।

يَبْلُغُ الْكِتَابَ أَجَلَهُ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ

लिखा हुवा हुकम अपनी मीआद को न पहुंच ले⁴⁷⁶ और जान लो कि **अल्लाह** तुम्हारे दिल की जानता है

فَاَحْذَرُوا ۗ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ (۲۳۵) لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ

तो उस से डरो और जान लो कि **अल्लाह** बख्शने वाला हिल्म वाला है तुम पर कुछ मुतालबा नहीं⁴⁷⁷ अगर

طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمْسُوهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً ۗ

तुम औरतों को तलाक़ दो जब तक तुम ने उन को हाथ न लगाया हो या कोई महर मुकर्रर न कर लिया हो⁴⁷⁸

وَمَتَّعُوهُنَّ عَلَى الْمَوْسِعِ قَدَرًا وَعَلَى الْبُقْعَةِ قَدَرًا مَتَاعًا

और उन को कुछ बरतने को दो⁴⁷⁹ मक़दूर वाले पर उस के लाइक़ और तंगदस्त पर उस के लाइक़ हस्बे दस्तूर

بِالْمَعْرُوفِ ۗ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ ۝ (۲۳۶) وَإِنْ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ

कुछ बरतने की चीज़ यह वाजिब है भलाई वालों पर⁴⁸⁰ और अगर तुम ने औरतों को बे छूए

تَمْسُوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً فَيَصِفْ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ

तलाक़ दे दी और उन के लिये कुछ महर मुकर्रर कर चुके थे तो जितना ठहरा था उस का आधा वाजिब है मगर यह कि औरतें

يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوا الَّذِي بِيَدِهِ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۗ وَأَنْ تَعْفُوا أَقْرَبُ

कुछ छोड़ दें⁴⁸¹ या वोह ज़ियादा दे⁴⁸² जिस के हाथ में निकाह की गिरह है⁴⁸³ और ऐ मर्दों तुम्हारा ज़ियादा देना परहेज़ गारी से

لِلتَّقْوَى ۗ وَلَا تَسْأُوا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ (۲۳۷)

नज़्दीक तर है और आपस में एक दूसरे पर एहसान को भुला न दो बेशक **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है⁴⁸⁴

حِفْظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ ۖ وَقَوْمُوا لِلَّهِ قَنِينًا ۝ (۲۳۸) فَإِنْ

निगहबानी करो सब नमाज़ों⁴⁸⁵ और बीच की नमाज़ की⁴⁸⁶ और खड़े हो **अल्लाह** के हुज़ूर अदब से⁴⁸⁷ फिर अगर

476 : या'नी इहत गुज़र चुके। **477** : महर का **478** शाने नुज़ूल : यह आयत एक अन्सारी के बाब में नाज़िल हुई जिन्हों ने कबीलए बनी हनीफ़ा की एक औरत से निकाह किया और कोई महर मुअय्यन न किया फिर हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दी। **मस्अला** : इस से मा'लूम हुवा कि जिस औरत का महर मुकर्रर न किया हो अगर उस को हाथ लगाने से पहले तलाक़ दी तो महर लाज़िम नहीं। हाथ लगाने से मुजामअत मुराद है, और खल्वते सहीहा इसी के हुकम में है। यह भी मा'लूम हुवा कि बे ज़िक्र महर भी निकाह दुरुस्त है मगर इस सूत्र में बा'दे निकाह महर मुअय्यन करना होगा अगर न किया तो बा'दे दुखूल महरे मिसल लाज़िम हो जाएगा। **479** : तीन कपड़ों का एक जोड़ा। **480** : जिस औरत का महर मुकर्रर न किया हो और उस को क़वले दुखूल तलाक़ दी हो उस को तो जोड़ा देना वाजिब है, और इस के सिवा हर मुतल्लका के लिये मुस्तहब है। **481** : अपने उस निसफ़ में से **482** : निसफ़ से। जो इस सूत्र में वाजिब है। **483** : या'नी शोहर। **484** : इस में हुस्ने सुलूक व मकारिमे अख़्लाक (अच्छे अख़्लाक) की तरगीब है। **485** : या'नी पन्जगाना फ़र्ज़ नमाज़ों को उन के अवकात पर अरकान व शराइत के साथ अदा करते रहो। इस में पांचों नमाज़ों की फ़र्ज़ियत का बयान है और औलाद व अज़्बाज के मसाइल व अहकाम के दरमियान में नमाज़ का ज़िक्र फ़रमाना इस नतीजे पर पहुंचता है कि इन को अदाए

خَفْتُمْ فِرْجَالًا أَوْ رُكْبَانًا ۚ فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَأَدْكُرُوا اللَّهَ كَمَا عَلَّمَكُم مَّا

खौफ में हो तो पियादा या सुवार जैसे बन पड़े फिर जब इत्मीनान से हो तो **اللَّهُ** की याद करो जैसा उस ने सिखाया जो

لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿۲۳۹﴾ وَالَّذِينَ يَتَوْفَوْنَ مِنْكُمْ وَيُذَرُونَ

तुम न जानते थे और जो तुम में मरें और बीबियां छोड़

أَزْوَاجًا ۗ وَصِيَّةٌ لِأَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرِ إِخْرَاجٍ ۚ فَإِنْ

जाएं वोह अपनी औरतों के लिये वसियत कर जाएं⁴⁸⁸ साल भर तक नान व नफ़का देने की बे निकाले⁴⁸⁹ फिर अगर

خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوفٍ ۗ

वोह खुद निकल जाएं तो तुम पर उस का मुआख़ज़ा नहीं जो उन्होंने ने अपने मुआमले में मुनासिब तौर पर किया

وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿۲۴۰﴾ وَلِلَّيْطِ مَتَاعٌ بِالمَعْرُوفِ ۗ حَقًّا عَلَى

और **اللَّهُ** ग़ालिब हिकमत वाला है और तलाक़ वालियों के लिये भी मुनासिब तौर पर नान व नफ़का है यह वाजिब है

الْمُتَّقِينَ ﴿۲۴۱﴾ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿۲۴۲﴾ أَلَمْ

परहेज़ गारों पर **اللَّهُ** यूँही बयान करता है तुम्हारे लिये अपनी आयतें कि कहीं तुम्हें समझ हो ऐ महबूब क्या

تَرَى إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ۗ

तुम ने न देखा था उन्हें जो अपने घरों से निकले और वोह हज़ारों थे मौत के डर से

فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ۗ ثُمَّ أَحْيَاهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ

तो **اللَّهُ** ने उन से फ़रमाया मर जाओ फिर उन्हें ज़िन्दा फ़रमा दिया बेशक **اللَّهُ** लोगों पर फ़ज़ल करने वाला है

وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿۲۴۳﴾ وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاعْلَمُوا

मगर अक्सर लोग नाशुक्रे हैं⁴⁹⁰ और लड़ो **اللَّهُ** की राह में⁴⁹¹ और जान लो

नमाज़ से गाफ़िल न होने दो, और नमाज़ की पाबन्दी से क़ल्ब की इस्लाह होती है जिस के बिगैर मुआमलात का दुरुस्त होना मुतसव्वर नहीं। 486 : हज़रते इमाम अबू हनीफ़ा और जम्हूर सहाबा **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ** का मज़हब येह है कि इस से नमाज़े अस्स मुराद है और अहादीस भी इस पर दलालत करती हैं। 487 : इस से नमाज़ के अन्दर क़ियाम का फ़र्ज होना साबित हुवा। 488 : अपने अकारिब को 489 : इब्तिदाए इस्लाम में बेवा की इद्दत एक साल की थी और एक साल कामिल वोह शोहर के यहां रह कर नान व नफ़का पाने की मुस्तहक़ होती थी फिर एक साल की इद्दत तो "بِتَرْئِضَنَ بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا" से मन्सूख़ हुई जिस में बेवा की इद्दत चार माह दस दिन मुक़रर फ़रमाई गई, और साल भर का नफ़का आयते मीरास से मन्सूख़ हुवा जिस में औरत का हिस्सा शोहर के तर्के से मुक़रर किया गया ! लिहाज़ा अब इस वसियत का हुक्म बाकी न रहा। हिकमत इस की येह है कि अरब के लोग अपने मूरिस (या'नी मरने वाले) की बेवा का निकलना या ग़ैर से निकाह करना बिल्कुल गवारा ही न करते थे और इस को अ़र समझते थे इस लिये अगर एक दम चार माह दस रोज़ की इद्दत मुक़रर की जाती तो येह उन पर बहुत शाक़ होती ! लिहाज़ा ब तदरीज़ उन्हें राह पर लाया गया। 490 : बनी

أَنَّ اللَّهَ سَيُّئٌ عَلَيْهِ ۝ مَن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا

कि **अल्लाह** सुनता जानता है है कोई जो **अल्लाह** को कर्ज हसन दे⁴⁹²

فِيُضِعُّهَا لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً ۖ وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُطُ ۚ وَإِلَيْهِ

तो **अल्लाह** उस के लिये बहुत गुना बढ़ा दे और **अल्लाह** तंगी और कशाइश करता है⁴⁹³ और तुम्हें उसी की तरफ

تُرْجَعُونَ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلِئِكِ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنْ بَعْدِ مُوسَىٰ

फिर जाना ऐ महबूब क्या तुम ने न देखा बनी इसराईल के एक गुरौह को जो मूसा के बा'द हुवा⁴⁹⁴

إِذْ قَالَ النَّبِيُّ لَهُمْ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ قَالَ هَلْ

जब अपने एक पैगम्बर से बोले हमारे लिये खड़ा कर दो एक बादशाह कि हम खुदा की राह में लड़ें नबी ने फरमाया क्या

عَسَيْتُمْ إِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا ۖ قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا

तुम्हारे अन्दाज ऐसे हैं कि तुम पर जिहाद फर्ज किया जाए तो फिर न करो बोले हमें क्या हुवा कि

نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أَخْرَجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَأَبْنَا بَنَاءً فَلَمَّا

हम **अल्लाह** की राह में न लड़ें हालां कि हम निकाले गए हैं अपने वतन और अपनी औलाद से⁴⁹⁵ तो फिर जब

इसराईल की एक जमाअत थी जिस के बिलाद (शहरों) में ताऊन हुवा तो वोह मौत के डर से अपनी बस्तियां छोड़ कर भागे और जंगल में जा पड़े, ब हुक्मे इलाही सब वहाँ मर गए! कुछ अर्से के बा'द हजरते हिज्कील **عليه السلام** की दुआ से उन्हें **अल्लाह** तआला ने जिन्दा फरमाया और वोह मुदतों जिन्दा रहे। इस वाकिए से मा'लूम होता है कि आदमी मौत के डर से भाग कर जान नहीं बचा सकता तो भागना बेकार है जो मौत मुकद्दर है वोह जरूर पहुंचेगी बन्दे को चाहिये कि रिजाए इलाही पर राजी रहे, मुजाहिदीन को भी समझना चाहिये कि जिहाद से बैठ रहना मौत को दफ्थ नहीं कर सकता लिहाजा दिल मजबूत रखना चाहिये। 491 : और मौत से न भागो जैसा बनी इसराईल भागे थे क्यूं कि मौत से भागना काम नहीं आता। 492 : या'नी राहे खुदा में इख्लास के साथ खर्च करे। राहे खुदा में खर्च करने को कर्ज से ता'बीर फरमाया येह कमाले लुत्फो करम है, बन्दा उस का बनाया हुवा और बन्दे का माल उस का अता फरमाया हुवा, हकीकी मालिक वोह और बन्दा उस की अता से मजाजी मिलक रखता है, मगर कर्ज से ता'बीर फरमाने में येह दिल नशीन करना मन्जूर है कि जिस तरह कर्ज देने वाला इत्मीनान रखता है कि उस का माल जाएँ नहीं हुवा वोह उस की वापसी का मुस्तहिक है ऐसा ही राहे खुदा में खर्च करने वाले को इत्मीनान रखना चाहिये कि वोह इस इन्फाक की जजा बिल यकीन पाएगा और बहुत जियादा पाएगा। 493 : जिस के लिये चाहे रोजी तंग करे जिस के लिये चाहे वसीअ फरमाए तंगी व फराखी उस के कब्जे में है और वोह अपनी राह में खर्च करने वाले से वुस्अत का वा'दा करता है। 494 : हजरते मूसा **عليه السلام** के बा'द जब बनी इसराईल की हालत खराब हुई और उन्होंने ने अहदे इलाही को फरामोश किया बुत परस्ती में मुब्तला हुए सरकशी और बद अफआली इन्तिहा को पहुँची, उन पर कौमे जालूत मुसल्लत हुई जिस को अमालिका कहते हैं क्यूं कि जालूत इमलीक बिन आद की औलाद से एक निहायत जाबिर बादशाह था उस की कौम के लोग मिस्र व फिलिस्तीन के दरमियान बहरे रूम के साहिल पर रहते थे। उन्होंने ने बनी इसराईल के शहर छीन लिये आदमी गिरफ्तार किये तरह तरह की सख्तियां कीं, उस जमाने में कोई नबी कौमे बनी इसराईल में मौजूद न थे, खानदाने नुबुव्वत से सिर्फ एक बीबी बाकी रही थीं जो हामिला थीं उन के फरजन्द तवल्लुद (पैदा) हुए उन का नाम इश्मवील रखा, जब वोह बड़े हुए तो उन्हें इल्मे तौरैत हासिल करने के लिये बैतुल मक्दिस में एक कबीरुस्सिन (बुजुर्ग) आलिम के सिपुर्द किया वोह आप के साथ कमाले शफूकत करते और आप को फरजन्द कहते, जब आप सिन्ने बुलूग को पहुंचे तो एक शब आप उस आलिम के करीब आराम फरमा रहे थे कि हजरते जिब्रील **عليه السلام** ने उसी आलिम की आवाज में या इश्मवील कह कर पुकारा, आप आलिम के पास गए और फरमाया कि आप ने मुझे पुकारा है? आलिम ने ब ई खयाल कि इन्कार करने से कहीं आप डर न जाएँ येह कह दिया कि फरजन्द तुम सो जाओ! फिर दोबारा हजरते जिब्रील ने इसी तरह पुकारा और हजरते इश्मवील **عليه السلام** आलिम के पास गए आलिम ने कहा ऐ फरजन्द अब अगर मैं तुम्हें

كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ۙ

उन पर जिहाद फर्ज किया गया मुंह फेर गए मगर उन में के थोड़े⁴⁹⁶ और **अल्लाह** खूब जानता है

بِالظَّالِمِينَ ۝ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ

ज़ालिमों को और उन से उन के नबी ने फ़रमाया बेशक **अल्लाह** ने तालूत को तुम्हारा बादशाह बना कर

مَلِكًا ۗ قَالُوا أَنَّى يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ

भेजा है⁴⁹⁷ बोले उसे हम पर बादशाही क्योंकर होगी⁴⁹⁸ और हम उस से ज़ियादा सल्तनत के मुस्तहक

مِنْهُ وَلَمْ يُوْتِ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ۗ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَ

हैं और उसे माल में भी वुस्तत नहीं दी गई⁴⁹⁹ फ़रमाया उसे **अल्लाह** ने तुम पर चुन लिया⁵⁰⁰ और

زَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۗ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَن يَشَاءُ ۗ وَ

उसे इल्म और जिस्म में कुशादगी ज़ियादा दी⁵⁰¹ और **अल्लाह** अपना मुल्क जिसे चाहे दे⁵⁰² और

اللَّهُ وَاسِعٌ عَلَيْكُمْ ۝ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ

अल्लाह वुस्तत वाला इल्म वाला है⁵⁰³ और उन से उन के नबी ने फ़रमाया उस की बादशाही की निशानी यह है कि आए तुम्हारे पास

التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ

ताबूत⁵⁰⁴ जिस में तुम्हारे रब की तरफ से दिलों का चैन है और कुछ बची हुई चीज़ें हैं मुअज़्ज़ज मूसा और मुअज़्ज़ज

फिर पुकारूँ तो तुम जवाब न देना, तीसरी मरतबा में हज़रते ज़िब्रील **عليه السلام** जाहिर हो गए और उन्होंने ने बिशारत दी कि **अल्लाह** तआला ने आप को नुबुव्वत का मन्सब अता फ़रमाया आप अपनी कौम की तरफ जाइये और अपने रब के अहकाम पहुंचाइये जब आप कौम की तरफ तशरीफ़ लाए उन्होंने ने तक्ज़ीब की और कहा कि आप इनकी जल्दी नबी बन गए ! अच्छा अगर आप नबी हैं तो हमारे लिये एक बादशाह काइम कीजिये । (غارن ومريم) 495 : कि कौमे जालूत ने हमारी कौम के लोगों को उन के वतन से निकाला उन की औलाद को कत्लो गारत किया चार सो चालीस शाही खानदान के फ़रजन्दों को गिरिफ़्तार किया जब हालत यहां तक पहुंच चुकी तो अब हमें जिहाद से क्या चीज़ मानेअ हो सकती है ? तब नबिय्युल्लाह को दुआ से **अल्लाह** तआला ने उन की दरख्वास्त कबूल फ़रमाई और उन के लिये एक बादशाह मुकर्र किया और जिहाद फ़र्ज फ़रमाया (غارن) 496 : जिन की ता'दाद अहले बद्र के बराबर तीन सो तेरह थी । 497 : "तालूत" बिन्यामीन बिन हज़रते या'कूब **عليه السلام** की औलाद से हैं आप का नाम तूले कामत की वजह से तालूत है, हज़रते इशमवील **عليه السلام** को **अल्लाह** तआला की तरफ से एक असा मिला था और बताया गया था कि जो शख्स तुम्हारी कौम का बादशाह होगा उस का क़द इस असा के बराबर होगा ! आप ने उस असा से तालूत का क़द नाप कर फ़रमाया कि मैं तुम को ब हुक्मे इलाही बनी इसराईल का बादशाह मुकर्र करता हूँ ! और बनी इसराईल से फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला ने तालूत को तुम्हारा बादशाह बना कर भेजा है । (غارن ومريم) 498 : बनी इसराईल के सरदारों ने अपने नबी हज़रते इशमवील **عليه السلام** से कहा कि नुबुव्वत तो लावा बिन या'कूब **عليه السلام** की औलाद में चली आती है और सल्तनत यहूद बिन या'कूब की औलाद में, और तालूत इन दोनों खानदानों में से नहीं हैं तो बादशाह कैसे हो सकते हैं । 499 : वोह ग़रीब शख्स हैं बादशाह को साहिबे माल होना चाहिये 500 : या'नी सल्तनत वरसा नहीं कि किसी नस्ल व खानदान के साथ खास हो येह महज़ फ़र्जे इलाही पर है । इस में शीआ का रद है जिन का ए'तिक़ाद येह है कि इमामत विरासत है । 501 : या'नी "नस्ल व दौलत" पर सल्तनत का इस्तिहक़ाक़ नहीं "इल्म व कुव्वत" सल्तनत के लिये बड़े मुईन हैं । और तालूत उस ज़माने में तमाम बनी इसराईल से ज़ियादा इल्म रखते थे और सब से जसीम और तुवाना थे । 502 : इस में विरासत को कुछ दख़ल नहीं । 503 : जिसे चाहे ग़नी कर दे और वुस्तते माल अता फ़रमा दे । इस के बा'द बनी इसराईल ने हज़रते इशमवील **عليه السلام** से अर्ज़ किया कि अगर **अल्लाह** तआला ने उन्हें सल्तनत के लिये मुकर्र फ़रमाया है तो इस की

هُرُونَ تَحِيلُهُ الْبَلِيكَةُ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّكُمْ إِن كُنتُمْ

हारून के तर्के की उठाते लाएंगे उसे फिरिश्ते बेशक इस में बड़ी निशानी है तुम्हारे लिये अगर

مُؤْمِنِينَ ۚ فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ ۗ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُمْ

ईमान रखते हो फिर जब तालूत लश्करों को ले कर शहर से जुदा हुवा⁵⁰⁵ बोला बेशक **اللَّهُ** तुम्हें एक नहर से

بِنَهْرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي ۚ وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي

आजमाने वाला है तो जो उस का पानी पिये वोह मेरा नहीं और जो न पिये वोह मेरा है

إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ ۚ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ ۗ فَلَمَّا

मगर वोह जो एक चुल्लू अपने हाथ से ले ले⁵⁰⁶ तो सब ने उस से पिया मगर थोड़ों ने⁵⁰⁷ फिर जब

جَاوَزَهُ هُوَ وَالزَّيْنُ امْنُومَاعَهُ ۗ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ

तालूत और उस के साथ के मुसलमान नहर के पार गए बोले हम में आज ताकत नहीं जालूत

निशानी क्या है ? (عازن و مدارك) 504 : यह ताबूत शमशाद की लकड़ी का एक ज़र अन्दूद (सोने का काम किया हुवा) सन्दूक था जिस का तूल तीन हाथ का और अर्जु दो हाथ का था, इस को **اللَّهُ** तआला ने हज़रते आदम **عليه السلام** पर नाज़िल फरमाया था, इस में तमाम अम्बिया **عليهم الصلوٰة والسلام** की तस्वीरें थीं इन के मसाकिन व मकानात की तस्वीरें थीं और आखिर में हुज़र सय्यिदे अम्बिया **صلّى الله عليه وسلم** की, और हुज़र की दौलत सराए अक्दस की तस्वीर एक याकूते सुख् में थी कि हुज़र ब हालते नमाज़ किया म में हैं और गिर्द आप के आप के अस्थाब । हज़रते आदम **عليه السلام** ने इन तमाम तस्वीरों को देखा, यह सन्दूक विरासतन मुन्तकिल होता हुवा हज़रते मुसा **عليه السلام** तक पहुंचा, आप इस में तौरैत भी रखते थे और अपना मखसूस सामान भी चुनाच्चे इस ताबूत में अल्वाहे तौरैत के टुकड़े भी थे और हज़रते मुसा **عليه الصلوٰة والسلام** का असा और आप के कपड़े और आप की ना'लैने शरीफैन और हज़रते हारून **عليه السلام** का इमामा और उन का असा और थोडा सा "मन्न" जो बनी इसराईल पर नाज़िल होता था । हज़रते मुसा **عليه السلام** जंग के मौकओं पर इस सन्दूक को आगे रखते थे इस से बनी इसराईल के दिलों को तस्कीन रहती थी । आप के बा'द यह ताबूत बनी इसराईल में मुतवारिस (बतौरै विरासत मुन्तकिल) होता चला आया जब उन्हें कोई मुश्किल दरपेश होती वोह इस ताबूत को सामने रख कर दुआएं करते और काम्याब होते, दुश्मनों के मुकाबले में इस की बरकत से फल्द पाते, जब बनी इसराईल की हालत ख़राब हुई और उन की बद अमली बहुत बढ़ गई और **اللَّهُ** तआला ने उन पर अमालिका को मुसल्लत किया तो वोह उन से ताबूत छीन कर ले गए और इस को नजिस और गन्दे मकामात में रखा और इस की बे हुरमती की और इन गुस्ताखियों की वजह से वोह तरह तरह के अमराज व मसाइब में मुब्तला हुए उन की पांच बस्तियां हलाक हुई और उन्हें यकीन हुवा कि ताबूत की इहानत उन की बरबादी का बाइस है तो उन्होंने ने ताबूत एक बेलगाड़ी पर रख कर बेलों को छोड़ दिया और फिरिश्ते इस को बनी इसराईल के सामने तालूत के पास लाए और इस ताबूत का आना बनी इसराईल के लिये तालूत की बादशाही की निशानी करार दिया गया था, बनी इसराईल यह देख कर उस की बादशाही के मुक़िर हुए और बे दरंग जिहाद के लिये आमादा हो गए क्यूं कि ताबूत पा कर उन्हें अपनी फल्द का यकीन हो गया, तालूत ने बनी इसराईल में से सत्तर हज़रत जवान मुन्तख़ब किये जिन में हज़रते दावूद **عليه السلام** भी थे । (عازن و مدارك وغيره)

फ़ाएदा : इस से मा'लूम हुवा कि बुजुर्गों के तबरक़ात का ए'जाजो एहतियाम लाज़िम है इन की बरकत से दुआएं कबूल होती और हाज़तें रवा होती हैं और तबरक़ात की बे हुरमती गुमराहों का तरीका और बरबादी का सबब है । **फ़ाएदा** : ताबूत में अम्बिया की जो तस्वीरें थीं वोह किसी आदमी की बनाई हुई न थीं **اللَّهُ** की तरफ से आई थीं । 505 : या'नी बैतुल मक्दिस से दुश्मन की तरफ़ रवाना हुवा वोह वक़्त निहायत शिद्दत की गरमी का था, लश्करियों ने तालूत से इस की शिकायत की और पानी के त़लब गार हुए

506 : यह इम्तिहान मुकर्रर फ़रमाया गया था कि शिद्दते तिशनगी के वक़्त जो इताअते हुक्म पर मुस्तक़िल रहा वोह आयिन्दा भी मुस्तक़िल रहेगा और सख़ियों का मुकाबला कर सकेगा और जो इस वक़्त अपनी ख़्वाहिश से मग़लूब हो और ना फ़रमानी करे वोह आयिन्दा सख़ियों को क्या बरदाश्त करेगा । 507 : जिन की ता'दाद तीन सो तेरह थी उन्होंने ने सब्र किया और एक चुल्लू उन के और उन के जानवरों के लिये काफ़ी हो गया और उन के क़ल्बो ईमान को कुव्वत हुई और नहर से सलामत गुज़र गए, और जिन्हों ने ख़ूब पिया था उन के होंट सियाह हो गए तिशनगी और बढ़ गई और हिम्मत हार गए ।

وَجُنُودَهُ ۖ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلِقُوا اللَّهَ لَأَكْمَمَنَّ مِنْ فِتْنَةٍ

और उस के लश्करो की बोले वोह जिन्हें **अल्लाह** से मिलने का यकीन था कि बारहा कम

قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِتْنَةٌ كَثِيرَةٌ بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿۲۳۹﴾ وَلَمَّا

जमाअत गालिब आई है जियादा गुरौह पर **अल्लाह** के हुकम से और **अल्लाह** साबिरो के साथ है⁵⁰⁸ फिर जब

بَرَزُوا لِلْجَالُوتَ وَجُنُودُهُ قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ

सामने आए जालूत और उस के लश्करो के अर्ज की ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल दे और हमारे

أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿۲۴۰﴾ فَهَزَمُوهُمْ بِإِذْنِ

पाउं जमे रख और काफिर लोगो पर हमारी मदद कर तो इन्हो ने उन को भगा दिया **अल्लाह** के

اللَّهِ ۖ وَقَتَلَ دَاوُدُ جَالُوتَ وَاتَّهَى اللَّهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهُ

हुकम से और क़त्ल किया दावूद ने जालूत को⁵⁰⁹ और **अल्लाह** ने उसे सलतनत और हिकमत⁵¹⁰ अता फ़रमाई और उसे जो

مِمَّا يَشَاءُ ۖ وَلَوْ لَا دَفَعُ اللَّهُ النَّاسَ بَعْضُهُمْ بِبَعْضٍ لَفَسَدَتِ

चाहा सिखाया⁵¹¹ और अगर **अल्लाह** लोगो में बा'ज से बा'ज को दफ़अ न करे⁵¹² तो ज़रूर जमीन

الْأَرْضُ وَلَكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿۲۴۱﴾ تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا

तबाह हो जाए मगर **अल्लाह** सारे जहान पर फ़ज़ल करने वाला है येह **अल्लाह** की आयते हैं कि हम ऐ महबूब

عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿۲۴۲﴾

तुम पर ठीक ठीक पढ़ते हैं और तुम बेशक रसूलों में हो

508 : उन की मदद फ़रमाता है और उसी की मदद काम आती है। **509** : हज़रते दावूद عليه السلام के वालिद "ईशा" तालूत के लश्कर में थे और उन के साथ उन के तमाम फ़रजन्द भी, हज़रते दावूद عليه السلام उन सब में छोटे थे बीमार थे रंग ज़र्द था बकरियां चरते थे, जब जालूत ने बनी इसराईल से मुक़ाबिल तलब किया वोह उस की कुव्वते जसामत देख कर घबराए क्यूं कि वोह बड़ा जाबिर कवी शहज़ोर अज़ीमुल जुस्सा (बड़े और मोटे जिस्म वाला) क़दआवर था, तालूत ने अपने लश्कर में ए'लान किया कि जो शख्स जालूत को क़त्ल करे मैं अपनी बेटी उस के निकाह में दूंगा और निस्फ़ मुल्क उस को दूंगा मगर किसी ने इस का जवाब न दिया तो तालूत ने अपने नबी हज़रते इशमवील عليه السلام से अर्ज किया कि बारगाहे इलाही में दुआ करें, आप ने दुआ की तो बताया गया कि हज़रते दावूद عليه السلام जालूत को क़त्ल करेंगे, तालूत ने आप से अर्ज किया कि अगर आप जालूत को क़त्ल करें तो मैं अपनी लडकी आप के निकाह में दूँ और निस्फ़ मुल्क पेश करूँ! आप ने क़बूल फ़रमाया और जालूत की तरफ़ रवाना हो गए, सफ़े क़िताल काइम हुई और हज़रते दावूद عليه السلام दस्ते मुबारक में फ़लाख़न (पथर फेंकने का आला) ले कर मुक़ाबिल हुए, जालूत के दिल में आप को देख कर दहशत पैदा हुई मगर उस ने बातें बहुत मुतकब्बिराना कीं और आप को अपनी कुव्वत से मरऊब करना चाहा आप ने फ़लाख़न में पथर रख कर मारा वोह उस की पेशानी को तोड़ कर पीछे से निकल गया और जालूत मर कर गिर गया हज़रते दावूद عليه السلام ने उस को ला कर तालूत के सामने डाल दिया, तमाम बनी इसराईल खुश हुए और तालूत ने हज़रते दावूद عليه السلام को हस्बे वा'दा निस्फ़ मुल्क दिया और अपनी बेटी का आप के साथ निकाह कर दिया, एक मुद्दत के बा'द तालूत ने वफ़त पाई तमाम मुल्क पर हज़रते दावूद عليه السلام की सलतनत हुई।

510 : हिकमत से नुबुव्वत मुराद है। **511** : जैसे कि ज़ि़रह बनाना और जानवरों का क़लाम समझना। **512** : या'नी **अल्लाह** तआला

الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعَ

ईमान वाले **अल्लाह** की राह में हमारे दिये में से खर्च करो वोह दिन आने से पहले जिस में न खरीदो फ़रोख्त

فِيهِ وَلَا خَلَّةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٥٢٣﴾ اللَّهُ لَا

है न काफ़ि़रों के लिये दोस्ती न शफ़ाअत और काफ़िर खुद ही ज़ालिम हैं⁵²² **अल्लाह** है जिस

إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي

के सिवा कोई मा'बूद नहीं⁵²³ वोह आप ज़िन्दा और औरों का क़ाइम रखने वाला⁵²⁴ उसे न ऊंघ आए न नींद⁵²⁵ उसी का है जो कुछ

السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ط

आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में⁵²⁶ वोह कौन है जो उस के यहां सिफ़ारिश करे बे उस के हुक्म के⁵²⁷

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ

जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे⁵²⁸ और वोह नहीं पाते उस के इल्म में से

إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ

मगर जितना वोह चाहे⁵²⁹ उस की कुरसी में समाए हुए हैं आस्मान और ज़मीन⁵³⁰ और उसे भारी नहीं

حِفْظُهَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٥٢٥﴾ لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ قَدْ تَبَيَّنَ

इन की निगहबानी और वोही है बुलन्द बड़ाई वाला⁵³¹ कुछ ज़बर दस्ती नहीं दीन में⁵³² बेशक ख़ूब जुदा हो गई है

522 : कि उन्होंने ने ज़िन्दागानिये दुन्या में रोज़े हाज़त या'नी क़ियामत के लिये कुछ न किया । 523 : इस में **अल्लाह** तआला की उलूहियत

और उस की तौहीद का बयान है । इस आयत को आयतुल कुरसी कहते हैं, अहादीस में इस की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हैं । 524 : या'नी

वाजिबुल वुजूद और आलम का इज़ाद करने और तदबीर फ़रमाने वाला । 525 : वयू कि येह नक्स है और वोह नक्स व ऐब से पाक । 526 :

इस में उस की मालिकियत और नफ़ाजे अम्र व तसरुफ़ का बयान है और निहायत लतीफ़ पैराए में रहे शिक है कि जब सारा जहान उस की

मिल्क है तो शरीक कौन हो सकता है ! मुशिकीन या तो कवाक़िब को पूजते हैं जो आस्मानों में हैं या दरियाओं, पहाड़ों, पथरों, दरख्तों,

जानवरों, आग वग़ैरा को जो ज़मीन में हैं । जब आस्मान व ज़मीन की हर चीज़ **अल्लाह** की मिल्क है तो येह कैसे पूजने के काबिल हो सकते

हैं । 527 : इस में मुशिकीन का रद है जिन का गुमान था कि बुत शफ़ाअत करेंगे, उन्हें बता दिया गया कि कुफ़ार के लिये शफ़ाअत नहीं ।

अल्लाह के हुजूर माज़नीन (इज़ाज़त याफ़ता लोगों) के सिवा कोई शफ़ाअत नहीं कर सकता और इज़न वाले अम्बिया व मलाएका व मोमिनीन

हैं । 528 : या'नी मा क़व्ल व मा बा'द या उमूरे दुन्या व आख़िरत । 529 : और जिन को वोह मुत्तलअ फ़रमाए वोह अम्बिया व रुसुल हैं

जिन को ग़ैब पर मुत्तलअ फ़रमाना उन की नुबुव्वत की दलील है । दूसरी आयत में इशाद फ़रमाया : "فَلَا يَظْهَرُ عَلَيَّ غَيْبٌ أَحَدًا إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِن رَّسُولٍ" (غافر)

530 : इस में उस की अज़मते शान का इज़हार है और कुरसी से या इल्मो कुदरत मुराद है या अर्श या वोह जो अर्श के नीचे और सातों

आस्मानों के ऊपर है और मुम्किन है कि येह वोही हो जो "फलकुल बुरुज" के नाम से मशहूर है । 531 : इस आयत में इलाहिय्यात के आ'ला

मसाइल का बयान है और इस से साबित है कि **अल्लाह** तआला मौजूद है, इलाहिय्यात में वाहिद है, हयात के साथ मुत्सिफ़ है, वाजिबुल

वुजूद अपने मा सिवा का मूजिद है, तहय्युज व हुलूल से मुनज़ा और तग़य्युर और फ़तूर से मुबरा है, न किसी को उस से मुशाबहत, न

अवारिजे मख़्लूक को उस तक रसाई, मुल्क व मलकूत का मालिक, उसूल व फ़रूअ का मुब्दिअ, क़वी गिरिफ़्त वाला, जिस के हुजूर सिवाए

माज़ून (इज़ाज़त याफ़ता) के कोई शफ़ाअत के लिये लब न हिला सके, तमाम अश्या का जानने वाला, जली (ज़ाहिर) का भी और ख़ुफ़ी का

भी, कुल्ली का भी और जुज़्द का भी, وَاسِعُ الْمَلِكِ وَالْقُدْرَةِ, इदराक व वहमो फ़हम से बर तरो बाला । 532 : सिफ़ाते इलाहिय्यह के बा'द

"لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ" फ़रमाने में येह इशआर (बता देना) है कि अब आक़िल के लिये क़बूले हक़ में तअम्मुल की कोई वच्ह बाक़ी न रही ।

الرُّشْدُ مِنَ الْعِيِّ ۚ فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنُ بِاللَّهِ فَقَدِ

नेक राह गुमराही से तो जो शैतान को न माने और **अल्लाह** पर ईमान लाए⁵³³ उस ने

اسْتَسْكَبَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ ۚ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ وَاللَّهُ سَبِيْعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٥٦﴾

बड़ी मोहकम गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं और **अल्लाह** सुनता जानता है

اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا ۙ يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّوْرِ ۗ

अल्लाह वाली है मुसलमानों का इन्हें अंधेरियों से⁵³⁴ नूर की तरफ निकालता है

وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۙ أَوْلِيَاهُمُ الطَّاغُوتُ ۙ يُخْرِجُونَهُم مِّنَ النُّوْرِ إِلَى

और काफ़िरों के हिमायती शैतान हैं वोह उन्हें नूर से अंधेरियों की तरफ

الظُّلُمَاتِ ۗ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۗ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٥٧﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى

निकालते हैं येही लोग दोख वाले हैं इन्हें हमेशा उस में रहना ऐ महबूब क्या तुम ने न देखा था

الَّذِي حَاجَّ اِبْرٰهٖمَ فِى رَبِّهٖ ۗ اَنْ اَتٰهٗ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۗ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ

उसे जो इब्राहीम से झगडा उस के रब के बारे में इस पर⁵³⁵ कि **अल्लाह** ने उसे बादशाही दी⁵³⁶ जब कि इब्राहीम ने कहा कि

رَبِّى الَّذِى يُحِى وَيُمِيتُ ۗ قَالَ اَنَا اُحِى وَاُمِيتُ ۗ قَالَ اِبْرٰهٖمُ

मेरा रब वोह है कि जिलाता और मारता है⁵³⁷ बोला मैं जिलाता और मारता हूँ⁵³⁸ इब्राहीम ने फ़रमाया

533 : इस में इशारा है कि काफ़िर के लिये अक्ल अपने कुफ़्र से तौबा व बेज़ारी ज़रूर है, इस के बा'द ईमान लाना सहीह होता है। **534** : कुफ़्रो ज़लालत की, ईमान व हिदायत की रोशनी और **535** : गुरुरो तकबुर पर। **536** : और तमाम ज़मीन की सल्तनत अता फ़रमाई, इस पर उस ने बजाए शुक्र व ताअत के तकबुर व तजबुर किया और रबूबिय्यत का दा'वा करने लगा। इस का नाम नमरूद बिन किन्आन था। सब से पहले सर पर ताज रखने वाला येही है। जब हज़रते इब्राहीम **عليه السلام** ने इस को खुदा परस्ती की दा'वत दी, ख़्वाह आग में डाले जाने से क़ल्ल या इस के बा'द तो वोह कहने लगा कि तुम्हारा रब कौन है जिस की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो ? **537** : या'नी अज्जाम में मौत व हयात पैदा करता है। एक खुदा ना शनास के लिये येह बेहतरीन हिदायत थी और इस में बताया गया था कि खुद तेरी ज़िन्दगी उस के वुजूद की शाहिद है कि तू एक बेजान नुफ़ा था, जिस (ज़ात) ने इस को इन्सानि सूरत दी और हयात अता फ़रमाई वोह रब है और ज़िन्दगी के बा'द फिर ज़िन्दा अज्जाम को जो मौत देता है वोह परवर दगार है, उस की कुदरत की शहादत खुद तेरी अपनी मौत व हयात में मौजूद है, उस के वुजूद से बे ख़बर रहना कमाले जहालत व सफ़ाहत (बे वुकूफ़ी) और इन्तिहाई बद नसीबी है। येह दलील ऐसी ज़बर दस्त थी कि इस का जवाब नमरूद से बन न पडा और इस ख़याल से कि मज्मअ के सामने उस को ला जवाब और शरमिन्दा होना पडता है उस ने कज बहूसी (फुज़ूल तक्कार) इख़्तियार की। **538** : नमरूद ने दो शख्सों को बुलाया, उन में से एक को क़ल्ल किया, एक को छोड़ दिया और कहने लगा कि मैं भी जिलाता मारता हूँ, या'नी किसी को गिरिफ़्तार कर के छोड़ देना उस को जिलाना है, येह उस की निहायत अहमकाना बात थी, कहां क़ल्ल करना और छोड़ना और कहां मौत व हयात पैदा करना ! क़ल्ल किये हुए शख्स को ज़िन्दा करने से आजिज़ रहना, और बजाए इस के ज़िन्दा के छोड़ने को जिलाना कहना ही उस की ज़िल्लत के लिये काफ़ी था। उक़ला पर इसी से जाहिर हो गया कि जो हुज्जत हज़रते इब्राहीम **عليه السلام** ने काइम फ़रमाई वोह कातेअ है और उस का जवाब मुम्किन नहीं, लेकिन चूँकि नमरूद के जवाब में शाने दा'वा पैदा हो गई तो हज़रते इब्राहीम **عليه السلام** ने उस पर मुनाज़राना गिरिफ़्त फ़रमाई कि मौत व हयात का पैदा करना तो तेरे मक्दूर (इख़्तियार) में नहीं, ऐ रबूबिय्यत के डूटे मुद्ई ! तू इस से सहल (आसान) काम ही कर दिखा जो एक मुतहर्क ज़िस्म की हरकत का बदलना है।

فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ

तो **अल्लाह** सूरज को लाता है पूरब (मशरिफ़) से तू उस को पश्चिम (मग़रिब) से ले आ⁵³⁹ तो होश उड़ गए

الَّذِي كَفَرَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٢٥٨﴾ أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَى

काफ़िर के और **अल्लाह** राह नहीं दिखाता ज़ालिमों को या उस की तरह जो गुज़रा

قَرِيَةً وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا ۗ قَالَ أَنَّى يُحْيِي هَذِهِ اللَّهُ بَعْدَ

एक बस्ती पर⁵⁴⁰ और वोह ढई (गिरी) पड़ी थी अपनी छतों पर⁵⁴¹ बोला इसे क्यूंकर जिलाएगा **अल्लाह** इस की

539 : येह भी न कर सके तो रबूबियत का दा'वा किस मुंह से करता है ! **मसअला** : इस आयत से इल्मे कलाम में मुनाज़रा करने का सबूत होता है । **540** : बकौले अक्सर येह वाकिआ हज़रते उज़ैर **عليه السلام** का है और बस्ती से बैतुल मक्दिस मुगद है । जब बख्ते नस्र बादशाह ने बैतुल मक्दिस को वीरान किया और बनी इसराईल को क़त्ल किया, गिरिफ्तार किया, तबाह कर डाला, फिर हज़रते उज़ैर **عليه السلام** वहां गुज़रे, आप के साथ एक बरतन, खजूर और एक पियाला अंगूर का रस था और आप एक दराज़ गोश पर सुवार थे तमाम बस्ती में फिरे किसी शख्स को वहां न पाया । बस्ती की इमारतों को मुन्हदमि देखा तो आप ने बराहे तअज़्जुब कहा : "أَنَّى يُحْيِي هَذِهِ اللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا" (इसे क्यूंकर जिलाएगा **अल्लाह** इस की मौत के बा'द !) और आप ने अपनी सुवारी के हिमार को वहां बांध दिया और आप ने आराम फ़रमाया, इसी हालत में आप की रूह कब्ज़ कर ली गई और गधा भी मर गया । येह सुब्द के वक्त का वाकिआ है, इस से सत्तर बरस बा'द **अल्लाह** तअलाला ने शाहाने फ़ार्स में से एक बादशाह को मुसल्लत किया और वोह अपनी फ़ौजें ले कर बैतुल मक्दिस पहुंचा और उस को पहले से भी बेहतर तरीके पर आबाद किया और बनी इसराईल में से जो लोग बाकी रहे थे **अल्लाह** तअलाला उन्हें फिर यहां लाया और वोह बैतुल मक्दिस और उस के नवाह में आबाद हुए और उन की ता'दाद बढ़ती रही, उस ज़माने में **अल्लाह** तअलाला ने हज़रते उज़ैर **عليه السلام** को दुन्या की आंखों से पोशीदा रखा और कोई आप को न देख सका । जब आप की वफ़ात को सो बरस गुज़र गए तो **अल्लाह** तअलाला ने आप को ज़िन्दा किया, पहले आंखों में जान आई, अभी तक तमाम जिस्म मुर्दा था, वोह आप के देखते देखते ज़िन्दा किया गया । येह वाकिआ शाम के वक्त गुरूबे आफ़ताब के क़रीब हुवा । **अल्लाह** तअलाला ने फ़रमाया : तुम यहां कितने दिन ठहरे ? आप ने अन्दाज़े से अर्ज किया कि एक दिन या कुछ कम । आप का खयाल येह हुवा कि येह उसी दिन की शाम है जिस की सुब्द को सोए थे । फ़रमाया : नहीं बल्कि तुम सो बरस ठहरे, अपने खाने और पानी या'नी खजूर और अंगूर के रस को देखिये कि वैसे ही है उस में बू तक न आई और अपने गधे को देखिये । देखा तो वोह मर गया था, गल गया, आ'ज़ा बिखर गए थे, हड्डियां सफ़ेद चमक रही थीं, आप की निगाह के सामने उस के आ'ज़ा जम्अ हुए, आ'ज़ा अपने अपने मवाक़ेअ पर आए, हड्डियों पर गोशत चढ़ा, गोशत पर खाल आई, बाल निकले, फिर उस में रूह फूंकी, वोह उठ खड़ा हुवा और आवाज़ करने लगा । आप ने **अल्लाह** तअलाला की कुदरत का मुशाहदा किया और फ़रमाया : मैं खूब जानता हूँ कि **अल्लाह** तअलाला हर शौ पर कादिर है, फिर आप अपनी उस सुवारी पर सुवार हो कर अपने महल्ले में तशरीफ़ लाए, सरे अक्दस और रीश मुबारक के बाल सफ़ेद थे, उम्र वोही चालीस साल की थी, कोई आप को न पहचानता था । अन्दाज़े से अपने मकान पर पहुंचे एक ज़ईफ़ बुदिया मिली जिस के पाउं रह गए थे, वोह नाबीना हो गई थी, वोह आप के घर की बांदी थी और उस ने आप को देखा था । आप ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया कि येह उज़ैर का मकान है ? उस ने कहा : हां, और उज़ैर कहां ! उन्हें मफ़कूद (गुम) हुए सो बरस गुज़र गए येह कह कर खूब रोई । आप ने फ़रमाया : मैं उज़ैर हूँ । उस ने कहा : **سُبْحَانَ اللَّهِ** येह कैसे हो सकता है ? आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** तअलाला ने मुझे सो बरस मुर्दा रखा, फिर ज़िन्दा किया । उस ने कहा : हज़रते उज़ैर "मुस्तजाबुद्दा'वात" थे, जो दुआ करते क़बूल होती, आप दुआ कीजिये कि मैं बीना हो जाऊं ताकि मैं अपनी आंखों से आप को देखूँ । आप ने दुआ फ़रमाई, वोह बीना हुई, आप ने उस का हाथ पकड़ कर फ़रमाया ? उठ खुदा के हुक्म से । येह फ़रमाते ही उस के मारे हुए पाउं दुरुस्त हो गए । उस ने आप को देख कर पहचाना और कहा मैं गवाही देती हूँ कि आप बेशक हज़रते उज़ैर हैं । वोह आप को बनी इसराईल के महल्ले में ले गई वहां एक मजलिस में आप के फ़रज़न्द थे जिन की उम्र एक सो अठ्ठारह साल की हो चुकी थी और आप के पोते भी थे जो बूढ़े हो चुके थे, बुदिया ने मजलिस में पुकारा कि येह हज़रते उज़ैर तशरीफ़ ले आए, अहले मजलिस ने उस को झुटलाया, उस ने कहा : मुझे देखो ! आप की दुआ से मेरी येह हालत हो गई । लोग उठे और आप के पास आए आप के फ़रज़न्द ने कहा कि मेरे वालिद साहिब के शानों के दरमियान सियाह बालों का एक हिलाल था । जिस्मे मुबारक खोल कर दिखाया गया तो वोह मौजूद था । उस ज़माने में तौरैत का कोई नुस्खा न रहा था, कोई उस का जानने वाला मौजूद न था, आप ने तमाम तौरैत हिफ़ज़ पढ़ दी । एक शख्स ने कहा कि मुझे अपने वालिद से मा'लूम हुवा कि बख्ते नस्र की सितम अंगेजियों के बा'द गिरिफ्तारी के ज़माने में मेरे दादा ने तौरैत एक जगह दफ़न कर दी थी उस का पता मुझे मा'लूम है, उस पते पर जुस्तजू कर के तौरैत का वोह मदफून् नुस्खा निकाला गया और हज़रते उज़ैर **عليه السلام** ने अपनी याद से जो तौरैत लिखाई थी उस से मुक़ाबला किया गया तो एक हर्फ़ का फ़र्क़ न था । (म) **541** : कि पहले छतें गिरीं फिर उन पर दीवारें आ पड़ीं ।

مَوْتِهَا ۱ فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ۲ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۳ قَالَ

मौत के बाद तो **अल्लाह** ने उसे मुर्दा रखा सो बरस फिर ज़िन्दा कर दिया फ़रमाया तू यहां कितना ठहरा अर्ज़ की

لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۴ قَالَ بَلْ لَبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانظُرْ إِلَى

दिन भर ठहरा होउंगा या कुछ कम फ़रमाया नहीं बल्कि तुझे सो बरस गुज़र गए और अपने

طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۵ وَانظُرْ إِلَى حِمَارِكَ ۶ وَلِنَجْعَلَكَ

खाने और पानी को देख कि अब तक बू न लाया और अपने गधे को देख (कि जिस की हड्डियां तक सलामत न रहीं) और यह इस लिये कि तुझे हम लोगों

آيَةً لِلنَّاسِ ۷ وَانظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنشِرُهَا ۸ ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا ۹

के वासिते निशानी करें और इन हड्डियों को देख क्यूंकर हम इन्हें उठान देते फिर इन्हें गोश्त पहनाते हैं

فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ ۱۰ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۱۱ وَإِذْ قَالَ

जब यह मुआमला उस पर ज़ाहिर हो गया बोला मैं खूब जानता हूँ कि **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है और जब अर्ज़ की

إِبْرَاهِيمَ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۱۲ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِنُ ۱۳ قَالَ بَلَىٰ

इब्राहीम ने ⁵⁴² ऐ रे मेरे मुझे दिखा दे तू क्यूंकर मुर्दे जिलाएगा फ़रमाया क्या तुझे यकीन नहीं ⁵⁴³ अर्ज़ की यकीन क्यूं नहीं

وَلَكِن لِّيَبْطِئَنَّ قَلْبِي ۱۴ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ

मगर यह चाहता हूँ कि मेरे दिल को क़रार आ जाए ⁵⁴⁴ फ़रमाया तो अच्छा चार परिन्दे ले कर अपने साथ

إِلَيْكَ ۱۵ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا مِّنْ أَدْعُمِنَ ۱۶ يَا تَبْيِئِكَ سَعِيًّا ۱۷

हिला ले ⁵⁴⁵ फिर उन का एक एक टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दे फिर उन्हें बुला वोह तेरे पास चले आएं पाउं से दौड़ते ⁵⁴⁶

542 : मुफ़स्सरीन ने लिखा है कि समुन्दर के किनारे एक आदमी मरा पड़ा था। ज़ुवर भाटे में समुन्दर का पानी चढ़ता उतरता रहता है, जब पानी चढ़ता तो मछलियां उस लाश को खातीं, जब उतर जाता तो जंगल के दरिन्दे खाते, जब दरिन्दे जाते तो परिन्दे खाते, हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** ने यह मुलाहज़ा फ़रमाया तो आप को शौक़ हुआ कि आप मुलाहज़ा फ़रमाएं कि मुर्दे किस तरह ज़िन्दा किये जाएंगे। आप ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया : या रब ! मुझे यकीन है कि तू मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाएगा और उन के अज्जा दरियाई जानवरों और दरिन्दों के पेट और परिन्दों के पोतों से जम्अ फ़रमाएगा, लेकिन मैं यह अजीब मन्ज़र देखने की आरजू रखता हूँ। मुफ़स्सरीन का एक कौल यह भी है कि जब **अल्लाह** तआला ने हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** को अपना ख़लील किया, मलकुल मौत हज़रते रब्बुल इज़्ज़त से इज़्ज़ ले कर आप को यह बिशारत सुनाने आए, आप ने बिशारत सुन कर **अल्लाह** की हम्द की और मलकुल मौत से फ़रमाया कि इस खुल्लत की अ़लामत क्या है ? उन्होंने ने अर्ज़ किया : यह कि **अल्लाह** तआला आप की दुआ कबूल फ़रमाए और आप के सुवाल पर मुर्दे ज़िन्दा करे। तब आप ने यह दुआ की। (ज़ान) **543** : **अल्लाह** तआला आ़लिमे ग़ैब व शहादत है उस को हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** के कमाले ईमानो यकीन का इल्म है बा वुजूद इस के यह सुवाल फ़रमाना कि क्या तुझे यकीन नहीं ? इस लिये है कि सामिईन को सुवाल का मक़सद मा'लूम हो जाए और वोह जान लें कि यह सुवाल किसी शको शूबे की बिना पर न था। (बिहादी व मल ग़ैर) **544** : और इन्तिज़ार की बेचैनी रफ़्अ हो। हज़रते इब्ने अब्बास **رضي الله تعالى عنهما** ने फ़रमाया : मा'ना यह है कि इस अ़लामत से मेरे दिल को तस्कीन हो जाए कि तूने मुझे अपना ख़लील बनाया। **545** : ताकि अच्छी तरह शनाख़्त हो जाए। **546** : हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** ने चार परिन्दे लिये : मोर, मुर्ग, कबूतर, कव्वा। उन्हें ब हुक्मे इलाही ज़ब्द

وَاعْلَمَ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦٠﴾ مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي

और जान रख कि **अल्लाह** ग़ालिब हिकमत वाला है उन की कहावत जो अपने माल **अल्लाह** की राह में

سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنْبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنبُلَةٍ مِائَةٌ

खर्च करते हैं⁵⁴⁷ उस दाने की तरह जिस ने उगाई सात बाले⁵⁴⁸ हर बाल में से

حَبَّةٌ وَاللَّهُ يُضِعُّ لِمَنْ يُشَاءُ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦١﴾ الَّذِينَ

दाने⁵⁴⁹ और **अल्लाह** इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और **अल्लाह** वुस्तत वाला इल्म वाला है वोह जो

يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنْفَقُوا مَنًّا وَلَا

अपने माल **अल्लाह** की राह में खर्च करते हैं⁵⁵⁰ फिर दिये पीछे न एहसान रखें न

أَذَىٰ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

तक्लीफ दें⁵⁵¹ उन का नेग (अज्रो सवाब) उन के रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न

يَحْزَنُونَ ﴿٣٢٢﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَا

कुछ ग़म अच्छी बात कहना और दर गुज़र करना⁵⁵² उस ख़ैरात से बेहतर है जिस के बा'द

किया, उन के पर उखाड़े और क़ीमा कर के उन के अज्जा बाहम खल्ल कर दिये और उस मज्मूए के कई हिस्से किये। एक एक हिस्सा एक एक पहाड़ पर रखा और सर सब के अपने पास महफूज़ रखे फिर फ़रमाया : चले आओ ! हुक्मे इलाही से। यह फ़रमाते ही वोह अज्जा उड़े और हर हर जानवर के अज्जा अ़लाहदा अ़लाहदा हो कर अपनी तरतीब से जम्अ हुए और परिन्दों की शकलें बन कर अपने पाउं से दौड़ते हाज़िर हुए और अपने अपने सरों से मिल कर बिऐनिही पहले की तरह मुकम्मल हो कर उड़ गए। **547** : ख़्वाह खर्च करना वाजिब हो या नफ़्त, तमाम अब्बाबे ख़ैर को आम है ख़्वाह किसी तालिबे इल्म को किताब ख़रीद कर दी जाए या कोई शिफ़ाख़ाना बना दिया जाए या अम्वात के ईसाले सवाब के लिये तीजे, दसवें, बीसवें, चालीसवें के तरीके पर मसाकीन को खाना ख़िलाया जाए। **548** : उगाने वाला हकीकत में **अल्लाह** ही है दाने की तरह निस्वत मजाज़ी है। **मसअला** : इस से मा'लूम हुवा कि इस्नादे मजाज़ी जाइज़ है जब कि इस्नाद करने वाला ग़ैरे खुदा को "मुस्तक़िल फ़ितसरफ़" ए'तिक़ाद न करता हो। इसी लिये यह कहना जाइज़ है कि यह दवा नाफ़ेअ है, यह मुज़िर है, यह दर्द की दाफ़ेअ है, मां बाप ने पाला, आलिम ने गुमराही से बचाया, बुजुर्गों ने हाज़त रवाई की वग़ैरा, सब में इस्नादे मजाज़ी है और मुसल्मान के ए'तिक़ाद में फ़ाइले हकीकी सिर्फ़ **अल्लाह** तआला है बाकी सब वसाइल। **549** : तो एक दाने के सात सो दाने हो गए, इसी तरह राहे खुदा में खर्च करने से सात सो गुना अज़्र हो जाता है। **550** शाने नुज़ूल : यह आयत हज़रते उस्माने ग़नी व हज़रते अब्दुरहमान बिन औफ़ **رضي الله تعالى عنه** के हक़ में नाज़िल हुई। हज़रते उस्मान **رضي الله تعالى عنه** ने ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ पर लश्करे इस्लाम के लिये एक हज़ार ऊंट मअ सामान पेश किये और अब्दुरहमान बिन औफ़ **رضي الله تعالى عنه** ने चार हज़ार दिरहम सदके के बारगाहे रिसालत में हाज़िर किये और अर्ज़ किया कि मेरे पास कुल आठ हज़ार दिरहम थे, निस्फ़ मैं ने अपने अहलो इयाल के लिये रख लिये और निस्फ़ राहे खुदा में हाज़िर हैं, सय्यिदे आलम **صلّى الله عليه وسلّم** ने फ़रमाया : जो तुम ने दिये और जो तुम ने रखे **अल्लाह** तआला दोनों में बरकत फ़रमाए। **551** : एहसान रखना तो यह कि देने के बा'द दूसरों के सामने इज़हार करें कि हम ने तेरे साथ ऐसे ऐसे सुलूक किये और उस को मुकद्दर (रन्जीदा व ग़मगीन) करें और तक्लीफ़ देना यह कि उस को आर दिलाएं कि तू नादार था, मुफ़िलस था, मजबूर था, निकम्मा था, हम ने तेरी ख़बरगीरी की या और तरह दबाव दें, यह मन्मूअ फ़रमाया गया। **552** : या'नी अगर साइल को कुछ न दिया जाए तो उस से अच्छी बात कहना और खुश खुल्की के साथ जवाब देना जो उस को ना गवार न गुज़रे और अगर वोह सुवाल में इसरार करे या ज़बान दराज़ी करे तो उस से दर गुज़र करना।

أَذَى ۱ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ ﴿۳۳۳﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَبْطُلُوا

सताना हो⁵⁵³ और **اللَّهُ** बे परवा हिल्लम वाला है ऐ ईमान वालो अपने सदके

صَدَقْتُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَى ۱ كَالَّذِي يُنْفِقُ مَالَهُ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا

बातिल न कर दो एहसान रख कर और ईजा दे कर⁵⁵⁴ उस की तरह जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिये खर्च करे और

يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۱ فَشَلَّةٌ كَسَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ

اللَّهُ और कियामत पर ईमान न लाए तो उस की कहावत ऐसी है जैसे एक चट्टान कि उस पर मिट्टी है

فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا ۱ لَا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا ۱

अब उस पर जोर का पानी पड़ा जिस ने उसे निरा पथर कर छोड़ा⁵⁵⁵ अपनी कमाई से किसी चीज पर काबू न पाएंगे

وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿۳۳۴﴾ وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ

और **اللَّهُ** काफ़िरों को राह नहीं देता और उन की कहावत जो अपने माल

أَمْوَالِهِمْ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَتَشْبِيهَا مِمَّنْ أَنْفُسِهِمْ كَسَلِ جَنَّةٍ

اللَّهُ की रिजा चाहने में खर्च करते हैं और अपने दिल जमाने को⁵⁵⁶ उस बाग़ की सी है

بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ فَاتَتْ أَكْطَاهَا ضِعْفَيْنِ ۱ فَإِنْ لَمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ

जो भूड़ (रेतली ज़मीन) पर हो उस पर जोर का पानी पड़ा तो दूने मेवे लाया फिर अगर जोर का मीह उसे न पहुंचे

فَطَلٌّ ۱ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿۳۳۵﴾ أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ

तो ओस काफ़ी है⁵⁵⁷ और **اللَّهُ** तुम्हारे काम देख रहा है⁵⁵⁸ क्या तुम में कोई इसे पसन्द रखेगा⁵⁵⁹ कि उस के पास

جَنَّةٌ مِّنْ مَّنْحَلٍ ۱ وَأَعْنَابٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۱ لَهُ فِيهَا مِنْ كُلِّ

एक बाग़ हो खजूरों और अंगूरों का⁵⁶⁰ जिस के नीचे नदियां बहतीं उस के लिये उस में हर किस्म के

553 : आर दिला कर या एहसान जता कर या और कोई तक्लीफ़ पहुंचा कर । 554 : या'नी जिस तरह मुनाफ़िक़ को रिजाए इलाही मक्सूद नहीं होती, वोह अपना माल रियाकारी के लिये खर्च कर के जाएअ कर देता है इस तरह तुम एहसान जता कर और ईजा दे कर अपने सदकात का अन्न जाएअ न करो । 555 : यह मुनाफ़िक़ रियाकार के अमल की मिसाल है कि जिस तरह पथर पर मिट्टी नज़र आती है लेकिन बारिश से वोह सब दूर हो जाती है खाली पथर रह जाता है, येही हाल मुनाफ़िक़ के अमल का है कि देखने वालों को मा'लूम होता है कि अमल है और रोज़े कियामत वोह तमाम अमल बातिल होंगे क्यूं कि रिजाए इलाही के लिये न थे । 556 : राहे खुदा में खर्च करने पर । 557 : यह मोमिने मुख़्तस के आ'माल की एक मिसाल है कि जिस तरह बुलन्द खित्ते की बेहतर ज़मीन का बाग़ हर हाल में ख़ूब फलता है ख़्वाह बारिश कम हो या ज़ियादा, ऐसे ही बा इख़्लास मोमिन का सदका और इन्फ़ाक़ ख़्वाह कम हो या ज़ियादा हो, **اللَّهُ** तअ़ाला उस को बढ़ाता है । 558 : और तुम्हारी निव्यत व इख़्लास को जानता है । 559 : या'नी कोई पसन्द न करेगा क्यूं कि यह बात किसी आक़िल के गवारा करने के काबिल नहीं है । 560 : गर्चे उस बाग़ में भी किस्म किस्म के दरख़्त होंगे मगर खजूर और अंगूर का ज़िक़्र इस लिये किया कि येह नफ़ीस मेवे हैं ।

الشَّرَاتِ ۱ وَأَصَابَهُ الْكِبْرُ وَلَهُ ذُرِّيَةٌ ضُعْفَاءٌ ۲ فَاصَابَهَا إِعْصَارٌ ۳

फलों से है⁵⁶¹ और उसे बुढ़ापा आया⁵⁶² और उस के नातुवां बच्चे हैं⁵⁶³ तो आया उस पर एक बगूला (इन्तिहाई तेज़ हवा का चक्कर)

فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ۴ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ ۵

जिस में आग थी तो जल गया⁵⁶⁴ ऐसा ही बयान करता है **اللَّهُ** तुम से अपनी आयतें कि कहीं तुम

تَتَفَكَّرُونَ ۶ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ ۷

ध्यान लगाओ⁵⁶⁵ ऐ ईमान वालो अपनी पाक कमाइयों में से कुछ दो⁵⁶⁶

وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ ۸ وَلَا تَيَسُّوا الْخَبِيثَ مِنْهُ ۹

और उस में से जो हम ने तुम्हारे लिये ज़मीन से निकाला⁵⁶⁷ और ख़ास नाक़िस का इरादा न करो कि

تُنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِأَخِيذِيهِ إِلَّا أَنْ تُغِيضُوا فِيهِ ۱۰ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ ۱۱

दो तो उस में से⁵⁶⁸ और तुम्हें मिले तो न लोगे जब तक उस में चश्म पोशी न करो और जान रखो कि **اللَّهُ**

غَنِيٌّ حَيِيدٌ ۱۲ الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمُ بِالْفَحْشَاءِ ۱۳

बे परवा सराहा गया है शैतान तुम्हें अन्देशा दिलाता है⁵⁶⁹ मोहताजी का और हुक्म देता है बे हयाई का⁵⁷⁰

وَاللَّهُ يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً مِنْهُ وَفَضْلًا ۱۴ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۱۵ يُؤْتِي ۱۶

और **اللَّهُ** तुम से वा'दा फ़रमाता है बख़्शिश और फ़ज़ल का⁵⁷¹ और **اللَّهُ** वुस्अत वाला इल्म वाला है **اللَّهُ**

561 : या'नी वोह बाग़ फ़रहत अंगेज़ व दिलकुशा भी है और नाफ़ेअ और उम्दा जाएदाद भी । **562** : जो हाज़त का वक़्त होता है और आदमी कस्बो मआश के काबिल नहीं रहता । **563** : जो कमाने के काबिल नहीं और उन की परवरिश की हाज़त है । ग़रज़ वक़्त निहायत शिद्दते हाज़त का है और दारो मदर सिर्फ़ बाग़ पर और बाग़ भी निहायत उम्दा है । **564** : वोह बाग़ । तो उस वक़्त उस के रन्जो ग़म और हसरतो यास की क्या इन्तिहा है, येही हाल उस का है जिस ने आ'माले हसना तो किये हों मगर रिज़ाए इलाही के लिये नहीं बल्कि रिया की ग़रज़ से, और वोह इस गुमान में हो कि मेरे पास नेकियों का ज़ख़ीरा है मगर जब शिद्दते हाज़त का वक़्त या'नी कियामत का दिन आए तो **اللَّهُ** तआला उन आ'माल को ना मक्बूल कर दे, उस वक़्त उस को कितना रन्ज और कितनी हसरत होगी । एक रोज़ हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** ने सहाबाए किराम से फ़रमाया कि आप के इल्म में येह आयत किस बाब में नाज़िल हुई ? हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि येह मिसाल है एक दौलत मन्द शख़्स के लिये जो नेक अमल करता हो फिर शैतान के इत्ना से गुमराह हो कर अपनी तमाम नेकियों को जाएअ कर दे । (**مدارك و مفاتيح**) **565** : और समझो कि दुन्या फ़ानी और आक़िबत आनी है । **566 मस्अला** : इस से कस्ब की इबाहत और अम्वाले तिजारत में ज़कात साबित होती है । (**غرائب و معجزات**) येह भी हो सकता है कि आयत सदक़ए नाफ़िला व फ़र्जिया दोनों को आ़म हो । **567** (**تفسير عمري**) ख़्वाह वोह ग़ल्ले हों या फ़ल या मआदिन वग़ैरा । **568 शाने नुज़ूल** : बा'ज़ लोग ख़राब माल सदक़े में देते थे उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई । **मस्अला** : मुसदक़ या'नी सदक़ा वुसूल करने वाले को चाहिये कि वोह मुतवस्सित् माल ले, न बिल्कुल ख़राब न सब से आ'ला । **569** : कि अगर ख़र्च करोगे, सदक़ा दोगे तो नादार हो जाओगे । **570** : या'नी बुख़्त का और ज़कात व सदक़ा न देने का । इस आयत में येह लतीफ़ा है कि शैतान किसी तरह बुख़्त की ख़ूबी ज़ेहन नशीन नहीं कर सकता इस लिये वोह येही करता है कि ख़र्च करने से नादारी का अन्देशा दिला कर रोके । आज कल जो लोग ख़ैरात को रोकने पर मुसिर (डटे हुए) हैं वोह भी इसी हीले से काम लेते हैं । **571** : सदक़ा देने पर और ख़र्च करने पर ।

الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۗ ط

हिक्मत देता है⁵⁷² जिसे चाहे और जिसे हिक्मत मिली उसे बहुत भलाई मिली

وَمَا يَذْكُرُ إِلَّا أُولَ الْأَلْبَابِ ۖ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ نَفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ

और नसीहत नहीं मानते मगर अक्ल वाले और तुम जो खर्च करो⁵⁷³ या मन्नत

مِنْ نَّذْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهُ ۗ ط وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۖ ۚ (۲۴۰) ۚ إِنَّ تَبَدُّوا

मानो⁵⁷⁴ **अल्लाह** को उस की खबर है⁵⁷⁵ और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं अगर खैरात

الصَّدَقَاتِ فَيَعْمَاهِيَ ۚ وَإِنْ تَخَفُوهَا وَأُتُوها الْفُقَرَاءُ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ ۗ ط

अलानिया दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपा कर फ़कीरों को दो येह तुम्हारे लिये सब से बेहतर है⁵⁷⁶

وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّئَاتِكُمْ ۗ ط وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۖ ۚ (۲۴۱) ۚ لَيْسَ

और इस में तुम्हारे कुछ गुनाह घटेंगे और **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की खबर है उन्हें राह

عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۗ ط وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ

देना तुम्हारे जिम्मे लाजिम नहीं⁵⁷⁷ हां **अल्लाह** राह देता है जिसे चाहता है और तुम जो अच्छी चीज़ दो

خَيْرٍ فَلَا نُفْسِكُمْ ۗ ط وَمَا تُنْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ ۗ ط وَمَا تُنْفِقُوا

तो तुम्हारा ही भला है⁵⁷⁸ और तुम्हें खर्च करना मुनासिब नहीं मगर **अल्लाह** की मरज़ी चाहने के लिये और जो माल दो

مِنْ خَيْرٍ يُؤَفِّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ۖ ۚ (۲۴۲) ۚ لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ

तुम्हें पूरा मिलेगा और नुक़सान न दिये जाओगे उन फ़कीरों के लिये जो

572 : हिक्मत से या कुरआनो हदीस व फ़िक्ह का इल्म मुआद है या तक्वा या नुबुव्वत । **573** : नेकी में ख़ाह बदी में । **574** : ताअत की या गुनाह की । “नज़्र” उर्फ़ में हदिय्या और पेशकश को कहते हैं और शरअ में नज़्र इबादत और कुर्बते मक्सूदा है, इसी लिये अगर किसी ने गुनाह करने की नज़्र की तो वोह सहीह नहीं हुई । नज़्र ख़ास **अल्लाह** तआला के लिये होती है और येह जाइज़ है कि **अल्लाह** के लिये नज़्र करे और किसी वली के आस्ताने के फुकरा को नज़्र के सर्फ़ का महल (खर्च करने की जगह) मुकरर करे, मसलन किसी ने येह कहा : या रब ! मैं ने नज़्र मानी कि अगर तू मेरा फुलां मक्सद पूरा कर दे कि फुलां बीमार को तन्दुरुस्त कर दे तो मैं फुलां वली के आस्ताने के फुकरा को खाना खिलाऊं या वहां के खुद्दाम को रुपियां पैसा दू या उन की मस्जिद के लिये तेल या बोरिया हाज़िर करूं तो येह नज़्र जाइज़ है । **575** : वोह तुम्हें उस का बदला देगा । **576** : सदका ख़ाह फ़र्ज़ हो या नफ़ल जब इख़लास से **अल्लाह** के लिये दिया जाए और रिया से पाक हो तो ख़ाह ज़ाहिर कर के दें या छुपा कर दोनों बेहतर हैं । **मसअला** : लेकिन सदका फ़र्ज़ का ज़ाहिर कर के देना अपफ़ज़ल है और नफ़ल का छुपा कर । **मसअला** : और अगर नफ़ल सदका देने वाला दूसरों को ख़ैरात की तरगीब देने के लिये ज़ाहिर कर के दे तो येह इच्चार भी अपफ़ज़ल है । **577** : आप बशीरो नज़ीर व दाई बना कर भेजे गए हैं, आप का फ़र्ज़ दा'वत पर तमाम हो जाता है, इस से ज़ियादा जोहद (कोशिश करना) आप पर लाजिम नहीं । **शाने नुज़ूल** : कुब्ले इस्लाम मुसल्मानों की यहूद से रिशतेदारियां थीं इस वच्ह से वोह उन के साथ सुलूक किया करते थे, मुसल्मान होने के बा'द उन्हे यहूद के साथ सुलूक करना ना गवार होने लगा और उन्हों ने इस लिये हाथ रोकना चाहा कि उन के इस तर्ज़े अमल से यहूद इस्लाम की तरफ़ माइल हों, इस पर येह आयत नाज़िल हुई । **578** : तो दूसरों पर इस का एहसान न जताओ ।

أُحْصِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمْ

राहे खुदा में रोके गए⁵⁷⁹ ज़मीन में चल नहीं सकते⁵⁸⁰ नादान उन्हें

الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُمْ بِسَيِّئِهِمْ لَا يَسْأَلُونَ

तवंगर समझे बचने के सबब⁵⁸¹ तू उन्हें उन की सूत से पहचान लेगा⁵⁸² लोगों से सुवाल

النَّاسِ الْخَافِطُ وَمَا تَنْفَقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۝ ٢٤٢

नहीं करते कि गिड़गिड़ाना पड़े और तुम जो ख़ैरात करो **अल्लाह** उसे जानता है वोह जो

يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ

अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे और ज़ाहिर⁵⁸³ उन के लिये उन का नेग (अज़्र) है

عِنْدَ رَبِّهِمْ ۝ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ ٢٤٣

उन के रब के पास उन को न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म वोह जो

يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ

सूद खाते हैं⁵⁸⁴ क़ियामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वोह जिसे आसेब ने

579 : या'नी सदक़ाते मज़क़ूरा जो आयए ” وَمَا تَنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ ” में ज़िक्र हुए उन का बेहतरीन मसरफ़ वोह फ़ुकरा हैं जिन्हों ने अपने नुफ़ूस को जिहाद व ताअते इलाहा पर रोका। **शाने नुज़ूल** : येह आयत अहले सुफ़फ़ा के हक़ में नाज़िल हुई। इन हज़रात की ता'दाद चार सो के करीब थी, येह हिज़रत कर के मदीनए तय्यिबा हाज़िर हुए थे, न यहां इन का मकान था, न कबीला कुम्बा, न इन हज़रात ने शादी की थी, इन के तमाम अवक़ात इबादत में सफ़ होते थे, रात में कुरआने करीम सीखना, दिन में जिहाद के काम में रहना। आयत में इन के बा'ज़ औसाफ़ का बयान है। **580** : क्यूं कि उन्हें दीनी कामों से इतनी फुरसत नहीं कि वोह चल फिर कर कस्बे मआश कर सकें। **581** : या'नी चूंकि वोह किसी से सुवाल नहीं करते इस लिये ना वाकिफ़ लोग उन्हें मालदार खयाल करते हैं। **582** : कि मिज़ाज में तवाज़ुअ व इन्किसारी है, चेहरों पर जो'फ़ के आसार हैं, भूक से रंग ज़र्द पड़ गए हैं। **583** : या'नी राहे खुदा में खर्च करने का निहायत शौक़ रखते हैं और हर हाल में खर्च करते रहते हैं। **शाने नुज़ूल** : येह आयत हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رضي الله عنه के हक़ में नाज़िल हुई जब कि आप ने राहे खुदा में चालीस हज़ार दीनार खर्च किये थे, दस हज़ार रात में और दस हज़ार दिन में और दस हज़ार पोशीदा और दस हज़ार ज़ाहिर। एक कौल येह है कि येह आयत हज़रत अलियये मुर्तज़ा رضي الله تعالى عنه के हक़ में नाज़िल हुई, जब कि आप के पास फ़क़त चार दिरहम थे और कुछ न था। आप ने उन चारों को ख़ैरात कर दिया, एक रात में, एक दिन में, एक को पोशीदा, एक को ज़ाहिर। **फ़ाएदा** : आयते करीमा में नफ़क़ए लैल को नफ़क़ए नहार (रात के खर्च करने को दिन के खर्च करने) पर और नफ़क़ए सिर को नफ़क़ए अलानिया (छुपा कर खर्च करने को दिखा कर खर्च करने) पर मुक़द्दम फ़रमाया गया। इस में इशारा है कि छुपा कर देना ज़ाहिर कर के देने से अफ़ज़ल है। **584** : इस आयत में सूद की हुरमत और सूद ख़ारों की शामत का बयान है। सूद को ह़राम फ़रमाने में बहुत हिक्मतें हैं, बा'ज़ उन में से येह है कि सूद में जो ज़ियादती ली जाती है वोह मुआवज़ए मालिया में एक मिक्दारे माल का बिग़ैर बदल व इवज़ के लेना है येह सरीह न इन्साफ़ी है। **दुवुम** सूद का रवाज तिजारतों को ख़राब करता है कि सूद ख़ार को बे मेहनत माल का हासिल होना तिजारत की मशक्कतों और ख़तरों से कहीं ज़ियादा आसान मा'लूम होता है और तिजारतों की कमी इन्सानी मुआशरत को ज़रर पहुंचाती है। **सिवुम** सूद के रवाज से बाहमी मुवदत के सुलूक को नुक़सान पहुंचता है कि जब आदमी सूद का आदी हुवा तो वोह किसी को कर्ज़ हसन से इमदाद पहुंचाना गवारा नहीं करता। **चहारुम** सूद से इन्सान की तबीअत में दरिन्दों से ज़ियादा बे रहमी पैदा होती है और सूद ख़ार अपने मदयून (मक्रूजों) की तबाही व बरबादी का ख़्वाहिश मन्द रहता है। इस के इलावा भी सूद में और बड़े बड़े नुक़सान हैं और शरीअत की मुमानअत ऐन हिक्मत है। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि रसूले करीम صلّى الله عليه وسلّم ने सूद

الشَّيْطَانُ مِنَ الْبَسِّ ۖ ذَلِكِ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا ۗ

छू कर मख्बूत बना दिया हो⁵⁸⁵ यह इस लिये कि उन्होंने ने कहा बैअ भी तो सूद ही के मानिन्द है

وَاحْلُ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا ۗ فَمَنْ جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَبِّهِ

और **अल्लाह** ने हलाल किया बैअ और हुराम किया सूद तो जिसे उस के रब के पास से नसीहत आई

فَأَنَّهَا فَلَهُ مَا سَلَفَ ۗ وَأَمْرُهُ إِلَى اللَّهِ ۗ وَمَنْ عَادَ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ

और वोह बाज रहा तो उसे हलाल है जो पहले ले चुका⁵⁸⁶ और उस का काम खुदा के सिपुर्द है⁵⁸⁷ और जो अब ऐसी हरकत करेगा तो वोह

النَّارِ ۗ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٤٥﴾ يَبْحَثُ اللَّهُ الرِّبَا وَيُرِي الصَّدَقَاتِ ۗ

दोजखी है वोह उस में मुद्दतों रहेगे⁵⁸⁸ **अल्लाह** हलाक करता है सूद को⁵⁸⁹ और बढ़ाता है खैरात को⁵⁹⁰

وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ ﴿٢٤٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا

और **अल्लाह** को पसन्द नहीं आता कोई ना शुक्र बड़ा गुनहगार बेशक वोह जो ईमान लाए और अच्छे

الصَّالِحَاتِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ

काम किये और नमाज काइम की और जकात दी उन का नेग (अज्रो सवाब) उन के रब के पास है

وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٤٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا

और न उन्हें कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से

اللَّهِ وَذُرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٤٨﴾ فَإِن لَّمْ

डरो और छोड़ दो जो बाकी रह गया है सूद अगर मुसल्मान हो⁵⁹¹ फिर अगर ऐसा

ख़ार और इस के कार परदाज और सूदी दस्तावेज के कातिब और इस के गवाहों पर ला'नत की और फ़रमाया : वोह सब गुनाह में बराबर हैं ।

585 : मा'ना येह हैं कि जिस तरह आसेब ज़दा सीधा खड़ा नहीं हो सकता गिरता पड़ता चलता है क़ियामत के रोज़ सूद ख़ार का ऐसा ही

हाल होगा कि सूद से उस का पेट बहुत भारी और बोझल हो जाएगा और वोह उस के बोझ से गिर गिर पड़ेगा । सईद बिन जुबैर **رضي الله تعالى عنه**

ने फ़रमाया कि येह अ़लामत उस सूद ख़ार की है जो सूद को हलाल जाने । **586** : या'नी हुरमत नाज़िल होने से क़ब्ल जो लिया उस पर

मुआख़जा नहीं । **587** : जो चाहे अम्र फ़रमाए, जो चाहे मन्मूअ व हुराम करे, बन्दे पर उस की इताअत लाज़िम है । **588** मस्अला : जो सूद

को हलाल जाने वोह काफ़िर है हमेशा जहन्म में रहेगा क्यूं कि हर एक हुरामे क़र्ई का हलाल जानने वाला काफ़िर है । **589** : और उस को

बरकत से महरूम करता है । हज़रते इब्ने अब्बास **رضي الله تعالى عنه** ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला उस से न सदका क़बूल करे, न हज़, न जिहाद,

न सिला (रिशतेदारों से हुम्ने सुलूक करना) । **590** : उस को ज़ियादा करता है और उस में बरकत फ़रमाता है दुन्या में और आख़िरत में उस

का अज्रो सवाब बढ़ाता है । **591** शाने नुज़ूल : येह आयत उन अस्ह़ाब के हक़ में नाज़िल हुई जो सूद की हुरमत नाज़िल होने से क़ब्ल सूदी

लैन दैन करते थे और उन की गिरां क़द्र सूदी रक़में दूसरों के ज़िम्मे बाकी थीं । इस में हुक्म दिया गया कि सूद की हुरमत नाज़िल होने के बा'द

साबिक़ के मुतालाबे भी वाजिबुत्तर्क हैं और पहला मुक़रर किया हुवा सूद भी अब लेना जाइज़ नहीं ।

تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَإِن تُبْتُمْ فَلَكُمْ

न करो तो यकीन कर लो **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल से लड़ाई का⁵⁹² और अगर तुम तौबा करो तो अपना

رُءُوسُ أَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ ﴿٢٤٩﴾ وَإِن كَانَ ذُو

अस्ल माल ले लो न तुम किसी को नुकसान पहुंचाओ⁵⁹³ न तुम्हें नुकसान हो⁵⁹⁴ और अगर कर्जदार

عُسْرَةَ فَبِظَرْفَةٍ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۗ وَأَن تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ

तंगी वाला है तो उसे मोहलत दो आसानी तक और कर्ज उस पर बिल्कुल छोड़ देना तुम्हारे लिये और भला है अगर

تَعْلَمُونَ ﴿٢٥٠﴾ وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَىٰ اللَّهِ ۚ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ

जानो⁵⁹⁵ और डरो उस दिन से जिस में **अल्लाह** की तरफ फिरोगे और हर जान को

نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٥١﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا

उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर जुल्म न होगा⁵⁹⁶ ऐ ईमान वालो जब

تَدَايَيْتُمْ بِدَيْنٍ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوا ۗ وَلْيَكْتُب بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ

तुम एक मुकरर मुदत तक किसी दैन का लेन देन करो⁵⁹⁷ तो उसे लिख लो⁵⁹⁸ और चाहिये कि तुम्हारे दरमियान कोई लिखने वाला

بِالْعَدْلِ ۚ وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَن يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ ۚ فَلْيَكْتُبْ

ठीक ठीक लिखे⁵⁹⁹ और लिखने वाला लिखने से इन्कार न करे जैसा कि उसे **अल्लाह** ने सिखाया है⁶⁰⁰ तो उसे लिख देना चाहिये

592 : यह वईदो तहदीद में मुबालगा व तशदीद है, किस की मजाल कि **अल्लाह** और उस के रसूल से लड़ाई का तसव्वुर भी करे, चुनान्चे उन अस्हाब ने अपने सूदी मुतालबे छोड़े और यह अर्ज किया कि **अल्लाह** और उस के रसूल से लड़ाई की हमें क्या ताब ! और ताइब हुए ।

593 : जियादा ले कर । **594** : रासुल माल घटा कर । **595** : कर्जदार अगर तंगदस्त या नादार हो तो उस को मोहलत देना या कर्ज का जुञ्च या कुल मुआफ कर देना सबबे अत्रे अज़ीम है । मुस्लिम शरीफ की हदीस है सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फरमाया : जिस ने तंगदस्त को मोहलत दी या उस का कर्जा मुआफ किया **अल्लाह** तआला उस को अपना सायए रहमत अता फरमाएगा जिस रोज उस के साए के सिवा कोई साया न होगा । **596** : या'नी न उन की नेकियां घटाई जाएं न बदियां बढ़ाई जाएं । हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** से मरवी है कि यह सब से आखिरी आयत है जो हज़ूर पर नाज़िल हुई । इस के बा'द हज़ुरे अक्दस **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** इक्कीस रोज दुन्या में तशरीफ फरमा रहे और **رَبِوَا** एक कौल में नव शब और एक में सात, लेकिन शअबी ने हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** से यह रिवायत की है कि सब से आखिर आयते **رَبِوَا** नाज़िल हुई । **597** : ख़्वाह वोह दैन मबीअ हो या समन, हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** ने फरमाया कि इस से बैए सलम मुराद है । बैए सलम यह है कि किसी चीज़ को पेशगी क्रीमत ले कर फरोख्त किया जाए और मबीअ मुशतरी (खरीदार) को सिपुर्द करने के लिये एक मुदत मुअय्यन कर ली जाए । इस बैअ के जवाज़ के लिये जिन्स, नौअ, सिफ़त, मिक्दार, मुदत और मकाने अदा और मिक्दारे रासुल माल इन चीज़ों का मा'लूम होना शर्त है । **598** : यह लिखना मुस्तहब है । **फ़ाएदा** इस का यह है कि भूलचूक और मदयून के इन्कार का अन्देशा नहीं रहता । **599** : अपनी तरफ से कोई कमी बेशी न करे, न फरीकैन में से किसी की रू व रिआयत । **600** : हासिल मा'ना यह कि कोई कातिब लिखने से मन्अ न करे, जैसा कि **अल्लाह** तआला ने इस को वसीक़ा नवीसी (अहदो पैमान लिखने) का इल्म दिया, बे तग़यीरो तब्दील दियायत व अमानत के साथ लिखे । यह किताबत एक कौल पर फर्जे किफ़ाया है, और एक कौल पर फर्जे ऐन बशर्त फ़रागे कातिब जिस सूत में इस के सिवा और न पाया जाए, और एक कौल पर मुस्तहब, क्यूं कि इस में मुसल्मान की हाजत बरआरी (हाजत पूरी करने) और ने'मते इल्म का शुक्र है, और एक कौल यह है कि पहले यह किताबत फर्ज थी फिर "لَا يُضَارُّ كَاتِبٌ" से मन्सूख हुई ।

وَلْيُسَلِّلِ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلِيَّتِي اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ

और जिस पर हक आता है वोह लिखाता जाए और **अब्लाह** से डरे जो उस का रब है और हक में से कुछ रख न

شَيْئًا ۖ فَإِنْ كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ

छोड़े फिर जिस पर हक आता है अगर बे अक्ल या नातुवां हो या लिखा न

أَنْ يُسَلِّ هُوَ فَلْيُسَلِّ وَلِيَّهُ بِالْعَدْلِ ۖ وَأَسْتَشْهِدُ وَأَشْهَدَ بَيْنَ مَنْ

सके⁶⁰¹ तो उस का वली इन्साफ से लिखाए और दो गवाह कर लो अपने

رِّجَالِكُمْ ۖ فَإِنْ لَمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتْنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ

मर्दों में से⁶⁰² फिर अगर दो मर्द न हों⁶⁰³ तो एक मर्द और दो औरतें ऐसे गवाह जिन को

مِنَ الشُّهَدَاءِ أَنْ تَضِلَّ إحدَاهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحدَاهُمَا الْأُخْرَى ۖ

पसन्द करो⁶⁰⁴ कि कहीं उन में एक औरत भूले तो उस एक को दूसरी याद दिलावे

وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَاءُ إِذَا مَا دُعُوا ۖ وَلَا تَسْمَؤُا ۖ أَنْ تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا

और गवाह जब बुलाए जाएं तो आने से इन्कार न करें⁶⁰⁵ और इसे भारी न जानो कि दैन छोटा हो

أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ أَجَلِهِ ۖ ذَلِكُمْ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ

या बड़ा उस की मीआद तक लिखत कर लो यह **अब्लाह** के नज्दीक ज़ियादा इन्साफ की बात है और इस में गवाही खूब ठीक रहेगी

وَأَدْنَىٰ ۖ أَلَّا تَرْتَابُوا ۖ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيرُ وَنَهَا

और यह इस से करीब है कि तुम्हें शुबा न पड़े मगर यह कि कोई सरे दस्त का सौदा दस्त ब दस्त

601 : या'नी अगर मदयून मजून या नाकिसुल अक्ल या बच्चा या शैखे फ़ानी हो या गुंगा होने या जबान न जानने की वजह से अपने मुद्दा का बयान न कर सकता हो। **602** : गवाह के लिये हुरिय्यत व बुलूग़ मअ इस्लाम शर्त है। कुफ़्फ़र की गवाही सिर्फ़ कुफ़्फ़र पर मक्बूल है।

603 मस्अला : तन्हा औरतों की शहादत जाइज़ नहीं ख़्वाह वोह चार क्यूं न हों मगर जिन उमूर पर मर्द मुत्तलअ नहीं हो सकते जैसे कि बच्चा जनना, बाकिरा होना और निसाई उयूब उन में एक औरत की शहादत भी मक्बूल है। **मस्अला** : हुदूद व किसास में औरतों की शहादत बिल्कुल मो'तबर नहीं, सिर्फ़ मर्दों की शहादत ज़रूरी है। इस के सिवा और मुआमलात में एक मर्द और दो औरतों की शहादत भी मक्बूल है।

604 : जिन का आदिल होना तुम्हें मा'लूम हो और जिन के सालेह होने पर तुम ए'तिमाद रखते हो। **605 मस्अला** : इस आयत से मा'लूम हुवा कि अदाए शहादत फ़र्ज़ है। जब मुद्दई गवाहों को तलब करे तो उन्हें गवाही का छुपाना जाइज़ नहीं। यह हुकम हुदूद के सिवा और उमूर में है, लेकिन हुदूद में गवाह को इज़हार व इख़फ़ा का इख़्तियार है बल्कि इख़फ़ा अफ़ज़ल है। हदीस शरीफ़ में है : सथियदे आलम

وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जो मुसल्मान की पर्दापोशी करे **अब्लाह** तबारक व तआला दुन्या व आख़िरत में उस की सत्तारी करेगा, लेकिन चोरी में माल लेने की शहादत देना वाजिब है ताकि जिस का माल चोरी किया गया है उस का हक़ तलफ़ न हो। गवाह इतनी एहतियात कर सकता है कि चोरी का लफ़ज़ न कहे, गवाही में येह कहने पर इक्तिफ़ा करे कि येह माल फुलां शख़्स ने लिया है।

بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا ۗ وَأَشْهَدُوا إِذَا

(हाथों हाथ) हो तो उस के न लिखने का तुम पर गुनाह नहीं⁶⁰⁶ और जब खरीदो फ़रोख़्त

تَبَايَعْتُمْ ۖ وَلَا يُضَارُّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ ۗ وَإِنْ تَفَعَّلُوا فَإِنَّهُ

करो तो गवाह कर लो⁶⁰⁷ और न किसी लिखने वाले को ज़र दिया जाए न गवाह को (या न लिखने वाला ज़र दे न गवाह)⁶⁰⁸ और जो ऐसा करो तो येह

فُسُوقٌ بِكُمْ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۗ وَيُعَلِّمُكُمُ اللَّهُ ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ

तुम्हारा फ़िस्क़ होगा और **अल्लाह** से डरो और **अल्लाह** तुम्हें सिखाता है और **अल्लाह** सब कुछ

عَلِيمٌ ﴿۲۸۲﴾ وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهْنِ مَقْبُوضَةً ۗ

जानता है और अगर तुम सफ़र में हो⁶⁰⁹ और लिखने वाला न पाओ⁶¹⁰ तो गिरव हो क़ब्जे में दिया हुआ⁶¹¹

فَإِنْ أَمِنَ بَعْضُكُم بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي أُؤْتِنَ أَمَانَتَهُ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ

और अगर तुम में एक दूसरे पर इत्मीनान हो तो वोह जिसे इस ने अमीन समझा था⁶¹² अपनी अमानत अदा करे⁶¹³ और **अल्लाह** से डरे जो

رَبَّهُ ۗ وَلَا تَكْتُبُوا الشَّهَادَةَ ۗ وَمَنْ يَكْتُهَا فَإِنَّهُ إِثْمٌ قَلْبُهُ ۗ وَاللَّهُ

उस का रब है और गवाही न छुपाओ⁶¹⁴ और जो गवाही छुपाएगा तो अन्दर से उस का दिल गुनहगार है⁶¹⁵ और **अल्लाह**

بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿۲۸۳﴾ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَإِنْ

तुम्हारे कामों को जानता है **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अगर

606 : चूँकि इस सूरात में लेन देन हो कर मुआमला खत्म हो गया और कोई अन्देशा बाकी न रहा नीज़ ऐसी तिजारात और खरीदो फ़रोख़्त व कसरत जारी रहती है, इस में किताबत व अशहाद (लिखत पढ़त और गवाह बनाने) की पाबन्दी शाक़ व गिरां होगी। **607** : येह मुस्तहब है, क्यूँ कि इस में एहतियात है। **608** : "يُضَارُّ" में दो एहतियाल हैं मजहूल व मा'रूफ़ होने के, क़िराअते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا अब्वल की और क़िराअते उमर رَضِيَ اللهُ عَنْهُ सानी की मुअय्यिद है। पहली तक्दीर पर मा'ना येह हैं कि अहले मुआमला कातिबों और गवाहों को ज़र न पहुँचाएँ, इस तरह कि वोह अगर अपनी ज़रूरतों में मशगूल हों तो उन्हें मजबूर करें और उन के काम छुड़ाएँ या हक्के किताबत न दें या गवाह को सफ़र खर्च न दें अगर वोह दूसरे शहर से आया हो। दूसरी तक्दीर पर मा'ना येह हैं कि कातिब व शाहिद अहले मुआमला को ज़रर न पहुँचाएँ इस तरह कि बा वुजूद फुरसत व फ़राग़त के न आएँ या किताबत में तहरीफ़ व तब्दील, ज़ियादती व कमी करें। **609** : और कर्ज़ की ज़रूरत पेश आए **610** : और वसीक़ा व दस्तावेज़ की तहरीर का मौक़अ न मिले तो इत्मीनान के लिये। **611** : या'नी कोई चीज़ दाइन (कर्ज़ देने वाले) के क़ब्जे में गिरवी के तौर पर दे दो। **मस्अला** : येह मुस्तहब है और हालते सफ़र में रहन आयत से साबित हुवा और ग़ैरे सफ़र की हालत में हदीस से साबित है, चुनान्चे रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने मदीनए तय्यिबा में अपनी ज़िरह मुबारक यहूदी के पास गिरवी रख कर बीस साअ़ जव लिये। **मस्अला** : इस आयत से रहन का जवाज़ और क़ब्जे का शर्त होना साबित होता है। **612** : या'नी मदयून जिस को दाइन ने अमीन समझा था। **613** : इस अमानत से दैन मुराद है। **614** : क्यूँ कि इस में साहिबे हक् के हक् का इत्ताल है। येह खिताब गवाहों को है कि वोह जब शहादत की इक़ामत व अदा के लिये त़लब किये जाएँ तो हक् को न छुपाएँ और एक क़ौल येह है कि येह खिताब मदयूनों को है कि वोह अपने नफ़्स पर शहादत देने में तअम्मूल न करें। **615** : हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا से एक हदीस मरवी है कि कबीरा गुनाहों में सब से बड़ा गुनाह **अल्लाह** के साथ शरीक़ करना और झूटी गवाही देना और गवाही को छुपाना है।

تُبَدُّوْا مَا فِيْ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تَخْفَوْهُ يَحْسِبْكُمْ بِهٖ اللّٰهُ ۖ فَيَغْفِرْ لِمَنْ

तुम जाहिर करो जो कुछ⁶¹⁶ तुम्हारे जी में है या छुपाओ **अल्लाह** तुम से उस का हिसाब लेगा⁶¹⁷ तो जिसे चाहेगा

يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝۲۸۱

बख़्शेगा⁶¹⁸ और जिसे चाहेगा सज़ा देगा⁶¹⁹ और **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है रसूल

الرَّسُوْلُ بِمَا اُنزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۗ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ

ईमान लाया उस पर जो उस के रब के पास से उस पर उतरा और ईमान वाले सब ने माना⁶²⁰ **अल्लाह** और उस के

وَمَلِكَيْتِهٖ وَكُتَيْبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۗ لَا نَفَرِقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۗ

फ़िरिशतों और उस की किताबों और उस के रसूलों को⁶²¹ यह कहते हुए कि हम उस के किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क नहीं करते⁶²²

وَقَالُوْا سَبِعْنَا وَاَطَعْنَا ۗ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝۲۸۲ لَا يَكْفُرُ

और अर्ज़ की, कि हम ने सुना और माना⁶²³ तेरी मुआफ़ी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही तरफ़ फिरना है **अल्लाह** किसी

616 : बदी **617** : इन्सान के दिल में दो तरह के खयालात आते हैं : एक बतौर वस्वसा के, इन से दिल का खाली करना इन्सान की मक्दरत (ताक़त व इख़्तियार) में नहीं, लेकिन वोह इन को बुरा जानता है और अमल में लाने का इरादा नहीं करता इन को हदीसे नफ़्स और वस्वसा कहते हैं, इस पर मुआख़ज़ा नहीं। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है : सथियदे आलम **صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के दिलों में जो वस्वसे गुजरते हैं **अल्लाह** तआला इन से तजावुज़ फ़रमाता है जब तक कि वोह इन्हें अमल में न लाएँ या उन के साथ कलाम न करें, येह वस्वसे इस आयत में दाख़िल नहीं। दूसरे वोह खयालात जिन को इन्सान अपने दिल में जगह देता है और उन को अमल में लाने का क़स्द व इरादा करता है उन पर मुआख़ज़ा होगा, और उन्हीं का बयान इस आयत में है। **मस्अला** : कुफ़्र का अज़्म करना कुफ़्र है और गुनाह का अज़्म कर के अगर आदमी उस पर साबित रहे और उस का क़स्द व इरादा रखे लेकिन उस गुनाह को अमल में लाने के अस्बाब उस को बहम न पहुंचें और मजबूरन वोह उस को कर न सके तो जम्हूर के नज़्दीक उस से मुआख़ज़ा किया जाएगा। शैख़ अबू मन्सूर मातुरीदी और शम्सुल अदम्मा हलवानी इसी तरफ़ गए हैं और उन की दलील आयए “**اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَنْشِيعَ الْفَاحِشَةُ**” और हदीसे हज़रते आइशा है जिस का मज़मून येह है कि बन्दा जिस गुनाह का क़स्द करता है अगर वोह अमल में न आए जब भी उस पर इक़ाब किया जाता है। **मस्अला** : अगर बन्दे ने किसी गुनाह का इरादा किया, फिर उस पर नादिम हुवा, इस्तिफ़ार किया तो **अल्लाह** उस को मुआफ़ फ़रमाएगा। **618** : अपने फ़ज़ल से अहले ईमान को। **619** : अपने अदुल से। **620** : ज़ुजाज ने कहा कि जब **अल्लाह** तआला ने इस सूत में नमाज़, ज़कात, रोज़े, हज़ की फ़र्ज़ियत और तलाक़, ईला, हैज़ व जिहाद के अहक़ाम और अम्बिया के वाकिआत बयान फ़रमाए तो सूत के आख़िर में येह ज़िक़र फ़रमाया कि नबिय्ये करीम **صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** और मोमिनीन ने उस तमाम की तस्दीक़ फ़रमाई और कुरआन और इस के जुम्ला शराएअ व अहक़ाम के मुनज़ज़ल मिनल्लाह (**अल्लाह** की तरफ़ से नाज़िल) होने की तस्दीक़ की। **621** : येह उसूल व ज़रूरिय्याते ईमान के चार मर्तबे हैं : (1) “**अल्लाह पर ईमान लाना**” येह इस तरह कि ए’तिकाद व तस्दीक़ करे कि **अल्लाह** वाहिद, अहद है, उस का कोई शरीक व नज़ीर नहीं, उस के तमाम अस्माए हुस्ना व सिफ़ाते उज़्या पर ईमान लाए और यकीन करे और माने कि वोह अलीम और हर शै पर क़दीर है और उस के इल्मो कुदरत से कोई चीज़ बाहर नहीं। (2) “**मलाएका पर ईमान लाना**” येह इस तरह पर है कि यकीन करे और माने कि वोह मौजूद है, मा’सूम है, पाक है, **अल्लाह** के और उस के रसूलों के दरमियान अहक़ाम व पयाम के वसाइत् (वासिते) हैं। (3) “**अल्लाह की किताबों पर ईमान लाना**” इस तरह कि जो किताबें **अल्लाह** तआला ने नाज़िल फ़रमाई और अपने रसूलों के पास ब तरीके वहुय भेजीं वे शको शुबा सब हक़ व सिदक़ और **अल्लाह** की तरफ़ से हैं और कुरआने करीम तग़यीर, तब्दील, तहरीफ़ से महफूज़ है और मोहक़म और मुतशाबह पर मुशतमिल है। (4) “**रसूलों पर ईमान लाना**” इस तरह पर कि ईमान लाए कि वोह **अल्लाह** के रसूल हैं जिन्हें उस ने अपने बन्दों की तरफ़ भेजा, उस की वहुय के अमीन हैं, गुनाहों से पाक मा’सूम हैं, सारी ख़ल्क से अफ़ज़ल हैं, उन में बा’ज़ हज़रात बा’ज़ से अफ़ज़ल हैं। **622** : जैसा कि यहूदो नसारा ने किया कि बा’ज़ पर ईमान लाए, बा’ज़ का इन्कार किया। **623** : तेरे हुक्म व इशाद को।

اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۗ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا

जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की ताकत भर उस का फाएदा है जो अच्छा कमाया और उस का नुकसान है जो बुराई कमाई⁶²⁴ ऐ रब हमारे

تُؤَاخِذُنَا إِنْ كُنَّا مُسِيئِينَ أَوْ أَخْطَأْنَا ۗ رَبَّنَا وَلَا تَحْبِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا

हमें न पकड़ अगर हम भूले⁶²⁵ या चूके ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा

حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا ۗ رَبَّنَا وَلَا تَحِبِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا

तूने हम से अगलों पर रखा था ऐ रब हमारे और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार (ताकत)

بِهِ ۗ وَاعْفُ عَنَّا ۗ وَاعْفِرْ لَنَا ۗ وَارْحَمْنَا ۗ أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا

न हो और हमें मुआफ़ फ़रमा दे और बख़्शा दे और हम पर मेहर (रहम) कर तू हमारा मौला है तो

عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۙ

काफ़िरों पर हमें मदद दे

﴿ ٢٠٠ آياتها ﴾ ﴿ ٣ سُورَةُ الْعِمْرَانَ مَدَنِيَّةٌ ١٩ ﴾ ﴿ ٢٠ رُكُوعَاتُهَا ﴾

सूरए आले इमरान मदनिय्या है¹, इस में दो सो आयतें और बीस रुकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُ के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

الْحَمْدُ لِلَّهِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۗ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ

اللَّهُ है जिस के सिवा किसी की पूजा नहीं² आप जिन्दा औरों का काइम रखने वाला उस ने तुम पर येह सच्ची किताब

بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ۗ مِنْ

उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती और उस ने इस से पहले तौरैत और इन्जील

624 : या'नी हर जान को अमले नेक का अज्रो सवाब और अमले बद का अजाब व इकाब होगा। इस के बा'द **اللَّهُ** तआला ने अपने मोमिन बन्दों को तुरीके दुआ की तल्कीन फ़रमाई कि वोह इस तरह अपने परवर दगार से अर्ज करें। 625 : और सहव से तेरे किसी हुक्म की ता'मील में कासिर रहे। 1 : सूरए आले इमरान मदीनए तय्यिबा में नाज़िल हुई, इस में दो सो आयतें, तीन हजार चार सो अस्सी कलिम, चौदह हजार पांच सो बीस हुरूफ़ हैं। 2 शाने नुज़ूल : मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि येह आयत वफ़दे नजरान के हुक़ में नाज़िल हुई जो साठ सुवारों पर मुशतमिल था, उस में चौदह सरदार थे और तीन उस कौम के बड़े अकाबिर व मुक्तदा, एक आक़िब जिस का नाम अब्दुल मसीह था, येह शख़्स अमीरे कौम था और बिग़ैर इस की राय के नसारा कोई काम नहीं करते थे। दूसरा सय्यिद जिस का नाम ऐहम था, येह शख़्स अपनी कौम का मो'तमदे आ'जम और मालियात का अफ़सरे आ'ला था। खुदों नोश और रसदों (जख़ीरा अन्दोजी) के तमाम इन्तिज़ामात इसी के हुक्म से होते थे। तीसरा अबू हारिसा इब्ने अल्कमा था, येह शख़्स नसारा के तमाम उलमा और पादरियों का पेशवाए आ'जम था। सलातीने रूम इस के इल्म और इस की दीनी अज़मत के लिहाज़ से इस का इक़राम व अदब करते थे। येह तमाम लोग उम्दा और क़ीमती पोशाकें पहन कर बड़ी शानो शकोह से हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से मुनाज़रा करने के क़स्द से आए और मस्जिदे अक़दस में दाख़िल हुए, हुज़ूर